प्रथम भाग

इस महायुद्ध के बाद यूरोप का मानचित्र दूसरा ही हो जावेगा। सत्य तथा न्याय की अवश्यम्भावी विजय के उपरान्त सन् १६३६ के पहले के यूरोप की एक कहानी-मात्र रह जावेगी। वहाँ जो कल देखा था, वह कल देखने को भी शायद न मिले।

इस लिए इस अत्यधिक रोचक पुस्तक में दो बार विश्व-परिक्रमा के अनुभव प्राप्त लेखक ने यूरोप का अनोखा चित्र बड़े सजीव रूप में उपस्थित कर दिया है। यह ग्रन्थ इतिहास-प्रेमी तथा दृश्य-दर्शन के पुजारियों को समान रूप से आकर्षित कर लेगा।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व का संसार

(सचित्र)

लेखक

श्री रामरतन गुप्त

प्रकाशक

रामगोपाल गुप्त

बिहारी निवास, कानपुर

मूल्य २॥)

प्रथम वार

१००० प्रति

Printed by
S. N. Tandon
at the City Press,
Meston Road, Cawnpore

पुस्तक मिलने का पता—
श्री रामगोपाल गुप्त, बिहारी निवास, चटाई महाल, कानपुर
और
सिटी बुक हाउस, मेस्टन रोड, कानपुर
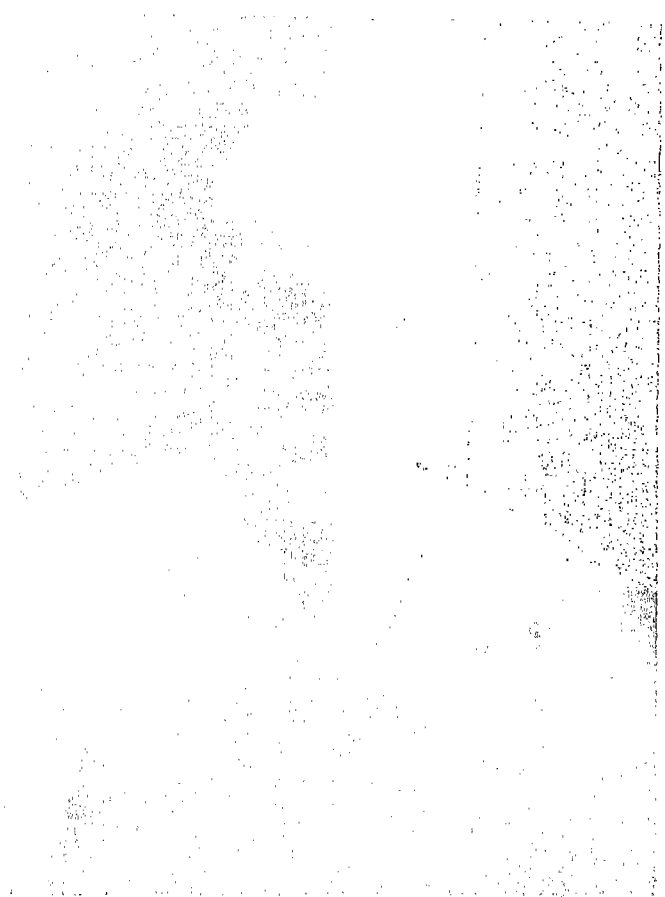
स्वर्गीय पूज्य पिता लाला बिहारी लाल जी

को श्रद्धा तथा भक्ति-पूर्वक समर्पित

—रामरतन गुप्त

प्रकाशक का वक्तव्य

पुस्तक के छपने में अनेक कारणों से अत्यधिक विलम्ब हो गया। लड़ाई छिड़ जाने के कारण काग़ज़ मिलने में भी बड़ी कठिनाई हुई। अतः हमें बहुत कुछ खोज करने पर जो काग़ज़ मिला, उसी से काम लेना पड़ा। फलतः पुस्तक में दो प्रकार के काग़ज़ का उपयोग किया गया है। पाठक क्षमा करें।

लेखक का विचार ही नहीं था कि पुस्तक सचित्र प्रकाशित की जाय पर हमारे आग्रह से उन्होंने चित्र देने की अनुमति दे दी। किन्तु, चित्रों का प्रबन्ध हमको ही करना पड़ा। लेखक के पास चित्रों का एक निजी सुन्दर संग्रह है। पर, हम उससे लाभ न उठा सके। अतः, यदि चित्रों के विषय में कोई भी त्रुटि है तो वह हमारी ही भूल के कारण। इसकी पूरी ज़िम्मेदारी हमारे ऊपर है।

पुस्तक आशा से अधिक बड़ी हो गई। हम इसे इच्छानुसार सजा भी न सके। पर, यदि पाठकों ने इसे अपनाया तो दूसरा संस्करण पर्य्याप्त रूपेण सुन्दर निकाला जायगा।

—रामगोपाल

दो शब्द

ता० १० जून, सन् १६३३ को मैंने संसार की अपनी पहली यात्रा प्रारम्भ की और ता० १४ जून, सन् १६३४ को यह यात्रा समाप्त कर स्वदेश लौट आया। सन् १६३८ में मैं दूसरी बार विश्व परिभ्रमण के लिए रवाना हुआ किन्तु तीन महीने यूरोप में रहने के बाद ही पूज्य पिता जी की बीमारी की सूचना मिली। अतएव मैं सपत्नीक वायुयान द्वारा स्वदेश वापस आया। मुझे सन्तोष है कि मेरी दूसरी यात्रा भले ही पूरी न हुई हो किन्तु पितृवर के महाप्रयाण के समय मैं उनके चरणों में उपस्थित हो सका।

पहली यात्रा के समय ही मैंने बहुत नियमपूर्वक अपनी डायरी रक्खी थी और विचार यह था कि क्रम-बद्ध रूप से उसे प्रकाशित करूँगा, किन्तु कानपुर आते ही कामों में इतना व्यस्त हो गया कि अवकाश ही न मिला कि डायरी के पन्ने साफ़ किये जा सकें और उनको क्रमानुसार एकत्रित किया जा सके।

यूरोप की दूसरी यात्रा करते समय मुझे ऐसा लगा कि स्यात् दुनिया का ढाँचा या कम से कम यूरोप का ढाँचा बदलने ही वाला है और उसके पहले के रूप का केवल एक ऐतिहासिक वर्णन-मात्र ही रह जायगा। वह एक कहानी-मात्र ही रह जायगा जिसे लोग बड़े

चाव से पढ़ेंगे और वैज्ञानिक सभ्यता की चरम सीमा और कथित सभ्यता के घोरतम अट्टहास पर दो बूँद आँसू बहा देंगे।

पिता जी के निर्वाण के बाद मैंने अपनी डायरी को क्रम-बद्ध किया और काफ़ी जल्दी करने से जो कुछ त्रुटियाँ रह गयीं, उनके होते हुए भी पुस्तक को प्रेस में दे दिया। पुस्तक के कुछ अध्याय छपने पर ही महायुद्ध प्रारम्भ हो गया और यूरोप के जिस सर्वनाश की कल्पना मैंने की थी वह आँखों के सामने नाच उठा। पहले तो मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि स्यात् अब पुस्तक का विषय पुराना हो गया और इसे प्रकाशित करना निरर्थक होगा। किन्तु, जिन मित्रों ने इसकी पाँडुलिपि को देखा था और उसके संशोधन में मेरी सहायता की थी उन्होंने आग्रह किया कि न तो पुस्तक का विषय पुराना हुआ है और न उसकी उपादेयता में किसी प्रकार की कमी आई है। वह तो सदैव एक उपयोगी चीज़ होगी और इतिहास और यात्रा के प्रेमियों के लिए रुचिकर प्रमाणित होगी।

उनका यह अनुमान सही है या ग़लत यह तो मैं नहीं कह सकता। मैंने इस ग्रन्थ में केवल अपनी यात्रा का ही वर्णन नहीं किया है किन्तु, जिन स्थानों को मैंने देखा है, उनकी ऐतिहासिक, सामाजिक तथा कुछ आर्थिक चर्चा भी की है। अपने भरसक मैंने यह उद्योग अवश्य किया कि छोटे-छोटे अध्यायों में हर एक देश की सच्ची तसवीर

नाच उठे पर अपने इस प्रयत्न में सफल हुआ हूँ या नहीं यह मैं नहीं कह सकता। यदि इस ग्रन्थ में कोई त्रुटि हो तो पाठक मुझे क्षमा करें।

अभी तो इस ग्रन्थ का पहला भाग प्रकाशित हो रहा है। दूसरे भाग में पुरानी तथा नई दुनिया के बहुत से देशों का वर्णन होगा। मैं चेष्टा तो यही करूँगा कि नये संसार की रचना तक पुराने संसार का लिखित चित्रपट पाठकों की सेवा में सम्पूर्णतः उपस्थित कर दूँ। यूरोप की यात्रा के विषय में अँग्रेज़ी तथा हिन्दी में बहुत से ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। मैं यह नहीं कह सकता कि कोई विशेष रचना लेकर पाठकों के सम्मुख आ रहा हूँ। किन्तु, हर एक के अनुभव और दृष्टिकोण में अन्तर होता ही है। इसी दृष्टि से मैं यह अनावश्यक नहीं समझता कि इस विषय पर और भी ग्रन्थ प्रकाशित हों। यात्रा स्वयं एक बहुत बड़ा अध्ययन है। यदि मेरे इस ग्रन्थ से विश्व के भावी यात्रियों को कुछ भी सहायता मिली अथवा यात्रा के प्रति उनकी कुछ भी रुचि हुई तो मैं अपने इस परिश्रम को सफल और सार्थक समझूँगा।

—रामरतन गुप्त

बिहारी निवास, कानपुर
विजयादशमी, १९९८।

❀ विषय-सूची ❀

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व का संसार

पहला परिच्छेद

यात्रा का प्रारम्भ

जहाज़ अपनी चिर-परिचित यात्रा की तैयारी कर रहा था। एक हल्की-सी लहर ने तट को चूम लिया और जहाज़ को बिदा देने की आज्ञा माँग ली। समुद्र और यात्रियों को अपनी लम्बी यात्रा की चेतावनी देने के लिए, जहाज़ चीख उठा। सागर तथा तट के बीच में दस-पाँच हाथ का फ़र्क़ पड़ गया होगा — जहाज़ चल दिया। 'बैलर्ड पेयर' — बम्बई के बन्दरगाह पर खड़ी भीड़ के रूमाल लहरा उठे। तट की लहरें छलक-छलक कर जल के इस विशाल पक्षी को बिदा करने लगीं और उसी समय मित्रों और सम्बन्धियों के प्रेम में विभोर मेरा चित्त भी चञ्चल हो उठा। मेरे नेत्रों के छलकते हुए पानी ने प्रियजनों, गुरुजनों और स्वजनों की शुभ कामना का मूक उत्तर दिया।

अभी कुछ देर पहले तक मैं 'अपनों' के साथ था। मेरे हृदय में विदेश-यात्रा की स्वर्गिक सुखदा तथा चिर-सञ्चित अभिलाषा की पूर्त्ति ऐसा स्पन्दन कर रही थी कि मुझे बिदाई के इस क्षण की कठिनता को सोचने का अवसर ही नहीं मिला था। पर कुछ ही क्षण बाद जब कि मेरी जन्म-भूमि, मातृ-भूमि, मेरा स्वदेश मुझ से कुछ ही दूर छूटा होगा; अथवा मेरे आत्मीय मुझ से इतनी ही दूर पर होंगे कि मैं एक गेंद फेंक कर उनके पास तक पहुँचा सकता था — मेरा चित्त चञ्चल, मन उद्विग्न और शरीर आहत हो गया।

समुद्र-तट पर पक्षियों की भाँति रूमाल उड़ रहे थे। इटैलियन कम्पनी — लॉयड ट्रीस्टीनों के इस विशाल जहाज़ पर इटैलियन और बृटिश झण्डे फहरा रहे थे — और मैं — बड़े धीरे धीरे अपने रूमाल को हिला रहा था और बैठते हुए दिल को सम्हालने का प्रयत्न कर रहा था।

अब तट पर एकत्रित जन-समूह बहुत दूर छूट गया। मालूम होता था कि दूर पर, कुछ हिलते हुए खिलौने खड़े हों। फिर वे भी दिखाई न दिये — कितनी जल्दी चारों ओर समुद्र की जलराशि फैल गई थी! अब मेरे हृदय ने अपनी परवशता परखी। मित्र नहीं, साथी नहीं, देश नहीं, मातृ-भूमि नहीं — अनन्त जल-राशि में एक चींटी ऐसा जहाज़ और उस पर, एक ग़ुलाम देश का नागरिक मैं, स्वतन्त्र देशों की उस स्वतन्त्रता को देखने जा रहा था, जो हमारी नस नस में है, शरीर पर नहीं।

बड़ी बड़ी दो गरम बूँदे मेरे गालों से ढुलकती हुई उस जल-राशि में गिर पड़ीं। न जाने कितने युगों से, असंख्य लोगों ने पहली-दूसरी और अन्तिम बार भी इसी समुद्र से यात्रा की होगी। और सबने इसी प्रकार, इसके जल में अपनी दो बूँदें—नमकीन गर्म पानी मिला दिया होगा। तब, क्यों न समुद्र खारा हो ! क्यों न इसके भीतर भयङ्कर दावानल छिपा हो !

गुलाम का प्रवास

मैं परदेश जा रहा था और मेरे हृदय पर बहुत बड़े अक्षरों में खुदा हुआ था कि "यह गुलाम है"। किन्तु मुझे इससे इतना दिल नहीं छोटा करना चाहिए था। स्वतन्त्र देश वाले, गुलामों की इतनी बेक़द्री नहीं करते जितना कि एक गुलाम दूसरे गुलाम की। शायद यही कारण था कि बम्बई में, जहाज़ पर की अपनी असुविधा-जनक सीट बदलवा कर अच्छी सीट प्राप्त करने के लिए जहाज़ में स्थान देने वाले दफ़्तर में मुझे जितनी कठिनाई का सामना करना पड़ा उतना अन्यत्र नहीं। वहाँ पर हरएक गोरे की ज़्यादा क़द्र होती थी। उसे आदरपूर्वक पास में बिठलाया जाता और उसका काम पहले हो जाता था। मैं काला था—इसलिए कालों ने मेरी महत्ता न समझी तो क्या बुरा किया ! फिर भी, मुझे क्षोभ तो हुआ ही था।

इटैलियन जहाज़, विक्टोरिया, से मैं यात्रा कर रहा था। उसके दो दिन पहले पी० एण्ड० ओ० कम्पनी का जहाज़ छूटा था। उससे हमारे जहाज़ की रफ़्तार काफ़ी तेज़ थी क्योंकि दो दिन बाद में रवाना होने पर भी हम उससे एक दिन पहले पोर्ट सईद पहुँच गये थे।

विक्टोरिया जहाज़
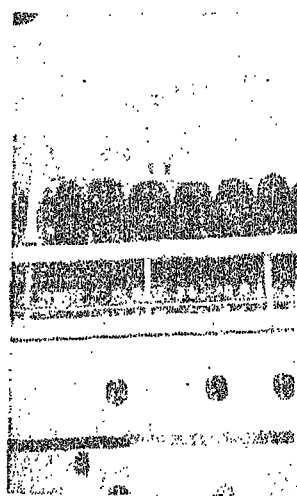
जिन्हें यूरोप के सभी देशों की पूरी यात्रा करने की इच्छा हो, उनको इटैलियन जहाज़ से इसलिए भी विशेष सुविधा होगी कि वे जल-मार्ग से इटली तक ही जाते हैं। अतः इङ्गलैण्ड पहुँचने के पहले ही दक्षिणी यूरोप का भ्रमण सरलता से किया जा सकता है, और इङ्गलैण्ड से लौटते वक्त उत्तरीय, मध्य तथा दक्षिण-पश्चिम यूरोप के दूसरे भागों में होते हुए वापस आया जा सकता है। इसमें समय की भी कुछ बचत हो जाती है और खर्च भी कम पड़ता है। राह-खर्च के लिए

मैंने चार्टर्ड बैंक आव् इंडिया, आस्ट्रेलिया और चायना[1] तथा टामस कुक एण्ड सन्स से थोड़े से ऋणपत्र[2] ले लिये थे। विदेश-यात्रियों को सिक्कों की बदली[3] आदि के झंझटों से बचने के लिए यह सब से अधिक सुरक्षित तथा सुविधाजनक उपाय है। उपर्युक्त बैंकों की शाखायें सभी देशों में सुलभ होने से कोई दिक़्क़त नहीं उठानी पड़ती।

अस्तु यात्रा के प्रारम्भ में मन की क्या दशा होती है? इसका अनुमान लगाना कठिन है। साथियों को छूटे काफ़ी देर हो चुकी थी। चित्त के लिए कोई बन्धन नहीं अतः उसने समुद्र की दूरी की परवाह न की। उसने मुझे छोड़ा, जहाज़ को छोड़ा। बम्बई का तट, बम्बई में मित्रों का निवास-स्थान, कानपुर, घर, माता, पिता स्वजन सब को एक साथ जैसे खोज आया—मिल आया, और जब वापस आया तो उसमें एक शान्ति-सी व्याप्त हो गई। उस समय, अन्तरात्मा दृढ़ हो उठी। जीवन को सार्थक बनाने और उसका प्रत्येक अणु उपयोगी बनाने और अपनी यात्रा से अपने को, देश को, समाज को लाभ पहुँचाने के संकल्प ने मन की उद्विग्नता समाप्त कर दी।

मन शान्त हो गया। एक अजीब उत्साह हृदय में छा गया।

1. Chartered Bank of India, Australia and China
2. Letters of Credit and Travel cheques
3. Exchange

संध्या हो रही थी। पश्चिम में लाल सूर्य मेरी शान्ति पर मुसकरा पड़ा। अरब सागर के नीले पानी को चीरता हुआ हमारा जहाज़ भी बड़े शान्त-भाव से चला जा रहा था। हवा भी मधुर थी, पानी का दृश्य भी मनोरम था, और संसार के हर सुखों के बीच में छिपे हुए दुःख के समान जहाज़ से निकलता हुआ काला धुआँ भी भला मालूम हो रहा था।

मुस्कराता सूर्य्य पानी में डूब गया। बिखरे हुए सितारे लहर में कूद कर अठखेलियाँ करने लगे और बढ़ते हुए अन्धकार में प्रकृति की समूची हँसी को सिमटते देखकर मैं भी, डेक से उठकर भीतर 'डिनर' खाने चला गया।

दूसरा परिच्छेद

जहाज़ का जीवन

साधारण दर्जे के भारतीय के रहन-सहन की तुलना करते हुए जहाज़ का जीवन राजसी कहा जा सकता है। खाने, पीने और सोने की ऐसी सुविधायें तथा रहन-सहन का ऐसा ऊँचे दर्जे का ढंग भारतवर्ष के उच्च वर्ग के धनिकों को भी शायद ही सुलभ हो। पर इसमें कोई सन्देह नहीं कि जहाज़ के जीवन से लेकर सम्पूर्ण विदेश-यात्रा में मांसाहारियों को जितनी सुविधा रहती है, शाकाहारियों को उतनी ही असुविधा। शाकाहारी को जो भोजन मिल सकता है वह साधारण होता है, और उससे पेट भले ही भर जाय, परन्तु जी नहीं भरता।

जहाज़ में मेलजोल बढ़ाना और सोसाइटी बनाना नितान्त अपनी प्रतिभा पर ही निर्भर रहता है। व्यवहार-कुशल व्यक्ति बड़ी सरलता से समूचे जहाज़ को अपना कुटुम्ब-सा बना सकता है।

जहाज़ के प्रधान अधिकारियों तथा कर्मचारियों का यात्रियों के प्रति व्यवहार अधिकतर शिष्ट होता है, और जल में निःसहाय यात्री, लम्बी-यात्रा के कारण, परस्पर मुसाफिरी के नाते, स्वभावतः व्यवहार-मधुर हो जाते हैं, चाहे वे किसी भी देश के क्यों न हों। जहाज़ के कर्मचारी कार्य-कुशल होते हैं और उनके सुप्रबन्ध से यात्रियों को खान-पान, आमोद-प्रमोद और सोने की सुविधायें यथासम्भव सुलभ होती हैं। वे यात्री की असुविधा को यथाशक्ति दूर करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

जहाज़ी दिन-चर्य्या के लिए कोई विशेष नियम निर्धारित करना यदि असम्भव नहीं तो असाध्य अवश्य है। भोजन के अतिरिक्त सभी कार्य्य वायु तथा ऋतु की अनुकूलता पर निर्भर हैं। जहाज़ के बारे में सूचनायें, नियम, खाने पीने का समय और मनोरंजन के कार्यक्रम की सूची निकट ही परसर (मुसाफ़िरों के इन्तज़ाम करने वाले आफ़ीसर का नाम) के दफ़्तर के पास लगे हुए बोर्ड पर चिपका दी जाती है, जिसे प्रत्येक यात्री को प्रति दिन प्रातः उठकर पढ़ लेना चाहिए।

सामुद्रिक बीमारी, जिसके लिए जहाज़ की मुसाफ़िरी बदनाम है, मेरे विचार से हल्का भोजन, नियमित दिनचर्य्या तथा उसकी ओर ध्यान न देने से कष्ट नहीं देती। विशेषकर शाकाहारियों को तो इस बीमारी से ज़रा भी नहीं डरना चाहिए। सामुद्रिक-बीमारी से

बचने का एक छोटा-सा पर महत्वपूर्ण नुस्खा यह भी है कि जब जहाज़ लहरों में हिलोरें लेने लगे तो यात्री अपने शरीर को ढीला रखे और जहाज़ जिस ओर भी शरीर और दिमाग़ को झुला दे, उधर ही झूल जाने दे ! मुझे तो अपनी यात्रा में इस बीमारी का कोई अनुभव ही नहीं हुआ। बीमारों के लिए दवा और डाक्टर आदि का जहाज़ में पूरा प्रबन्ध रहता है, तथा जहाज़ के भीतर ही उनके लिए एक छोटा-सा अस्पताल भी बना होता है।

संक्षेप में, जहाज़ का जीवन वैसा ही जान पड़ता है, मानों हम कुछ काल के लिए किसी रमणीक सरोवर से घिरे बँगले में प्रवास करने के लिए चले गये हों। जहाज़ पर रहने का अनुभव तो केवल तभी होता है जब डेक पर आकर चारों ओर बिखरे हुए सागर में जहाज़ द्वारा कटती हुई लहरों पर नज़र डाली जाय, अन्यथा जहाज़ और बँगले में कोई अन्तर नहीं। घर से भी अधिक सुविधायें, यात्रा की दिलचस्पी और क्षण-क्षण पर परिवर्त्तनशील प्रकृति की अवलोकनीय छटा इस प्रवास के सूनेपन को दूर करती है। सुखमय स्वर्ण के दिन और चाँदी-सी रातों का आना-जाना तो मालूम ही नहीं होता।

तीसरा परिच्छेद

अदन से काहिरा

भूमि का दर्शन किये हुए चार दिन हो गये थे। मातृ-भूमि १६६५ मील पीछे छूट चुकी थी। इसलिए भारतीय रोज़गारियों से भरी हुई अदन की बीहड़ और ऊसर भूमि देखकर हृदय में बड़ा उल्लास हुआ और सामने की भूमि की शुष्कता बड़ी मनोरम प्रतीत हुई। यहाँ पर कोयला-पानी के लिए चार पाँच घण्टे के लिए जहाज़ ठहर जाता है। अतएव अदन घूमने का काफ़ी अवसर मिलता है। जहाज़ से तट पर जाने के लिए मोटर बोट का वापिस टिकट मिलता है और तट से नगर की यात्रा के लिए टैक्सियों का झुण्ड खड़ा मिलेगा जिनके किराये में कमी-बेशी यात्रियों की संख्या और मोलतोल पर निर्भर है।

अदन का संक्षिप्त परिचय दे देना उचित होगा। नवीन

शासन-विधान के पहले अर्थात् उस समय जब मैं पहली बार अपनी यात्रा पर गया था, यह बृटिश भारत के अन्तर्गत, एक अलग सूबा था। अब वह बृटिश साम्राज्य के अन्तर्गत, एक हाई कमिश्नर द्वारा शासित होता है। इसकी ज़मीन अधिकांशतः ऊसर और ज्वालामुखी की चट्टानें हैं, जो कि पूर्व से पश्चिम तक पाँच मील और उत्तरी तट से रास सनैला या अदन अंतरीप तक तीन मील की दूरी में फैली हुई हैं। इसकी सब से ऊँची चोटी जबल-शमशान समुद्र-तट से १७७६ फ़ीट ऊँची है। नगर एक बुझे हुए ज्वालामुखी के ऊपर, पूर्वी तट पर बसा हुआ है और उसे चारों ओर से दुर्गम चट्टानों ने घेर कर बहुत ही सुरक्षित बना दिया है। अदन के दो बन्दरगाह हैं।

अदन का बन्दरगाह

एक बाहरी और दूसरा भीतरी। बाहरी बन्दरगाह नगर के सामने है और भीतरी पश्चिम की ओर। दूसरे बन्दरगाह को अंग्रेज़ी में 'अदन बैक बे' कहते हैं और अरबी में 'बन्दर तवैया' कहते हैं यद्यपि प्रायद्वीप का क्षेत्रफल पन्द्रह स्क्वायर मील है, किन्तु आस-पास की ज़मीनों पर क़ब्ज़ा करके यहाँ का बृटिश राज्य अस्सी स्क्वायर मील का बना दिया गया है। समुद्री मार्ग में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान होने के कारण ब्रिटेन ने इसको बहुत ही सुरक्षित कर रक्खा है।

यहाँ पर खेती का नाम-निशान तक नहीं है और खाद्य सामग्री बाहर से आती है। कुओं में पानी बहुत ही कम और दूरी पर निकलता है। गर्मी बहुत कसरत से पड़ती है। व्यापारिक दृष्टि से और साथ ही सैनिक

अल्बुकर्क

अदन में "शेख ओसमान", जहाँ पर सुन्दर बाग हैं

अदन में ऊँट अपनी प्यास बुझा रहे हैं

दृष्टि से यह बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। जिस रोम के अधीन एक बार ब्रिटेन भी था, उसी की ग़ुलामी इसने भी की है। ईसा से २४ वर्ष पूर्व ही यह रोम के हाथ में आ गया था। सन् १५१३ ई० में प्रसिद्ध पुर्तगीज़ जल-सेनानी अल्बुक़र्क़ ने इसे अपने क़ब्ज़े में करने की कोशिश की परन्तु असफल रहा। सन् १५३८ ई० में तुर्कों ने इस पर क़ब्ज़ा कर लिया। कई अन्य देशों की ग़ुलामी करने के बाद सन् १८३९ ई० में यहाँ पर ब्रिटेन का झण्डा फहराने लगा। इसकी कहानी भी बड़ी रोचक है।

सन् १८३७ ई० में अदन के पास एक बृटिश जहाज़ नष्ट हो गया और उसके मुसाफ़िर और मल्लाहों के साथ अरब निवासियों ने बड़ा बुरा व्यवहार किया। बम्बई की सरकार ने लहाख के शेख़ से, जिसकी अधीनता में अदन था, इस घटना की सफ़ाई माँगी। सुल्तान ने जहाज़ की लूट के लिए हर्जाना देना और अदन का क़स्बा और बन्दरगाह अंग्रेज़ों के हाथ बेच देना क़बूल किया। लेकिन सुल्तान का लड़का अपने पिता के वादे से मुकर गया। इसलिए ब्रिटेन ने सन् १८३९ ई० में इस पर ज़बरदस्ती क़ब्ज़ा कर लिया। ब्रिटेन ने अदन को अधिकार में लेते ही लाल-सागर का व्यापारिक मार्ग खोल दिया। स्वेज़ नहर के बनते ही अदन की बहुत ही ज़्यादा तरक़्क़ी हो गई।

सन् १८३९ ई० में यहाँ की आबादी सिर्फ १००० थी जो कि सन् १९०२ ई० में बढ़ कर ४३,९७४ हो गई और और इस समय अदन की आबादी लगभग ४८,३३८ है, जिनमें २४,५८२ पुरुष अपढ़ हैं और २८६३ अंग्रेजी भाषा से परिचित हैं। स्त्रियों की संख्या १९,१३३ है जिनमें केवल ७८२ ही शिक्षित हैं और ७८२ में से ४७० अंग्रेज़ी भाषा जानती हैं।

स्वास्थ्य की दृष्टि से अदन बहुत ही सुन्दर स्थान माना जाता है। आबोहवा खुश्क होने के कारण यहाँ पर कोई संक्रामक बीमारी नहीं होती। जल के लिए भी गवर्नमेण्ट ने बहुत ही अच्छा इंतज़ाम कर रक्खा है जिससे पीने के लिए बहुत ही स्वच्छ और स्वास्थवर्धक

अदन का तालाब

पानी मिलता है। सैनिक केन्द्र होने के कारण यात्रियों के स्वास्थ्य की बहुत काफ़ी देख-भाल रहती है। अदन के दर्शनीय स्थानों में एक नमक बनाने की फ़ैक्टरी है, जिसका नमक भारतवर्ष, विशेषकर बंगाल को भेजा जाता है। प्राचीन काल में पानी की कमी के कारण यहाँ पर जल एकत्रित करके रखने के लिए बड़े भारी तालाब बनाये गये थे, जो अब सूखे पड़े हैं। यहाँ के ग़ैर-सरकारी अजायब घर में मनुष्यों का सा आधा आकार रखने वाली मृत मछलियाँ दर्शनीय हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ पर और कुछ विशेष देखने योग्य नहीं है।

यहाँ से चलकर जहाज़ एक बड़ी चौड़ी नहर के समान आकार वाले लाल-सागर में प्रवेश करता है। इस सागर के पूर्वीय तट पर अरब का विशाल रेतीला उष्ण प्रदेश है। इस देश का क्षेत्रफल अनुमान से १२,००,००० वर्ग मील है, जो अधिकांश में रेगिस्तानी ऊसर है। फलतः आधे से ज़्यादा देश तो वीरान ही पड़ा है। गरमी की अधिकता और पानी की कमी के कारण बस्तियों का भाग ज़्यादातर समुद्रतट के निकट ही पाया जाता है। लाल सागर, अरब सागर, ओमन का आखात और फ़ारस की खाड़ी के किनारे किनारे बस्ती पाई जाती है। इस देश में ज़्यादातर बेदूयीं जाति के बुर्दा फ़रोश लोगों की ही बस्ती है जो अपने कुनबे के साथ एक नख़लिस्तान से दूसरे नख़लिस्तान में घूमा करते हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ पर

अरबों की बस्ती भी है, जो अपनी जाति की अलग बस्ती बनाकर बसे हुए हैं। इस भाग में यहूदी भी काफ़ी रहते हैं। लाल सागर के पश्चिम की ओर अफ्रीका का विशाल महाद्वीप है। समुद्र तट के निकट का प्रदेश केवल उत्तरीय मिश्र को छोड़कर वैसा ही उष्ण रेगिस्तान है जैसा अरब। यहाँ की जलवायु बहुत गरम है। फिर भी मुझे इसका निजी अनुभव न हो सका क्योंकि मेरी यात्रा के समय अधिक गरमी न थी। इस समुद्र के दोनों पार्श्वों में छोटे-छोटे द्वीप बड़े सुहावने मालूम होते हैं जिनके कारण दो रेगिस्तानों के बीच में यात्रा करते हुए भी तबीयत नहीं ऊबती।

१३१० मील लम्बे लाल सागर का मार्ग तीन दिन में तय करके हमारा जहाज़ स्वेज़ नहर पहुँच गया।

स्वेज़

स्वेज़ की रचना मनुष्य की प्रखर-बुद्धि तथा निर्माता-प्रवृत्ति का सबसे ज्वलन्त उदाहरण है। लाल सागर के उत्तर में बीच में भूमि आ जाने से इस समुद्र की दो भुजायें हो गई हैं, एक तो पूर्व की ओर जिसका नाम अकाबा की खाड़ी है और दूसरी स्वेज़ की खाड़ी। स्वेज़ बन्दर से स्वेज़ नहर शुरू होती है, और धुर उत्तर में भूमध्य सागर[1] में सईद बन्दरगाह[2] के निकट जाकर मिल जाती

1. Mediterranean sea.
2. Port Said.

है। इसकी लम्बाई १०१ मील, चौड़ाई १४८ फ़ीट और गहराई ३३ फ़ीट है। इस नहर को नील नदी[1] के डेल्टा से आने वाली इस्माइलिया के मीठे पानी की नहर[2] सींचती रहती है। सन् १८५६ ई० में खुदाई शुरू होकर यह नहर इंजीनियरों के १० वर्ष के अथक परिश्रम के बाद तथा ७५,०००,००० क्यूबिक मीटर बालू खोद कर निकाल कर तैयार हुई थी। इस नहर की खुदाई में लगातार २४,००० मज़दूर काम करते रहे और इसके बनने में पूरी लागत अनुमानतः १६,०००,००० पौण्ड (क़रीब २८ करोड़ रुपया) बैठी थी। इस नहर में आने-जाने वाले जहाज़ों का नियंत्रण एक कम्पनी करती है, जिसके मूलधन का बहुत बड़ा हिस्सा सन् १८७५ ई० में बृटिश राज्य ने ख़रीद कर नहर पर अपना यथेष्ट नयंत्रण प्राप्त कर लिया है।

यदि इस नहर का निर्माण न हुआ होता तो यूरोप जाने वाले जहाज़ को अफ़्रीका महाद्वीप की पूरे दो मास की लम्बी परिक्रमा करके जाना होता। इस नहर की रचना के पहले यूरोप के यात्रियों के लिए केवल वही एक मार्ग था। यह नहर इतनी पतली है कि एक बार में केवल एक ही जहाज़ निकल सकता है। इसमें जहाज़

1. Nile.

2. Ismailia sweet water canal.

बहुत धीरे-धीरे चलता है क्योंकि बालू का तट होने के कारण तट के करारे कट-कट कर गिरा करते हैं। करार से गिरे बालू को नहर से निकाल कर, उसे जहाज़ जाने के क़ाबिल गहरा बनाये रखने के लिए सदैव काम लगा रहता है। इस नहर से निकलने के लिए प्रत्येक जहाज़ को ३०० पौण्ड महसूल देना पड़ता है जो कम्पनी के लाभ खाते जाता है। इस तरह से स्वेज़ कम्पनी को हरसाल इतनी आमदनी होती है कि सन् १८७५ ई० में लगाई हुई अपनी पूँजी को ग्रेट ब्रिटेन आठ बार वसूल कर चुका है। कम्पनी के प्रबंधक बोर्ड में एक डच, दस बृटिश और २१ फ्रेंच डाइरेक्टर हैं।

यहाँ स्वेज़ बन्दरगाह तथा स्वेज़ नहर के विषय में थोड़ा-सा परिचय दे देना उचित होगा। कुछ बातें तो मैं ऊपर बतला आया हूँ। स्वेज़ नगर में भी अदन की तरह पानी की कमी होती यदि उसकी ज़रूरत को नील से काहिरा जाने वाली ताज़े पानी की नहर पूरा न करती। सन् १८६३ ई० में इस नहर की रचना हुई थी। बन्दरगाह से नगर दो मील की दूरी पर है। आजकल जहाँ पर बन्दरगाह है वह किसी समय में समुद्र के नीचे था। लड़ाई तथा सौदागरी के जहाज़ों को रुकने के लिए पृथक् स्थान हैं। मक्का जाने वाले यात्रियों के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। सातवीं शताब्दी में नील तथा लालसागर के मुहाने के

दक्षिण की ओर 'कोल्ज़म' नामक एक क़स्बा था। मिश्र और अरब तथा सुदूर पूर्व के व्यापार के लिए यह एक महत्वपूर्ण स्थान था। १६वीं शताब्दी में मिश्र भी तुर्की साम्राज्य के अन्तर्गत आ गया था और इस प्रकार स्वेज़ पर भी तुर्कों का अधिकार हो गया। यहीं से तुर्की और पुर्तगीज़ बेड़ों में भारतीय महासागर के प्रभुत्व के लिए संघर्ष शुरू हुआ। सन् १७६८ ई० में इस पर फ्रेंच आधिपत्य हो गया और सन् १८०० ई० में यह अंगरेज़ी हुकूमत में चला गया। उस समय यह नगर बहुत ही टूटी-फूटी हालत में था। सन् १८३७ ई० में ब्रिटेन ने भूमार्ग द्वारा भूमध्यसागर तक पहुँचने का और व्यापार और यात्रा करने का प्रबन्ध किया। अब तो यहाँ पर एक रेलवे-लाइन भी है जो स्वेज़ नहर से स्वेज़ नगर तक और स्वेज़ से इस्माइलिया होती हुई 'वादी तुमीलत' पहुँच कर 'ज़गज़िग' जाती है और यहीं से इसकी एक शाखा काहिरा और सिकन्दरिया पहुँचती है।

जहाँ तक स्वेज़ नहर का सम्बन्ध है भूमध्यसागर और लाल-सागर को एक जल-मार्ग द्वारा मिलाने का यह सब से सरल रास्ता है। पुराने ज़माने में लालसागर के द्वारा जाने वाला माल स्थलमार्ग से होकर भूमध्यसागर और दक्षिणी यूरोप पहुँचता था अथवा नील नदी के जल-मार्ग से भी काम लिया जाता था।

पुराने ज़माने में भी नील के जल-मार्ग को लालसागर से मिलाने के लिए नहरें बनाई गई थीं और ऐसी नहरों का ज़िक्र 'अरिस्तू' के किताबों में भी मिलता है। पुरानी नहरों की निशानी अब भी मौजूद है।

स्वेज़ के स्थल-डमरूमध्य को काटकर वर्त्तमान स्वेज़ नहर की योजना खलीफ़ा हारु अलरशीद ने ही बनाई थी। यह बात ८वीं शताब्दी की है। किन्तु राजनैतिक कारणों से उनको अपनी योजना छोड़ देनी पड़ी थी। १५वीं शताब्दी में भारतवर्ष जाने के लिए जब पूर्वी अफ्रीका का मार्ग पुर्तगालियों ने ढूँढ़ निकाला तो वेनिस के व्यापारियों ने मिश्र के बादशाह से स्वेज़ नहर बनाने के विषय में लिखा-पढ़ी शुरू की। लेकिन तुर्की ने मिश्र को जीतकर यह योजना भी ठंढी कर दी। फ्रांस के लुई १४वें के वक्त में भी अर्थात् सन् १६७१ ई० में भी ऐसी ही बातचीत चली थी। मिश्र जीतने के बाद सन् १७९८ ई० में नेपोलियन ने भी ऐसा ही इरादा किया था किन्तु कोई भी योजना कामयाब न हुई। सन् १८५४ ई० में फर्दिनन्द दि लेसेप[1], जो इस नहर के बारे में बहुत ही उत्सुक थे, मिश्र आये। इनके मित्र सईद पाशा फ्रांस की ओर से मिश्र के वायसराय नियुक्त किये गये थे। ३० नवम्बर सन् १८५४ ई०

1. Ferdinand De Lesseps

को इन्हें अपनी योजना को कार्यान्वित करने की इजाज़त मिल गई। सुल्तान की स्वीकृति सन् १८६६ ई० में प्राप्त हुई। दो अरब फ्रैंक पूंजी रक्खी गई तथा ५०० फ्रैंक की क़ीमत के चार लाख हिस्से जारी किये गये थे। दि लेसे ने १८५८ ई० से ही कम्पनी के हिस्से बेचने शुरू कर दिये थे। एक महीने से कम में ही ३,१४,४६४ हिस्से बिक गये। इसमें से दो लाख हिस्से तो फ्रांस ने ले लिये थे और ९६,००० की अर्ज़ी तुर्की साम्राज्य की ओर से थी। इङ्गलैण्ड, ऑस्ट्रिया, रूस, अमेरिका इत्यादि इस योजना से बिल्कुल ही उदासीन रहे। शेष बचे हुए ८५,५०६ हिस्से फ्रांस के वायसराय ने ले लिये। २५ अप्रेल सन् १८५९ ई० से काम शुरू हुआ।

अस्तु, इस योजना के पूरा होने के विषय में समूचा इतिहास देने का यहाँ स्थान नहीं है। किस प्रकार ग्रेट ब्रिटेन की दृष्टि भी इस नहर की ओर गई और फलतः उसने स्वेज़ कम्पनी पर अपना प्रभाव जमा लिया, इसकी रोचक गाथा भी पाठक स्वेज़ के इतिहास में पढ़ लें। यहाँ इतना बतला देना उचित होगा कि २९ अक्टूबर सन् १८८८ ई० में कुस्तुन्तुनिया के अन्ताराष्ट्रीय सम्मेलन के निर्णय के अनुसार यह नहर हरएक देश के जहाज़ों के जाने के लिए खुल गई है। स्वेज़ से लेकर पोर्ट सईद तक इसकी लम्बाई १०० मील की है और जहाज़ों को पौने आठ फ्रैंक फ़ी टन वज़न के हिसाब से कम्पनी

को महसूल देना पड़ता है तथा फ़ी यात्री पीछे १० फ्रेंक फ़ीस ली जाती है। किसी भी जहाज़ को फ़ी घण्टा १० किलोमीटर के हिसाब से अधिक रफ़्तार रखने की इजाज़त नहीं है। इसीलिए यहाँ जहाज़ बहुत धीरे चलते हैं।

इस नहर में धीरे धीरे जहाज़ पर चलते हुए समय नष्ट करने के बजाय स्वेज़ बन्दरगाह में उतर कर लगे हाथ मिश्र की राजधानी काहिरा[1] भी देखते हुए सईद बन्दरगाह में पुनः जहाज़ पकड़ने का हमने निश्चय किया। अतएव हम लोग स्वेज़ से मोटर पर सवार होकर काहिरा चल पड़े।

---

1. Cairo.

चौथा परिच्छेद

मिश्र

मिश्र, उत्तर पूर्व अफ्रीका का एक प्राचीन तथा सुहावना देश है। नील नदी की प्राणवाहिनी जलधारा से सिंचित होकर यह रेतीला देश एक सुन्दर प्रदेश बन गया है। अन्यथा यहाँ भी सहारा रेगिस्तान की समता प्रत्येक प्रकार से दी जा सकती थी। मिश्र देश संसार की आदि कालीन सभ्यता का उद्गम स्थान कहा जाता है। नील की उपजाऊ घाटी में बने हुए प्राचीन नष्टप्राय मन्दिरों, पिरामिडों और स्तूपों में आदि कालीन सभ्यता की उस पुरातन गौरवगरिमा का अप्रकट इतिहास छिपा हुआ है। मिश्र और बेबीलोन[1] संसार के सर्व प्रथम दो बड़े साम्राज्य थे और इन्हीं देशों में मानवीय सभ्यता ने जन्म लेकर नाना कलाओं तथा विज्ञान

---

1. Babylon.

की उन्नति की पराकाष्ठा कर पश्चिम की ओर पैर बढ़ाया। कुछ लोगों का मत है कि सबसे पहले ईसा से ४,४०० वर्ष पूर्व संसार के सर्व प्रथम राजा मेनीज़[1] ने मिश्र में अपना राज्य स्थापित किया था, परन्तु ऐतिहासिक प्रमाणों द्वारा यह निश्चित रूप से प्रतिपादित किया जा चुका है कि मिश्र का सब से प्रथम राजवंश ईसा से ५,६०० वर्ष पहले से ईसा के ३०० वर्ष बाद तक राज्य करता रहा। प्राचीन कला ने एकता का सूत्र-पात करके सभ्यता को जन्म देकर एक विशाल राज्य की नींव डाली, और यह देश तीव्र गति से आज के हज़ारों वर्ष पहले उन्नति के शिखर पर पहुँच गया—जब संसार

नील नदी

1. Menes.

की शेष जातियाँ (भारत को छोड़कर) जंगली जीवन से ऊपर न उठ पाई थीं। इस देश की सुन्दर जलवायु ने जिस हिफ़ाज़त से यहाँ के पुराकालीन युग के ऐतिहासिक चिह्न सुरक्षित रक्खे हैं, उसे देखकर केवल आश्चर्य होता है।

इस देश की बस्ती नील नदी के किनारे-किनारे ही विशेष कर पाई जाती है। यह नदी दक्षिण में अबीसीनिया की ऊँची उपजाऊ भूमि से बह कर इस देश को उपजाऊ और सरसब्ज़ बनाने के लिए मिट्टी लाती है। मिश्र के बाग़ हमेशा हरे-भरे लहलहाया करते हैं। अंगूर, अंजीर, अनार, नीबू, नारंगी, सेब आदि सभी प्रकार के फलों से लदा, मनोमोहक हरियाली और कुंजों से शोभायमान नील का तट वस्तुतः स्वर्ग से उपमा देने योग्य स्थान है।

पहले मिश्र में तुर्कों का राज्य था। सन् १९१४ ई० में यह ब्रिटेन का एक संरक्षित देश हो गया। परन्तु इस स्थिति का सन् १९२२ ई० में अन्त हो गया। तब से राजा फुआद प्रथम के आधिपत्य में यह एक स्वतन्त्र देश कहा जाता है, परन्तु मिश्र की स्वतन्त्रता केवल नाम-मात्र की है। इस देश का भविष्य तब तक अन्धकार के गर्त में डूबा रहेगा जब तक उसे पराधीन रखने वाले विषयों पर इङ्गलैण्ड और मिश्र के बीच में कोई निश्चित समझौता नहीं हो जाता। बृटिश सरकार ने मिश्र देश की स्वतन्त्रता के एक

पक्षीय घोषणा-पत्र द्वारा, संरक्षण-स्वरूप अनेक अधिकार अपने हाथ में सुरक्षित रखे हैं।* मिश्र का शासन राजा द्वारा नियुक्त एक मंत्रिमण्डल द्वारा होता है किन्तु अर्थ और न्याय के विषयों में परामर्श देने के बहाने ब्रटिश सलाहकार रहते हैं। इन दोनों विभागों पर उनका एक-सा ही अधिकार है। सन् १६२३ ई० के शासन विधान के अनुसार राजा अपना शासन एक पार्लियामेण्ट के सहयोग से करता है, परन्तु सन् १६२८ ई० में राजा ने तीन वर्ष के लिए पार्लियामेण्ट तोड़ दी। फलस्वरूप बादशाह के फ़रमानों द्वारा राज्य-संचालन की प्रथा पुनः प्रचलित हो गई। जब पार्लियामेण्ट काम करती है तो इसके दो भाग होते हैं—एक तो सिनेट जिसके दो तिहाई मेम्बर नामज़द किये जाते हैं और दूसरा चेम्बर ऑफ़ डेपुटीज़ है, जिसके सदस्य ६०,००० मनुष्यों पीछे एक के हिसाब से प्रतिनिधि चुने जाते हैं।

यह देश यद्यपि ६०,०००,००० पौण्ड के ऋण-भार से दबा हुआ है तथापि अपनी प्राकृतिक सम्पत्ति के कारण इसकी आर्थिक स्थिति अच्छी है। बढ़िया कपास की पैदावार के लिए यह देश जगद्-

*अभी, हाल में ही, इटली-अबीसीनिया युद्ध के समय इङ्गलैण्ड और मिश्र में जो नयी सन्धि हुई है, उसके द्वारा मिश्र को कुछ और अधिकार प्राप्त हो गये हैं।

विख्यात है। सन् १६२६-३० ई० के आँकड़ों के अनुसार इस देश की २०,००,००० एकड़ भूमि में कपास की पैदावार होती थी। गेहूँ, जौ आदि ग़ल्लों की फ़सलें भी अच्छी होती हैं, परन्तु फलों की पैदावार कसरत से होने के कारण यहाँ से फल ख़ूबसूरत टिन के डिब्बों में बन्द कर बाहर भेजे जाते हैं। अन्य खनिज पदार्थों के अलावा मिट्टी के तेल के सोते भी यहाँ पाये जाते हैं।

प्राचीन काल की शिल्प-कला के लिए मिश्र देश संसार में सर्वोपरि कहा जाता है, और यहाँ इस कला ने ऐसी उन्नति की कि अपने तत्सम्बन्धी नियमों और कार्य्य-प्रणाली के आधार पर इस देश ने शिल्प विज्ञान ही बना दिया। पिछले ५०-६० वर्षों की खुदाई
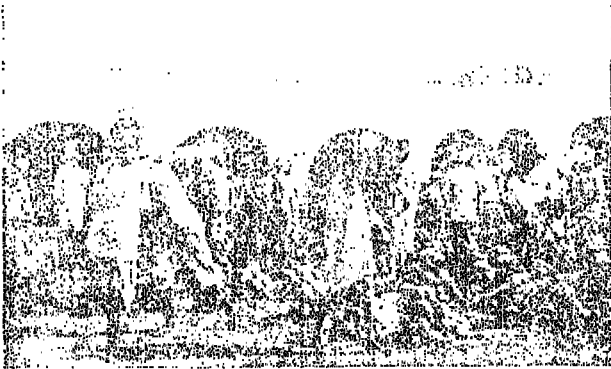
फलों का बाज़ार

और खोज ने इस दिशा में जो प्रकाश डाला है उससे संसार चकित हो गया है। इस देश में आने पर निर्माण-कला के इन अद्भुत उदाहरणों को अवश्य देखना चाहिए।

मिश्र में सोने, चाँदी और निकल के सिक्कों का चलन है। मिश्र के सोने के पौण्ड का मूल्य बृटिश पौण्ड से ६ पेंस अधिक है। इस देश का क्षेत्रफल ३,८३,००० वर्ग मील और जन-संख्या लगभग १४,२१७,८६४ है जिसमें ११,०००,००० मुसलमान हैं और शेष विदेशी तथा ईसाई आदि हैं। विदेशियों में अधिकतर यूनानी, अंग्रेज, इटेलियन और फ्रेंच हैं।

मिश्र देश की राजधानी काहिरा एक व्यापारिक केन्द्र होने के अतिरिक्त अफ्रीका महाद्वीप का सब से बड़ा नगर है। प्राचीन काल में यह मुसलिम खलीफ़ा का प्रधान केन्द्रीय स्थान था। इस नगर के दो भाग हैं एक प्राचीन नगर और दूसरा आधुनिक काहिरा। यह "दोनों" नगर दो ढंग की बनावट के हैं। यदि प्राचीन नगर पुरातन एशियाई शिल्प-कला की प्रधानता का द्योतक है तो नया 'काइरो' आधुनिक पाश्चात्य शिल्प-कला का सर्व श्रेष्ठ उदाहरण है।

इस नगर की इम्प्रूवमेण्ट कमेटी ने नगर के नये भाग में यह नियम बनाया है कि एक मकान एक डिजाइन का और दूसरा मकान दूसरे डिजाइन का बने। फलतः प्राचीन काल से लेकर आज

तक की, संसार के किसी भी देश और किसी भी काल की शिल्पकारी के नमूनों की इमारतें काहिरा के इस हिस्से में पाई जाती हैं। मोटर पर घूमते हुए ऐसा जान पड़ता है मानो मकानों के एक अजायबघर की सैर कर रहे हों। वास्तव में यह आयोजन किसी विचित्र मनुष्य के मस्तिष्क की सुंदर उपज जान पड़ता है।

प्राचीनतम सभ्यता का प्रथम प्रचारक मिश्र सदैव इतिहास का गौरव रहा है और रहेगा। सहस्रों वर्ष पुराने पिरामिड, मिश्र देश की

पिरामिड

प्राचीन प्रभुता और वैभव के परिचायक हैं । इन पिरामिडों का निर्माण उस समय हुआ था जब आने-जाने और माल लाने के लिए सवारी की सुविधाएँ बहुत कम थीं। वास्तव में आश्चर्य होता है कि इतने भारी भारी पत्थरों की चट्टानें जिसको क्रेन की मशीनें भी उठाने में डोल जायँ, किस प्रकार मिश्र के ग़ुलाम नौकरों की पीठ पर लद कर इतने ऊँचे चढ़ी होंगी। ऊँचाई भी थोड़ी नहीं सैकड़ों फ़ीट की। इनमें कोई कोई तो ४०० फ़ीट से भी ऊँची बनी है। अब कालान्तर में इन पिरामिडों के भग्नावशेष रह गये हैं। इनकी तुलना हम मक़बरों से कर सकते हैं, फ़र्क़ केवल बनाने के ढंग का है और यही फ़र्क़ इनकी विशेषता है। अन्दर जाने के लिए ऊपर जाकर एक छोटे से दरवाज़े में होकर सकरी सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। नीचे पहुँच कर फिर ऊपर चढ़ने के लिये सीढ़ियाँ मिलती हैं। ये सीढ़ियाँ आगे चलकर इतनी सकरी हो जाती हैं कि मनुष्य झुके हुए या बैठे बैठे ही इन पर चढ़ सकता है। सीढ़ियों के बग़ल में रेलिंग लगी है, जिससे कि उसके सहारे मुर्दों की अर्थियाँ नीचे से ऊपर आसानी से लाई जा सकें। ये सीढ़ियाँ आगे चलकर एक साधारण बड़े कमरे में निकलती हैं, जहाँ पर मिश्र के उन शासकों तथा उनके परिवार वालों के, जिन्होंने यह पिरामिड बनवाये हैं, शव दफ़न किये गये थे। उस समय यह कमरा बहुमूल्य पत्थरों से जड़ा हुआ होगा। यह कमरा

चारों तरफ़ से बन्द रहता है और इसके चारों तरफ़ सैकड़ों फ़ुट का बड़े बड़े पत्थरों की चट्टानों का घेरा है, किन्तु, कारीगरी की यह तारीफ़ है कि इन कमरों में हवा का काफ़ी प्रबंध है। यह हवा कहाँ से आती है इसका पता लगाना असम्भव है। इन पिरामिडों में लगे ज़्यादातर पत्थर अफ्रीका से दूर दक्षिणीय गिरि कन्दराओं से नील नदी में बहा कर लाये गये थे।

पिरामिडों का निर्माण उस काल के शासकों की सब से बड़े गौरव की बात समझी जाती थी। प्रत्येक शासक जितना भीमकाय और अनोखा पिरामिड बनवाता था, उसकी उतनी ही ख्याति होती थी। एक-एक पिरामिड के निर्माण में असंख्य ग़ुलामों की नर-बलि हो जाती होगी। पिरामिड बनवाना उस देश की, उस काल की आदर्श महत्ता का द्योतक था। सेनेफेरू के वंशज खूफू ने यहाँ का सब से बड़ा पिरामिड, जिसको कि विश्व का सातवाँ आश्चर्य कहा जाता है, निर्माण कराया था। इसकी ऊँचाई ४८१ फ़ीट और सतह ७७५ फ़ीट चौड़ी है। इसके तीन तरफ़ तिकोनी दीवारों में २३,००,००० पत्थरों के टुकड़े, जो प्रत्येक २½ टन के वज़न के होंगे, लगे हुए हैं। साढ़े बारह एकड़ के घेरे में ऐसे पत्थरों की २१० लाइनों में ये पत्थर नीचे-ऊपर जमाये गये थे। बाहरी आँगन तो अब बहुत-कुछ नष्ट हो गया

है। एक रास्ता उत्तर की ओर ४८ फ़ीट जाकर बन्द हो जाता है। प्रवेश-द्वार से एक ज़ीना एक सौ डेढ़ फ़ीट की गहराई में नीचे तक चला जाता है, उसके बाद नीचे वाले कमरे से ऊपर चढ़ना होता है। परन्तु अब यह रास्ता बन्द हो गया है और प्रवेश-द्वार से सीधा ६० फ़ीट की ऊँचाई का एक ज़ीना चढ़ना पड़ता है। इसके बाद ग्रैण्ड गैलरी (बड़ी दालान) पड़ती है, जहाँ से एक रास्ता रानी के कमरे को जाता है। ग्रैण्ड गैलरी को पार कर के राजा के कमरे का रास्ता है।

उस युग की संस्कृत का यह शक्ति-चिह्न देखकर हृदय स्वतः श्रद्धासे पूरित हो जाता है। कार्यरूप में परिणत शक्ति का कभी नाश नहीं होता। जिस मिश्र की प्राचीन सभ्यता पर हम आज सहानुभूति के दो आँसू गिराते हैं, वही मिश्र पुनः नवीन शक्ति पाकर जाग्रत होकर, पूर्णतः स्वतन्त्र राष्ट्र बनने का गौरव एक बार पुनः पा सकता है। इस प्राचीन मिश्र के गौरव-चिह्न को देखकर ऐसी कल्पना चित्त में स्वयं उत्पन्न होती है। ज्ञान, निष्ठा और आत्माभिमान की जिस मात्रा में मिश्र में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है उसे देखते हुए उसकी पूर्ण स्वाधीनता का दिन बहुत ही निकट दीख पड़ता है। यद्यपि मिश्र की वर्त्तमान परिस्थिति की हज़ारों वर्ष पूर्व की स्थिति से तुलना करने पर तथा इस सुन्दर देश के अधःपतन को देखकर

मार्मिक पीड़ा होती है, यही वह देश है जहाँ न जाने कितनी बार रक्त की नदियाँ बह चुकी हैं, इसकी सम्मृद्धि पर निरन्तर ललचायें हुए कितने ही शक्ति-शाली सम्राटों के हमलों और पारस्परिक युद्ध का-युद्ध केन्द्र रह चुका है और यहीं नेपोलियन जैसे पराक्रमी वीर की भी रणदुन्दुभी[1] बज चुकी है ! वह केवल इस देश के अनन्त वैभव के सौरभ से ही आकर्षित होकर यहाँ तक आया था । उसी मिश्र की प्राचीन सत्ता यदि हम आज खोजने चलें और न पायें तो दुःखी होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मगर नहीं, मिश्र की प्राचीनता इस बीसवीं सदी में भी अपने गौरव को नहीं भूली है। जब से इस देश को थोड़ी-बहुत स्वतन्त्रता मिली है तब से जिस तेजी के साथ यहाँ के निवासियों में देश-भक्ति की भावना जाग्रत हुई है उसे देखते हुए मिश्र का उज्ज्वल भविष्य बहुत सन्निकट दृष्टिगोचर होता है।

मैंने इस पुस्तक में इस बात का विशेषरूप से ध्यान रक्खा है कि यात्रा का वर्णन करते समय उन देशों का संक्षिप्त इतिहास भी दे दूँ जो मेरी यात्रा के मार्ग में पड़े थे। मोटे तौर पर मिश्र देश का परिचय मैंने दे दिया है किन्तु, अब मैं उसके

1. War of Pyramids, 1789.

विषय में थोड़ी-सी ऐसी ज़रूरी बातें भी बतला देना चाहता हूँ जिनसे इस देश की महत्ता पाठकों पर अच्छी तरह से प्रकट हो जाय।[१]

प्राचीन मिश्र

मिश्र का साम्राज्य बहुत ही प्राचीन है। भारतीय महापंडितों का ऐसा विश्वास है कि पहले भारत और मिश्र के बीच समुद्र का

---

[१] मिश्र देश का एक डेपुटेशन कुछ समय हुए भारतवर्ष आया था। वह डेपुटेशन मिश्र की स्वाधीनता की लड़ाई में सब से प्रमुख भाग लेने वाले दल की ओर से था और उसका उद्देश्य त्रिपुरी के कांग्रेस अधिवेशन में सम्मिलित होना और भारतीय स्वाधीनता की लड़ाई के प्रमुख सिपाहियों से निकटतम सम्पर्क स्थापित करना था। इस पार्टी के शुभागमन से भारत और मिश्र का परस्पर भाई-चारा और भी मज़बूत हो गया और अप्रैल १६३६ के प्रथम सप्ताह में जब यह डेपुटेशन अपने देश के लिए वापस जाने लगा, इसने अपनी बिदाई के सम्वाद में हमारे और अपने देश के ऐतिहासिक सम्बन्ध को मज़बूत बनाने का वचन दिया था। इसलिए हमको प्राचीन भारत के इस साथी के साथ अपनी भूली हुई जान-पहिचान को फिर से ताज़ी कर लेने का प्रयत्न करना चाहिए।

अन्तर नहीं था और मिश्र और यह देश भारतीय महादेश का एक प्रान्त मात्र था। हमारे पूर्वपुरुष मनु भगवान् का जन्म मिश्र में ही बतलाया जाता है। रोमन और यूनानी साम्राज्य के अन्तर्गत भी यह देश बहुत समय तक था और इसके बाद वहाँ स्वतन्त्र शासन प्रारम्भ हो गया। मिश्र के पुराने ज़माने के कई नाम मिलते हैं। इसका असली नाम कीमी अर्थात् 'कालीभूमि वाला' कहा जाता है। हेब्रू ज़बान में इसको 'मिज़रैन' कहते थे जिसका मतलब यह है कि यह देश दो भागों में बँटा हुआ है—एक ऊपर का मिश्र और दूसरा नीचे का मिश्र। असीरियन ज़बान में इसको मुस्री या मिश्री कहते हैं, लेकिन अर्बी भाषा में इसका नाम मश्र या मिश्र है। यूनानी इसे आइजिप्टस कहते थे। प्राचीन और वर्त्तमान मिश्र की भौगोलिक परिस्थिति में कोई अन्तर नहीं हुआ है। जहाँ तक कि प्राचीन वस्तुओं के संग्रह का सम्बन्ध है मिश्र में संसार की सब से अधिक पुरानी चीज़ें मिलती हैं। मिश्र के नुबिया प्रदेश में आबादी की कमी और जनता की ग़रीबी के कारण पुरानी चीज़ें बहुत ज़्यादा तादाद में मिलती हैं और इसी प्रदेश में देबोध, इब्रीम, अबूसिम्बल, जेबलआद्दा, सोलेम इत्यादि के बहुत ही प्राचीन मन्दिर खण्डहरों की हालत में मौजूद हैं। मिश्र के बहुत से प्राचीन ग्रंथ भी यूरोप के अजायब-घरों में पाये जाते हैं जिनमें पत्थरों पर खुदाई की लिखावट भी

मौजूद है। मिश्र का इतिहास अन्य भाषाओं और साहित्यों में तो बहुत कुछ मिलता ही है। इसके अतिरिक्त स्वयं मिश्र में खोद कर निकाली हुई चीज़ों से बहुत ही रोचक और जानने क़ाबिल बातें मालूम हुई हैं।

१७वीं शताब्दि से ही मिश्र की प्राचीन कला के नमूने यूरोप में पहुँचने लगे थे और १६८३ ई० में ऑक्सफ़ोर्ड के अजायबघर में मिश्र की पहली चीज़ पहुँच चुकी थी। सन् १७९८ ई० में जब कि नेपोलियन ने चीन पर हमला किया था, वह अपने साथ विद्वानों का एक दल भी वहाँ ले गया था जिसके द्वारा उसने इजिप्त की प्राचीनता की काफ़ी छानबीन कराई थी। इसकी रिपोर्ट फ्रेंच भाषा में प्रकाशित भी हो चुकी है। सन् १८०१ ई० में फ्रेंच सरकार ने अपनी एकत्रित पुरानी चीज़ों को बृटिश अजायबघर को भेंट कर दिया था। इसके बाद ही मिश्र के शासक मुहम्मदअली ने यूरोपियनों के आने की सहूलियत के लिए हर प्रकार के प्रतिबन्ध हटा लिये और इसी समय से इस महादेश ने नवीनता का पाठ पढ़ना शुरू किया। इस प्रकार जहाँ तक कि मिश्र की प्राचीनता का सम्बन्ध है इसके बारे में दुनिया काफ़ी जानकार तो हो गई है लेकिन अभी भी मिश्र के इतिहास की जितनी जानकारी होनी चाहिए उतनी नहीं हो पाई है। साथ ही, जो कुछ परिचय हमें प्राप्त है उसका वर्णन यदि हम करने

लगें तो हमें एक पृथक् पुस्तक लिखनी पड़ेगी।

ईसा से ३३२ वर्ष पूर्व सिकन्दर ने मिश्र को जीतकर इसे फ़ारसी साम्राज्य से पृथक् कर दिया था। तत्पश्चात् यह देश टॉलमी[1] की अधीनता में आ गया था। उस समय मिश्र की जन-संख्या केवल ७० लाख बतलाई जाती है। ईसा से ३० वर्ष पूर्व सम्राट् आगस्टस ने इसे रोमन साम्राज्य में मिला लिया। ईसवी सन् ६३९ में मुसलमानों के दूसरे खलीफ़ा अर्थात् उमर प्रथम ने ४००० मुसलमानों को मिश्र पर हमला करने के लिए भेजा। १२,००० मुसलमान और आ गये और इस प्रकार ६४० ई० तक पूरा मिश्र देश मुसलमानों के अधीन हो गया। कहते हैं कि इसका मूल कारण मिश्र के रोमन अधिकारियों की विलासप्रियता, आलस्य और देश-घात था। ९६९ ई० तक मिश्र पर अब्बासी अथवा सुन्नी खलीफ़ों का राज्य था लेकिन ९६९ से ११७१ ई० तक शिया खलीफ़ा मुईज़ का इस पर अधिकार हो गया था। सन् ११७१ ई० से सुन्नी लोगों का फिर से क़ब्ज़ा हो गया और १५१७ ई० से यह तुर्की साम्राज्य में मिला लिया गया। सन् १८०० ई० से इस पर फ्रेंच आधिपत्य हो गया और १८४१ ई० से फ्रांस की ओर से नियुक्त गवर्नर मुहम्मदअली को यह अधिकार मिल गया कि उसके बाद उसकी सन्तान ही शासक की गद्दी

1. Ptolemy.

पर बैठे और तब से उसी परिवार के लोग गद्दी पर बैठते आये हैं—यद्यपि कुछ समय बाद मिश्र पर फ्रेंच के बजाय अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया।

मिश्र में स्वाधीनता की लड़ाई प्रथम महासमर के पहले ही शुरू हुई थी और इसका अन्त अभी तक नहीं हुआ है क्योंकि भीतरी शासन में स्वाधीनता मिल जाने पर भी अभी तक मिश्र में अंग्रेज़ी सेना रहती है। उसकी रूई की खेती में अंग्रेज़ों का स्वार्थ रहता है। उसे स्वतन्त्र वैदेशिक नीति धारण करने का अधिकार नहीं है। मिश्र में फ्रेंच या अंग्रेज़ी राज्य किस तरह पनपा यह बतलाने के लिए यहाँ पर स्थान नहीं है। इतना मैं और बतला दूँ कि बृटिश सत्ता वास्तव में यहाँ सन् १८८२ से ८५ ई० के बीच स्थापित हुई जिसका श्रेय सर गार्नेट अल्जे को है।

अस्तु, मिश्र में दर्शनीय पदार्थों की कमी नहीं है। यहाँ के प्राचीन राजाओं का ज्यों-ज्यों प्रभुत्व बढ़ता गया त्यों-त्यों वे अपने प्रभुत्व को देवताओं का प्रसाद समझकर उनके मन्दिर बनवाने में और उन देवालयों को अत्यधिक धन से भर देने में अपना गौरव समझते रहे। इस प्रकार इन मन्दिरों के पुजारियों का भी बहुत प्रभुत्व हो गया था। कहते तो यहाँ तक हैं कि रेमेसीज़ तृतीय के शासनकाल में एक मन्दिर के पुजारी के पास ८०,००० नौकर और

चार लाख चौपाये थे। इन नरेशों और पुजारियों की क़ब्रें बनाने और उन्हें सजाने में भी काफ़ी पैसा खर्च होता था और हरएक बड़े आदमी की लाश को ऐसे रसायनिक पदार्थों में लपेट कर सुरक्षित रखना अपना फ़र्ज़ समझा जाता था जिससे कि वह लाश हज़ारों वर्षों तक गले नहीं। क़ब्र में लाश लिटाने की भी क्रिया बहुत ही विधिपूर्वक होती थी। इसीलिए मिश्र में पिरामिड का बड़ा महत्त्व है। हरएक को उन्हें देखना चाहिए।

क़ाहिरा का महत्त्व

इसी मिश्र का प्राचीनतम नगर काहिरा है। भारतीयों के लिए इस नगर का महत्त्व उस समय से और भी बढ़ गया है जब कि मौलाना मुहम्मदअली की क़ब्र यहीं बनी। इङ्गलैण्ड में उनकी मृत्यु के बाद वे यहीं दफ़नाये गये थे। काहिरा में भिन्न-भिन्न सभ्यताओं का जैसा विरोधात्मक सम्मिश्रण है वैसा संसार के किसी दूसरे नगर में कम दीख पड़ेगा। यहाँ काली और गोरी दो प्रकार की सभ्यता का अलौकिक मिलन है। नवीन काहिरा में यूरोपीय सभ्यता का ही प्रभाव अधिक है। इस नगर की इमारतों की विविधता और विभिन्नता यहाँ के निर्माण-कला-कुशल कारीगरों की ख्याति का द्योतक है। प्राचीन काहिरा में खलीफ़ा हारूँ रशीद के ज़माने की

बनी हुई एक से एक विचित्र ढाई सौ मस्जिदें हैं। इनकी शिल्पकला को देखकर दूर-दूर से आये हुए दक्ष कारीगर दंग रह जाते हैं।
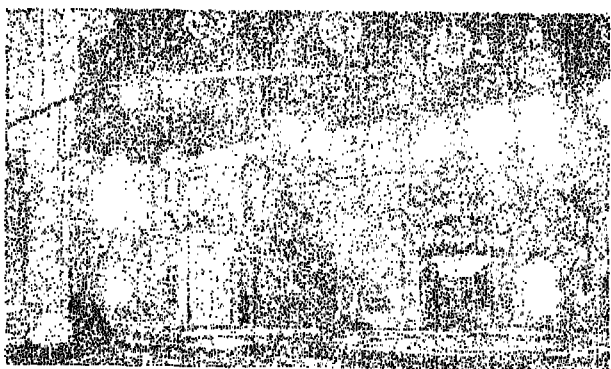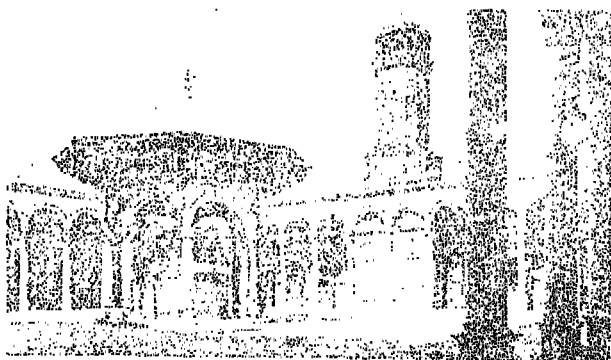
१ मुहम्मदअली की क़ब्र २ मुहम्मदअली की क़ब्र का भीतरी दृश्य

इन सुन्दर मस्जिदों का इस नगर के सीने पर एक हार सा पहनाया हुआ है। सुल्तान हसन की मस्जिद सर्वोत्कृष्ट और बड़ी ही सुन्दर बनी हुई है। प्राचीनकाल की सारसैनिक शिल्पकला[1] का यह नगर प्रधान केन्द्र रह चुका है।

काहिरा की स्त्री

इस नगर में नर-नारियों के फ़ैशन की भी विभिन्नता देखकर दर्शक चकित रह जाता है। इतने ढंग के फ़ैशन एक स्थान पर देख पड़ते हैं कि जिनका गिनना कठिन है। महिलाओं के फ़ैशन या मुस्लिम, पारसी, यहूदी, यूनानी, अरबी और फ्रेंच के भिन्नरूप दर्शनीय हैं। लड़कियाँ यूरोपीय तथा मुस्लिम पोशाक में, तथा स्त्रियाँ काले-काले वस्त्र पहिने हुए, आँखों पर पट्टी बाँधे हुए देख पड़ती हैं। काली पोशाक और आँख पर जाली की

1. Sarcenic Architecture.

पट्टी बाँधना यहाँ पर विवाहिता होने का सूचक माना जाता है। सुबह-शाम दो प्रकार के कपड़े बदल कर निकलने का रिवाज भी यहाँ अधिकतर पाया जाता है। पुरुषों में अंग्रेज़ी ढंग की पोशाक हैट, कोट और पतलून, या तुर्की और अंग्रेज़ी मिश्रित या केवल तुर्की फ़ैशन का पाजामा, लुङ्गी व तुर्की टोपी का अधिक चलन है। बात-चीत में अंग्रेज़ी और अरबी भाषाओं की बोल-चाल अधिक है। विदेशियों के लिए यहाँ अंग्रेज़ी भाषा जानने से काफ़ी सुविधा है।

पश्चिमीय देशों के आमोद-प्रमोद के तरीक़ों की शुरूआत यहीं से हो जाती है। शहर में सजे हुए कई प्रकार के विशाल होटल हैं—कैफ़े (यहाँ लोग शराब आदि के लिए ही ज़्यादातर आते हैं), केबरेट (जहाँ पर शराब के साथ नाचने के लिए काफ़ी लड़कियाँ होटल की ओर से तैनात रहती हैं और जिसके लिए सिवाय शराब की क़ीमत के और कोई ख़ास चार्ज नहीं होता) क्लब, गायनालय, थियेटर इत्यादि भी बहुत हैं। मिश्र में मुस्लिम धर्म की प्रधानता के कारण मिश्रवासी भारत को भी स्वदेश के समान समझते हैं। किन्तु, मिश्र के मुसलमान कट्टर मुस्लिम नहीं हैं। वे भारतीय मुस्लिम-कट्टरता के स्पष्ट विरोधी हैं। उनके लिए स्वदेश-प्रेम धर्म-प्रेम से बड़ा है।

मिश्र एक सुन्दर देश है। यों तो यह देश ललित-कलाओं का निकेतन रहा है और सम्भवतः सदैव रहेगा, परन्तु यहाँ की नृत्य और गायन-कला यहीं की विशेषता है। यह विशेषता संसार में अन्यत्र दुर्लभ है। यहाँ पर यूरोपीय सभ्यता ने जिस प्रकार फ़ैशन, बोल-चाल और रहन-सहन पर अपना प्रभाव डालकर सुन्दर और परिष्कृत कर दिया है, उसी प्रकार गायन और नृत्य को भी संस्कृत और सर्वाङ्ग सुन्दर तथा पूर्ण बनाने में कोई कोर-कसर नहीं रक्खी है। यहाँ का नृत्य और गायन भाव-प्रधानता के कारण मानो सजीव हो उठता है। जब एशिया के पूर्वीय गायन-कला की

काहिरा
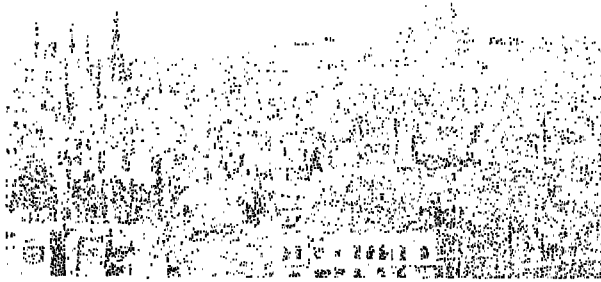
विशेषता 'ताल'[1] और यूरोप के पश्चिमीय गायन-कला की विशेषता 'लय की एकता'[2] का परस्पर मिलन होता है तो श्रोता भावावेश से मुग्ध हो जाता है। इसी प्रकार पूर्वीय नृत्य-कला में भाव-प्रदर्शन-कला का जब सामञ्जस्य हो जाता है तो नर्तकी अनन्त प्रेम के प्रवाह में बहती हुई स्वयं एक भावमय प्रतिमा-सी प्रतीत होने लगती है। इन स्वर्गीय गुणों के सौरभ से सुरभित और भिन्न-भिन्न सुन्दरताओं के विचित्र सम्मिश्रण का केन्द्र यहीं है। यहाँ से पूर्व-पूर्व और पश्चिम पश्चिम हो जाता है।
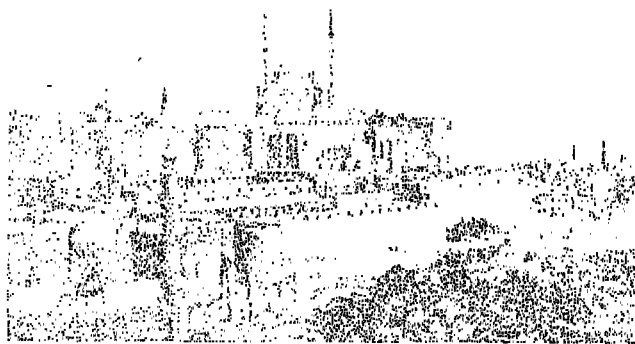
काहिरा का क़िला

1. Melody. 2. Harmony.

काहिरा एक घनी बस्ती वाला नगर है। इसकी जन-संख्या अनुमान से १०,६४,५६७ है। इस नगर को पूरी तरह से देखने के लिए कम से कम दो दिन चाहिए, परन्तु अवकाश के अभाव के कारण हम यहाँ अधिक समय तक ठहर नहीं सकते थे, क्योंकि उसी दिन रात को अपना जहाज़ पोर्ट सईद में पकड़ना था। अस्तु, मनकी मन में ही रखकर ६ बजे शाम को हमलोग रवाना हो गये और रात होते पोर्ट सईद बन्दरगाह पर फिर उसी जहाज़ पर आ गये जिसे हमने स्वेज़ पर छोड़ा था।

पोर्ट सईद

पोर्ट सईद अथवा सैयद बन्दरगाह का नाम यहाँ के सैयद पाशा के नाम पर पड़ा। यह नगर समुद्र से सुखाई गई पृथ्वी पर बना है। सन् १८५० ई० में यहाँ जहाज़ों के कोयला-पानी लेने की जगह बनाई गई थी, तब से, और विशेषकर स्वेज़ नहर खुलने से इसका महत्व उत्तरोत्तर बढ़ता गया। बन्दरगाह की रक्षा और राष्ट्रीय सरहद की व्यवस्था के लिए यहाँ पर बृटिश सेना रहती है। यूरोप से आता या जाता हुआ जहाज़, चाहे किसी भी देश का क्यों न हो; इस बन्दरगाह से अवश्य गुज़रेगा। स्वेज़ नहर का यह उत्तरीय सिंह-द्वार है। इसके पड़ोस में एक मॉडल-टाउन

है। इस नगर की जीविका यात्रियों, व्यापारियों तथा बन्दरगाह की आमदनी पर ही निर्भर है। नगर भी बिलकुल पश्चिमी तरीक़ों पर आबाद है। यहाँ पर यात्रियों के उतरते ही दलाल लोग उनके पीछे लग जाते हैं। एक संकेत द्वारा उन्हें दुष्ट औरतों के अड्डों पर चलने के लिए आमन्त्रित करते हैं। यात्रियों को इनसे बचने की सख्त ज़रूरत है वरना १०० में ७५ लोग भ्रष्ट बीमारियों के शिकार होकर ही लौटते हैं।

इसी तरह चीज़ें बेचने वाले लोगों से भी यहाँ काफ़ी सावधान रहने की ज़रूरत है। मोल-तोल की तो कोई हद ही नहीं है।

स्वेज़ नहर का पूरा रास्ता, जहाँ से जहाज़ आता है, सिपाहियों द्वारा पूरी तरह घिरा रहता है ताकि नहर से जानेवाले जहाज़ की कस्टम[1] बचाने वाली चीज़ बग़ैर ड्यूटी के धोखे से न भेजदें।

जब मैं दुबारा सन् १९३८ ई० में ज्येष्ठ के महीने में विश्व भ्रमण को निकला था उस समय सभी यूरोपीय देशों ने अपने यहाँ यात्रियों को अधिक संख्या में आने के लिये प्रोत्साहित करने के लिए रेल के किराये आदि में विशेष कमी कर दी थी। साथ ही साथ विनिमय की दर में भी ५० प्रतिशत की कमी कर दी गई थी। इस कमी के अनुसार प्रत्येक यात्री को एक निश्चित रक़म

1. Custom.

तक, उस देश का सिक्का सस्ते में प्राप्त हो सकता था। इन सब सुविधाओं की जानकारी किसी भी टूरिस्ट एजेन्सी[1] से प्राप्त कर लेना आवश्यक है जिससे यात्री कम खर्च में यूरोपीय देशों का भ्रमण कर सके।

1. Tourist Agency.

पाँचवाँ परिच्छेद

नेपल्स और पाम्पियाई

पोर्ट सईद से चलकर जहाज़ भू-मध्यसागर अथवा रूम-सागर[1] में प्रवेश करता है। भू-मध्यसागर के विषय में पाठक समाचार-पत्रों में काफ़ी पढ़ा करते हैं। आज, इस सागर पर प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए इटली कितनी चेष्टा में है, तथा ब्रिटेन कितना सतर्क है, यह भी विदित ही है। इसका कारण है। एशिया-स्थित ब्रिटिश तथा फ्रेंच साम्राज्य की कुञ्जी इसी समुद्र के हाथ में है, इसलिए इसको दूसरे के हाथ में कैसे दिया जा सकता है। इस सागर के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

यह समुद्र, एशिया, अफ्रीका तथा यूरोप इन तीनों महाद्वीपों द्वारा घिरा हुआ है। इसके पूर्व में सीरिया[2] और एशिया

---

1. Mediterranean Sea.
2. Syria.

माइनर[1], दक्षिण में अफ्रीका और उत्तर में यूनान[2], इटली, फ्रांस और स्पेन हैं। एशिया माइनर के निकट इसका पूर्वीय सिरा मारमोरा सागर[3] में होकर काले सागर[4] से मिलता है और पश्चिमीय सिरा जिब्राल्टर[5] के सकरे जल-डमरू-मध्य से होकर एटलांटिक महासागर[6] से मिल गया है। इस सागर को यदि हम सागर न कह कर एक बड़ी झील कहें तो ग़लत न होगा क्योंकि इसको चारों ओर से पृथ्वी घेरे हुए हैं। केवल नील[7] नदी ही इस समुद्र को थोड़ा बहुत सींचती है, अन्यथा इसमें कोई नदी भी नहीं गिरती। भयंकर तथा उष्ण मरुस्थल सहारा[8] के निकट होने के कारण इस सागर का पानी बड़ी जल्दी सूख कर भाप बन जाता है। इसका जल शान्त है और इसमें ज्वारभाटा भी नहीं आता, इसी कारण लहरें भी बहुत ऊँची नहीं उठतीं। रूम सागर की जलवायु स्वास्थ्य के लिए विख्यात है। इसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल ११,४५,००० वर्ग मील है।

इस सागर में जहाज़ की यात्रा बड़े ही आनन्द के साथ कटती है। इटली के द्वीप-समूहों को पार करता हुआ हमारा जहाज़

1. Asia Minor. 2. Greece.
3. Sea of Marmora. 4. Black Sea.
6. Gibraltar. 6. Atlantic Ocean.
7. Nile. 8. Sahara Desert.

१,१५० मील की यात्रा तय करके तीसरे दिन इटली के प्रसिद्ध बन्दरगाह नेपल्स[1] पहुँचा।

हमने यूरोप का पहला नगर देखा। इसकी सैर करने के लिए चित्त चञ्चल हो रहा था। यूनान और रोम के प्राचीन शौर्य्य तथा प्रतिभा के बुझे हुए इस दीपक में प्रवेश करते ही शरीर में न जाने क्यों रोमाञ्च-सा हो आया। एक बार प्राचीन रोमन-काल का विस्मृत अतीत आँखों के सामने नाच उठा। संसार के सभी इतिहासकार इस नगर को यूनानी सभ्यता का सबसे प्राचीन केन्द्र मानते हैं। ईसा से ३२८ वर्ष पहले यह नगर रोमन लोगों के हाथ में आया। उस समय यह यूनानी सभ्यता के शिखर पर पहुँच चुका था। यूनानी शिक्षा, साहित्य तथा नाना कलाओं के निकेतन, इस नगर की प्रतिभा पर मुग्ध होकर बहुत से उच्च श्रेणी के रोमन लोग साहित्य-प्रेम तथा शिक्षा के लोभ से अथवा यहाँ के गायन, नृत्य, विलासमय जीवन और व्यायाम इत्यादि से आकर्षित होकर यहाँ आकर बसते गये। उस समय इस नगर का नाम निओपोलिस था जिसका यूनानी भाषा में अर्थ "नवीन नगर" है।

कालान्तर में सिसली[2] के राज्य से पृथक् यह एक छोटा सा

1. Naples.
2. Sicily.

"नेपल्स का राज्य"[1] बन गया और सिसली के दो राज्यों की राजधानी के नाम से विख्यात हो गया। सन् ११३८ ई० से सन् १८६० ई० तक नेपल्स इस राज्य की राजधानी रहा, तत्पश्चात् यह सार्डिनिया[2] राज्य में—इटली के विशाल राज्य के अन्तर्गत हो गया। उस समय से यह फिर अलग नहीं हुआ। सन् १८०६ ई० में नेपोलियन ने इस राज्य की गद्दी से बूर्बान[3] के घराने को उतार कर अपने भाई जोज़ेफ बोनापार्टी[4] को बिठाया था परन्तु फ्रेंच लोग अधिक दिनों तक यहाँ न टिक सके।

नेपल्स इटली का एक बहुत बड़ा व्यापारिक केन्द्र है। यहाँ पर जहाज़, मोटरकार तथा इञ्जिन बनते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ कपास, ऊन, रेशम और सन का माल तथा दस्ताने बनाने का काम भी होता है। काँच का सामान भी यहाँ बहुतायत से बनता है तथा यहाँ पर इत्र व सुगन्धि आदि के कारखाने बहुत अच्छे हैं यहाँ से दूसरे देशों को शराब, ब्राण्डी, फल, काग़ज़, सन और जैतून का तेल निर्यात किये जाते हैं। इस नगर की जन संख्या ८,६६,४२३ है।

किन्तु, नेपल्स का इतना परिचय काफ़ी न होगा। इसके

1. Kingdom of Naples.
2. Sardinia.
3. Bourbon.
4. Joseph Bonaparte.

विषय में, संक्षेप में, मैं थोड़ा और वर्णन करूँगा। इटली के सब से छोटे सूबे का नाम नेपल्स है और उसी का यह सबसे बड़ा नगर है। यहाँ पर सामुद्रिक बेड़ा बड़ा ही मज़बूत है। स्थल-सेना भी बहुत काफ़ी है। कुस्तुन्तुनिया के हिमायती कहते हैं कि प्राचीन तुर्की साम्राज्य की वह राजधानी सबसे सुन्दर स्थान पर बसी हुई है। यही बात नेपल्स के लिए भी उसके पक्षवाले कहते हैं। रेल के मार्ग-द्वारा यह रोम से १५१ मील की दूरी पर है और अब एक बिजली की लाइन समुद्रतट से होकर इसे रोम से और भी नज़दीक ला सकी है। बन्दरगाह की दृष्टि से यह बहुत ही आदर्श स्थान है और तट के पास भी काफ़ी गहरा पानी है।

नगर ज्वालामुखी पहाड़ियों की ढाल और उसके पास के मैदान में बसा हुआ है और समुद्र से ही इसका दृश्य बड़ा ही सुहावना मालूम होता है। रोमन-कैथलिक सम्प्रदाय वालों के लिए वह बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ पर गिरजाघर कम से कम २०० होंगे। इनमें से कई गिरजाघर तो बहुत प्राचीन और दर्शनीय हैं। इसी प्रकार यहाँ का राष्ट्रीय अजायबघर देखने लायक चीज़ है। जिस इमारत में यह है वह सन् १५८६ ई० में बननी शुरू हुई थी और उस वक्त में इसे नेपल्स के वाइसराय का घुड़साल बनाने का इरादा था। सन् १६१५ ई० में इसमें विश्वविद्यालय बसाने के

क़ाबिल बनाया गया, लेकिन इस भवन में अजायबघर का काम १७६० ई० से फ़र्डिनन्द चतुर्थ ने लेना प्रारम्भ किया। इटली के वीर गैरीबाल्डी ने अपने राजनैतिक विद्रोह के समय सन् १८६० ई० में इसे राष्ट्रीय अजायबघर घोषित कर दिया। नेपल्स में जीव-जन्तु शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए पठनीय तथा मननीय पदार्थों का बहुत सुन्दर संग्रह है। इस संग्रहालय की स्थापना सन् १८७२ ई० में हुई थी। यहाँ के राष्ट्रीय पुस्तकालय में, जिसे रायल नेशनल लाइब्रेरी कहते हैं, लगभग चार लाख पुस्तकें हैं और आठ हज़ार हस्त-लिखित ग्रंथ हैं। इसका 'सैन कार्लो' नामक थियेटर-भवन ५१५७ स्क्वायर यार्ड के क्षेत्रफल में है और यूरोप में सब से बड़ा आपेरा हाउस समझा जाता है। मौजूदा इमारत सन् १८१६-२० के लगभग की बनी हुई है। अस्पताल और चिकित्सालयों की दृष्टि से भी यह नगर काफ़ी प्रधानता रखता है।

नेपल्स का बंदरगाह, इटली की अल्बानिया पर विजय के बाद बहुत ही महत्वपूर्ण हो गया है। किन्तु, वास्तव में इसकी नींव सन् १३०२ में चार्ल्स द्वितीय ही ने डाली थी। अब तो नेपल्स नगर और बंदरगाह यूरोप के बहुत घने बसे हुए नगरों में समझा जाता है और इसके औद्योगिक जीवन में भी, फ़ैसिस्ट शासनकाल में, बड़ी तरक़्क़ी हुई है। पहले यह नगर हैज़ा तथा अन्य संक्रामक

बीमारियों का घर समझा जाता था, किन्तु जब से यहाँ पर पहाड़ियों के ऊपर, ज़मीन के भीतर छिपी हुई एक झील से बहुत ही स्वास्थ्य-कर पानी लाने का प्रबन्ध हो गया है तथा पुराने नालों की जगह नये तरीक़े से इंतज़ाम हो गया है, नगर की सूरत और शक्ल ही बदल गई है।

नेपल्स का इतिहास बहुत ही रोचक है। यह भी कई राष्ट्रों के अधीन रह चुका है। एक ज़माना था जब कि नेपल्स अथवा सिसली का ही एक स्वतंत्र राज्य था। किन्तु, आज से ८०० वर्ष पहले की कथा बतलाने का यहाँ स्थान नहीं है। स्पेन की अधीनता में भी यह बहुत दिनों तक था। सन् १५६० ई० से स्वाधीनता के लिए यहाँ बहुत काफ़ी बलवे होते रहे। सन् १७१३ ई० में यह सेवाय के ड्यूक की अधीनता में आ गया। नेपोलियन के ज़माने में यह फ़्रांस की अधीनता में आया और क्रमशः इटैलियन राज्य में मिल गया। किन्तु, इसका श्रेय गैरीबाल्डी को है जिसका नाम इस नगर के समान ही अमर रहेगा। सन् १८६१ से नेपल्स इटली साम्राज्य के अन्तर्गत आ गया और तब से इसकी बहुत ही तरक़्क़ी हुई है।

नेपल्स के बंदरगाह से रेल द्वारा १५ मील के फ़ासले पर इटली का प्राचीन नगर पाम्पियाई[1] है। इसकी विचित्रताओं के

बारे में हम लोग पहले से ही जहाज़ पर अनेकों तरह की बातें सुन कर इसे देखने को अत्यन्त उत्कण्ठित हो रहे थे। हमने

"भाग्य" की सड़क, पाम्पियाई

बंदरगाह से बाहर आकर एक किराये की टैक्सी की। ठहराकर पहले तय कर लेने से दो तीन पौण्ड में टैक्सी तय हो जाती है। स्थान का पूर्ण ज्ञान लाभ करने के लिए एक पथ-प्रदर्शक भी १० शिलिङ्ग में तय करके, हमने साथ ले लिया।

नेपल्स से पाम्पियाई तक की मोटर की सैर बड़ी ही मनोरञ्जक

1. Pompeii.

होती है। रास्ते भर ऐसा मालूम पड़ता है मानो किसी सुन्दर उपवन के कुञ्जों से होकर निकल रहे हों। कहीं कहीं पर बीच में कुछ पत्थर की चट्टानें भी मिलती हैं, जो किसी समय में निकटवर्त्ती विस्यूवियस[1] ज्वालामुखी पर्वत से उसके लावे के साथ निकलकर वहाँ गिरी थी। यह पहाड़ रास्ते से देख पड़ता है, परन्तु वहाँ तक जाने के लिए दूसरा मार्ग है। राह में कछुओं की खाल से बनाये जाने वाले सामान की एक फ़ैक्टरी पड़ती है। इसके बने हुए सामान का काफ़ी बड़ा व्यापार इस नगर में होता है। बहुधा यात्री लोग यहाँ से कुछ न कुछ अवश्य खरीदते हैं। गाइड लोग इस जगह कुछ न कुछ यात्री के गले मढ़ कर फँसाने की चेष्टा करते हैं। हमने भी ७५ लीरा[2] में एक सिगरेट-केस खरीद लिया। बाद में क़रीब क़रीब उसी तरह का सिगरेट-केस शहर के बाज़ार में ५ लीरा में मिला।

हम लोग क़रीब एक घण्टे में पाम्पियाई पहुँच गये। पाम्पियाई का संक्षिप्त परिचय दे देना उचित होगा। इटली के कैम्पानिया नामक प्रान्त का यह प्राचीन नगर है और नेपल्स की खाड़ी से दो मील की दूरी पर विस्यूवियस ज्वालामुखी के चरणों में सारनस

1. Mt. Visuvius.
2. Lira. लीरा = १० पैंस।

नदी के निकट बसा हुआ है। यूनानियों का कथन है कि हेराक्लीज़ नामक यूनानी ने इसे बसाया था। किन्तु, इसके विषय में काफ़ी ऐतिहासिक मतभेद है। इसका वास्तविक इतिहास तो उस समय से प्रारम्भ होता है जब कि ईसा से लगभग ७५ वर्ष पूर्व यह रोम साम्राज्य के अन्तर्गत आ गया था और उस समय भी यहाँ का म्यूनिसपल शासन आजकल की सिटी कौंसिल के समान सार्वजनिक संस्था के अधिकार में था। रोम प्रजातन्त्र के अन्तिम दिनों में यह नगर रोमन सरदारों की विलासिता की भूमि थी और यहाँ का आमोद-प्रमोद इसे उस ज़माने का पेरिस बना चुका था। पाम्पियाई के

पाम्पियाई का ऐम्फ़ीथियेटर

विषय में एक बड़ी रोचक घटना यह बतलाई जाती है कि ईसवी सन् ५६ में यहाँ के नागरिकों तथा बाहर से नगर देखने को आये हुए यात्रियों में बड़ा झगड़ा हो गया था, जिससे दोनों तरफ़ के काफ़ी लोग मरे और घायल हुए थे। इसके दण्ड स्वरूप पाम्पियाई के नागरिकों को १० वर्ष तक नाटक खेलने की मनाही कर दी गई थी। ईसवी सन् ६३ में एक भयङ्कर भूकम्प ने इस नगर को बहुत कुछ नष्ट कर दिया और नागरिक अपनी उजड़ी बस्ती को बसा भी नहीं पाये थे कि ईसवी सन् ७६ में विसूवियस ज्वालामुखी के भयङ्कर विस्फोट ने इसे तहस-नहस कर डाला। युगों से शान्त और सोई हुई यह ज्वालामुखी अपनी नींद से ऐसी जगी कि इसने संसार के अत्यन्त सुन्दर नगरों में से एक प्रधान नगर को मटियामेट कर दिया। अब इस नगर का पुनः निर्माण असम्भव था। किन्तु, जो लोग मरने से

विसूवियस का ज्वालामुखी पहाड़

बच गये थे उन्होंने उस वक्त यहाँ आकर खुदाई की और बहुत कुछ सामान निकाला भी। तब से यह नगर लावा की राख के नीचे दबा पड़ा रहा। इस नगर के ऊपर १८ से २० फ़ीट ऊँची मिट्टी की जो तह बैठ गई थी उसने नगर का नामोनिशान भी इस तरह से मिटा दिया था कि उन्हीं जगहों पर उपजाऊ भूमि में फलों की खेती होने लगी थी। सन् १७४८ ई० में बहुत कुछ जाँच-पड़ताल के बाद इन खेतों की खुदाई की गई और उनके नीचे इस महानगर के भग्नावशेष प्राप्त हुए। सन् १७६३ ई० में बहुत ही नियमितरूप से खुदाई की गई और इसका काम बहुत ही अच्छी तरह से उस समय हुआ जब कि सन् १८०६ से १८१४ तक यह देश फ्रेंच साम्राज्य के अन्तर्गत था। सन् १८६१ से इटैलियन सरकार ने भी बहुत ही वैज्ञानिक ढंग से यह कार्य्य किया और फलस्वरूप आज हमको उस खुदाई के नीचे से निकला हुआ प्राचीन पाम्पियाई देखने का अवसर मिलता है। यहाँ पर इतना मैं और बता देना चाहता हूँ कि जिस समय यह नगर नष्ट हुआ उसकी आबादी २० हज़ार से ज़्यादा नहीं बतलाई जाती। खण्डहरों से प्राप्त हड्डियों की गणना करने से मालूम होता है कि नगर के हज़ारों आदमी उस समय जान से हाथ धो बैठे थे।

अभी तक जितना नगर खोद कर साफ़ किया गया है वह

लगभग एक वर्ग मील से कम न होगा। इञ्जीनियरों का अनुमान है कि अभी नगर का दो-तिहाई भाग नीचे दबा पड़ा है। बहुत-सी इमारतें तो ऐसी मालूम होती हैं। मानों अभी नई बनी हैं। बहुत से मकानों में रंगाई और चित्रकारी भी अभी तक इतनी अच्छी दशा में है कि उनकी तस्वीरें ली जा सकती हैं। हर तरह के पेशेवालों के मकान, पत्थर की सड़कें, गलियाँ, चौराहे, मार्ग बताने के चिह्न,

पाम्पियाई का भग्नावशेष

पुराने ज़माने में यूनानी सभ्यता में माने जाने वाले शकुन और अपशकुन के चिह्न, भद्दे आचरण की तस्वीरें, पत्थर की मूर्त्तियाँ, पाइप, मन्दिर, सार्वजनिक स्थान[1], अदालतें, पार्लियामेण्ट भवन,

1. Public Square.

नगर की बड़ी कोठी[1], नाटक घर, उपवन और पार्क, बड़े लोगों के आनन्द भवन आदि सभी वस्तुयें ज्यों की त्यों ज़मीन के नीचे से निकलती चली आ रही हैं। इस नगर को देखकर ग्रीस[2] और इटली के २००० वर्ष पूर्व की सभ्यता, शिल्पकारी, रहन-सहन आदि का काफ़ी ज्ञान होता है।

सन् १६२५-२६ ई० से इस खुदाई में बहुतेरी अमूल्य वस्तुयें निकल चुकी हैं। उनमें से एक अष्टधातु की बनी हुई अपोलो[3] की मूर्त्ति बहुत ही सुन्दर है। सड़कें अधिकतर सकरी और सीधी चली गई हैं, जो लावा के साथ आई हुई मिट्टी और पत्थर से दबी हुई पड़ी हैं। सबसे ज़्यादा देखने योग्य लोगों के रहने के घर हैं, जो आज भी बतलाते हैं कि २००० वर्ष पूर्व लोगों के रहन-सहन का ढंग क्या था। इन घरों में सभी दर्जे के लोगों के घर हैं। अधिकतर सभी वस्तुयें, यहाँ तक कि वृक्ष और मनुष्य भी जो दबे हुए निकले हैं, कोयले के रूप में परिवर्त्तित[4] हो गये हैं। दस-बारह मनुष्यों की लाशें जो नीचे दबी हुई निकली हैं, बिल्कुल उसी हालत में हैं, जिसमें वे उस समय रहे होंगे, जिस समय यह आकस्मिक विपत्ति

1. City-Hall.
2. Greece.
3. Appolo.
4. Carbonised.

आई थी। कोई भोजन कर रहा है, हाथ में निवाला लिये ही रह गया है, कोई माता बच्चे को दूध पिला रही है और कोई अपनी पत्नी के साथ सो रहा है। ऐसा मालूम होता है मानो ये सब मनुष्य किसी के श्राप से मूर्त्ति के रूप में परिवर्त्तित हो गये हों। यह सब देखकर विस्फोट के समय का वीभत्स, भयंकर दृश्य आँखों के सामने तस्वीर की तरह खिंच जाता है।

जो सामान इस खुदाई से निकला है वह वहीं पर एक अजायबघर की तरह एकत्रित किया जा रहा है। इस संग्रह में बहुत-सी बहुमूल्य और अपूर्व वस्तुयें निकली हैं, जो वास्तव में आश्चर्य-जनक और दर्शनीय हैं।

यहाँ से हमलोग क़रीब दो बजे दिन को जहाज़ पर पुनः वापस आ गये और उसी दिन जिनोआ[1] के लिए रवाना हो गये।

---

1. Genoa.

छठवाँ परिच्छेद

जिनोआ बन्दरगाह से लन्दन

दूसरे दिन, हमारे जहाज़ी सफ़र के अन्तिम स्टेशन जिनोआ में, जो नेपल्स से ३३० मील उत्तर की ओर इटली का प्रसिद्ध नगर और बन्दरगाह है, हमारे जहाज़ ने लंगर डाल दिया। यहाँ उतरकर हम लोगों को स्पेशल ट्रेन द्वारा स्थलमार्ग से लन्दन जाना था। परन्तु अभी ट्रेन छूटने में तीन घण्टे की देर थी, इस अरसे में हम लोगों ने टैक्सी लेकर इस नगर का भी भ्रमण करना निश्चय किया।

जिनोआ में किसी समय यूनानी रहते थे—यह तो उसकी प्राचीन यूनानी-ढंग की क़ब्रों से ही ज़ाहिर हो जाता है। किन्तु, नगर पर, सदियों से फ्रेंच सभ्यता का प्रभाव अधिक पड़ा है। "होली रोमन एम्पायर", स्पेनिश साम्राज्य तथा जर्मन नरेशों ने

इस नगर को अपनाने की काफ़ी चेष्टा की पर, इसकी पराधीनता अल्पकालीन थी। ग्यारहवीं शताब्दी तथा उसके पूर्व ही एक स्वतन्त्र नगर जिनोआ ने कुछ पड़ोस के क़स्बों और ज़िलों पर, उनकी रक्षार्थ छाया के लिए अपना अञ्चल फैलाया। इस नगर की बहुत उन्नति हुई और इसके सौदागर वेनिस वालों के साझे में यूरोप तथा एशिया से व्यापार करते रहे। तदुपरान्त अनुमानतः एक शताब्दी तक फ्रांसीसियों के आधिपत्य में रह कर सन् १५२८ ई० में इस नगर ने पुनः स्वतन्त्रता प्राप्त की, और तब से सन् १७६२ ई० तक यह एक प्रजातन्त्र राज्य रहा, जिसका शासक डाज[1] अर्थात् न्यायाधीश, या क़ाज़ी[2] कहलाता था। सन् १८१५ ई० में यह नगर सार्डीनिया[3] के राजा को दे दिया गया और बाद में सार्डीनिया के साथ ही यह इटली के राज्य में मिल गया।

नगर तथा इसका बन्दरगाह इटली के पश्चिम की ओर जिनोआ की खाड़ी[4] के सिरे पर बसा हुआ है। सन् १६२६-३२ में बना हुआ इसका नगर कोट घेरे में १२ मील लम्बा है और इसमें १२ फाटक लगे हुए हैं। प्राचीन नगर के रास्ते छोटे, तंग और अंधेरे हैं।

---

1. Doge.
2. Special Magistrate.
3. ardinia.
4. Gulf of Genoa.

हैं; परन्तु नई बस्ती के राज-मार्ग सीधे, चौड़े और स्वच्छ हैं, तथा सुन्दर पार्कों और चौराहों से सुशोभित हैं। इस नगर के चारों ओर मीलों तक बस्तियाँ हैं। नगर की दर्शनीय शिल्प-कला के उदाहरण यहाँ के ११वीं शताब्दी से लेकर १६वीं शताब्दी तक के बने आलीशान गिर्जे हैं, जिनके सिंह-द्वारों पर काले और सफ़ेद संगमर्मर की लहरियाँ बनी हुई हैं। १६वीं शताब्दी में निर्मित इस नगर के महल भी बड़े सुन्दर हैं। जिनोआ के प्राचीन गिर्जाघरों के निर्माण का कुछ ढंग फ्रेंच तथा रोमन तरीक़ों का मिश्रण-सा जान पड़ता है। सान्ता मेरिया[1] का गिर्जाघर ११वीं शताब्दी का है। इसकी शिल्प-कला बहुत प्राचीन ढंग की है। इसी प्रकार कुछ १२वीं और १३वीं शताब्दी के भी गिर्जे हैं। सेंट लारेंज़ो का बड़ा गिर्जा[2], जिसका पुनर्निर्माण ११वीं शताब्दी में हुआ था तथा जिसका प्रवेश-संस्कार सन् १११८ ई० में हुआ था, एक बहुत प्राचीन इमारत है। १६वीं तथा १७वीं शताब्दी के बने गिर्जे बड़े विशाल हैं। इनकी भीतरी सजावट देखने योग्य है। भीतर की चित्रकारी तथा बाहर की रंगाई वास्तव में प्रशंसनीय हैं। यहाँ का प्लाज़ो रोज़ो[3] नामक आलीशान महल, जिसको सन् १८७४ ई० में गेलिएरा[4] की डचेज़ ने बनवाया था, एक

1. Santa Maria. 2. The Cathedral of St. Larenzo.
3. Palazzo Rosso. 4. Galliera.

बहुत ही सुन्दर इमारत है। इस इमारत के साथ दान में उसकी चित्रशाला और पुस्तकालय भी मिले थे। इसके अतिरिक्त यहाँ के डाज[1] लोगों के महल, सन् १४७१ ई० में स्थापित विश्वविद्यालय जिसमें अनुमानतः १५०० विद्यार्थी उच्च शिक्षा पाते हैं और ललित-कला-पीठ[2] विशेष दर्शनीय हैं।

एक चहार दीवारी के अन्दर घिरे इस नगर की तंग सकरी गलियाँ, ऊँचे-नीचे चढ़ते-उतरते रास्ते, सीधे ढाल और गहरी नदी को पार करते हुए पुल आदि देख कर यह नगर एक विचित्र उलझा हुआ-सा क़स्बा जान पड़ता है। नगर के बहुत से भागों में तो गाड़ियाँ भी नहीं जा सकतीं और बहुत से उपयोगी रास्ते बहुत सकरे हैं। परन्तु आधुनिक युग में बहुत सी सुन्दर इमारतें, पार्क, सड़कें आदि नई बन गई हैं। स्टेशन के सामने एक सुन्दर इमारत है, जिसके सामने कोलम्बस[3] की एक मूर्ति खड़ी है और उसके सामने अमेरिका घुटनों के बल खड़ा है। यहाँ पर एक सुन्दर संगीतशाला और नाटक-घर भी हैं।

बन्दरगाह में, जिसका क्षेत्रफल अनुमानतः ६०० एकड़ है, बड़े बड़े जहाज़ भीतर तक आ सकते हैं। तट पर गहराई कम से

1. Doge.
2. Academy of Fine Arts.
3. Columbus.

कम ३० फ़ीट है। नगर से लोग अधिकतर दक्षिणी अमेरिका को व्यापार के निमित्त जाया करते हैं। पूर्व से भी काफ़ी व्यापार होता है। यहाँ से इसी नगर का काफ़ी माल निर्यात किया जाता है। नगर में लकड़ी के सामान और रेशम के कई कारखाने हैं। बेल, फ़ीता तथा जड़ाऊ काम भी बहुत अच्छा होता है। जन संख्या ६,०७,६५० है।

यहाँ से हम लोग ओरियण्टल एक्सप्रेस द्वारा लन्दन के लिए रवाना हुए। यूरोप की यह स्पेशल ट्रेन यात्रियों के लम्बे सफ़र के लिए खास तरह की बनी है। इसमें रात को यात्रियों के सोने की व्यवस्था बड़ी सुन्दर है। हर एक आदमी के लिए एक सीट, सोने के कम्पार्टमेण्ट[1] में, जो स्लीपर[2] कहलाते हैं, मिलती है। यह शयनालय बड़े आरामदेह और सुविधाजनक हैं। इसका किराया अलग देना पड़ता है। डिब्बे छोटे किन्तु, जहाज़ के केबिन की बनावट के होते हैं।

जिनोआ से लन्दन अनुमानतः २४ घण्टे का मार्ग है। हम लोग पेरिस[3] पार करने के बाद इंगलिश चैनल[4] के फ्रांसीसी

1. Sleeping Compartment.
2. Sleeper.
3. Paris.
4. English Channel.

बन्दरगाह कैले[1] करीब ११ बजे पहुँचे। यहाँ से फिर स्टीमर पर चढ़ कर इंगलिश चैनेल पार करना था। जहाज़ छूटने को तैयार ही खड़ा था, जिस पर सवार होकर हम लोग लगभग एक बजे दोपहर को डोवर[2] पहुँचे। यह बन्दरगाह इंगलैण्ड आने वाले जहाज़ों के लिये चुङ्गी का बन्दरगाह[3] है। यहाँ पर हर एक जहाज़ को रुकना पड़ता है और कस्टम आफ़िसरों द्वारा बड़ी कड़ी जाँच होती है। हर एक सामान पर कस्टम का निशान लगवाया जाता है। यहाँ पर मुझसे एक ग़लती हो गई। कस्टम आफ़िस में दूरबीन कन्धे पर डाले रहने के कारण हम उस पर कस्टम का निशान लगवाना भूल गये। केवल इस ज़रा सी ग़लती का परिणाम यह हुआ कि मुझे आध घण्टे तक ज़िल्लत व परेशानी उठानी पड़ी। वह तो कहिए कि मुश्किल से छुटकारा मिल गया अन्यथा जुर्माना हो जाना निश्चित था। जाँच खतम हो जाने के बाद हम लोग ट्रेन द्वारा लन्दन के लिए रवाना हुए और उसी दिन संध्या को लन्दन पहुँच गये।

---

1. Calais.
2. Dover.
3. Custom Port.

सातवाँ परिच्छेद

लन्दन

स्वदेश छोड़े पूरे तेरह दिन हो चुके थे। विदेश का चमकता चेहरा मातृभूमि की धूमिल काया को नहीं भुला सकता था। रह-रहकर अपने देश की लहराती गंगा और उपवनों का छलकता यौवन नेत्र के सामने उपस्थित हो जाता और चित्रपट की तरह एक-एक कर सभी स्वजनों का मुस्कराता मुख दिखाई पड़ने लगता। हृदय इतना गद्‌गद हो जाता था कि नेत्रों में पानी छलककर सामने का दृश्य धुँधला कर देता। जन्मभूमि का ऐसा ही कल्पनामय दृश्य देखते देखते मेरी स्थूल दृष्टि के सम्मुख लन्दन का तट आ गया और सूक्ष्म दृष्टि ने काम करना बन्द कर दिया। इस नगर को देखते ही, इसकी रेखा-मात्र से चित्त में एक अजीब चञ्चलता व्याप्त हो गई और उसकी सुन्दरता या नवीनता की ओर आकर्षित

होने के पहले मन में एक कम्पन-सा हुआ—"यही नगर आज डेढ़ सौ वर्ष से हमारे देश को गुलाम बनाये हुए है ?" क्षोभ और ग्लानि ने मन को ऐसा विचलित कर दिया कि यदि जहाज़ के अंग्रेज़ साथियों के घर पहुँचने की खुशी मुझे आकर्षित न करती तो मैं काफ़ी देर तक लन्दन के प्रति क्रोध करता रहता।

किन्तु, लन्दन आ गया और तट पर उतरते-उतरते लोगों के चेहरे पर छिटकी हुई एक अजीब शान्ति, नियम-परायणता तथा मौन-स्वागत मुझे अपनी ओर खींचने लगा। यही वह नगर है जिसने संसार को किसी समय अपनी कठपुतली बना रखा था। इसी नगर में संसार के महान राजनीतिज्ञ तथा महापुरुषों का उद्भव और अभिनय होता था और होता रहता है। विश्व की वर्त्तमान प्रगति में इस नगर का कितना बड़ा हाथ है! संसार का इतिहास लन्दन के हाथों कितना अधिक लिखा गया है!

मैंने लन्दन को, अपनी दो बार की यूरोप-यात्रा में, काफ़ी अच्छी तरह से देखा है और मुझको इसकी दो विशेषतायें नहीं भूलतीं। इमारतों से लेकर रहन-सहन में भी, यहाँ अब भी प्राचीनता को काफ़ी आदर की दृष्टि से देखा जाता है। लन्दन के कई अच्छे बड़े मकानों में, जो सम्पन्न व्यक्तियों के हैं, "लिफ़्ट" तक न मिलेगी और इसके अलावा मैंने तो एक आदरणीय महिला को मोमबत्ती

के लैम्प को बड़े गौरव के साथ इस्तेमाल करते देखा। अमेरिका में यह एक खब्त है कि पुराने मकानों को गिराकर नये से नये तर्ज़
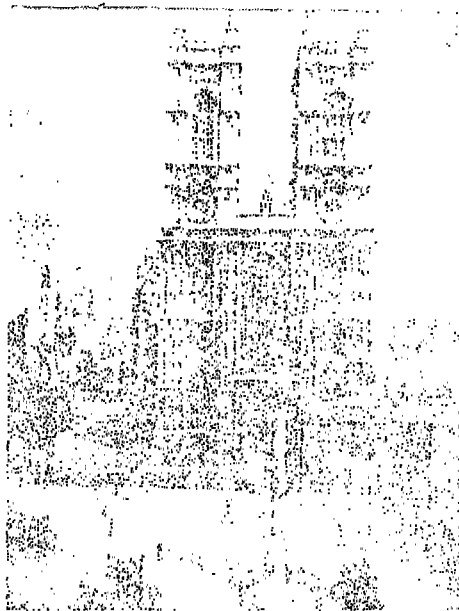
वेस्टमिनिस्टर एबे, लन्दन

का मकान बने। लन्दन-वासी अपने गिरते हुए पुराने मकान को भी नहीं गिरने देना चाहते।

दूसरी विशेषता यहाँ के रहने वालों के निजी जीवन से सम्बन्ध रखती है। लोग इतने फुर्तीले, तहज़ीब-शुदा और नियम-परायण होते हैं कि उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। खास बात यह है कि अपरिचित अंग्रेज़ कुछ रूखा-सा मालूम होता है वह फ्रेंच की तरह बकवादी तथा शीघ्र मित्रता करने वाला नहीं होता। किन्तु समय का सदुपयोग और कार्य्य करने के समय उसका अच्छाई के साथ सम्पादन उसकी विशेषता है। अंग्रेज़ भावुक कम तथा दीर्घसूत्री अधिक होता है। फ्रेंच भावुकता में बहुत बढ़ा-चढ़ा और बड़ा मिलनसार होता है। अंग्रेज़ में स्वाभिमान तथा अहम्मन्यता भी कुछ मालूम पड़ती है। किन्तु स्वयं हमारे ऊपर अंग्रेज़ी शासन के कारण ऐसी अंग्रेज़ी छाप लग गई है कि हम एक अंग्रेज़ को जल्दी समझ सकते हैं, चीनी और जापानी को देर में।

अस्तु, लन्दन में दर्शनीय स्थानों की कितनी प्रचुरता है, यह लिखने से अधिक देखने से सम्बन्ध रखता है। सेण्ट जेम्स पैलेस, वेस्टमिनिस्टर एबे, बकिंघम पैलेस, सिनोटॉफ़—एक से एक सुन्दर और दर्शनीय स्थान हैं।

लन्दन की ऐतिहासिक महत्ता

अस्तु, लन्दन के विषय में कुछ ऐतिहासिक बातें भी जानना ज़रूरी हैं, क्योंकि बिना इसके जाने, संसार के इस प्रधान नगर की

महत्ता हम नहीं समझ सकते। लन्दन के सेण्ट जेम्स पैलेस या बकिंघम पैलेस ही उसके बहुत ही रोचक इतिहास को अपने गर्भ में छिपाये हुए है।
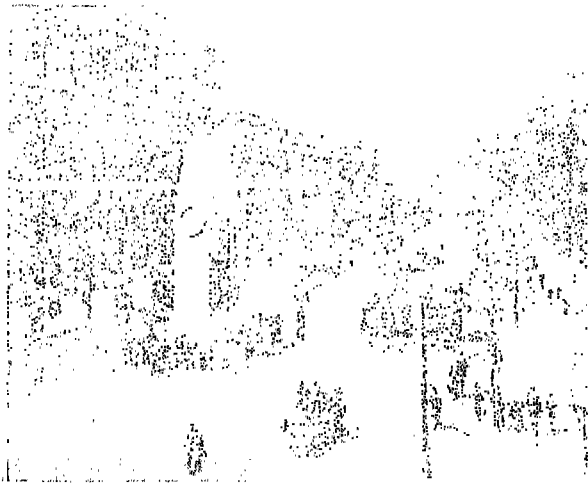
लन्दन का सिनोटॉफ़

लन्दन के विषय में जो थोड़े बहुत ऐतिहासिक प्रमाण मिलते हैं, उनसे यह अन्दाज़ा लगाया जाता है कि इस नगर की स्थापना ईसा की पहली शताब्दी में हुई थी, जब रोमन लोगों ने ब्रिटेन पर आक्रमण करके इस देश को अपने आधिपत्य में ले लिया था इस नगर की भौगोलिक स्थिति ही इसकी उन्नति का विशेष कारण

हुई। पहले जूलियस सीज़र ने थेम्स का मुहाना पार करके इस देश में प्रवेश किया था, परन्तु उसने अपने आक्रमण के विषय में लन्दन का कहीं भी ज़िक्र नहीं किया है। इससे यह प्रतीत होता है कि
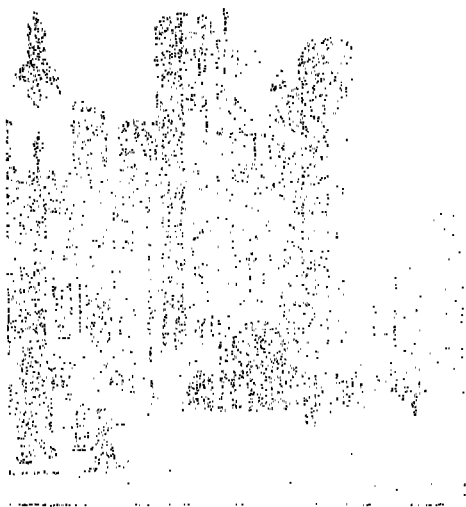
सेण्ट जेम्स पैलेस, लन्दन

उस समय लन्दन का अस्तित्व ही नहीं था। नगर के विषय में

पहले पहल दूसरी शताब्दी के टैसीटज़[1] नामक एक लेखक के लेख में ज़िक्र है। वह लिखता है कि सन् ६१ ई० में थेम्स के मुहाने पर यह स्थान अधिकतर सौदागरों के आने-जाने का केन्द्र था।

सन् ४३ ई० में जब समूचा दक्षिण-पूर्वीय ब्रिटेन रोमन लोगों के आधिपत्य में चला गया, लन्दन पर भी रोमन लोगों का अधिकार हो गया। प्राचीन लन्दन के पुल के लकड़ी के खम्भे, रोमन

बकिंघम पैलेस पर सन्तरी बदले जा रहे हैं

लोगों के सिक्के और बड़े बड़े तमगे, बहुत से टूटे हुए खपरैलों का

1. Tacitus.

ढेर और बर्तन आदि जो थेम्स[1] नदी की सतह में मिले हैं उपर्युक्त अनुमान का समर्थन करते हैं। रोमन-युग के जो कुछ चिह्न हैं, वे आज पृथ्वी के नीचे १२ फ़ीट से १६ फ़ीट तक की गहराई में दबे पड़े हैं। रोमन लोगों ने इस नगर के चारों ओर एक दीवार का घेरा बनाया था, जिसके चारों ओर एक गहरी खाई खोदी गई थी। इस दीवार की ऊँचाई के बारे में कुछ नहीं मालूम है, परन्तु इसके अवशिष्ट भग्न अंशों के देखने से पता चलता है कि यह दीवार ८ फ़ीट मोटी रही होगी। दीवार के निकट निकले हुए ढेर में जो चिह्न मिलते हैं, उनसे यह मालूम होता है कि यह नगर पहली शताब्दी में निर्माण किया गया था। इससे यह प्रमाणित होता है कि लन्दन को रोमवालों ने कार्नहिल[2] के पास एक चौकोर बस्ती के रूप में बसाया था जिसके ३२४ एकड़ क्षेत्रफल के चारों ओर एक नगरकोट बनाया गया था। इस प्राचीन काल के नगर में बने हुए मकानों की आज एक भी दीवार नहीं देख पड़ती और न उस काल की इमारतों का एक भी पत्थर पाया जाता है। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि प्राचीन रोमन-लन्दन के मकान और इमारतें अधिकतर ईंटों और लकड़ी की बनी थीं, क्योंकि पत्थर केण्ट[3] और

1. Thames. 2. Cornhill.
3. Kent.

सरे[1] के दूर-स्थित स्थानों से ही लाया जाता था। बहुत से प्राचीन मृत मनुष्यों के स्मारक, जो सुन्दर शिल्पकला-पूर्ण वेदियों और क़ब्रों में पाये जाते हैं, अष्टधातु की बनी कारीगरी की मूर्त्तियाँ, शतरंजी फ़र्श की जड़ाई, मकान को गरम रखने के लिए ज़मीन के भीतर की अंगीठियाँ[2], घरेलू प्रयोग के तथा दिखावे के बर्तन तथा बहुमूल्य मीना और पच्चीकारी की वस्तुयें, जो यहाँ के लन्दन म्यूज़ियम[3] तथा ब्रिटिश म्यूज़ियम[4] में पाई जाती हैं, रोमन-काल के लन्दन की प्राचीन सुन्दरता और गौरव को सिद्ध करती हैं। एक रोमनघर का भग्नावशेष बिलिंग्स गेट[5] के निकट कोल एक्सचेंज[6] के नीचे अब भी जैसे का तैसा रखा हुआ है।

रोमन-काल के बाद जब सैक्सन और डेनिश[7] आक्रमण हुआ उस समय के लन्दन का हाल किसी विशेष लेख या चिह्न के अभाव के कारण अज्ञात है। यहाँ तक कि सन् ५६७ ई० तक लन्दन का नाम भी सुनने में नहीं आता था। सातवीं शताब्दी में लन्दन में एक टकसाल खोली गई, परन्तु इससे अधिक कुछ पता नहीं चलता है। इस नगर में ७वीं और ८वीं शताब्दी में तीन बार आग

1. Surrey.
2. Hypocausp.
3. London Museum.
4. British Museum.
5. Billings Gate.
6. Coal Exchange.
7. Saxon and Danish.

लगी तथा सन् ६८२ ई० में फिर यह नगर जल गया। ६वीं और १०वीं शताब्दियों में निरन्तर डेनिश[1] लोगों के आक्रमण होते रहे, परन्तु इस नगर ने बड़ी वीरता से बराबर आत्म-रक्षा की। सन् १०८७ ई० लन्दन में फिर आग लग गई और नगर का एक बड़ा अंश जलकर खाक हो गया। लन्दन का पुनर्निर्माण हुआ। इसी बीच में यहाँ की प्रजा ने हेनरी प्रथम[2] को राजा चुन लिया। तत्पश्चात् लन्दन के मेयरों[3] और ट्यूडर राजाओं[4] के हाथ में यह नगर उत्तरोत्तर सम्मृद्धि के शिखर पर चढ़ता गया। सत्रहवीं शताब्दी में लन्दन को दो बड़ी विपत्तियों का सामना करना पड़ा। एक तो सन् १६६५ ई० की भयङ्कर महामारी का प्रकोप था जिसमें लन्दन के चारों ओर की बस्ती वीरान हो गई। राजा लन्दन को छोड़कर जून के महीने में भाग गये और दूसरे वर्ष फ़रवरी के महीने में लौटे। दूसरी मुसीबत इस महामारी के दूसरे वर्ष पड़ी; यह थी भयङ्कर आग[5]। अभी लन्दन से प्लेग साफ़ भी न हो पाया था कि दूसरे वर्ष १६६० ई० में दूसरी सितम्बर, रविवार, को एक बजे दोपहर के समय एक नानबाई की दूकान में आग लगी। तीन चार दिन तक तेज़ हवा चलती रही, और सारा नगर स्वाहा हो गया। पुनर्निर्माण का

1. Danish.
2. Henry I.
3. Mayors.
4. Tudar kings.
5. The Great Fire.

कार्य्य १७वीं शताब्दी के बाद तक जारी रहा और फिर असली नगर बसाया गया।

लन्दन की व्यापारिक महत्ता के दो कारण हैं। एक तो यह बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान पर बसा है। एक टापू का बन्दरगाह तथा राजधानी भी होने के कारण इसे उत्तरोत्तर महत्ता प्राप्त होती गई। बृटिश नौ-सेना की वृद्धि से नगर और भी उन्नति को प्राप्त हुआ। बृटिश साम्राज्य की वृद्धि के साथ साथ उसके व्यापार की अद्भुत् वृद्धि हुई। अतएव नगर और भी फला-फूला। ब्रिटेन की महत्ता का वास्तविक विकास महारानी ऐलिज़बेथ के समय हुआ था। किन्तु, उसके साम्राज्य की सर्वोपरि शक्ति महारानी विक्टोरिया के शासन-काल में स्थापित हुई थी। अतएव, लन्दन के महत्व का श्रेय दो महारानियों को है। इन दो महारानियों में भेद इतना ही है कि ऐलिज़बेथ स्वच्छन्द शासक थी। विक्टोरिया को ग्लैडस्टन तथा डिज़रेली ऐसे महापुरुषों की कड़ी प्रजातंत्रीय नीति का अनुसरण करना पड़ता था। पर यह भी सत्य है कि ऐसे धुरंधर प्रधान मंत्रियों के होते हुए भी, विक्टोरिया ने काफ़ी आज़ादी से काम किया और उनकी मृत्यु के बाद बृटिश राजघराने का शासन-कार्य्य में महत्व तथा आवाज़ एक प्रकार से समाप्त हो गई।

व्यापार की उन्नति के साथ महाजनी का अभिन्न सम्बन्ध है।

इस नगर में संसार के सबसे अधिक महत्वशाली बैंक आफ इङ्गलैण्ड[1] की स्थापना होने के पूर्व का संक्षिप्त इतिहास बड़ा रोचक और उल्लेखनीय है। लन्दन नगर में व्यापारिक लेन-देन की उत्तरोत्तर वृद्धि के कारण व्यापारियों को नगर में तैयार रुपया[2] रखने की आवश्यकता अनिवार्य जान पड़ने लगी। अतएव वे लोग लन्दन के सुनारों के पास रुपया जमा करने लगे। रुपये के बदले में इन्हें एक रसीद मिल जाती थी, जिसे दिखा कर यह उस रुपये को किसी समय भी निकाल सकते थे। इस प्रकार लेन-देन के बढ़ने से बैंक के जमा[3] और निकालने[4] के खाते की नींव पड़ी। रुपये की रसीद का रूप बदल कर बैंक नोट[5] हो गया। चेक-प्रथा[6] का प्रचार सन् १६७० ई० से आरम्भ होता है, जिस वर्ष में ११ जुलाई को विलहेल[7] ने पहला चेक लिखा था।*

1. Bank of England.
2. Ready Cash.
3. Deposit.
4. Issue.
5. Bank Note.
6. Cheque System.
7. Will Hale.

*नोट—पहला चेक इस प्रकार था :—

"मि० होर,

कृपा करके इसके हरकारे मि० विलमोर्गन को चौवन पौण्ड,

अस्तु, बैंक आव् इङ्गलैण्ड के संस्थापन के दो कारण थे। एक तो सुनारों पर अविश्वास और दूसरे बृटिश सरकार की द्रव्य-हीनता। इनमें दूसरा कारण ही मुख्य माना जाता है। बारह लाख पौण्ड के ऋण के बदले में, जो सरकार को महाजनों से मिला,

---

दस शिलिङ्ग और दस पेंस दे देना, और उसके लिए रसीद ले लेना।

आपका प्रिय मित्र
विल हेल

मि० रिचर्ड होर को
'चीप साइड में गोल्डन बाटल के पास'

Mr. Hoare,

Pray pay to the bearer hereof Mr. Will Morgan fifty-four pounds, ten shillings and ten pence and take the receipt for the same.

Yours loving friend
WILL HALE

for Mr. Richard Hoare
at the 'Golden Bottle in Cheap side'

उसने इस बैंक में उन्हें बहुमूल्य अधिकार दे दिये, जो उत्तरोत्तर बढ़ते ही गये। अठारहवीं शताब्दी में प्राइवेट बैंकिङ्ग[1] का सन् १७०८ ई० के बैंक आव् इङ्गलैण्ड ऐक्ट[2] द्वारा अन्त कर दिया गया। पहले बैंकों का आपसी भुगतान[3] हमारे देश की तरह हर एक बैंक को चेक देकर आदमी भेजने से होता था। १८वीं शताब्दी में लन्दन में एक 'लन्दन क्लियरिङ्ग हाउस'[4] भी खुल गया। इस प्रकार इस बैंक का, जिसके कारण लन्दन संसार का सबसे बड़ा महाजनी केन्द्र प्रसिद्ध होगया, पूर्ण विस्तार होगया।

महायुद्ध-काल में लन्दन ने धन और जन दोनों की अत्यधिक हानि उठाई। इस नगर पर सन् १९१५ ई० की ३१ मई से सन् १९१८ ई० की २०वीं मई तक बराबर हवाई जहाजों के हमले होते रहे। इस अवधि में इस नगर पर ३५५ आग के गोले और ५९७ बम के गोले गिराये गये जिससे अनुमानतः २०,४२,००० पौण्ड की हानि हुई तथा १७४ इमारतें स्वाहा होगई और ६१७ इमारतों का अंगभंग हो गया। ५२४ मनुष्य मर गये और १,२६४ लोग घायल हुए। महायुद्ध के बाद नगर का बहुत कुछ पुनर्निर्माण हुआ है।

लन्दन इङ्गलैण्ड तथा बृटिश साम्राज्य की राजधानी

1. Private Banking. 2. Bank of England Act.
3. Clearance. 4. London Clearing House.

होने के अतिरिक्त सामुद्रिक और हवाई जहाज़ों का भी अड्डा है। संसार के उत्पादक व्यापार तथा आर्थिक वितरण[1] और व्यापारिक लेन-देन का भी मुख्य केन्द्र है। इसके अतिरिक्त यह राजनीति, विद्या, साहित्य, विज्ञान और कला का भी केन्द्र है। स्वाधीनता प्रेमी अंग्रेज़ों ने अपने नगर के अञ्चल में संसार भर के क्रांतिकारी विद्वानों को सम्मान व शरण दिया। अतएव इस नगर में हर एक देश की सभ्यता तथा विद्या का अच्छा सम्मिश्रण भी हुआ है। नगर थेम्स[2] के मुहाने के उत्तरीय तट पर बसा हुआ है। थेम्स नदी के ऊपर कई पुल हैं। टावर ब्रिज[3] समुद्र के सब से निकट का पुल है और इसके बाद लन्दन ब्रिज[4] है, जो सब से प्राचीन पुल है। इस पुल के नीचे सुरंगें हैं।

तीन लन्दन

नगर में तीन लन्दन हैं। असली लन्दन ठीक एक वर्ग मील के क्षेत्र में है। यह एक व्यापारिक क्षेत्र है। यह मैंशन हाउस[5], बैंक आव् इङ्गलैण्ड[6] और रॉयल इक्सचेंज[7] के निकट का स्थान है। इसकी प्राचीन इमारतों में टावर[8], गिल्ड हॉल[9], चार्टर

1. Economic distribution.
2. Thames.
3. Tower Bridge.
4. London Bridge.
5. Mansion House.
6. Bank of England.
7. Royal Exchange.
8. Tower.
9. Guild Hall.

हाउस[1] और मन्दिर[2] कहलाने वाली इमारतों के समूह कहे जा सकते हैं। नई इमारतों में सेण्ट पाल[3] का बड़ा गिर्जाघर और दूसरे गिर्जे जो उपर्लिखित आग[4] लगने के बाद रेन[5] नामक कारीगर द्वारा बनाये गये थे और उसके भी बाद की बनी नई इमारतों में
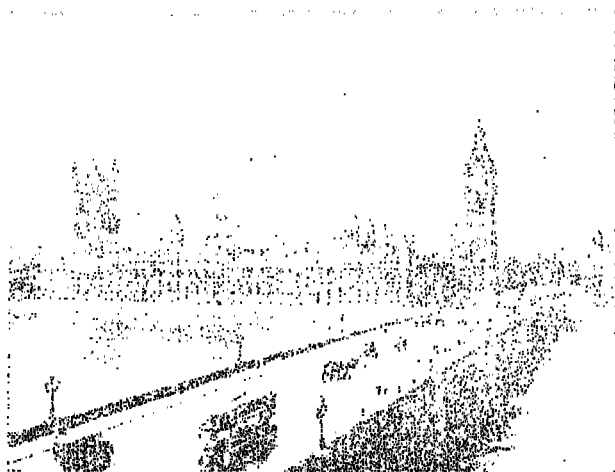
वेस्टमिनिस्टर का पुल और पार्लियामेण्ट के भवन

राज महलों सरीखे बैंकों, बीमा कम्पनियों, जहाज़ी कम्पनियों, समाचार पत्र तथा अन्य व्यापारिक कम्पनियों के दफ़्तर दर्शनीय हैं।

1. Charter House.
2. Temple.
3. S. Paul's Cathedral.
4. The Great Fire.
5. Wren.

इस नगर का शासन एक लार्ड मेयर[1], शेरिफ़ों[2], कामन कौंसिल[3] और लिवरी कम्पनियों[4] द्वारा उसी प्रकार अब भी होता है जैसे मध्य युग[5] में होता था।* इनसे दो मेम्बर चुनकर पार्लियामेण्ट[6] में भेजे जाते हैं। यहाँ की मेयॉरेल्टी[7] के पास अपनी पुलिस फ़ोर्स और म्युनिसिपल बाज़ारों के अतिरिक्त अन्य बहुमूल्य जायदादें भी हैं। कॉवेन्ट गार्डेन[8] इसकी सीमा में नहीं है और नगर से बाहर है। प्राचीन लन्दन के फाटकों की जगह, उनके नाम की दो सड़कें लडगेट[9] तथा बिशप्स गेट[10] पुराने ज़माने की याद दिलाती हैं।

1. Lord Mayor.
2. Sheriffs.
3. Common Council.
4. Livery Companies.
5. Middle Ages.
6. Parliament.
7. Mayorality.
8. Covent Garden.
9. Ludgate.
10. Bishops Gate.

*The constitution of the livery companies usually embraces (1) the court which includes the master and wardens and is the executive and administrative body (2) the livery of middle class, being the body from which the court is elected, and (3) the general body of freemen, from which the livery is recruited. Some companies admit women as freemen. The freedom is obtained by patrimony (by any person over 21 years of age born in lawful wedlock after the admission of his father

राजकाज सम्बन्धी लन्दन, जिसकी स्थापना सन् १८८८ ई० में हुई थी, वेस्टमिनिस्टर तक फैला हुआ है। इस प्रांत का क्षेत्रफल ११७ वर्ग मील है और यह हैम्पस्टेड[1] से लेवीशेम[2] और हैमर्सवर्थ[3] से वूलविच[4] तक फैला हुआ है। इसकी जन-संख्या ४३,६६,८२१ है।

नगर से बाहर तीसरा लन्दन है, जिसे बड़ा लन्दन[5] कहते हैं। यह हिस्सा केण्ट[6], एसेक्स[7], मिडिल सेक्स[8] और सरे[9] तक तथा हर्टफोरशायर[10] और बकिंघमशायर के भीतर तक चला

---

to the freedom), by servitude (by bonafied apprenticeship to a freeman of the company) or by redemption which is in some cases wisely allowed only when an ancestor in the main line has had the freedom which his descendants have omitted to or been unable to acquire. सम्राट पंचम जार्ज, पैत्रिक उत्तराधिकार द्वारा ऐसी ही एक 'मर्सर्स कम्पनी' (Mercers Company) के सदस्य हैं। मर्सर्स कम्पनी वाले भाग की जन संख्या १०,९९६ है।

1. Hampstead.
2. Lewisham.
3. Hammersworth.
4. Woolwich.
5. Greater London.
6. Kent.
7. Essex.
8. Middle Sex.
9. Surrey.
10. Hertfordshire.

गया है। यह भाग चैरिंग क्रास[1] के १५ मील चारों ओर बसा हुआ है। इसका क्षेत्रफल ६६२ वर्ग मील तथा जन संख्या ८,०२,८१८ है।

सामाजिक, राजनैतिक तथा व्यापारिक तीनों दृष्टियों से लन्दन एक केन्द्रीय स्थान है। इसकी फ़ैक्टरियाँ ल्यूटन[2] से गिल्डफोर्ड[3]
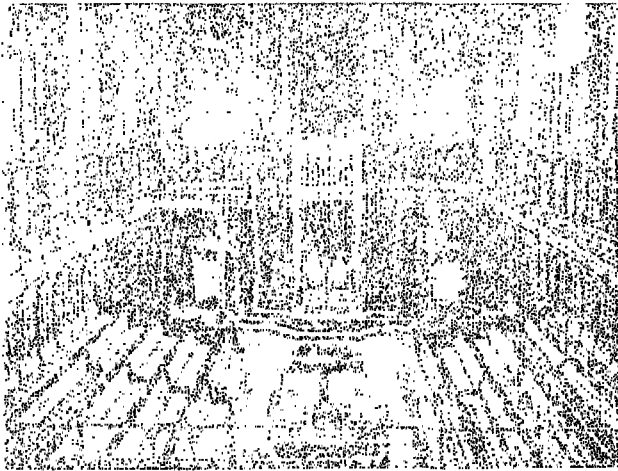
हाउस आव् लार्ड्स का भीतरी दृश्य

1. Charing Cross.
2. Luton.
3. Guildford.

और स्लो[1], डेगेनहेम[2] तथा एरिथ[3] तक फैली हुई हैं। इस नगर में चार बड़ी रेलवे कम्पनियों के हेडक्वार्टर हैं। सम्पूर्ण नगर का क्षेत्रफल ७०० वर्ग मील है और जन-संख्या अनुमानतः ८०,००,००० है। लन्दन वैध राजतंत्र प्रणाली के साथ ही व्यक्तिगत स्वाधीनता का उच्चतम प्रतीक है। इसके हाउस आव् लार्ड्स और हाउस आव् कामन्स संसार की सर्व श्रेष्ठ व्यवस्थापक सभा हैं जिनकी महत्ता पर्य्याप्त रूपेण प्रकट है।

---

1. Slough.
2. Dagenham.
3. Erith.

आठवाँ परिच्छेद

लन्दन की प्रगति

लन्दन के अत्यधिक व्यापारिक महत्व का कारण उसका बैंक आव् इङ्गलैण्ड[1] है। संसार के सभी विदेशी व्यापार करने वाले व्यापारियों के लेन-देन तथा हुण्डी के भुगतान का यही बैंक केन्द्र है। विगत विश्वव्यापी आर्थिक संकट से इस देश की महाजनी साख पर बड़ा धक्का लगा था, जिसके कारण विवश होकर स्टर्लिङ्ग[2] का भाव सोने के भाव से गिरा देना पड़ा। फलतः इङ्गलैण्ड सन् १९३१ ई० में सोने की विनमय नीति[3] से पृथक् घोषित हो गया। उस समय सभी बैंकों का कुछ न कुछ लेना-देना यहाँ था ही। नतीजा यह हुआ कि जिसका रुपया जमा था उसे बारह ही आने मिले और इस बैंक की सत्यता की साख बहुत कुछ कमज़ोर पड़ गई। वह समय ही ऐसा

---

1. Bank of England. 2. Sterling.
3. Gold Standard.

था जब सभी देशों के बैंक अपने ताले बन्द कर रहे थे। सोने का भाव हवाई किलों की मीनार पर चढ़ा था। देशों में परस्पर लेन-देन की रुकावट होने लगी थी। उधर, ठोस व्यापार के स्थान पर सट्टेबाज़ी के अधिक बढ़ने के कारण पारस्परिक लघुकालीन ऋणों[1] का भार उत्तरोत्तर बढ़ रहा था। संसार के भिन्न भिन्न देशों में 'हाय सोना, हाय सोना' मचा हुआ था। जिसे देखो वही अपने माल के बदले में सोना माँगता था, सोना महँगा था तथा अन्य सभी चीज़ें सस्ती थीं, मज़दूरी और मूल्य के भाव गिर गये थे। ऐसा जान पड़ता था मानो सभी वस्तुयें आभाहीन हो गई हैं, केवल सोना ही फूला हुआ चमक रहा है और सब वस्तुओं को प्रकाश प्रदान कर रहा है। यह परिस्थिति अभी भी पूरी तरह बदली नहीं है। स्टर्लिङ्ग और सोने का सम्मिलन अभी तक नहीं हो पाया है। चीज़ों का मूल्य १९२९ की दर तक नहीं पहुँचा है तथा सोने की खींच अभी तक जारी है। जो हो, इस परिस्थिति में हमारा भारत तो तबाह हो गया। उसका अरबों का सोना विदेश बह गया। पर, बैंक आव् इङ्गलैण्ड को भी, ब्रिटेन की राजनैतिक परिस्थिति के कारण हानि उठानी पड़ती है। फिर भी, संसार में यह सबसे अधिक सम्मानित बैंक है।

1. Short term loans.

अस्तु, मैं इस समय उस नगर में था जिसके विषय में वहाँ पहुँचने के पूर्व केवल थोड़ा बहुत पढ़ा या सुना ही था। आज आँखों से उसे देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। अतएव मैंने बड़ी बारीकी और छानबीन के साथ इस नगर को देखने-पढ़ने का निश्चय किया था।

स्वागतार्थ हमारे मित्रगण पहले से ही स्टेशन पर मौजूद थे। हमारी और मित्रों की यह राय हुई कि पहले सीधे होटल ही चलना ठीक और सुविधाजनक होगा। एक पखवारे की यात्रा से तबियत परेशान थी ही। होटल पहुँचते पहुँचते उद्वेग से चित्त व्याकुल हो उठा। अनुमानतः दो घण्टे आराम किया, हाथ मुँह धोकर कपड़े बदले, तब कुछ जी स्वस्थ हुआ। फिर भी पहले दिन की शाम को घूमने जाने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी।

किन्तु, मित्रों के आग्रह से तथा हिन्दुस्तानी भोजन मिलने के लोभ से मैं होटल से बाहर आया और मोटर बस द्वारा हिन्दुस्तानी भोजनालय पहुँचा। भोजन हिन्दुस्तानी होते हुए भी हिन्दुस्तानीपन से कोसों दूर था। कहाँ हमारे घरों की भुनी, बघारी, छौंकी, मसालेदार सुगन्धित दाल और तरकारियों का स्वाद और कहाँ इस अर्द्ध विलायती-भारतीय ढंग के भोजनालय का हिन्दुस्तानी भोजन? दोनों की कोई समता नहीं। फिर भी अंगरेज़ी लूनासाग, रोटी, चाय

और मक्खन से यह कहीं बेहतर था। बहुत दिनों बाद देशी ढंग का भोजन पाकर बहुत कुछ तृप्ति हुई।

भोजनोपरान्त मित्रों की राय हुई कि चहलक़दमी करते हुए लौटें। लन्दन नगर में मेरी पहली रात कितनी भावावेश-पूर्ण बीती थी—आज भी उसकी कल्पना करते ही चित्त में आवेग और शरीर में रोमाञ्च हो आता है। खुले होठों में खामोशी और विस्फारित नेत्रों में आश्चर्य भरे हुए मैं अर्द्ध चेतनावस्था में विक्षिप्त की तरह अपने मित्र के हाथ के सहारे चला जा रहा था। जब सड़क पार करने की आवश्यकता होती थी, तो वही बिचारे सम्हाल कर पार करा देते थे। वास्तव में लन्दन नगर रात की अत्यन्त तेजमय रोशनी में कुमुदनी की तरह खिल जाता है। इसके प्रकाश की पंखुड़ियाँ चंचल होने के कारण ऐसी जान पड़ती थीं, मानो प्रकाश-सरोवर की कुमुदिनी हवा लगने से आगे पीछे डोल-सी रही हो। रात्रि में नगर की सभी वस्तुएँ, दूकानें और इमारतें तथा आकाश में भी एक मनोमोहक रंग-सा चढ़ जाता है; एक अजीब स्पन्दन-सा होने लगता है। दिन के लन्दन और रात के लन्दन में ज़मीन-आसमान का अन्तर है। दिन का लन्दन एक कामकाजी, हलचल और भीड़ से भरा, मोटर, ट्राम और गाड़ियों तथा मशीनों के सामूहिक शोर से गुञ्जित रहता है तथा रात का लन्दन न जाने अपना बुढ़ापा कहाँ छिपाकर एक चपल तरुणी

का रूप धारण कर लेता है। दिन को जो हवा शक्ति, कर्त्तव्य-शीलता और समय की उपयोगिता की भावना प्रोत्साहित करती है, रात को वही ललित कलाओं की मादक लहरें तथा प्रकम्पन पैदा करती है।

घूमते-घूमते हम लोग पिकैडिली सरकस पहुँचे। भारत जैसे ग़रीब देश का यात्री इस विचित्र तथा नाना भाँति के रंगीन प्रकाश-किरणों के ऐन्द्रजालिक प्रदर्शन को देख कर आश्चर्य-चकित रह जाय तो आश्चर्य की क्या बात? क्षण क्षण में रङ्ग बदलती हुई,
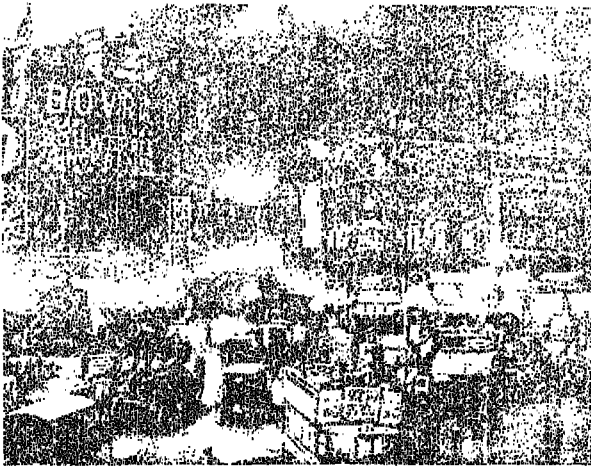
पिकैडिली सरकस (लन्दन) का एक दृश्य

तरह तरह के दृश्यों की क्षणभंगुर रंगीन छाया-पट की मूर्त्तियाँ आँखों में चकाचौंध कर रही थीं। पिकैडिली के चौराहे पर कई सड़कों का चौराहा है और इसीलिए इसे पिकैडिली सरकस कहते हैं।

एक साथ इतनी आश्चर्यजनक वस्तुओं को देख कर मुझे कुछ मानसिक-शैथिल्य-सा प्रतीत होने लगा, यहाँ तक कि संसार की सब से बड़ी दूकानों में से एक स्टोर सेल्फ़िजेज़ की सुन्दर दीपमालिका-सी आलोकित अट्टालिका के सामने पहुँचते पहुँचते मेरा जी बैठने-सा लगा और एक क़दम भी आगे चलना दूभर हो गया। लाचार एक किराये की टैक्सी की और होटल वापस आया।

लन्दन की पूरी परिक्रमा करना कुछ कठिन-सा है। इसके लिए केवल समय अथवा धन ही नहीं किन्तु साहस की भी आवश्यकता है। मिसाल के लिए, यहाँ चाइनीज़ का मुहल्ला है। यहाँ पर पुलिस का काफ़ी प्रबन्ध होने पर भी बिना जेब कटाये बाहर निकल आना कठिन है। इकेले-दुकेले किसी का इस मुहल्ले से निकल जाना बड़ी हिम्मत का काम है।

लन्दन के दो मुख हैं। एक तो उसका वह भाग जो राजनैतिक क्षेत्र कहलाता है। इसकी चमक-दमक तथा सफ़ाई देख कर

आपको सहसा विश्वास भी न होगा कि इसके व्यापारियों तथा मज़दूरों का—ग़रीबों का वास-स्थान बहुत ही गन्दा तथा संकीर्ण है। इन स्थानों के लिए लन्दन में हज़ारों समितियाँ हैं जिनमें हज़ारों नव-युवक वैज्ञानिक रूप से काम करने के लिए तय्यार रहते हैं। इन स्थानों के "वास-स्थान" तथा "डिचेज़" के सुधार
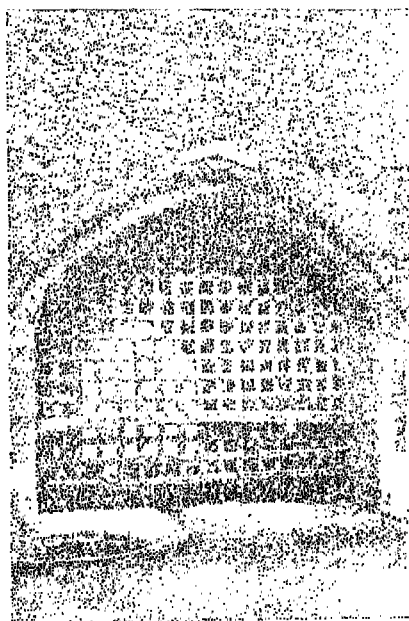
लन्दन का टावर (एक दृश्य)

का कार्य बहुत ही बृहत् है और जब तक यह नहीं हो जाता, लन्दन का कलङ्क नहीं धुल सकता।

लन्दन की शिक्षणीय संस्थाओं, अजायबघर इत्यादि के भ्रमण-मात्र से ही जो शिक्षा प्राप्त होती है, वह पुस्तकों से नहीं मिल सकती। लन्दन-टावर में राजकीय-रत्न-कोष को देख कर यह विश्वास

लन्दन का टावर (दूसरा दृश्य)

हो जाता है कि विश्व की सम्पदा के बराबर धन यहीं पर एकत्रित है।

विण्डसर कॉसिल (एक दृश्य)

दर्शनीय स्थानों में विण्डसर कॉसिल, जो इतिहास-प्रसिद्ध स्थान है तथा जिसका अन्तरंग और बहिरंग दोनों ही अत्यन्त ही रोचक और दर्शनीय है, मध्ययुग के इङ्गलैण्ड का चित्र नेत्रों के सामने अंकित कर देता है।

नवाँ परिच्छेद

लन्दन में कठिनाइयाँ और सुविधायें

रात में मित्रों से विदा माँग कर जब मैंने सोने की चेष्टा की तो मेरे मस्तिष्क ने विश्राम लेना अस्वीकार कर लन्दन के उन दृश्यों को पुनः देखना शुरू किया जिन्हें मैं प्यासी आँखों से देख आया था। अन्त में, मस्तिष्क भी थक गया और सूक्ष्म चक्षु भी क्लान्त हो गये। किन्तु, स्वप्न-लोक में चेतनता विलुप्त न हुई और कल्पना रात भर जागती रही।

दो-तीन दिनों में ही लन्दन के प्रति नेत्र भी अभ्यस्त हो गये। मेरी समझ में, वहाँ के नागरिकों को जो कुतूहलमय और आकर्षक प्रतीत होता था वह मेरी वेश-भूषा तथा भोजन-रुचि या भारतीय होना ही था। भारत की पराधीनता स्वदेश से अधिक विदेश में अखरती है—इसका अनुभव मुझे सर्व प्रथम

लन्दन में हुआ । मेरे व्यक्तित्व के प्रति साधारण अंग्रेज़ के हृदय में भी श्रद्धा नहीं हो सकती थी। यह तो मैं समझ सकता था, पर मेरी परेशानी के प्रति केवल कौतूहल ही नहीं, घृणा के भाव देखकर बड़ा खेद हुआ । अरब वालों का लबादा भी उतना हास्यास्पद नहीं समझा जाता था, जितनी भारतीय वेश-भूषा ।

लन्दन का टावर

होटल से बाहर निकलने के समय से लौटने के समय तक बराबर लोगों के कौतुकपूर्ण कटाक्ष तथा घृणा-मिश्रित हास्य का भाजन बनना मेरी सहन-शक्ति से परे और असह्य था। सड़क पर चलते समय दोनों तरफ़ से सैकड़ों आश्चर्यजनक मुस्कराहटों से मैं ऐसा

बिगा हुआ अनुभव करता था जो बड़ा भद्दा लगता था। पहले मैंने समझा कि यह सब हिन्दुस्तानी होने की बदौलत है, परन्तु बाद में शीघ्र ही मालूम हो गया कि यह हिन्दुस्तानी फ़ैशन के कारण था। एक और दिक़्क़त थी और वह थी लन्दन नगर में आज़ादी से बाहर घूमने की। यह शहर इतने घूम-पेंच और उलझन वाली बनावट का जान पड़ता है कि एकदम नये आदमी का, जब तक कि आमद-रफ़्त के नियम वग़ैरह वह न समझ ले, कहीं भी अकेले जा सकना और सही रास्ते से वापस लौट आना कठिन ही नहीं वरन् असम्भव-सा है। अतएव जब मित्र-मण्डली में से कोई साथ न जाना चाहता तो मुझे भी बेकार क़ैदी की तरह अकेले, कमरे में बिस्तर पर पड़े रहना पड़ता था। अकेले जाने के लिए टैक्सी पर जाना पड़ता, जो लन्दन में महँगी होने के अतिरिक्त देरी का भी मार्ग है। साथ ही, टैक्सी पर केवल जाने हुए स्थान तक ही जाया जा सकता है।

परन्तु, कुछ काल तक लन्दन में रहने पर मालूम हुआ कि यह नगर जितने घुमाव-पेंच का जान पड़ता है, वास्तव में उतना है नहीं। आने-जाने के रास्ते, घुमाव और उनकी बनावट का ढंग एक बार समझ में आ जाने पर कुछ भी दिक़्क़त नहीं होती, और नगर में आना-जाना बहुत आसान, सस्ता और जल्दी का काम हो जाता है।

जन-साधारण के लिए आने-जाने के मार्ग प्रायः दो प्रकार के हैं। एक ज़मीन के नीचे चलने वाली बिजली की ट्रेन, दूसरी ज़मीन पर चलने वाली मोटर बस। दोनों ही सर्विसें इतनी सस्ती, तेज़ और प्रतिक्षण सुलभ हैं कि यात्रियों को, जो लाखों की तादाद में इधर से उधर बराबर आते जाते रहते हैं, कुछ भी असुविधा नहीं होती। दोनों ही प्रकार की सवारियाँ बराबर सुविधाजनक हैं। वैसे तो मोटर बसें ज़मीन के नीचे चलने वाली रेलों[1] के बराबर तेज़ नहीं जा

विण्डसर कॉसिल (दूसरा दृश्य)

1. Under-ground Railways.

सकती हैं, परन्तु बसों में लाभ यह है कि वह सब जगह मिल जाती हैं, और गली-गली में दौड़ती हैं। नीचे की रेलवे का स्टेशन यदि निकट न हुआ तो थोड़ी दूर पैदल चलने की दिक़्क़त मोटर बस के कारण नहीं उठानी पड़ती है। इन स्टेशनों का पता और कौन-सा स्टेशन कहाँ से नज़दीक पड़ेगा, यह होटल वालों से दरियाफ़्त किया जा सकता है। परन्तु, सबसे सुभीते की बात ऐसी रेलवे लाइन का एक नक़्शा है, जो हरएक स्टेशन पर मिलता है। इससे बड़ी सुविधा होती है। इस नक़्शे में कौन सी गाड़ी कहाँ से कहाँ तक जाती है; और अमुक स्थान जाने के लिए कहाँ कहाँ बदलना होगा आदि सभी आवश्यक बातें दी रहती हैं। प्रत्येक रेलवे लाइन इसमें भिन्न भिन्न रंग से दिखाई गई है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक स्टेशन पर लिखित या इंगित इशारों को एक दफ़ा समझ लेने पर जिस प्लेटफ़ार्म पर जाना चाहे उस पर सरलता से, सीधे मार्ग से जा सकते हैं। इसमें कुछ भी असुविधा न होगी। स्टेशनों के चपरासी[1] जो काफ़ी तादाद में इधर उधर स्टेशनों पर घूमा करते हैं, आपके हरएक सवाल का जवाब देने या ज़रूरी बातों का प्रबन्ध करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। उनसे भी यात्री अपनी असुविधा दूर करा सकता है।

1. Station Guards.

इस प्रकार की रेलवे और उसकी सरविस लन्दन के गर्व की वस्तु है। इसकी मुख्य विशेपतायें दो हैं। पहली विशेपता—इनका निर्माण और संचालन इतना सुन्दर और सस्ते ढंग से है कि आश्चर्य होता है—जगह थोड़ी, आबादी घनी और उस पर ट्रेनों में भीड़ भी ज़्यादा! अगर यहाँ की यह रेलें न होतीं, जो ज़मीन पर इतनी संख्या में इतनी जल्दी-जल्दी दौड़ती रहती हैं, तो इतनी सुविधा मिलनी असम्भव थी और शायद आधे से ज़्यादा लन्दन में पटरियाँ ही पटरियाँ नज़र आतीं। पृथ्वी के तीन मंज़िल नीचे इन ट्यूब रेलों में हज़ारों की संख्या में लोगों का आना-जाना लगा रहता है। उधर ऊपर छत पर विशाल नगर बसा हुआ देखकर ऐसा जान पड़ता है मानो धरती के भीतर और बाहर दो नगर हैं। नीचे बिजली की रोशनी तथा कृत्रिम उपायों द्वारा हवा पहुँचाई गई है, परन्तु तारीफ़ यह है कि आप नीचे तीसरी मंज़िल वाली ट्रेन में भी हवा की कमी नहीं पायेंगे। आपको बराबर बाहर से लाई हुई ताज़ी हवा मिलेगी। सवा सौ फ़ीट नीचे पृथ्वी के भीतर हवा और रोशनी का इतना सुन्दर इन्तज़ाम न हो तो आदमी घुट कर मर जाय। भीड़ भी इतनी होती है कि कोई गाड़ी खाली नहीं जाती है। मिनटों में एक के पीछे दूसरी दौड़ा करती हैं। बहुधा निश्चित स्थान तक जाने में कई ट्रेनें बदलनी पड़ती हैं। इसी कारण नीचे-ऊपर जाने

की भी विशेष सुविधा है। भीड़ से भरे स्टेशनों पर लिफ्टों द्वारा काम चलाना असम्भव होने के कारण बिजली से चलने वाली चलती फिरती सीढ़ियाँ बनाई गई हैं। सीढ़ी पर खड़े हो जाइये फिर नीचे या ऊपर वही सीढ़ियाँ स्टेशन के एक प्लेटफ़ार्म से दूसरे तक लिए चली जाँयगी। आपको ज़रा भी हिलने-डुलने की ज़रूरत नहीं है।

इन रेलों की प्रधान विशेषता इनकी सार्वजनिक उपयोगिता है। लन्दन में असंख्य देशी और विदेशी यात्री बिना किसी असुविधा
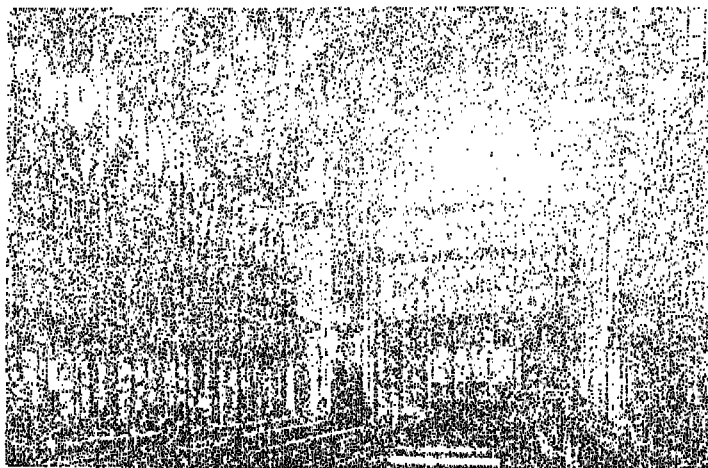
विण्डसर कॉसेल का भीतरी दृश्य

के इन्हीं बिजली की रेलों से इधर-उधर आया-जाया करते हैं। जो लोग नगर से दूर रहते हैं और नगर में सुबह आफ़िस या बाज़ार में काम करने आते हैं और शाम को अपने अपने घरों को वापिस जाते हैं, उनके लिए सुबह और शाम के समय स्पेशल ट्रेनें दौड़ती हैं। ऐसे यात्रियों के लिये माहवारी टिकटों[1] की विशेष सुविधा है। अगर यह रेलें न होतीं तो इतने बड़े व्यापारिक नगर का समुदाय[2] अपनी अपनी सुविधा के अनुकूल निश्चित स्थान पर ठीक समय पर शायद पहुँच ही न सकता। इसी दृष्टि से इन रेलों का व्यापारिक, सामाजिक तथा राजनैतिक हर प्रकार से बहुत अधिक महत्व है।

रेलों के अतिरिक्त मोटर बस भी बड़ी उपयोगी हैं। इनमें भिन्न-भिन्न स्थानों को जाने वाली मोटरों पर अलग अलग नम्बर पड़े रहते हैं। जहाँ जाना हो वहाँ के लिए होटल वाले से नम्बर पूछ लीजिए। जहाँ आपको उतरना हो वहाँ का नाम मोटर-बस के चालक से कह दीजिए, वह स्थान आने पर आपको सूचित कर देगा

लन्दन एक ऐसा नगर है कि उसे पूरी तौर पर देखने और उसकी तमाम महत्वपूर्ण विशेषताओं का अध्ययन और समुचित ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनेक वर्षों का समय भी काफ़ी

1. Monthly Tickets. 2. Traffic.

नहीं है। समूचे नगर में सम्भवतः एक भी ऐसा व्यक्ति मिलना दुष्कर होगा, जो यह कह सके कि मैंने लन्दन की सभी विशेषताओं और महलों का सभी पहलुओं से अध्ययन किया है तथा नगर का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया है। यात्रियों को साधारण जानकारी प्राप्त करने के लिए टूरिंग एजेन्सी[1] से सहायता लेना विशेष उपयोगी होता है। थोड़े समय में सम्पूर्ण नगर के मुख्य मुख्य स्थानों को जल्द देखने और जानने का यही एक सबसे सरल और सस्ता साधन है। अपने समय के हिसाब से एक, तीन या सात दिन का प्रोग्राम किसी भी टूरिंग एजेन्सी से तय कर लीजिए। प्रत्येक एजेन्सी में छपे हुए प्रोग्राम आसानी से मिल जाते हैं। हर बड़ी बड़ी सड़कों पर इनके दफ्तर पाये जाते हैं। आप अपनी अभिरुचि के अनुकूल जिस दिशा में विशेष ज्ञानोपार्जन करना चाहते हों, उसका अध्ययन इन एजेन्सियों की सहायता से विशेष सुविधा के साथ कर सकते हैं।

इस नगर में साल के बारहों महीनों में बराबर एक न एक प्रदर्शनी या नुमाइश बनी ही रहती है। यह प्रदर्शनियाँ भिन्न भिन्न प्रकार की होती हैं और इनमें स्वेच्छानुकूल दृष्टिकोणों से अध्ययन के लिए पर्याप्त सामग्री सञ्चित रहती है। व्यापारिक दृष्टि से तथा देशी प्रचार की दृष्टि से भी इन प्रदर्शनियों का महत्व देश के लिए

1. Touring Agency.

बहुत अधिक होता है। यहाँ पर कुछ संसार-प्रसिद्ध वार्षिक नुमाइशें भी होती हैं, जिनका महत्व विश्वव्यापी है।

मानसिक अध्ययन के लिए तो लन्दन नगर एक प्रकार से अथाह सागर है। किसी भी विषय का मोती निकालना चाहिए, आपको प्राप्त हो सकेगा। विज्ञान के गहनतम पण्डितों से लेकर

लन्दन में वेस्टमिनिस्टर का पुल

दुष्टता की प्रतिमूर्त्तियों तक, एक से एक बढ़कर महापुरुष मिलेंगे। यहाँ आप जिस किसी धारा में बह जाइए, थाह लगाना असम्भव-सा हो जाता है। राजनैतिक, व्यापारिक तथा सामाजिक सभी विषयों के प्रकाण्ड पण्डितों और विशेषज्ञों का इस नगर में केन्द्र है। गुणियों का आदर भली प्रकार से संगठित सरकारी सहायता द्वारा भी होता है। यहाँ पर सफल और विज्ञ विशेषज्ञों को अपने गुणों का उचित पुरस्कार, धन तथा कीर्त्ति के रूप में उपलब्ध होता है। नाना प्रकार की कलाओं, शिल्प, विद्या और पाण्डित्य का यहाँ घर है। प्रत्येक अनुभवशील विद्वान् यहाँ पर अपने दिमाग़ी जौहर को परखने के लिए योग्य जौहरी और मूल्य आँकने के लिए खरीदार ढूँढ़ लेता है। लन्दन गुणियों और गुण-ग्राहकों के मिलने का एक बड़ा बाज़ार है।

दसवाँ परिच्छेद

लन्दन का सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन

इस विचित्र नगर में धनी और निर्धन का अद्भुत सम्मिलन है। यहाँ १५ पौण्ड मासिक से लेकर चाहे जितने ऊँचे पैमाने पर खर्च करके रहा जा सकता है। १०,००० पौण्ड मासिक व्यय करने वाले व्यक्ति के लिए भी यहाँ साधनों की कमी नहीं है और १५ पौण्ड खर्च करने वाला भी काफ़ी अच्छी तरह रह सकता है। यहाँ १० पौण्ड रोज़ के भाड़े के भी होटल हैं और ५ शिलिंग रोज़ के भी। परन्तु साधारणतया १० शिलिंग से १ पौण्ड रोज़ वाले होटल ठहरने के लिए अच्छे हैं।

अङ्गरेज़ों का रहन-सहन और सामाजिक जीवन बहुत ऊँचे दर्जे का, मनोरंजक, नियमित तथा एक सामाजिक सीमा के भीतर है। इन लोगों की जीवनचर्या देख कर सचमुच यह जान पड़ता है

कि ये सभ्यता की उस उन्नत श्रेणी के मनुष्य हैं जिनके सभी कार्यों में सुव्यवस्था, कर्त्तव्य-परायणता, नियमानुकूलता, व्यवहार-कुशलता, वाक्पटुता, पारस्परिक श्रद्धा तथा विश्वास, आत्मगौरव और निष्ठा आदि गुणों का प्रचुर प्रादुर्भाव हुआ है। समय का मूल्य, सेवा की भावना, स्त्रियों के प्रति सम्मान, ये चीज़ें यहाँ के विशेष व्यावहारिक गुणों में से हैं। हरेक मनुष्य समाज तथा जनता के प्रति अपना उत्तरदायित्व समझता है और सार्वजनिक विषयों में दिलचस्पी लेना अपना कर्त्तव्य समझता है। अंग्रेज़ लोग जनता के उपयोग की सार्वजनिक सरकारी संस्थाओं[1] की सहायता करना अपना पहला कर्त्तव्य समझते हैं। इनमें ऐसे जागृति के भाव हैं जिनसे सामाजिक तथा राजनैतिक त्रुटियों की नुक्ताचीनी करके बुराइयों को नष्ट करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति ज्ञात होती है। किन्तु, इस तस्वीर का एक दूसरा पहलू भी है, जिससे लन्दन के चमकते दामन पर कुछ काला धब्बा भी दीख पड़ता है। अंग्रेज़ों में राष्ट्रीय स्वार्थ-परता, दम्भ, अपने को बहुत बड़ा समझना, विदेशियों को, ख़ासकर ग़ुलाम देश वालों को हिक़ारत की निगाह से देखना—ये अवगुण काफ़ी विद्यमान हैं। विदेशियों के प्रति अनुदार व्यवहार संसार की सब से अधिक सभ्य कहलाने वाली जाति के गौरव को कदापि शोभा

1. Public Utility Departments.

नहीं देता। पूर्वीय तथा पश्चिमीय सभ्यता में इस बात में बड़ा भेद मालूम देता है। कहाँ हम लोगों का अतिथि के प्रति आदर-भाव और ग़रीब से ग़रीब आदमी का स्वयं भूखों रह कर मेहमान का सत्कार करना और कहाँ उन लोगों की बनावटी व्यवहारिक नीरसता, जिसकी रुखाई और गरिमा से मेहमान पहले ही से घबड़ा कर भाग उठता है! अनुभव और ज्ञान प्राप्त करने के लिए सहस्रों मील लम्बी यात्रा करके आने वाले निस्स्वार्थ यात्री के प्रति सार्वजनिक व्यङ्ग तथा घृणापूर्ण और संकुचित व्यवहार किस नीति से प्रशंसनीय है? मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि सभ्यता के मेरु-दण्ड पर चढ़ी ऊँची शिष्टता का गर्व रखने वाली इस जाति का यह व्यवहार देख कर उसकी सारी सभ्यता का महत्व फीका हो जाता है।

दूसरे की जाने दीजिए, मैं स्वयं भुक्तभोगी के समान इन लोगों की व्यङ्ग-पूर्ण मुसकान और उपहास का पात्र बन चुका हूँ। भला मैं वहाँ के जीवन का वास्तविक अध्ययन किस प्रकार करने में समर्थ हो सकता था, जब कि उनके समाज के साथ घुलने-मिलने का सुयोग तो दूर रहा, उनका सत्संग भी दुष्प्राप्य था। एक तो भारतीयों के प्रति उनकी स्वाभाविक घृणा, दूसरे मैं उनके शासित परतंत्र देश का वासी और तीसरे काले लोगों में से एक। एक बात और है। भारतीयों के लिए, बहुत से हमारे देश के ग़ैर-ज़िम्मेदार यात्रियों

तथा विद्यार्थियों ने अपने व्यवहार से लन्दन में वातावरण इतना गन्दा कर दिया है कि हम लोग प्रायः अफ्रीका के नीग्रो आदि से भी गये बीते समझे जाते हैं।

इन्हीं सब कारणों से इन लोगों का वास्तविक सामाजिक जीवन जानना अत्यन्त कठिन कार्य्य हो जाता है। फिर भी यदि प्रयत्न करके इन लोगों के असली जीवन में मिलने जुलने का कोई मार्ग निकाला जाय तो उसके साथ ही उनकी सामाजिक वेश-भूषा का भी, पालन करना बहुत ज़रूरी हो जाता है। जो लोग अपने स्वदेशी चाल-ढाल की धुन में अपनी पोशाक और पहनावा नहीं छोड़ते, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि उनका यह कहना कि मैं वहाँ के सामाजिक जीवन में प्रवेश कर अंग्रेज़ों के साथ रह कर, उनका जीवन खुद अच्छी तरह से समझ आया हूँ, भूल है। मेरे सामने भी अब केवल दो ही मार्ग थे, एक तो यह कि जैसा आया हूँ, वैसा ही अपने को लोगों की दृष्टि से छिपाते हुए लौट जाऊँ और दूसरा यह कि फ़ैशन बदल कर यहाँ के सार्वजनिक जीवन का अनुभव करूँ। क्योंकि, सब को देखने आकर, सब के देखने की चीज़ बने रहने से किसी प्रकार कोई लाभ नहीं था। दूसरों की घूरती हुई आँखों से घिरे रहने पर अपनी आँखें स्वभावतः नीची हो जाती हैं और बिना भर आँख सीध में दृष्टि मिलाये दूसरों की भावनाओं को थाह लेना असम्भव है।

आखिर, ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा से कुछ काल के लिए अङ्गरेज़ी फ़ैशन को अपनाना ही पड़ा। सौभाग्य से मेरे पास हाथ के कते-बुने दो काश्मीरी टुकड़े पड़े थे, जिन्हें मैं यहाँ सिलवाने की ग़रज़ से लेता आया था। मैंने उन्हीं के अङ्गरेज़ी फ़ैशन के सूट तैयार करवाये और एक दिन पूर्वीय फ़ैशन से कुछ काल के लिए विदा माँग, "जैसा देश-वैसा भेष" वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए, पश्चिमीय फ़ैशन में सड़क पर घूमता हुआ नज़र आने लगा। वास्तव में अल्पकाल के लिए भी अपनी प्रिय स्वदेशी वेश-भूषा को छोड़ते हुए मन में एक चोट-सी लगी। यहाँ तक कि टोपी के स्थान पर हैट लगाते हुए आँखें डबडबा आईं। परन्तु, कर्त्तव्य ने साहस दिलाया और माँ के प्रसाद से क्षण भर में सम्पूर्ण संकोच और झिझक दूर हो गई। वह जीवन का पहला दिन था जब मैंने इस तरह विलायती फ़ैशन की पोशाक, पहनने की ग़रज़ से पहना था। लेकिन उस दिन, उदास मन से ही, उनके कपड़े के रंग में मिल जाने के कारण लोगों की ओर निस्संकोच देखते हुए स्वतंत्रता-पूर्वक सड़कों पर घूम सका। विलायती फ़ैशन का इतनी जल्दी अभ्यास पड़ जायगा, यह मुझे आश्चर्य्यजनक जान पड़ा। कुछ नहीं, केवल वहाँ के वातावरण ने मुझे वैसा बना दिया था।

पश्चिम में पुरुषों का बहुत कुछ कार्य्य स्त्रियों ने ले लिया

है। इसलिए वहाँ का सामाजिक जीवन ही भिन्न हो गया है। इनका समाज रूखा नहीं मालूम होता है। उसमें अधिक चेतनता प्रतीत होती है। किन्तु, स्त्रियों के प्रति उनकी शिष्टता बड़े मार्के की चीज़ है। किसी भी स्थान तथा अवसर पर, जहाँ एक भी महिला उपस्थित होगी, वहाँ का प्रत्येक मनुष्य एक निश्चित सीमा के भीतर ही बोलचाल तथा व्यवहार कर सकता है। बात करते समय टोपी उतारना आदि सम्मानसूचक प्रथाओं के अतिरिक्त यहाँ महिलाओं के सन्निकट ज़ोर से बोलना, गाली या गन्दा शब्द बकना या भद्दा मुँह बनाना भी अशिष्ट व्यवहार माना जाता है। उनका हर अवस्था में आदर करना एक खास नियम सा हो गया है। ईश्वर करे, भारत में भी महिलाओं का इसी प्रकार आदर हो और उनके सामने गन्दी गाली-गलौज न हो।

मुझे सब से सहयोग करने का काफ़ी सुयोग मिला। मैंने वहाँ के सामाजिक, व्यापारिक और राजनैतिक जीवन का सुचारू रूप से अध्ययन और विशेषताओं का अनुसन्धान करना आरम्भ कर दिया। सचमुच वहाँ के जीवन का परिचय और सत्सङ्ग-लाभ और निरीक्षण का सच्चा आनन्द मुझे वेष-परिवर्त्तन के बाद ही प्राप्त हुआ।

मैंने लन्दन का अन्तरंग-बहिरंग दोनों देखा। प्रसिद्ध से

प्रसिद्ध व्यक्तियों से मिलने का अवसर तथा सम्राट् जार्ज पञ्चम द्वारा दी गई एक चाय पार्टी में भी जाने का मौका मिला था । अस्तु, वहाँ की राजनैतिक स्थिति का, जिसकी ओर मेरी विशेष रुचि थी,

बकिंघम पैलेस में सम्राट् द्वारा दी गई चाय-पार्टी—जिसमें लेखक भी सम्मिलित था

अध्ययन करने पर मालूम हुआ कि बृटिश गवर्नमेण्ट केवल वहाँ की नौकरशाही पर टिकी हुई है । मुझे यह देखकर एक बार आश्चर्य भी हुआ कि इतने बड़े साम्राज्य की नींव वहाँ के चतुर राजनीतिज्ञों या राजनैतिक पार्टियों पर नहीं किन्तु, वहाँ की

नौकरशाही पर निर्भर है। अर्थात् आफ़िशल्डम[1] की बागडोर पूरी तरह साम्राज्यवादी तथा साम्राज्यशाही के हाथ में है। सम्राट् और साम्राज्य के—दोनों के सबसे कट्टर समर्थक और प्राणरूप, ब्रिटेन चन्द महान् पूँजीपति और बैङ्क, अन्दरूनी तरह पर संचालक हैं। इस प्रकार वास्तव में उपनिवेशों से लेकर भारत इत्यादि सभी पराधीन देशों के विषय में नीति निश्चित करने की बागडोर भी इन्हीं के हाथ में है। बृटिश राजनैतिक दल आते हैं और चले जाते हैं पर, उनको इस स्थायी गरोह का लोहा मानना ही पड़ता है। इतना अवश्य है कि यह समुदाय अपने हित के लिए अपने देश का हित बलि नहीं होने देता। दूसरे, सम्राट् की सत्ता के वे सबसे बड़े समर्थक हैं। अस्तु, उन दफ़्तरी सरदारों के अतिरिक्त शेष सब दिखावा या आडम्बर मात्र है और साम्राज्य के लिए एक खिलौना बना दिया गया है। राजनैतिक चालों में दलबन्दी[2] का जन्म इङ्गलैण्ड से हुआ है। सम्राट् महोदय नियंत्रण के लिए नहीं वरन् श्रद्धा और पूजा की एक वस्तु हैं। भारत ऐसे देश में, जहाँ छोटे राजे-महराजे हैं, उनको एक सूत्र में, एक व्यक्तित्व के अन्तर्गत रखने के लिए, सम्राट् एक महत्वपूर्ण वस्तु है। मंत्रिमण्डल[3] के मेम्बरों के

1. Officialdom. 2. Party politics.
3. Cabinet.

सामने इतना अधिक काम रहता है कि वास्तविक कार्यप्रणाली के अनुसार उन्हें अपने विभाग[1] से ही फ़ुरसत नहीं मिलती। अतएव दूसरे बड़े कामों की नीति में ज़्यादातर उन्हें हाँ में हाँ मिलानी पड़ती है। इङ्गलैण्ड की राज्य-प्रणाली में प्रधान मंत्री[2] का पद सर्वोच्च है, उसकी सहकारिता में अथवा उसके नीचे मंत्रिमण्डल के सदस्य अपने

हाउस आव् कामन्स का भीतरी दृश्य

अपने विभागों का काम देखते हैं। चुनाव में जिस दल की विजय होती है, उसी का मुखिया प्रधान मंत्री होता है। परन्तु अधिकार पाने पर

1. Department. 2. Prime Minister.

चाहे वह भी विरोधी दल का क्यों न हो उसी नौकरशाही के पक्ष का समर्थक बन जाता है, वरना वह काम नहीं कर सकता। मंत्रिमण्डल के अधिकार अपरिमित हैं, परन्तु यथार्थ में प्रधान मंत्री की नीति और उसका निर्णय ही सर्वमान्य होता है। मंत्री के पास इतना काम होता है कि अपने विभाग में भी उसकी मुख्य नीति या "पॉलिसी" के निर्धारण से ही उसे फ़ुर्सत नहीं मिलती। उसके दफ़्तर का काम उसके अण्डर सेक्रेटरी या पार्लियामेन्टरी सेक्रेटरी करते हैं। ये सेक्रेटरी स्थायी नहीं होते और मंत्री के साथ बदला करते हैं। किन्तु, इनका पार्लियामेन्ट का मेम्बर होना अनिवार्य है। ब्रिटिश मंत्रिमण्डल के पीछे विशेषज्ञों की एक सेना होती है जो अपने विशेष ज्ञान से इन मंत्रियों को लाभ पहुँचाया करती है। इस विशेषज्ञ समुदाय का ब्रिटिश शासन में बड़ा महत्व-पूर्ण स्थान होता है और ज्यादातर गहन मसलों पर इन्हीं लोगों की निर्धारित नीति के अनुसार ही कार्य चलाया जाना कैबिनट[1] तै करती है और इन्हीं को "राज्य के पीछे की शक्ति"[3] कहते हैं। प्रधान मंत्री जिस किसी भी दल का होता है, उस दल के नेताओं का कोड़ा भी सदैव उसे त्रस्त किये रहता है। किन्तु, पार्टी संयम का जितना अनोखा उदाहरण इङ्गलैण्ड में मिलता है, उतना अन्यत्र नहीं।

1. Cabinet. 2. Power behind the Throne.

पार्लियामेन्ट के मेम्बर अपनी ऊँची 'पोज़ीशन' पर ही मस्त रहते हैं। उनका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व पार्लियामेन्ट के कुछ सवालों, व्याख्यानों व वादाविवाद के अन्तर्गत ही समाप्त हो जाता है। किसी पवित्र लक्ष्य को लेकर कोई वास्तविक ठोस कार्य्य करने की अपेक्षा वे अपनी सम्पूर्ण शक्ति सम्मतिदाताओं (भिन्न दलों के वोटरों) में अपनी स्थिति दृढ़ रखने और दूसरे चुनाव के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने में खर्च करते हैं। इन लोगों के तमाम भाषण और कार्य अधिकतर इसी एक उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए होते हैं। वास्तव में यह शक्ति का दुरुपयोग प्रतीत होता है।

साधारण जन-समुदाय में पूँजीपतियों तथा साम्राज्यवादियों[1] का प्रभुत्व अधिक दीख पड़ता है। वे लोग वर्त्तमान परिस्थितियों तथा उनके अन्तर्गत आने वाली कठिनाइयों और अड़चनों को बराबर तौलते रहते हैं और एक प्रकार से सन्तुष्ट हैं कि वर्त्तमान नौकरशाही[2] के हाथों में उनका अस्तित्व तथा प्रभुत्व पूर्णतया सुरक्षित है। उनके प्रत्येक कार्य्य में चेतनतापूर्ण जागृति मालूम होती है। और, इस समय तक उन्होंने कौशल के साथ प्रत्येक विभाग पर अपना अटल आधिपत्य क़ायम कर रखा है। उनकी सेवायें

1. Capitalists & Imperialists. 2. Civil Service.

साम्राज्य के लिए एक उपयोगी वस्तु समझी जाती है और यह समुदाय आज भी जनसाधारण से पूर्ण आदर और विश्वास पाता रहता है। साधारण समाज, जन्म से अनुदार तथा वातावरण से साम्राज्यवादी होने के कारण, अपनी वर्त्तमान स्थिति स्थिर रखने मात्र से सन्तुष्ट जान पड़ता है। उसके लिए केवल यह विचार पर्याप्त प्रतीत होता है कि वह आधी दुनिया का शासक है। इस प्रभुत्व के गौरव में वे मदान्ध से जान पड़ते हैं, और कोई भी बात जो इस प्रभुत्व को धक्का पहुँचावे, उसका वे घोर विरोध करते हैं। ऐसी बात को उठने भी नहीं देना चाहते। अपने आधिपत्य से किसी उपनिवेष के चले जाने की अपेक्षा वे भूखों मर जाना सहर्ष स्वीकार कर लेंगे। उनके सारे उपनिवेश मुट्ठी में रहें, इससे अधिक गौरव की बात उनके लिए कोई नहीं है। बस, इतना ही साधारण जन-समुदाय का राजनीति से सरोकार है। जनता की अनुमति निर्वाचन के समय ही ली जाती है और क़ुदरती भेड़िया-धसान वाले उसूलों के माफ़िक़ उसका निर्णय ज़्यादातर अब भी भिन्न भिन्न मतावलम्बी पक्षों के पृष्ठपोषकों द्वारा किये गये भावोत्पादक विज्ञापन पर ही बहुत कुछ निर्भर है।

इङ्गलैण्ड की सिविल सर्विस, पुलिस विभाग तथा सार्वजनिक-

संस्थाओं[1] का संचालन संसार में सबसे अधिक सुन्दर तथा ऊँचे ढंग का है। सार्वजनिक सेवकों[2] की विनम्रता, शिष्टाचार तथा उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार वास्तव में प्रशंसनीय है। सच पूछिए तो इनकी अपूर्व संयोजना पर इस देश को वास्तविक गर्व है।

ऊपर मैंने जिस नौकरशाही का ज़िक्र किया है, उससे यह अनुमान नहीं करना चाहिए कि यह नौकरशाही भारत की तरह होगी। मैंने यह खास बात देखी कि वही अंग्रेज़ जो यहाँ पर हाकिम बनकर अपने को बहुत बड़ी चीज़ समझता है, अपने देश में किसी सरकारी नौकरी पर बैठकर, जनता का सेवक समझने लगता है। उसमें न तो अहम्मन्यता या बड़प्पन के कोई भाव होते हैं और न तो वह साधारण मनुष्य से पृथक् कोई बड़ी वस्तु बन जाता है। संक्षेप में वहाँ का सरकारी कर्मचारी एक शिष्ट, सभ्य, लोक-प्रिय और सर्व-हितकारी जीव होता है।

एक बात और। पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने हमारे देश में इस बात का काफ़ी व्यापक आन्दोलन चलाया है कि हमको अपने विषय में विदेशों में प्रचार करना चाहिए। दो बार यूरोप और

---

1. Public Utility Departments.
2. Public Servants.

ख़ासकर, इङ्गलैण्ड जाकर, मैं इस बात का बड़ा कट्टर समर्थक बन गया हूँ। यह बड़ी ज़रूरी चीज़ है। और देशों की बात जाने दीजिए। इङ्गलैण्ड से हमारा पौने दो सौ वर्ष से ताल्लुक़ है। फिर भी, अंग्रेज़ जनता भारत से, भारतीय आचार-विचार, संस्कृति, शिष्टाचार तथा सभ्यता से बहुत ही अपरिचित है और हमारी महत्वाकांक्षा के प्रति बहुत कम के हृदय में सहानुभूति है। जो कोई भारत के विषय में सोचता भी है — वह एक भाई का — एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य के प्रति कर्त्तव्य समझ कर नहीं — बल्कि, एक उदार व्यक्ति के रूप में, जो किसी अपाहिज की सहायता करना चाहता हो! भारत के प्रति भारत के हाकिमों के देश में इतना अज्ञान देखकर किसे आश्चर्य न होगा।

इङ्गलैण्ड का कोना-कोना बहुत उन्नत दशा में है। देश के एक कोने से दूसरे कोने तक यातायात का, रोशनी का, सफ़ाई का, शिक्षा का, हरेक वस्तु का कितना सुन्दर प्रबन्ध है! यह सोचकर बड़ा क्षोभ होता है कि हमारा देश कितनी गिरी हालत में है।

आर्थिक दृष्टि से ग्रेट ब्रिटेन की आमदनी के ज़रिये अगाध हैं। साधारणतया वे ध्यान में भी नहीं आ सकते। इङ्गलैण्ड की आर्थिक दशा समस्त यूरोप में प्रत्यक्षतः सबसे अच्छी मालूम होती है। आय के मार्ग इतने भिन्न हैं कि एक दो के अवरोध से कोई

हानि नहीं हो जाती। यही कारण है कि विगत महासमर के भारी दबाव से जब अभी तक बहुत से देशों की गर्दनें दबी पड़ी हैं, इङ्गलैण्ड में, जिसका युद्धकाल के ज़माने में औसतन आठ करोड़ रुपये रोज़ का खर्च क़रीब चार वर्ष तक बराबर रहा, कोई ख़ास आर्थिक कमज़ोरी न आयी। इस ठोसपन का श्रेय वहाँ के पूँजीवादियों को है। इङ्गलैण्ड केवल घरेलू व्यवसाय[1] पर आश्रित नहीं है और न उसकी उन्नति अथवा अवनति पर उसके भाग्य का निपटारा निर्भर है। उसके महान् सम्पत्ति तथा शक्ति के श्रोत उसके उपनिवेश हैं। परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इङ्गलैण्ड की ज़मीन का एक कोना भी, जहाँ कोई लाभदायक फ़ैक्ट्री या मिल बन सकता हो, ख़ाली नहीं है।

जिसके पास समय हो, उसे इङ्गलैण्ड के ग्राम्य तथा समुद्रतट के जीवन का भी कुछ परिचय प्राप्त करने से न चूकना चाहिए। ये दोनों ही प्रकार के जीवन इङ्गलैण्ड के सबसे अधिक सुन्दर, सुखप्रद तथा ईर्ष्या योग्य वस्तु हैं। यदि वहाँ का ग्राम्य-जीवन अत्यन्त सुन्दर दृश्य, साफ़ खेती-बारी, स्वच्छ तथा सन्तुष्ट जीवन का आदर्श है, तो समुद्रतट की बहार जीवन के उन दिव्य आनन्दों का

1. Domestic Industry.

अलौकिक दिग्दर्शन कराती है जो हमारे देश के बड़े बड़े नरेशों को भी सुलभ नहीं है। आनन्द की कोई भी ऐसी वस्तु नहीं जो यहाँ उपलब्ध न हो और वह आम जनता के लिए प्राप्य न हो। आनन्द के लिए कितनी बेफ़िक्री, लापरवाही, लड़कपन तथा नादानी की आवश्यकता है, यह यहीं पर मालूम हो सकता है।

ग्रेट ब्रिटेन तीन भागों के समूह का एक देश है। इङ्गलैण्ड, वेल्स[1] और स्काटलैण्ड। इन्हीं तीनों भागों के प्रतिनिधि मिलकर

बकिंघम पैलेस में सम्राट् द्वारा दी गई पार्टी
(दूसरा दृश्य)

1. Wales.

पार्लियामेन्ट बनाते हैं। जहाँ तक साम्राज्य का सांसारिक वैभव तथा प्रतिष्ठा से सम्बन्ध है, यह तीनों भाग बराबर के हक़दार हैं। परन्तु इस बात का प्रत्यक्ष अनुभव इङ्गलैण्ड में जाकर ही किया जा सकता है कि अर्थ-शोषण का लाभ सबसे पहले और सबसे अधिक मात्रा में इङ्गलैण्ड ने ही उठाया है, फिर जो कुछ बचा है वही दूसरे पड़ोसी प्रदेशों के हिस्से पड़ा है।

सफ़टन पार्क, एडिनबरा

इङ्गलैण्ड से स्काटलैण्ड जाने पर दोनों देशों में महान् अन्तर प्रत्यक्षतः दीख पड़ता है। तुलनात्मक विवेचना करने पर

यह विश्वास करना कठिन हो जाता है कि संसार की आर्थिक सम्पत्ति का शोषण करके सम्मृद्धिशाली बनने वाले महादेश

एडिनबरा कॉसिल में लड़ाई की यादगार

इङ्गलैण्ड का यह देश भी एक बराबरी का हक़दार भाई है। स्काटलैण्ड अधिकतर खेती-बारी पर निर्भर है। परन्तु आधुनिक ढंग से कृषि करने के अच्छे साधन भी बहुतायत से यहाँ दिखलाई नहीं पड़ते। लोग बहुत सम्मृद्ध और सुखी नज़र नहीं आते और इङ्गलैण्ड के रहन-सहन के ऊँचे ढंग से—जिससे ऊँचे ढंग का रहन-सहन संसार में केवल अमेरिका वालों का ही कहा जाता है, तुलना करने पर यह लोग काफ़ी पिछड़े हुए कहे जा सकते हैं। वहाँ के नागरिकों में

एडिनबरा कॉसिल में फ़ौज की क़वायद

सन्तोष की भावना कम दीख पड़ती है। स्काटलैण्ड की राजधानी एडिनबरा है। यहाँ भी बहुत से दर्शनीय स्थान हैं।

इङ्गलैण्ड का क्षेत्रफल ५०,८०४ वर्ग मील, स्काटलैण्ड का ३०,४०५ वर्ग मील तथा वेल्स का ७,४६८ वर्ग मील है। इङ्गलैण्ड की जन-संख्या ३,७७,८६,७३८, स्काटलैण्ड की ४८,४२,५५४ तथा वेल्स की २१,५८,१६३ है।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

लिवरलपूल से डबलिन

इङ्गलैण्ड से आयरलैण्ड जाने वाले यात्री को लिवरपूल बन्दरगाह से जाना पड़ता है। लिवरपूल इङ्गलैण्ड का तीसरा बड़ा नगर और संसार के सबसे बड़े बन्दरगाहों में से एक है। आयरलैण्ड जाने वाले को यह विश्व-विख्यात नगर अनायास देखने को मिल जाता है।

लिवरपूल लंकाशायर-क्षेत्र का प्रधान नगर और आयात-निर्यात का जगत्-प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यह नगर लन्दन से १६४ मील तथा मैञ्चेस्टर से ३१ मील की दूरी पर है। एल० एम० एस० तथा दूसरी रेलों और नहरों द्वारा सामान आता जाता है और बन्दरगाह से आसपास में फैली हुई बिजली की लाइनें भी हैं। खास शहर का क्षेत्रफल केवल ३३ वर्ग मील है। इस नगर का प्रधान अफ़सर लार्ड मेयर है और पार्लियामेन्ट में इस नगर से ११ मेम्बर भेजे जाते हैं।

इसकी वास्तविक व्यापारिक उन्नति का युग उन्नीसवीं शताब्दी से प्रारम्भ होता है। सन् १८०० ई० में इस बन्दरगाह में प्रवेश करने वाले माल की औसत वज़न ४,५०,०६० टन थी। सन् १९२२ ई० में यही बढ़ कर ३,१६,४५,३६८ टन हो गई। लिवरपूल का व्यापार विश्वव्यापी है, परन्तु इस नगर का व्यापारिक सम्बन्ध उत्तर अमेरिका से विशेषतः घनिष्ठ है। यहाँ से अमेरिका देश के न्यूयार्क, फ़िलाडेल्फ़िया[1], बोस्टन, बाल्टीमोर, गैल्वेस्टन, न्यू आर्लिएन्स तथा कनाडा के बन्दरगाहों को स्टीमर जाते हैं। इस बन्दरगाह पर आयात की मुख्य वस्तु कपास है। अमरीकन कपास की माँग अधिक है।

संसार में कई बाज़ार माल के अग्रिम लेन-देन के वादे पर ख़रीद और बिक्री का व्यापार करते हैं। अंग्रेज़ी में इन्हें 'फ़्यूचर कन्ट्रेक्ट' कहते हैं। इन वादों में यह समझौता होता है कि दो या तीन महीने में माल ले लेंगे। अब ख़रीदार के नाते अगर भाव बढ़ता है तो हमें फ़ायदा है और चार दिन बाद भाव माफ़िक आने पर हम अपने पहले ख़रीद के वादे को बेंच देंगे। अगर भाव गिरता दीख पड़ता है और डर यह है कि जो माल ख़रीद रक्खा है उसकी डिलेवरी लेनी पड़ेगी, तो मँहगे दामों से बचने के लिए

1. Philadelphia.

इसे सस्ते-मद्दे दामों बेचकर घटे हुए मूल्य में दूसरा वादा खरीद कर घटी पूरी करेंगे। संक्षेप में यही वादे का व्यापार है, जिसके बड़े बाज़ार बम्बई, कलकत्ता, लिवरपूल, न्यूयार्क, न्यू आर्लिएन्स, शिकागो इत्यादि हैं। कलकत्ता को छोड़कर, जहाँ जूट का भी बाज़ार है, शेष सभी उपर्लिखित स्थानों पर कपास की आगामी लेनदेन के वादों का व्यापार होता है। यह वादे सब सच्चे होते हैं और प्रत्येक वादे के माल की डिलेवरी[1] ज़रूर होती है। ऐसा न होने पर सौदा ग़ैर क़ानूनी है और जुआ खेलने का जुर्म लगाया जा सकता है। लिवरपूल भी कपास का ऐसा ही एक केन्द्रीय बाज़ार है, जहाँ रोज़ कपास का भाव खुलता है, और उसी भाव के आधार पर, जब तक अमेरिका का भाव नहीं खुलता। संसार के सब बाज़ारों में लेन-देन होता रहता है—अमेरिका का भाव खुल जाने पर दोनों भाव एक हो जाते हैं; बाज़ार चढ़ता और गिरता है। लिवरपूल पहले खुलने के कारण पहले बन्द होता है, अमेरीकन मार्केट चालू रहता है। जब अमेरीकन बाज़ार बन्द होता है, तब उस भाव में बाज़ार बन्द हुआ समझा जाता है। चालू बाज़ार के समय सभी देशों में परस्पर तार व टेलीफ़ोन से वादा, लेनी-देनी तथा भाव की सूचना आदि क्षण-क्षण में होती रहती है। व्यापार

1. Delivery.

की दृष्टि से इसी कारण लिवरपूल एक केन्द्रीय स्थान है। और लिवरपूल एक्सचेञ्ज[1] महत्वपूर्ण होने के साथ साथ एक रोचक चीज़ है, जहाँ हज़ारों की तादाद में एक ही दिन, लोग करोड़ों रुपये के सौदे बात की बात में कर डालते हैं।

लिवरपूल नगर स्वयं माल तैयार करने में अधिक महत्व नहीं रखता है। कई बार यहाँ पर कपड़े के मिल चलाने के असफल प्रयत्न किये गये, परन्तु लाभ नहीं हुआ।

यहाँ की इमारतों में शिल्पकला अच्छी पाई जाती है, परन्तु नगर में कोई इमारत १८वीं शताब्दी से पुरानी नहीं है। यहाँ एक विश्वविद्यालय है, जिसकी स्थापना, विक्टोरिया यूनीवर्सिटी[2] के नाम से सन् १८८४ ई० में हुई थी। बन्दरगाह मर्सी[3] नदी के दोनों तटों पर बसा है और इसकी देख-रेख मर्सी डाक और हार्बर का बोर्ड[4] करता है। यहाँ पर जहाज़ी बेड़े खड़े होने के डेक इतनी लम्बाई तक बने हैं कि उनके एक सिरे को दूसरे से जोड़ने के लिए एक ओवरहेड रेल्वे का आयोजन किया गया है जो एक सिरे से दूसरे तक बराबर दौड़ती रहती है। नगर की जन-संख्या ८,५५,५३९ है।

---

1. Liverpool Exchange. 2. Victoria University.
3. Mersy.
4. Mersy Dock & Harbour Board.

लिवरपूल से जाने वाली दैनिक शिप सर्विस[1] रोज़ रात को दस बजे चलती है और प्रातः आठ बजे डबलिन पहुँचा देती है। आयरलैण्ड के लिए सबसे अच्छी यही सर्विस है। इसी प्रकार वापिस आने के लिए १० बजे रात को जहाज़ डबलिन से चलकर प्रातः ८ बजे लिवरपूल आ जाता है।

डबलिन आयरलैण्ड का एक प्रान्त, नगर तथा बन्दरगाह है। यह नगर लिफ़ी[2] नहर के मुहाने पर स्थित है और आयरिश फ्री स्टेट की राजधानी है। नौ मील लम्बी गोलाकार एक सड़क के भीतर घिरा हुआ यह नगर लिफ़ी नदी द्वारा दो भागों में विभाजित किया जाता है। लिफ़ी नदी को पार करने वाले १२ पुल थोड़े-थोड़े अन्तर पर बहुत सुन्दर दीख पड़ते हैं। पूर्व की ओर यह नहर समुद्र में मिलती है। इस संगम के दोनों ओर बन्दरगाह के घाट[3] हैं।

दर्शनीय स्थानों में गिर्जाघरों के अतिरिक्त डबलिन महल है जिसमें कभी राजकीय कार्यालय था। चार कचहरी[4] जो पहले राजकीय न्यायालय था, और जो सन् १६२२ में टूट गया देखने योग्य स्थान है। यहाँ के पार्लियामेन्ट हाऊस में सन् १८०० ई० तक पार्लियामेन्ट की बैठक होती थी। अब उसी भवन में बैंक आव

1. Daily Ship Service. 2. Liffey.
3. Quays Docks. 4. Four Courts.

आयरलैण्ड[1] है। यहाँ की नेशनल गैलरी आव् आर्ट[2] और नेशनल पोर्ट्रेट गैलरी[3] दर्शनीय हैं, जिनमें बहुत सुन्दर कलापूर्ण चित्रों तथा कला-पूर्ण मूर्त्तियों का विचित्र संकलन है। फ़ोनिक्स पार्क, जिसमें हमने थोड़ी देर विश्राम किया था, बहुत ही सुन्दर स्थान है। खुले आकाश में सुन्दर वृक्षों से लहलहाता हुआ यह उपवन एक वनस्पतिशाला का उद्यान भी है। इसके अतिरिक्त ट्रिनिटी कालेज, जिसकी स्थापना सन् १५६१ ई० में हुई थी, विद्याध्यन का केन्द्र है। इस कालेज के पुस्तकालय में प्राचीन हस्त-लिखित प्रतियों का अमूल्य संकलन है। विश्वविद्यालय के कालेज की इमारत नये ढंग की है। अजायब-घर भी दर्शनीय है और उसकी बनावट नये ढंग की ही जान पड़ती है। इस नगर में बहुत से कारखाने हैं, जिनमें सबसे बड़ा शराब का कारखाना है। यहाँ पर खाद और भूमि को उपजाऊ बनाने वाली वस्तुएँ बनाई जाती हैं। डबलिन नगर इस देश का महाजनी केन्द्र भी है। इसकी जन-संख्या अनुमानतः ४०,००० से ऊपर होगी। डि वेलेरा के शासन-काल में डबलिन ने बड़ी उन्नति की है। क्रमशः यह अन्तर्राष्ट्रीय नगर होता जा रहा है और यदि इसकी यही प्रगति रही तो कुछ समय में विश्व के प्रमुख नगरों में गिना जाने लगेगा।

1. Bank of Ireland. 2. National Gallery of Art.
3. National Portrait Gallery.

बारहवाँ परिच्छेद

आयरलैण्ड

मानचित्र में देखने पर आयरलैण्ड इङ्गलैण्ड की गोद में रक्खा हुआ एक सुन्दर खिलौना-सा जान पड़ता है, परन्तु इसी खिलौने ने बृटिश कूटनीतिज्ञों के दाँत खट्टे कर दिये। इस द्वीप के निवासियों का इतिहास भारतीयों के लिए पर्याप्त महत्व का है क्योंकि, आयरलैण्ड भी भारतवर्ष की ही तरह ब्रिटेन का ग़ुलाम था और उसकी स्वतंत्रता के आन्दोलन को कुचलने में ब्रिटेन ने जो नीति वर्ती, उसका इतिहास हमारे लिए बड़े काम की चीज़ है।

आयरलैण्ड की स्वतंत्रता का आन्दोलन उन्नीसवीं शताब्दी के आदि अथवा सन् १८०१ ई० से आरम्भ होता है। तदनन्तर अनवरत प्रकाश्य और अप्रकाश्य उपायों के फल-स्वरूप एक शताब्दी के बाद सन् १९१४ ई० में बृटिश पार्लियामेन्ट ने आयरिश होमरूल-बिल पास कर दिया। यह आशा की जाती थी कि इस

बिल के पास होते ही सारा झगड़ा मिट जायगा और यह देश स्वतंत्र हो जायगा। यदि यह बिल पास होकर क़ानून का रूप धारण कर लेता तो इसमें सन्देह नहीं था कि आयरलैण्ड में परस्पर गृह-युद्ध का सूत्रपात हो जाता। इसका कारण यह था कि भारत की तरह आयरलैण्ड में भी "आपस में भेद भाव पैदा कर राज करने की नीति"[1] काम में लायी गई थी। इसीके परिणाम-स्वरूप इस देश में भी हिन्दू मुसलमानों की तरह प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक दो पार्टियाँ हो गई थीं। उत्तर-पूर्व के छः प्रधान प्रान्त प्रोटेस्टेंट तथा दक्षिण के छब्बीस प्रान्त कैथोलिक थे। प्रोटेस्टेंट[2] तथा कैथोलिक[3] दोनों ईसाई धर्म की दो शाखाएँ हैं, जिनके पारस्परिक पुराने झगड़े हिन्दू-मुसलमानों के झगड़ों से भी गये गुज़रे थे।

उपर्युक्त बिल के पास होने पर यह विचार किया जाता था कि आयरिश पार्लियामेन्ट में दक्षिण के कैथोलिक किसान लोगों का ही बहुमत होगा। उत्तर के प्रोटेस्टेंट मतावलम्बियों को यह अत्यन्त अप्रिय था कि कैथोलिक लोग उन पर शासन करें। दक्षिण के लोग इस विषय में बहुमत थे कि सम्पूर्ण द्वीप पर एक ही पार्लियामेन्ट का राज हो। प्रोटेस्टेंट लोग अपने प्रान्तों के लिए एक भिन्न पार्लियामेन्ट

1. Divide and Rule. 2. Protestant.
3. Catholic.

के लिए प्रयत्नशील थे। बिल पास होने पर दोनों दल अपनी अपनी सैनिक शक्तियों का आयोजन करने लगे, परन्तु भीषण रक्तपात के पूर्व ही महायुद्ध छिड़ जाने के कारण बृटिश सरकार ने होमरूल बिल को स्थगित कर दिया। उत्तरीय प्रान्तों के उल्स्टेराइट[1] लोग बृटिश सरकार के स्वामिभक्त थे ही, दक्षिण के सेना-नायक जॉन रेडमाण्ड[2] के ब्रिटेन को सहायता देने की बात स्वीकार करने पर यह निश्चित हो गया कि आयरलैण्ड महायुद्ध में ब्रिटेन का साथ देगा।

इसी समय बृटिश सरकार ने एक बड़ी कूटनीति की चाल चली। उत्तर के उल्स्टेराइट लोगों को अपनी अलग सेना रखने का अधिकार था, परन्तु बृटिश सरकार ने दक्षिण के लोगों की, जो अपने को आयरिश नेशनलिस्ट[3] कहते थे, अपनी अलग सेना रखने की प्रार्थना अस्वीकार कर दी। इस पर दक्षिण के प्रान्तों में असंतोष की आग भड़क उठी। सन् १६१६ ई० में इसी असन्तोष के कारण ईस्टर रिबेलियन[1] नामक बलवा हो गया।

इस विप्लव के कर्त्ता वे लोग थे जिन्होंने बृटिश सरकार के साथ सहयोग देना अस्वीकार कर आयरिश नेशनलिस्ट दल से

1. Ulsterite. 2. John Redmond.
3. Irish Nationalists. 4. Easter Rebellion.

इस्तीफ़ा दे दिया था। इस दल के बहुत से लोगों ने अपना एक पृथक दल बनाया जिसका नाम सिन फ़ेन[1] अर्थात् 'स्वयं हम लोग' रक्खा। इस नाम का दल सन् १९१४ ई० से पहले केवल व्यापारिक सुधार का एक दल था जिसने महायुद्ध काल में नेशनलिस्ट दल से इस्तीफ़ा दिये हुए विप्लवकारियों के परामर्श से राजनैतिक क्षेत्र में पदार्पण किया था। यही प्रजातंत्रवादी बाद में सिन फ़ेनर के नाम से प्रसिद्ध हुए

सन् १९१६ ई० में ईस्टर[2] त्योहार के सोमवार के दिन सिनफ़ेनर लोगों ने डबलिन की बहुत-सी सरकारी इमारतों पर क़ब्ज़ा कर लिया। जर्मनी ने इन विप्लवकारियों को जल, थल और वायु मार्गों द्वारा सैनिक सहायता देने का वचन दिया। परन्तु बृटिश लोगों की कड़ी मोर्चाबन्दी के कारण जर्मनी की सहायता वहाँ तक न पहुँच सकी। निस्सहाय आयरिशों के इस विप्लव का एक सप्ताह में दमन कर दिया गया। विप्लवकारियों के पन्द्रह नेता गोली से मार दिये गये और सारे देश में मार्शलला[3] यानी फ़ौजी क़ानून जारी कर दिया गया। हज़ारों पुरुष और स्त्रियों को कारावास दण्ड अथवा देश-निकाला दे दिया गया किन्तु, इस दमन के फलस्वरूप सिन फ़ेनर पार्टी और मज़बूत हो गई।

---

1. Sinn Fein. 2. Easter.
3. Martial law.

सन् १९१७ ई० में लायड जार्ज ने आयरिश लोगों के प्रश्न को उनके नेताओं की एक सभा द्वारा हल करने की असफल चेष्टा की। आयरिश-क्रान्तिकारी-अशान्ति इस देश में सन् १९१८ ई० तक चलती रही। महायुद्ध के लिए इस समय इङ्गलैण्ड को सैनिकों की बड़ी ज़रूरत थी, इस कारण इन लोगों ने पार्लियामेन्ट की बैठक में 'बलपूर्वक सैनिक बनाने का क़ानून'[1] पास कर आयरलैण्ड पर भी लागू कर दिया। हिटलर और मुसोलिनी की उग्र-नीति के कारण ऐसा ही नियम सन् १९३९ में भी इङ्गलैण्ड ने बनाया है, किन्तु, उस समय के आयरलैण्ड और इस समय के आयरलैण्ड में बड़ा अन्तर है। आज यह नियम उस पर या बृटिश साम्राज्य के अन्तर्गत किसी देश पर लागू नहीं है। अस्तु, उस समय आयरलैण्ड में इस नियम का इतना घोर विरोध हुआ कि बृटिश सरकार को, इस क़ानून के वहाँ चलने की कोई आशा न देखकर, इस शर्त पर वापिस लेना पड़ा कि इसके बदले में आयरलैण्ड ब्रिटेन को बहुसंख्यक सैनिकों की सहायता प्रदान करे। फलतः थोड़े आदमी भेजे गये परन्तु इनकी संख्या इतनी आशाजनक न थी कि आयरलैण्ड ब्रिटेन को भविष्य में इतनी भी सहायता देगा। किन्तु, इसी समय आर्मिस्टिस[2] यानी लड़ाई स्थगित करने के सन्धि-पत्र

---

1. Conscription act. 2. Armistice.

पर हस्ताक्षर हो जाने के कारण युद्ध रुक गया वरना इस झगड़े का क्या परिणाम होता, यह कल्पना की बात है।

इस समय आयरलैण्ड में तीन प्रमुख दल थे। दक्षिण में नेशनलिस्ट[1] और उसके विरोधी सिनफ़ेनर[2] लोगों का दल तथा उत्तर में उल्स्टेराइट[3] लोगों का यूनियनिस्ट दल[4]। पार्लियामेन्ट के चुनाव में उस समय आयरलैण्ड को १०५ सीटें मिलती थीं। तदनुसार सन् १९१८ ई० के दिसम्बर के चुनाव में भिन्न दलों को नीचे लिखे अनुसार सीटें मिलीं:—

यूनियनिस्ट	२५
नेशनलिस्ट	७
सिनफ़ेनर	७३

चुनाव के बाद सिनफ़ेनर लोगों ने वेस्टमिनिस्टर[5] की पार्लियामेन्ट में शामिल होना अस्वीकार कर दिया, तथा आयरिश लोगों की एक अलग पार्लियामेन्ट स्थापित करने का प्रस्ताव किया। तदनुसार इन लोगों ने दूसरे वर्ष जनवरी में डबलिन[6] में एक आयरिश पार्लियामेन्ट स्थापित की। इस पार्लियामेन्ट में सिनफ़ेनर

1. Nationalist.　　2. Sinnfeiner.
3. Ulsterite.　　4. Unionist group.
5. Westminister.　　6. Dublin

लोगों के प्रतिनिधियों ने अपना नाम आयरिश रिपब्लिकन पार्टी[1] रखा।

इस पार्लियामेन्ट की पहली बैठक में केवल २६ सदस्य उपस्थित थे। शेष ५४ सज्जनों में से कुछ तो जेल में थे, कुछ जेल की राह में थे और कुछ छिपे हुए थे। डायल[2], जो इस पार्लियामेन्ट का नया नाम था, इतनी विकट परिस्थितियों में भी अपनी बैठक करती रही। इस बैठक में शान्ति सभा में भेजने के लिए तीन प्रतिनिधि चुने गये जिनको आयरिश लोगों की स्वतंत्र सत्ता के प्रतिपादन के लिए भेजा जाना निश्चित हुआ। परन्तु उपर्लिखित पेरिस की शान्ति सभा ने इन लोगों को प्रतिनिधित्व से वञ्चित कर दिया और आयरिश पार्लियामेन्ट को जायज़ पार्लियामेन्ट मानना अस्वीकार कर दिया। बाद की बैठक में डायल ने ईमन डि वेलरा[3] को प्रेसीडेन्ट चुना।

डि वेलरा सन् १८८२ ई० में न्यूयार्क[4] में आयरिश माता तथा स्पेनिश पिता से पैदा हुआ था। इसकी माँ इसे बचपन में ही आयरलैंएड लिवा ले गई थी। बड़ा होने पर डि वेलरा गणित का प्रोफ़ेसर हो गया। वक्तृत्व तथा देशभक्ति के गुणों से भूषित यह

1. Irish Republican Party.
2. Dail. 3. Eamonn De Valera.
4. New York.

युवक ईस्टर के विप्लव में क्रान्तिकारी नेता बन गया। इस विप्लव में इसके पकड़े जाने पर बृटिश सरकार ने इसे प्राण-दण्ड का फ़ैसला सुना दिया, परन्तु बाद में प्राण-दण्ड की सज़ा को आजन्म कारावास में बदल दिया गया। सन् १९१७ ई० में क़ैदियों को सामूहिक क्षमा-प्रदान में डि वेलरा भी छूट गया। परन्तु क्रान्तिकारी उद्योगों में लगे रहने के कारण यह पुनः पकड़ लिया गया। इस बार यह बचकर अमेरिका भाग गया। यहाँ उसे राजनैतिक कार्य के लिए द्रव्य मिला। महायुद्ध के समाप्त होते ही वह आयरलैण्ड वापस आया और रिपब्लिकन दल का मुखिया बन बैठा।

डायल को देशीय पार्लियामेन्ट मानने से अस्वीकार करने के कारण आयरिश रिपब्लिक और ग्रेट ब्रिटेन के बीच में एक वास्तविक युद्ध-सा छिड़ गया। अंग्रेज़ी फ़ौजों और पुलिस की सेनाओं को आयरिश रिपब्लिकन फ़ौज से, जिसका सेनानायक माइकेल कोलिन्स[1] नामक सुयोग्य नवयुवक था, खुले खेत में जमकर युद्ध करने को बाध्य होना पड़ता था। दोनों ओर दर्दनाक भीषण अत्याचार होते थे और सन् १९२० ई० के दिसम्बर मास में इसी युद्ध में कार्क[2] नगर जलकर स्वाहा हो गया। आयरिश लोगों की खास जलन उन आग्ज़िलरी[3] फ़ौजों के ऊपर थी जो आयरलैण्ड की

1. Michael Collins. 2. Cork.
3. Auxiliary.

पुलिस की सहायतार्थ इङ्गलैण्ड से भेजी जाती थी। आयरिश लोग कहते थे कि इस भेजी हुई सेना में वे ज़ालिम क़ैदी हैं जो इन लोगों पर ज़ुल्म करने के लिए जेलों से रिहा कर दिये गये हैं। कुछ भी हो, मगर यह साफ़ हो गया कि आयरिश लोग ज़ोर-ज़ुल्म से दबने वाले कायर नहीं हैं।

झगड़ा समाप्त करने की ग़रज़ से लायड जार्ज ने बृटिश पार्लियामेन्ट में सन् १६२० के दिसम्बर के महीने में आयरलैण्ड के लिए दूसरा होमरूल ऐक्ट पास किया। इस क़ानून ने आयरलैण्ड को पहले से अधिक अधिकार दिये परन्तु इसने इस टापू को दो भागों (उत्तरीय तथा दक्षिणीय) में विभाजित कर दिया। उत्तर के उल्स्टेराइट लोगों ने इस क़ानून को सहर्ष स्वीकृत कर लिया और उसी के अनुसार कार्रवाई करने को उद्यत हुए। परन्तु बाक़ी देश इसके विरुद्ध था क्योंकि, वे कोरा होमरूल नहीं चाहते थे और न यही चाहते थे कि इस द्वीप के दो टुकड़े कर दिये जायँ। लेकिन जब इङ्गलैण्ड ने विरोध पर कुछ भी ध्यान न दिया, सन् १६२१ की वसन्त ऋतु में चुनाव शुरू कर दिया तो सिनफ़ेनर लोगों ने दक्षिणीय पार्लियामेन्ट में १२८ सीटों में से १२४ अपने लोगों के दल के आदमियों से भर दीं। शेष चार सदस्य डबलिन युनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर थे। पहली बैठक में इस पार्लियामेन्ट की सभा में केवल यही

चार सदस्य उपस्थित थे। परिणाम यह हुआ कि यह सभा सदा के लिए विसर्जित कर दी गई।

फिर भी लायड जार्ज समझौते के प्रयत्न में लगे रहे। जून सन १९२१ ई० में उन्होंने लन्दन आकर समझौता करने के लिए डि वेलरा को आमंत्रित किया। तदनुकूल पुनः एक कान्फ्रेंन्स हुई, जिसमें लायड जार्ज के प्रस्ताव आयरलैण्ड के लोगों को स्वीकृत नहीं हुए। अक्टूबर के महीने में पुनः एक दूसरी कान्फरेन्स की गई। आयरलैण्ड तथा ग्रेट ब्रिटेन में जातीय सहयोग के लिए यह बुलाई गई थी। इस बार आयरिश प्रतिनिधियों का मुखिया आर्थर ग्रिफ़िथ[1] था जिसने सिनफ़ेन दल की नींव डाली थी। सन् १९२१ ई० के ६ दिसम्बर को सुबह बृटिश और आयरिश प्रतिनिधियों ने एक सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर किया, जिसने आयरिश फ़्री स्टेट[2] को जन्म दिया।

इस सन्धि द्वारा आयरलैण्ड अन्य स्वतंत्र उपनिवेश, कैनाडा और आस्ट्रेलिया आदि की भाँति एक स्वतंत्र उपनिवेश[3] हो गया और इसका नाम आयरिश फ़्री स्टेट पड़ा। अभी सन्धि के शर्तनामे के अनुसार इङ्गलैण्ड के सम्राट् महोदय के प्रति स्वामिभक्ति के लिए फ़्री स्टेट के अफ़सरों को सौगन्ध खाना अनिवार्य था।

1. Arthur Griffith. 2. Irish Free State.
3. Commonwealth.

सम्राट् का प्रतिनिधि, कैनाडा की भाँति गवर्नर जेनरल बनाया गया। आयरलैण्ड के समुद्र-तट का संरक्षण इङ्गलैण्ड के हाथ में रहा और उसके कई बन्दरगाहों पर आधिपत्य बना रहा। वहीं बृटिश लोगों की जल-सेना रहा करती थी। फ्री स्टेट को भी अपनी फ़ौज रखने का अधिकार मिल गया। अपने समुद्र-तट की रक्षा का भार भी बाँटना इस सन्धि-पत्र के शर्तनामे के अनुसार बाध्य था तथा बृटिश राज्य के ऋण का भी एक अंश, जिसका निर्णय बाद में होना निश्चित हुआ, आयरलैण्ड के मत्थे मढ़ा गया। उत्तरीय आयरलैण्ड के सामने दो बातें रक्खी गईं। या तो वह फ्री स्टेट शामिल हो जाय या वह १६२० के ऐक्ट के अनुसार इङ्गलैण्ड का मित्र बना रहे। उल्स्टर वालों ने दूसरी ही बात पसन्द की, जिसके फलस्वरूप सरहद की लाइन का झगड़ा फिर भी बना रहा।

जिस समय इस सन्धि-पत्र की खबर आयरलैण्ड पहुँची, उस समय आपसी मतभेद के कारण सिन फ़ेन दल में फूट पड़ गई। डायल ने इस सन्धि-पत्र को ५७ के मुक़ाबिले में ६४ वोटों से स्वीकृत कर लिया। अब आर्थर ग्रिफ़िथ[1] और माइकेल कोलिन्स[2]

1. Arthur Griffith. 2. Michael Collins.

फ्री स्टेट के नेता हुए और इन लोगों ने उपर्युक्त क़ानूनों के निर्माण के लिए एक सभा की आयोजना की। इस पर डि वेलरा ने घोर विरोध किया और सन्धि-पत्र के विरुद्ध घोषणा करते हुए डायल के सभापतित्व से इस्तीफ़ा दे दिया। डि वेलरा और उसके साथी गर्व से यह कहते हुए बाहर चले आये कि "हम लोगों ने बृटिश सरकार का आयरलैंड पर राज्य करना जिस प्रकार असम्भव कर दिया, उसी प्रकार बृटिश आधिपत्य में सञ्चालित इस आयरिश सरकार का भी हम आयरलैंड पर राज्य करना असम्भव कर सकते हैं।" इसके बाद एक वर्ष तक डि वेलरा के अनुयायी रिपब्लिकन लोगों का दल देश में क्रान्तिमय उपद्रव और अशान्ति करता रहा। उल्स्टर की सीमा पर हमले, क़त्ल आदि उपद्रवों की अधिकता से पड़ोसी लोगों का जीवन भयातुर हो गया। १६वीं जून सन् १९२२ को नई पार्लियामेन्ट का चुनाव हुआ जिसमें मुख्य प्रश्न इङ्गलैंड की सन्धि स्वीकृत अथवा अस्वीकृत करने का था। डि वेलरा की रिपब्लिकन पार्टी ने इस बार के चुनाव में विचित्र उपायों से विघ्न डालना आरम्भ किया, जैसे रेल की पटरी तोड़ डालना, वोटरों को भय दिखाना, वक्ताओं को क़त्ल कर डालना आदि। परन्तु इस पर भी सन्धि के समर्थकों की ही विजय हुई।

फ्री स्टेट की सरकार इन उपद्रवियों के साथ अधिक निष्ठुरता का व्यवहार यह सोच कर नहीं करती थी कि वे भी किसी समय उनके साथी थे। इसी कारण यह उपद्रव बराबर जारी रहे। परन्तु सन् १९२२ के अगस्त महीने में इसी रिपब्लिकन दल के किसी व्यक्ति ने गुप्त रूप से माइकेल कोलिन्स की हत्या कर डाली। इसके कुछ ही दिन पहले अत्यधिक परिश्रम और परेशानी के कारण आर्थर ग्रिफिथ की मृत्यु हो गई थी। इसके स्थान पर विलियम कॉसग्रेव और केविन ओ हिगिन्स[1] पार्लियामेन्ट के नेता चुने गये और इन लोगों ने राजनैतिक अशान्ति को निर्दयता से कुचलने का निश्चय किया। सितंबर सन् १९२२ में नियमानुसार पार्लियामेन्ट की बैठक हुई जिसमें इस विषय में निश्चय हुआ और आयरिश पार्लियामेन्ट का प्रेसीडेन्ट कासग्रेव चुना गया। इस बार सन् १९२०-२१ में इङ्गलैंड के साथ के झगड़े से भी बढ़कर झगड़ा हुआ। घर का झगड़ा भयंकर होता है। सैकड़ों मार डाले गये या फांसी चढ़ा दिये गये और हज़ारों जेल में ठूँस दिये गये। अन्त में फ्री स्टेट के अधिकारी-दल की दमन-नीति की विजय हुई और सन् १९२३ ई० में डि वेलरा ने अपने साथियों से हथियार

---

1. Kevin O' Higgins.

रखवा दिये। इस झगड़े में देश का अनुमानतः ढाई अरब डालर का नुक़सान हुआ।

सन् १६२३ से १६२७ तक डि वेलरा के साथी शान्त रहे। किन्तु, वे चुपचाप नहीं बैठे रहे। उन्होंने रिपब्लिकन दल के लोगों को पार्लियामेन्ट के चुनाव में भेजना शुरू किया। इस दल के लोग चुने जाते और ब्रिटेन के सम्राट् के प्रति स्वामिभक्ति की सौगन्ध खाने से इन्कार करने के कारण स्वयं पृथक् हो जाते। इस प्रकार का असहयोग चलता रहा। इन्होंने अपना नया नाम भी फ़ायना फ़ाइल[1] रक्खा। कुछ समय तक इस स्थिति से कासग्रेव को लाभ ही रहा क्योंकि इसका बाहरी अर्थ यह समझा जाता था कि विरोधियों का दल छोटा है। इसी बीच में एकाएक १० जुलाई सन् १६२७ ई० को केविन ओ हिगिन्स का, जो कासग्रेव का सहायक (असिस्टैंट) था, ख़ून हो गया। यह व्यक्ति न्याय के मंत्रिपद पर रह कर उपद्रवी बाग़ियों के दमन करने का मुखिया था और सब लोग उसे आयरलैंण्ड का बलिष्ठ पुरुष समझते थे। इस ख़ून की साज़िश का पूरा दोष डि वेलरा पर लगा, यद्यपि कहा यह जाता है कि उसने इसमें भाग लेना या हाथ बटाना नामञ्ज़ूर कर दिया था। हिगिन्स ने आयरलैंण्ड की काफ़ी सेवा की थी और उसकी

1. Fianna Fail.

स्वतंत्रता के लिए उसकी पर्याप्त तपस्या भी थी। अतएव उसके हिमायती भी काफ़ी थे। इस हत्या के कारण ऐसे लोग भी जो डि वेलरा के पक्ष में थे, उसके विरुद्ध हो गये। फ़्री स्टेट की सरकार ने फ़ायना फ़ाइल की इन ग़ैर क़ानूनी कार्यवाइयों को निश्चितरूप से अन्त कर देने के लिए एक पब्लिक सेफ़्टी ऐक्ट[1] पास किया। इस क़त्ल के बाद से ही डि वेलरा को अमेरिका से आर्थिक सहायता मिलनी भी बन्द होगयी। पार्लियामेन्ट में सम्राट् के प्रति स्वामिभक्ति की सौगन्ध अनिवार्य हो गई। कड़े क़ानूनों ने शान्ति स्थापित की और विपरीत परिस्थितियों से विवश होकर डि वेलरा ने पार्लियामेन्ट में भाग लेना निश्चय किया और सभा के विरोधी दल का मुखिया बन गया। सितम्बर सन् १९२७ के चुनाव में डि वेलरा के दल ने डायल में १५३ सीटों में से ५७ सीटें जीतीं। इस सफलता ने इस दल को पार्लियामेन्ट का दूसरा बहुसंख्यक दल बना दिया। यह लोग कासग्रेव की आयरिश फ़्री स्टेट पार्टी से केवल ६ सीटें ही अधिक पा सके थे।

प्रेसीडेन्ट कासग्रेव की प्रतिभा का सूर्य सन् १९३० ई० से अस्त हो चला था। एक बार इसी वर्ष कासग्रेव को अपना इस्तीफ़ा देना पड़ा था; परन्तु शीघ्र ही पुनः निर्वाचित हो जाने से परिस्थिति

1. Public Safety Act.

सम्हल गयी। इस अवसर पर व्यापारिक संकट अपने पूर्ण प्रवाह पर था। इस कारण कासग्रेव की सरकार के सामने आर्थिक कठिनाइयाँ भी बढ़ रही थीं। क़ानूनों की सख़्ती से, आर्थिक कमी से, विदेशी वस्तुओं पर ऊँचा कर लगाने की नीति से, सरकार की असम्मति से और पुलिस फ़ौज और सरकारी नौकरियों की तनख़्वाहों के घट जाने से सम्पूर्ण देश में पुनः अशान्ति का वातावरण फैल गया। इस अशान्ति को उपद्रव, गुप्त षड्यंत्र तथा फ़ौजी संगठन का रूप धारण करते देख सरकार ने सन् १९३१ के अक्टूबर महीने में और भी कड़े क़ानून पास किये। उपद्रवियों को दबाने के लिए जगह जगह फ़ौजी अदालतें बन गईं जिनसे और आग लग गई। परन्तु जब अन्त में कासग्रेव और उसके साथियों ने यह घोषणा की कि आयरलैण्ड ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण में अधिक सुरक्षित तथा स्वतंत्रता उपभोग कर सकता है, तो लोगों की इस सरकार के प्रति भावना और भी ख़राब हो गई। इस समय तुलना करने पर डि वेलरा कासग्रेव से अधिक बहादुर और सुयोग्य जँचने लगा। जनता की धारणा बदलते कितनी देर लगती है!

सन् १९३२ ई० के चुनाव में कासग्रेव को ५७ तथा डि वेलरा को ७२ वोट मिले, १७ वोट स्वतंत्र दल वालों को तथा ७ वोट मज़दूर दल वालों को। जब सभा की बैठक हुई तो स्वतंत्र दल वालों ने

कासग्रेव का समर्थन किया और मज़दूर दल वालों ने डि वेलरा का साथ दिया। फलतः मार्च सन् १९३२ ई० में डि वेलरा प्रेसीडेन्ट चुन लिया गया। तब से आज तक डि वेलरा का शासन है। इसलिए इसी दल का आधिपत्य है और निकट भविष्य में कासग्रेव पार्टी के स्थान पाने की कोई सम्भावना नहीं दीख पड़ती। यह अवश्य कहा जाता है कि किसानों पर कासग्रेव पार्टी का प्रभाव अधिक है पर डि वेलरा पार्टी विद्यार्थियों, नवयुवकों तथा व्यापारियों में बहुत ही लोक-प्रिय है।

डि वेलरा ने अपनी ब्रिटेन-विरोधी-नीति को चरम सीमा पर पहुँचा दिया है। आयरलैण्ड न जाने किस दबाव से नाम-मात्र को ब्रिटेन के अधीन है। वरना विदेशी नीति तक में वह स्वतंत्रता से काम लेता है। वर्तमान समय में युद्ध के बादलों के भय से चैम्बरलेन की सरकार ने अनिवार्य सैनिक भरती कर शिक्षा का जो नियम बनाया था उससे भी आयरलैण्ड को पृथक् रखना पड़ा। डि वेलरा राष्ट्र-परिषद[1] के भी अध्यक्ष रह चुके हैं। भारत के बड़े बड़े नेता उनसे मिलते हैं और हमारे आन्दोलन के प्रति उनकी बड़ी सहानुभूति है। राजनैतिक आकाश में डि वेलरा का सितारा काफ़ी चमक रहा है।

---

1. League of Nations.

तेरहवाँ परिच्छेद

बेल्जियम

इङ्गलैण्ड के बाद सम्पूर्ण महाद्वीप का भ्रमण करने का मैंने पहले से ही निश्चय कर लिया था। यूरोप की यात्रा के लिए जितनी जानकारी की ज़रूरत थी, उन सब बातों को किसी एक पुस्तक के रूप में एकत्रित प्राप्त होना जब क़रीब क़रीब असम्भव-सा जान पड़ा, तो टॉमस कुक एण्ड सन्स[1] की सलाह से प्रोग्राम निश्चित करना पड़ा।

यूरोप के भ्रमण के लिए या तो उत्तर से होते हुए दक्षिण आया जाय या दक्षिणीय प्रान्तों से यात्रा प्रारम्भ कर उत्तर के मार्ग द्वारा लौटा जाय। मैंने उत्तर से होते हुए दक्षिण लौट आने का मार्ग इसलिए पसन्द किया कि यूरोप के बाद जहाँ कहीं भी जाना हो, दक्षिणी भाग से ही जाने का मार्ग है।

---

1. Thomas Cook & Sons.

सब सामान होटल में जमा करके केवल थोड़ा-सा आवश्यक सामान साथ लेकर के लिए चल पड़ा। लन्दन की लिवर-पूल स्ट्रीट[1] स्टेशन से शाम को ८॥ बजे की रेल द्वारा हारविच[2] पहुँचा। यहाँ से इंगलिश चैनेल[3] पार करने के लिए अग्नि-बोट पर जाना पड़ता है, जो सुबह ६ बजे 'ज़ीब्रग घाट'[4] पर पहुँचा देता है। यहाँ पर जहाज़ के यात्रियों के लिए बेल्जियम एक्सप्रेस तैयार खड़ी मिलती है, जो ठीक पौने नौ बजे बेल्जियम की राजधानी ब्रूसेल्स पहुँचा देती है।

टिकटों और होटलों में ठहरने की जगहों का प्रबन्ध स्वीडेन की राजधानी स्टॉकहोम[5] तक के लिए पेश्तर ही निश्चित कर लिया था और यह भी निश्चित कर लिया था कि कितना समय कहाँ पर ठहरना है। यों तो सम्पूर्ण यात्रा का प्रोग्राम हमने लन्दन में ही निर्धारित कर लिया था, परन्तु सुभीते के विचार से मैंने टिकट इत्यादि तीन क़िस्तों में मंगाये थे—ताकि अगर कहीं पर हम यात्रा के क्रम में कुछ परिवर्त्तन करना चाहें तो दिक़्क़त न पड़े। पूरे यूरोप के भ्रमण के लिए आवश्यकता भर रुपया भी मैंने पहले से ही जमा कर दिया था, ताकि सफ़र ख़र्च में दिक़्क़त न पड़े।

1. Liverpool Street.
2. Harwitch.
3. English Channel.
4. Zeebrugge Quay.
5. Stockholm.

बेल्जियम और हालैण्ड सन् १८१५ ई० के बाद से एक साथ मिल गये। ये नेदरलैण्ड्स[1] कहलाने लगे। परन्तु सन् १८३० ई० में बेल्जियम वालों ने विप्लव कर दिया, और सन १८३१ ई० में बेल्जियम एक स्वतंत्र देश हो गया। सन् १८३६ ई० की १६ अप्रैल की सन्धि द्वारा बेल्जियम का एक स्वतंत्र और निष्पक्ष राज्य स्थापित हो गया। बेल्जियम वालों का पहला राजा लिओपोल्ड[2] था जिसका नेशनल कांग्रेस द्वारा सन् १८३१ ई० में निर्वाचन हुआ था। इसके बाद सन् १८६५ ई० में उसका पुत्र लिओपोल्ड द्वितीय[3] गद्दी पर बैठा। सन् १९०६ ई० में उसका स्वर्गवास हो जाने के बाद से उसका भतीजा अल्बर्ट बेल्जियम का शासक हुआ।

महायुद्ध काल में जब यह देश कुछ दिनों के लिए जर्मनी के अधिकार में था, इसकी महान क्षति हुई। पुनर्निर्माण का कार्य सन् १९१९ ई० की गर्मी से ही शुरू हो गया और वर्ष के अन्त तक रेलों, नहरों और सड़कों की व्यवस्था, महायुद्ध के पहले की तुलना में पुनः उपयोगी हो गई। पिछले महायुद्ध-काल में कोयले की खानों का कम नुकसान हुआ था, परन्तु मशीनों और लोहे के अभाव में टेक्सटाइल के व्यापार को बहुत धक्का लगा।

---

1. Netherlands. 2. Leopold of Saxe-Coburg.
3. Leopold II.

बेल्जियम जन्म से राजा द्वारा शासित देश है। एक पार्लिया-मेन्ट भी है जिसमें दो सभागृह हैं, एक सिनेट[1] और एक प्रतिनिधि-मण्डल[2]। राजकाज के लिए ये उत्तरदायी हैं। एक्ज़ीक्यूटिव में एक प्रधान मंत्री[3] और उसका मंत्रिमंडल[4] है, जो राज-नियमों का प्रवर्त्तक है।

यूरोप के अन्य प्रदेशों की तुलना में बेल्जियम सब से छोटा राज्य[5] है, परन्तु इस देश की बस्ती संसार की सब से अधिक घनी बस्तियों में से एक है। यहाँ तक कि किसी-किसी स्थान पर जन संख्या १,००० मनुष्य प्रति मील के हिसाब से है। इस देश की समस्त भूमि का क्षेत्रफल लगभग ११,७५० वर्ग मील है, और आबादी अनुमानतः ८,०००,००० है। फ़ी वर्ग मील में ७०२ आदमी रहते हैं और खेती लायक़ स्थान में १,७६२ फ़ी वर्ग मील आदमियों की औसत है। गत महासमर के बाद राज्य का क्षेत्रफल कुछ मील बढ़ गया है। सम्पूर्ण बेल्जियम देश नौ सूबों में विभाजित है।

---

1. Senate. 2. Chamber of Representatives.
3. Prime Minister. 4. Cabinet.
5. State.

बेल्जियम वासियों के दैनिक जीवन पर फ्राँसीसी प्रभाव अधिक ज्ञात पड़ता है। भाषा भी अधिकतर फ्रेञ्च अथवा फ़्लेमिश[1] है। जर्मनी के बाद संसार में यह दूसरा देश है जहाँ बीयर शराब का अत्यधिक उपयोग होता है। बेल्जियम ने गत महायुद्ध के बाद से बहुत उन्नति की है। चूँकि कच्चा माल लेकर चीज़ें बनाने का काम काफ़ी बढ़ा-चढ़ा है, इसलिए साधारणतया लोगों का रहन-सहन उतना उन्नत नहीं हो सका है जितना ऐसे व्यापार-पूर्ण-सम्पदा-समृद्ध देश के निवासियों का होना चाहिए। ये लोग प्रायः कामकाजी होने पर भी इङ्गलैण्ड के समान फ़ुर्तीले, स्वच्छ और चपल नहीं दिखाई पड़ते।

बेल्जियम के व्यापार-प्रधान नगर ब्रूसेल्स[2], घेन्ट[3], ऐन्टवर्प[4] और ब्रग्स[5] हैं। ब्रूसेल्स नगर राजधानी है। ऐन्टवर्प तो यूरोप में लन्दन, पेरिस और बर्लिन के बाद चन्द कामकाजी नगरों और बन्दरगाहों में से एक समझा जाता है। इन नगरों के अतिरिक्त इस देश में, सब से अधिक कोयले की खदान के प्रान्तों के पास फ़ैक्टरियाँ पाई जाती हैं। टेक्सटाइल[6] का काम, ख़ास कर सूती

1. Flemish. 2. Brussels.
3. Ghent. 4. Antewerp.
4. Bruges. 5. Textile.

कपड़े, कपास और सन के कातने और बुनने इत्यादि का काम घेन्ट के आस-पास होता है। ऊनी माल वरवियर्स[1] नामक नगर के निकट बनता है। केमिकल फ़ैक्टरियाँ[2] सम्पूर्ण व्यापारीय प्रान्त में पाई जाती हैं और यहाँ पर इस विशेष व्यापार की शाखाएँ हैं। एन्टवर्प में हीरे की कटाई का काम निहायत उम्दा होता है। नक़ली जवाहरात का, जिनकी कटाई के लिए बेल्जियम संसार में प्रसिद्ध है, काम बहुत ही सुन्दर होता है। नक़ली जवाहरात देखने में तड़क, भड़क और आँखों को धोखा देने में असली को भी मात करते हैं। इसके अतिरिक्त बर्तन, मिट्टी की बनी वस्तुएँ, शीशा, काग़ज़ आदि बनाने के काम भी यहाँ के प्रसिद्ध व्यापार हैं।

बेल्जियम में बहुत घनी खेती होती है, विशेष कर गेहूँ की फ़सल संसार में सब से अच्छी होती है। कुल फ़सल का पाँचवाँ भाग देश में खर्च होता है, शेष चार भाग विदेशों को भेज दिया जाता है। बेल्जियम घोड़ों की रखवाली और नस्ल के लिए बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ का सिक्का फ्रांक[3] है, जो मूल्य में दो आने के बराबर होता है।

इस देश की राजधानी ब्रूसेल्स वास्तव में दर्शनीय नगर है। यह राजमहल तथा पार्लियामेन्ट भवन के अतिरिक्त अपनी सुन्दर

---

1. Verviers. 2. Chemical Factories.
3. Franc.
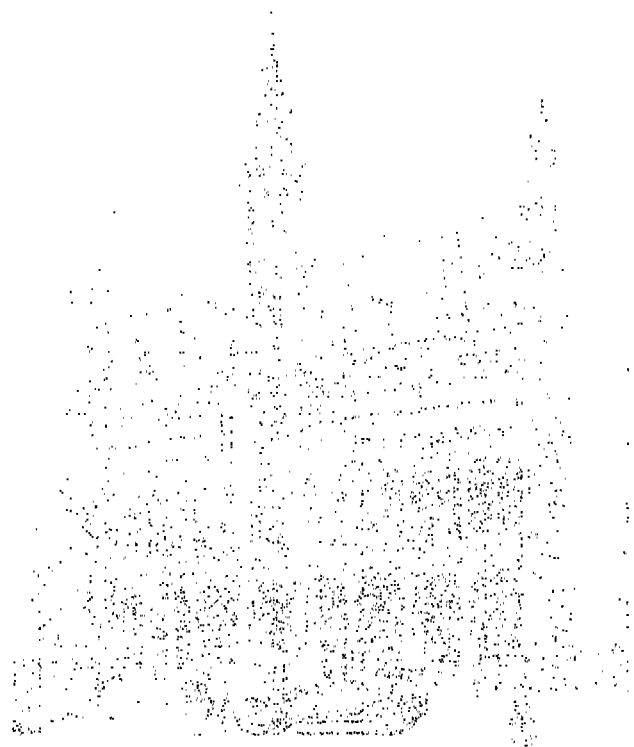
ब्रुसेल्स का राजमहल

इमारतों के लिए इतना प्रसिद्ध है कि लोग इसको 'छोटा पेरिस'[1] कहते हैं। नगर यथेष्ट परिमाण में उन्नत तथा आधुनिकता और वैभव से पूर्ण जान पड़ता है। खास सड़कों के दोनों ओर केफ़, रेस्टराँ और होटल आदि बहुतायत से पड़ते हैं। सड़कें चौड़ी तथा मनुष्यों और गाड़ियों की भीड़ से भरी रहती हैं। बैंक, बीमा-कम्पनियाँ, स्टोर, थियेटर, ऑपेरा हाउस, नृत्यगृह तथा निशि-क्रीड़ा-निकेतन इत्यादि सभी वस्तुएँ, जो एक उन्नत और आधुनिक नगर के लिए आवश्यक समझी जाती हैं, बड़ी से बड़ी संख्या में इस नगर की शोभा बढ़ाती हैं। यहाँ की चित्रशाला[2] में वस्तुतः चित्रकला-सम्बन्धी अपूर्व संकलन है तथा यह दर्शनीय है। चित्रकार की अद्भुत निपुणता-पूर्ण तथा देशान्तर-प्रख्यात चित्रकारी इस चित्रशाला की बहुमूल्य सम्पत्ति है। इसे अवश्य देखना चाहिए।

ब्रूसेल्स से एन्टवर्प आदि मुख्य मुख्य नगरों को नहरें जाती हैं। ये बहुत सुन्दर और व्यापार के लिए परम उपयोगी हैं। नहर के किनारे-किनारे मोटर की सैर बहुत ही सुहावनी मालूम पड़ती है। यहाँ से यूरोपीय कुरुक्षेत्र यानी जगत् प्रसिद्ध वाटरलू का मैदान निकट ही है। यहाँ के लिए भी नहर के किनारे-किनारे मार्ग गया

1. The Little Paris. 2. Art Gallery.

ब्रूसेल्स का टाउनहाल

है। हम लोग नहर वाली सड़क पर मोटर की मुखद सैर, जो बड़ी मनोरञ्जक प्रतीत होती है, करते हुए वाटरलू देखने गये।

वाटरलू बेल्जियम देश का एक ग्राम है और ब्रूसेल्स से ११ मील दक्षिण की ओर है। इस छोटे से गाँव का ऐतिहासिक महत्व महा वीर नैपोलियन से सम्बन्धित होने के कारण विश्व-विख्यात है। यहाँ पर सन् १८१५ ई० की १८वीं जून को नैपोलियन को वेलिङ्गटन[1] ने अन्तिम बार हराया था। जिस नैपोलियन की सबल यशस्वी भुजाओं ने समूचे यूरोप का राजनैतिक ढाँचा नष्ट कर पूर्णतया अपने आधिपत्य में कर लिया था उसका इसी हार से अस्त हो गया, और उसके बाद यूरोप के राजनैतिक मानचित्र में जो परिवर्त्तन हुए वह महायुद्ध काल तक स्थायी रहे। इस स्थान पर एक गोलाकार गुम्बददार मन्दिर बनाया गया है, जिसके अन्दर चित्रों द्वारा तत्कालीन युद्ध-सञ्चालन का मानचित्र है, जिससे इस जगत्-विख्यात युद्ध का वास्तविक रूप आँखों के सामने खिच जाता है। यदि पिछले महासमर की संग्राम-भूमि देखना हो तो ब्रूसेल्स नगर में ठहरने के लिए दो दिन का प्रबन्ध करना चाहिए वर्ना इस नगर के दर्शन के लिए एक ही दिन पर्याप्त है।

यहाँ का रहन-सहन मामूली ढंग का है और रात्रि-जीवन

1. Wellington

यथेष्ट मनोरञ्जक और सुन्दर है। जिस प्रकार के जीवन से आपको विशेष रूचि हो, होटल वाले से अपनी इच्छा प्रकट करने पर आप कुछ भी जान, देख या प्राप्त कर सकते हैं। वह प्रसन्नता-पूर्वक आपको सब पता तथा आवश्यक बातें बता देगा। दर्शनीय स्थानों को दिखाने के लिए यहाँ भी टूरिस्ट एजेन्सियाँ[1] बहुतायत से हैं। यह लोग यात्रियों से स्वयं आकर मिल लेते हैं, अथवा अन्य किसी से भी पता लगाया जा सकता है। इन एजेन्सियों द्वारा यात्रा तथा देश-दर्शन करने में बड़ी सुविधा होती है। अगर एक या दो व्यक्ति ही हों तो भी सस्ती रहती है और सभी महत्वपूर्ण स्थान देखने में आ जाते हैं। इन लोगों का गाइड आपके साथ रहता है जो सब समझाता रहता है।

दूसरे दिन सवेरे दस बजकर पन्द्रह मिनट पर छूटने वाली ट्रेन पर सवार होकर हम हॉलैण्ड[2] की राजधानी ऐम्सटर्डम[3] के लिए रवाना हुए। किन्तु, यहाँ से रवाना होते समय, मैं अपने मन में एक भावना लेकर चला और वह यह कि इस स्वतंत्र देश के नागरिक भी भारत के विषय में बहुत कम जानते हैं और जो कुछ जानते हैं उसके फल-स्वरूप भारतीयों के प्रति इनके मन में कोई विशेष आदर या सद्भाव नहीं है।

1- Tourist agencies. 2. Holland. 3. Amsterdom.

चौदहवाँ परिच्छेद

हॉलैण्ड

यह मैं पिछले परिच्छेद में बता चुका हूँ कि हॉलैण्ड और बेल्जियम को मिलाकर नेदरलैण्ड्स कहते थे। उस समय यह दोनों देश एक राज्य-व्यवस्था के अन्तर्गत थे। हॉलैण्ड यूरोप के पश्चिमोत्तरीय तट पर समुद्र के किनारे कुछ मल्लाहों और व्यापारियों की बस्ती थी। नेदरलैण्ड्स बहुत समय तक स्पेन राज्य के अधीन था। परन्तु यहाँ के निवासी डच लोग, जो सामुद्रिक जीवन में अभ्यस्त होने के कारण बड़े परिश्रमी, बहादुर और साहसी थे, अधिक दिनों तक स्पेन का नियंत्रण न सह सके और उसके विरुद्ध बग़ावत कर बैठे। यही नहीं, बल्कि ये लोग स्वयं ही स्पेनिश उपनिवेशों पर धावा करने लगे। इन स्वच्छन्द लोगों ने अपनी स्वतंत्रता पुनः

प्राप्त करने के लिए स्पेन से युद्ध-घोषणा कर दी। परिणाम यह हुआ कि डच लोग अपना स्वतंत्र साम्राज्य स्थापित करने में समर्थ हुए और हॉलैण्ड और बेल्जियम डच लोगों का एक स्वतंत्र औपनिवेशिक साम्राज्य बन गया। सन् १८३१ ई० में बेल्जियम स्वतंत्र होकर अलग हो गया।

हॉलैण्ड स्वतः एक छोटा सा राज्य है पर उसके पूर्वजों के परिश्रम और बलिदान से संस्थापित इसका बृहत् उपनिवेश इसकी महान् सम्पत्ति है। सुदूर विश्व के पूर्वीय अर्ध-खण्ड में डच ईस्ट इन्डीज़[1] के द्वीप-समूह इसी शक्ति-शाली साम्राज्य के उपनिवेश हैं, जिनका विस्तार सुमात्रा द्वीप से लेकर न्यूगाइना तक है। १२,५०० वर्ग-मील का यह छोटा-सा देश अपने से चौंसठ गुना अधिक क्षेत्रफल वाले इन द्वीपों की महान् सम्पदा का भोक्ता है। इन द्वीपों की जन-संख्या हॉलैण्ड से साढ़े सात गुना अधिक अर्थात् ४८,०००,००० है। हॉलैण्ड की जन-संख्या केवल ६,५००,००० है। दक्षिणी अमेरिका के उत्तर में डच गाइना और क्यूराकैओ[2] भी इसी के उपनिवेश हैं।

हॉलैण्ड राजसत्ता-वादी प्रदेश है। राज्य का संचालन यहाँ का राजा तथा उसके नौ मंत्रियों का मण्डल करता है। जनता का

1. Dutch East Indies 2. Curacao

अनुमानतः ७० प्रतिशत् भाग वोटर है, जो असेम्बली के लिए वोट दे सकता है। यह सम्पूर्ण देश ११ प्रान्तों में विभाजित है, जिन्हें कम्यून[1] कहते हैं।

मेरे विचार से हॉलैण्ड सारे संसार में एक अनुपम और विचित्र देश है। एक तो मुझे संसार में यही एक देश ऐसा देखने को मिला जिसका भूतल समुद्र-तल से भी नीचा हो। इस देश का एक प्रधान अंश किसी समय समुद्र के नीचे था। अनुमानतः सम्पूर्ण देश का चतुर्थांश, जो समुद्र की सतह से भी नीचा है, एक बड़े दलदल का टुकड़ा सा था। इस भूमि के दो समान अधिकारी जान पड़ते थे, एक तो यहाँ के रहने वाले मछुए और मल्लाह तथा दूसरा समुद्र, जिसकी लहरें वर्ष में सैकड़ों बार अपना आधिपत्य निश्चित करने के लिए उमड़ कर सम्पूर्ण देश पर छा जाती थीं। उनसे तुमुल युद्ध करते हुए यहाँ के रहने वाले हार मान कर भाग भाग कर अपने प्राणों की रक्षा करते थे और इनके फूस-लकड़ी आदि के बने मकान लहरों में बह जाते थे। यहाँ के कुशल डच-इञ्जीनियरों के प्रशंसा-योग्य प्रयत्न से हम आज देश के इस भाग को मनुष्यों के निवास योग्य देखते हैं, जिन्होंने अकथ परिश्रम द्वारा इस दलदल को सुखाया और बाँध बना कर नदियों तथा

1. Communes

समुद्र की अखंड जलराशि को तट के किनारे बाँध कर पानी आने से रोका। समुद्र की अखण्ड जलराशि को तट के किनारे किनारे के सैन्ड्यून[1] नामक बाँधों ने आगे बढ़ने से रोक रक्खा है। इन बाँधों को चीर कर नदियाँ समुद्र तट को जाती हैं, इसलिए नदियों में बाढ़ आ जाने का सदैव भय रहता है। अस्तु, इसी कारण यहाँ पर जल आवश्यकता से कहीं अधिक है। जल के कारण यहाँ की भूमि तर रहती है। देश रमणीक भी अधिक है। सारा देश साल भर बराबर हरा-भरा रहता है। प्राकृतिक दृश्यों के इतने स्वच्छ और सुहावने संयोग से यह प्रदेश नन्दन-निकुञ्ज के समान सुन्दर जान पड़ता है। भारतवर्ष से बिदा होने के बाद, इङ्गलैण्ड तथा बेल्जियम जैसे भीड़ भड़क्के वाले देशों को देखकर हॉलैण्ड में मानों साँस लेने के लायक ताज़ी हवा मिली—आँखें तर हो गई।

भूमि उपजाऊ होने के कारण यह देश अधिकतर खेतिहर है। कृषि और चराई यहाँ का मुख्य उद्यम है। यहाँ पर ढोर, भेड़ें आदि और दूध तथा अण्डे देने वाले पशु बहुतायत से पाले जाते हैं। अण्डे, दूध, मक्खन और पनीर आदि वस्तुऐं डिब्बों में बन्द कर विदेश भेजी जाती हैं। खेती अधिकतर नये तरीके पर ही

1. Sanddunes

होती है तथापि हवा की चक्कियाँ अब भी बहुतायत से देखने में आती हैं। हवा की ये चक्कियाँ[1] हालैण्ड की ही विशेषता हैं और यूरोप में अन्यत्र कहीं नहीं पाई जातीं।

यहाँ के मछुए मछलियों का व्यापार करते हैं और मछलियों को डिब्बों में भर-भर कर विदेश भेजते हैं। समुद्र तट के निकट मोती भी पाये जाते हैं और इनका व्यापार रूस, अमेरिका आदि देशों से होता है। व्यापार की दृष्टि से यह देश बहुत सम्पन्न है और यहाँ से कच्चा और तैयार माल विदेशों को यथेष्ट मात्रा में भेजा जाता है जिससे इस देश को अच्छी आमदनी होती है।

ब्रूसेल्स से चल कर हम राटर्डम पहुँचे। यह हॉलैण्ड का दूसरा बड़ा नगर है। यहाँ दिन में ठहर कर रात्रि की गाड़ी से एम्सटर्डम जाने का निश्चय कर हमने इस नगर को भी लगे हाथ देख लेना उचित समझा।

राटर्डम राइन[2] नदी के मुहाने पर डेल्टा की नद-शाखा मआस[3] के ऊपर बसा हुआ है। नगर का प्रधान अंश, जिसमें इधर-उधर एक दूसरे को काटती आती-जाती हुई बहुत सी नहरें तथा जल धारायें हैं, राइन नदी के दाहिने तट पर बसा है।

---

1. Windwheels 2. Rhine 3. Maas

व्यापारिक दृष्टि से इस नगर में समुद्री जहाज़ों का निर्माण तथा मरम्मत का काम विशेष महत्व का है। यहाँ मशीनरी बनाने के भी कारख़ाने हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ तम्बाकू, शक्कर, शराब, धातु की वस्तुएँ, रस्सियाँ तथा रासायनिक पदार्थ बनाने के कारखानों से नगर काफ़ी व्यापारी मालूम पड़ता है। डच व्यापार के आयात् तथा निर्यात् का आधा अंश इसी नगर से गुज़रता है। राटरडम काफ़ी बड़ा और सब भाँति से आधुनिक नगर है। समुद्र-तट से १५ मील दूर होने पर भी इस नगर तक बड़े से बड़े जहाज़, जिनके लिए मश्रास नदी काफ़ी गहरी है, आ सकते हैं। हमने इस नगर में एक खास बात यह देखी कि इसका बहुत बड़ा भाग लकड़ी के तख्ते पर बसा है। इसका कारण यह बतलाया जाता है कि नदी की तरी के कारण इतना अधिक दलदल था कि कोई इमारत बनाना ही असम्भव था। जन संख्या लगभग ५,८१,००३ है।

यहाँ से रात को रवाना होकर हम प्रातः हॉलैण्ड की व्यापारिक राजधानी ऐम्सटर्डम पहुँचे। यह भी एक जगत् प्रसिद्ध बन्दरगाह है। ज़्वेडर ज़ी[1] नामक आखातनुमा समुद्र के दक्षिण-पश्चिमीय तट पर तथा ऐम्सटेल नदी के तट पर बसा हुआ यह नगर हॉलैण्ड का सब से बड़ा शहर तथा देश का दूसरा सब से बड़ा और काम-काजी

1. Zuyder zee

बन्दरगाह है। यहाँ का मुख्य व्यापार हीरे की खराद का काम तथा जहाजों का निर्माण और मरम्मत है। इनके अतिरिक्त कुनैन[1] निकालने तथा शक्कर, सुहागा और कपूर बनाने का काम भी होता है।

इस नगर की एक सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसका बहुत बड़ा भाग, अनुमानतः १८½ वर्ग मील, काठ की नींव पर बसा है। इसका कारण भी वही है जो रॉटरडम के लिए बता चुका हूँ। दलदल और पानी को सुखाने के लिए इस में करोड़ों बल्लियाँ और मोटे तख्ते डाल-डाल कर ज़मीन पोढ़ी की गई। नगर का अधिकांश प्राचीन भाग समुद्र के बाँध के चारों ओर बसा हुआ है।

अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण नगर मुसकाता-सा प्रतीत होता है। सब से बड़ी विचित्रता जो इस नगर के सौन्दर्य में सोने में सुगन्ध का काम करती है, वह यहाँ के जल-मार्ग हैं। ये जल-मार्ग यहाँ की नहरें हैं, जो माल आदि के आने-जाने का मुख्य मार्ग हैं। निकट के दूसरे नगरों को भी नहरों द्वारा ही जाना पड़ता है। ये नहरें क़रीब क़रीब हर सड़क के बाद बनी हुई हैं और ऐसी जान पड़ती हैं मानो सारे नगर में नहरों का जाल बिछा हुआ है। इन्हें पार करने के लिए अनुमानतः ३०० पुल हैं, जो थोड़ी थोड़ी दूर पर बहुत ही सुन्दर जान पड़ते हैं। व्यापारिक उपयोगिता के अतिरिक्त

1. Quinine

यह नहरें इस नगर के सौन्दर्य को बहुत बढ़ाती हैं। अधिकतर लोग जल-मार्गों अथवा नहरों के किनारे जाने वाली सड़कों में मोटरों पर आते जाते हैं। ट्राम गाड़ियाँ भी हैं, परन्तु यात्रियों की अधिकता न होने के कारण बहुत कम हैं।

यहाँ का जीवन भी कुछ विचित्र प्रकार का जान पड़ता है। दिन में तो काफ़ी चहल-पहल रहती है, क्योंकि यह नगर मुख्यतः व्यापारियों की ही बस्ती है, परन्तु संध्या के उपरान्त यहाँ, यूरोप के अन्य नगरों के साधारण नियम के विपरीत, सड़कों पर सन्नाटे का आलम छा जाता है। रात्रि-जीवन तो कुछ है ही नहीं। शहर भर में केवल एक 'निशि-क्रीड़ा-निकेत'[1] और दो-तीन थियेटर हैं। केफ़ और रेस्टोरॉं काफ़ी हैं और इनमें रहने वालों का जीवन भी यथेष्ट आनन्दमय है। यहाँ का रहन-सहन देखकर ऐसा जान पड़ता है मानो यह प्रदेश यूरोप की नई सभ्यता और दिखावटी रहन-सहन के ढंग से बहुत होशियारी के साथ छूत की तरह बचा कर अलग रक्खा जा रहा है। यहाँ की हर एक बात पुरानेपन से भरी हुई मालूम होती है। इसे देखकर हरएक यात्री को आश्चर्य-चकित होना पड़ता है।

प्रकृतिदेवी के साथ साथ इस नगर पर लक्ष्मी की भी विशेष

1. Caibre

कृपा-दृष्टि है। धन और धनियों का बाहुल्य यहाँ पर इतना अधिक जान पड़ता है जितना साधारणतया कहीं देखने में नहीं आता। सम्पूर्ण देश का यह महाजनी केन्द्र है। नगर में धन के बाहुल्य तथा वस्तुओं की न्यूनता का परिणाम यह है कि वस्तुओं का मूल्य अधिक और धन का मूल्य कम होने के कारण यहाँ के रहन-सहन का खर्च बहुत बढ़ गया है, परन्तु इसके विपरीत रहन-सहन का ढंग ऊँचा नहीं दीख पड़ता। लोग पूर्वी देशों की तरह कुछ आराम-पसंद या काहिल से दीख पड़ते हैं। यूरोपीय चपलता और पटुता यहाँ नज़र नहीं आती। यही नहीं, वे कुछ ख़सीस भी जान पड़ते हैं, पर शायद फ़िज़ूलखर्ची और यूरोपियन सभ्यता से बचने के लिए अपना रहन-सहन का ढंग एक सीमा तक ही सीमित रखने के पक्षपाती हैं। रहने वाले काफ़ी खुशहाल हैं। प्रत्येक व्यक्ति के मुख पर, यूरोप के दूसरे देशों के सर्वथा विपरीत, सन्तोष की एक आभापूर्ण ज्योति-सी झलकती है। यहाँ यहूदियों के निवास-स्थान तथा धनिक समुदाय के लोगों के निवास-स्थान यथेष्ट आकर्षक ढंग के बने हैं। इस नगर में रिक्स म्यूज़ियम[1] की चित्रशाला का संग्रह भी बहुत अनुपम तथा विशेष दर्शनीय है। ऐम्सटर्डम की जन-संख्या लगभग ७,५२,००० है।

1. Rijk's Museum.

मारकिन का द्वीप[1]

यहाँ से कुछ ही दूर पर कई छोटे-छोटे द्वीप हैं, जिनमें मार्किन का द्वीप, जो ऐम्सटर्डम से तीन घण्टे में मोटर-बोट द्वारा सफ़र के फ़ासले पर है, एक विचित्र और रोचक स्थान है। इस छोटे से द्वीप की जन-संख्या कुल ३०० पुरुषों और स्त्रियों की है जिनकी रहन-सहन बहुत ही विचित्र है। इनकी पोशाक और पहनावा अधिकतर हिन्दोस्तानी बलोचियों से मिलता-जुलता है। स्त्रियाँ वैसे ही बाल गूँधती हैं जैसे भारतीय रमणियाँ। स्त्रियाँ पैरों में लकड़ी के जूते पहनती हैं और पुरुष सर पर जालीदार ऊँची-ऊँची टोपियाँ पहनते हैं। भारतीयों के समान ये जूते पहन कर मकान के अन्दर नहीं जाते। दरवाज़े के बाहर ही जूता उतार देते हैं।

कुछ दस्तकारी के अतिरिक्त, जो थोड़ी-सी उपजाऊ भूमि उस द्वीप में है, उसी पर खेती करके तथा समुद्र की मछलियों का शिकार करके ये लोग अपना जीविकोपार्जन करते हैं। साधारणतया ये निवासी बहुत ग़रीब और असभ्य से जान पड़ते हैं। जब डच लोगों ने इतने निकट रहने वाले लोगों को सभ्य बनाने का प्रयत्न नहीं किया तो भला इनके दूर देश के उपनिवेशों के निवासी सभ्यता से पिछड़ी हुई दशा में हों तो आश्चर्य ही क्या हो सकता है?

1. Isle of Markin

इसी ढंग के यहाँ पर कई एक द्वीप हैं और सभी द्वीप अपनी अपनी कुछ न कुछ विचित्रता अवश्य रखते हैं। इन लोगों की भाषा भी अपनी ही है, जो डच भाषा से उच्चारण में मिलती-जुलती होते हुए भी उससे सर्वथा भिन्न है। इन द्वीपों की सब से अधिक विचित्रता यह है कि कुछ निवासियों की शक्ल बड़ी भद्दी तथा बदसूरत है, परन्तु कुछ निवासी बहुत ही सुन्दर हैं। हर एक द्वीप अपनी अपनी निजी प्राचीनता पर क़ायम है, किसी में भी कोई सुधार या परिवर्त्तन का असर नज़र नहीं आता।

एक दूसरा द्वीप है जिसका नाम वोलेन्डाइन[1] है। यह मार्किन से कुछ भिन्न है। पोशाक तो वही लम्बे-लम्बे चोगे, ऊँची टोपियाँ और काठ के जूते हैं परन्तु भाषा बिलकुल दूसरी है। यह स्थान मार्किन से अधिक रमणीक है तथा यहाँ के निवासी बहुत सुन्दर हैं। यहाँ की लड़कियाँ तथा छोटे-छोटे बच्चे हरे-भरे मैदानों में खेलते हुए बड़े भोले-भाले और सुन्दर मालूम होते हैं।

यदि यहाँ के सुन्दर सुन्दर दृश्यों के देखने की इच्छा हो तो ऐम्सटर्डम में यात्रा की एजेन्सियों में से किसी एक के साथ 'दृश्य-दर्शन-यात्रा'[2] के लिए निश्चित कर लेना विशेष सुविधाजनक है।

---

1. Volendine.
2. Sight-seeing excursion.

यह लोग यहाँ के सभी प्रधान सुन्दर तथा आकर्षक स्थानों को दिखलाते हैं।

सरसरी दृष्टि से देखते हुए हॉलैण्ड के निवासी पूर्वीय लोगों से बहुत कुछ समानता रखते हैं। शान्ति-प्रिय, आलसी, दुनियाँ के झंझटों से कोसों दूर तथा यूरोपीय सभ्यता की दृष्टि से कुछ रूखे हैं। पूँजीवाद के अनुयायी होते हुए भी यह देश यूरोप के अन्य देशों से प्रकृति, वेष-भूषा तथा सभ्यता और शिष्टाचार आदि सभी बातों में भिन्न है।

डच साम्राज्य की भीतरी बातें मुझे नहीं मालूम, किन्तु यह जग-ज़ाहिर है कि उपनिवेश बसाने में डच जाति सब से सफल समझी जाती है। इसका एक कारण मेरी समझ में यह आया कि हॉलैण्ड बहुत उद्यमी देश नहीं है। इसके निवासियों का प्राचीन जल-साहस भले ही रहा हो, अब वह भी उतना दीख नहीं पड़ता। डच लोग कुछ आराम-पसन्द से मालूम पड़ते हैं। यहाँ कल-कारखानों का उतना बाहुल्य नहीं है। इनका दूध, घी, मक्खन, हीरे आदि का रोज़गार बहुत ही धनी देशों से हो सकता है अतएव अपने साम्राज्य का आर्थिक शोषण करते हुए भी इनका कोई व्यापारिक संघर्ष नहीं है। इस व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धा के अभाव में डच केवल शासक के रूप में ही अपने उपनिवेश की हुकूमत करता है। उस हुकूमत

में भी वह उनका पश्चिमीय-करण न तो करना ही चाहता है और न उसकी ओर ध्यान देता है। जिस उपनिवेश का शासन होता है उसी देश की मादरी ज़बान में और इस मादरी ज़बान का भली प्रकार ज्ञान हर एक उम्मीदवार डच अफ़सर के लिए ज़रूरी है। इस प्रकार उपनिवेशों में जागृति या विकास भी नहीं है और वे मुर्दे की तरह अधीनता भोग रहे हैं।

डच बड़े सुन्दर होते हैं—विशेषकर स्त्रियाँ। इनकी सुन्दरता में एक सरलता का भी समावेश है जो यूरोपीय कृत्रिमता से भिन्न सुन्दरियों में पाया जाना स्वाभाविक है। ऐम्सटर्डम नगर देखने के लिए एक या अधिक से अधिक दो दिन का समय पर्याप्त है। यहाँ का सिक्का 'बेलाग'[1] है, जो अनुमानतः मूल्य में दो रुपये के बराबर होता है।

---

1. Belag

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

हॉम्बर्ग (जर्मनी)

हम एम्सटर्डम से तीसरे दिन सुबह ६'४५ पर रेल द्वारा चलकर उसी दिन संध्या को ३'४५ पर जर्मनी और यूरोप महाद्वीप के सब से बड़े बन्दरगाह और व्यवसायी नगर हॉम्बर्ग पहुँचे।

सन् १९१४ ई० के भयंकर महायुद्ध में, जिसके इतिहास के पन्ने खून के अक्षरों से लिखे जाने योग्य हैं—जिस जर्मनी ने संसार को हैरत में डाल रखा था तथा जिस जर्मनी ने आज विश्व की राजनीति को अजीब चपले में डाल रखा है—उसे देखने के लिए ज्यों ज्यों हम हाम्बर्ग[1] के निकट होते जाते थे, उत्कण्ठा बढ़ती ही जाती थी। उसी जर्मनी को, जिसकी ओर संसार की आँखें आज भी यह देखने को लगी हैं कि यह ऊँट कब किस करवट बैठता है, आज हम स्वयं अपनी आँखों से देखने जा रहे हैं।

1. Hamberg

हमारी ट्रेन ने ठीक दिन के बारह बजे जर्मनी की सीमा को पार किया। देश के प्रथम दर्शन ने ही चित्त पर वह प्रभाव डाला जो कभी नहीं मिट सकता। इसी भूमि पर, टोलियों की टोलियाँ ज़िरह बखतर पहने, बन्दूक कन्धों पर लादे फ़ौजी सिपाही इधर-उधर भागते-फिरते युद्ध के कार्य में व्यस्त रहे होंगे। और आज भी फ़ौलादी टोप[1] पहने फ़ौजी आदमी कम नहीं दीख पड़ते।

सरसरी तौर से देखते हुए यह कहा जा सकता है कि संसार में सर्वोन्नत जाति या देशों की गणना में जर्मनी का प्रधान स्थान है। यद्यपि देश की आर्थिक दशा पर महासमर का भयंकर प्रभाव पड़ा है तथापि इस देश की साहसी, पराक्रमी और विद्वान् और व्यापार-कुशल जाति ने महासमर की महान् क्षति को बड़े धैर्य और क्षमता से, बहुत अल्पकाल में पूर्ण करने की चेष्टा की है—यह सराहनीय है। किन्तु, हिटलर-शासन के बाद जर्मनी में जो आत्माभिमान, दूसरे को लूटने की भावना और अपने को महान् समझने का जो दम्भ व्याप्त हो गया है वह भी किसी दर्शक से छिपा नहीं रहता। जर्मनी की सामाजिक, आर्थिक और व्यापारिक सुव्यवस्था के पुनरायोजन की सफलता की प्रशंसा अनायास करनी पड़ती है। गत महायुद्ध का काला केन्द्र जर्मनी ही था। जर्मनी जाति का जौहर

1. Steel Helmet.

सचमुच प्रत्येक विदेशी यात्री को प्रभावित कर देता है, और वह सोलह आने निश्चय हो जाता है कि वस्तुतः यहाँ की भूमि वीर-प्रसू और जनता संग्राम-शूर, शौर्य के भावों से भरी एक महाशक्तिवान वीर जाति है। यहाँ के लोगों का रंग साफ़ और रूप सुन्दर है। उनके चेहरों पर एक कर्मनिष्ठा और वीरता की आभा-सी झलकती दिखाई पड़ती है।

हॉम्बर्ग संसार के प्रसिद्ध बन्दरगाहों में से एक है। एल्ब[1] नदी के मुहाने पर होने के कारण उत्तर सागर[2] के ज्वार-भाटे के साथ बड़े बड़े जहाज़ बन्दरगाह के घाट तक आसानी से आ-जा सकते हैं। इस बन्दरगाह की लम्बाई अल्टोना[3] तक पाँच मील चली गई है। साल भर में अनुमानतः २०,००० जहाज़ इस घाट का उपयोग करते हैं।

यह नगर वास्तव में संसार के सब से सुन्दर नगरों में से एक है। झीलों और नहरों के बहुसंख्यक संयोग से इस नगर की मनोहरता और भी बढ़ गई है। इस नगर का वह ढालू स्थान जो बड़ी झील के किनारे चारों ओर बसा है, बड़ा ही ख़ूबसूरत जान पड़ता है। यहाँ के रेज़ीडेन्शियल क्वार्टर[4] एल्ब के किनारे

1. Elbe 2. North Sea 3. Altona
4. Residential Quarter धनियों के निवास स्थान

स्थित हैं। उनकी गौरवमय अट्टालिका और उनके बाग़ और झील की सुन्दरता देखने क़ाबिल है।

रात्रि-जीवन

हॉम्बर्ग का रात्रि-जीवन संसार में सर्व-श्रेष्ठ समझा जाता है। मेरा विश्वास है कि सच्चे आमोद-प्रमोद के विचार से यह नगर पेरिस के विलासी, नीरस और मतलबी जीवन की अपेक्षा कहीं अच्छा है। यहाँ स्वच्छता के साथ एक अजीब गौरव है। सामाजिक शिष्टाचार, व्यावहारिकता, सुशीलता, आदर, सत्कार और आवभगत तथा आमोद-प्रमोद और विलास के नवीन नवीन साधनों का जो यहाँ अनुभव होता है वह पेरिस में स्वप्न में भी नहीं हो सकता। इसके सिवाय पेरिस में क़दम क़दम पर जो बेइमानी, दग़ाबाज़ी, दिखाऊ और अविश्वास के बिछे हुए जाल दिखाई देते हैं, और वहाँ के लम्बे-चौड़े खर्चे यात्री की आकांक्षा को पङ्गु कर देते हैं—यहाँ पर देखने में नहीं आते। अतएव मेरी राय में पेरिस की तुलना में हॉम्बर्ग एक तो चोरी-धोखेबाज़ी से पाक होने के कारण तथा दूसरे जीवन-क्रम मध्यम श्रेणी का होने के कारण विदेशी यात्री की स्वाभाविक अभिरुचि को अधिक आकर्षित करेगा।

प्रत्येक यात्री को यहाँ के रात्रि-जीवन को देखना तथा

समझना चाहिए। सिर्फ़ आमोद-प्रमोद के लिहाज़ से नहीं बल्कि जर्मन जाति को ज़्यादा नज़दीक से देखने या उसके पास आने के लिए भी। यहाँ के केफ़[1], कैब्रे[2], हॉटेल, विश्रामगृह, बियर के अड्डे[3] भारतीय विश्रामगृह[4], थियेटर, ऑपेरा तथा नृत्यशालाएँ आदि सहस्रों आमोद-प्रमोद के उपयोगी साधनों से यह नगर पूरी तरह भरा पड़ा है।

यहाँ का रात्रि-जीवन इतना विख्यात है कि निरन्तर यात्रियों के समूह के समूह आते रहते हैं। इन यात्रियों की सुविधार्थ यहाँ यात्रा की एजेन्सियाँ हैं जिनकी तुलना तीर्थों के पण्डों से की जा सकती है। यह एजेन्सियाँ यात्रियों के लिए हॉम्बर्ग के रात्रि-जीवन सम्बन्धी मनोरम दृश्यों के अवलोकन, पर्यटन तथा अमोद-प्रमोद की विशेष सुविधा की आयोजना करती हैं। आपको हर एक होटल और मुसाफ़िरखाने में इन टूरिंग एजेन्सियों के सुन्दर चमकदार काग़ज़ों पर छपे हुए विज्ञापन के पर्चे और साथ में हॉम्बर्ग के अनुपम दर्शनीय स्थानों के चित्र तथा विवरण और सम्पूर्ण रात्रि-पर्यटन के टिकट आसानी से मिल सकते हैं। इन टूरिंग एजेन्सियों को हम "व्यापार की दृष्टि से हॉम्बर्ग के रात्रि-जाल में वहाँ के दृश्यों

1. Cafe 2. Caibre 3. Beer Cafe
4. Indian Caibre

का ढोल पीट कर मनुष्यरूपी शिकार फाँसने वाले" कह सकते हैं। बड़ा सुन्दर व्यापार है, यात्री से कुछ न कुछ तो लेही मरते हैं। यह सोच कर बड़ा दुःख होता है कि हमारे देश में काश्मीर, बंगाल, गुजरात जैसे सुन्दर प्रान्तों में अब तक एक भी नगर इतना सुन्दर, आकर्षक और दर्शनीय नहीं बनाया जा सका। यहाँ हॉम्बर्ग के कुछ कुशल व्यापारियों की बुद्धि ने आज तक न जाने कितने विदेशी यात्रियों की जेबें खाली करा ली होंगी। रोशनी, इमारतें और सजावट—केवल तीन बातें हैं, जिनका सुन्दर आयोजन और उपयुक्त संगठन-मात्र मिल जाने से नगर क्या बन गया मानो सचमुच इन्द्र-लोक हो गया हो।

टिकट लीजिए और उसी में लिखा हुआ समय देखिए, और बड़े रेलवे स्टेशन से नियत समय पर मोटर-बस में चल दीजिए। आठ नौ बजे के बीच, जब रात्रि का पूरा आवरण फैल जाता है, रवाना होने का उपयुक्त समय होता है।

पहले आपको नगर का वह भाग देखने को मिलेगा, जिसे शायद आपने दिन में भीड़-भड़क्के से खचाखच भरे होने के कारण देख कर भी न देखा हो। इस समय शान्त वातावरण में यहाँ की इमारतें, जो दिन में सोई हुई सी जान पड़ती थीं, बिजली के प्रकाश में अलग-अलग जाग सी उठी जान पड़ती हैं। सचमुच मैंने ऐसा

दो-मुहाँ नगर जीवन में नहीं देखा। वही स्थान दिन में देखिए। व्यापारिक रेल-पेल, मोटर, गाड़ी, ट्राम आदि के सिवाय कुछ नज़र नहीं आता। उसी स्थान का रात्रि में इतना परिवर्त्तित रूप देख कर केवल आश्चर्य होता है।

आप सब से पहली मार्के की जगह—यहाँ की सब से खूबसूरती के साथ सजी हुई दूकानों की सड़क से होकर गुज़रते हैं। प्रकृति के उपासक, जिनमें से मैं अपने को भी एक समझता हूँ—यह ज़रूर सही कहते हैं कि बनावटी सजावट प्राकृतिक सौन्दर्य की तुलना नहीं कर सकती। पर यदि किसी समय में विश्वामित्र ने प्रकृति के विरुद्ध विद्रोह करके अपनी सृष्टि भी कर दी और उसमें भी अजीब सौन्दर्य या उपयोगिता थी, तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मनुष्य भी तो उसी प्रकृति का एक पुतला है। ऐसे ही विचार हॉम्बर्ग का रात्रि का सौन्दर्य देख कर मेरे मन में उठने लगे। बिजली का प्रकाश इतना अधिक, इतना चञ्चल और इतना सजीव था कि अनायास मन में एक स्फूर्ति और कम्पन उत्पन्न हो जाता था। आकाश चूमने वाले भवन मानो मनुष्य-रूपी बच्चे को इधर-उधर फुदकते देख कर मुसकरा रहे थे। सड़क और बाज़ार दोनों सजीव होकर आपको सुखी करने की, आनन्द देने की चेष्टा कर रहे थे। विश्व में चारों ओर फैली हुई भयंकर अशान्ति

को मानो यहाँ दम घोट कर मार डाला गया है। मैं सोचने लगा, मनुष्य के पास इतना सुख होते हुए भी उसकी तृष्णा को शान्ति क्यों नहीं मिलती !

मैं विचार और दृश्य में डूबा हुआ चला जा रहा था और देखता जाता था शीशों की सजी हुई खिड़कियाँ[1], रोशनी से चमकती हुई सड़क के दोनों पार्श्वों में विचित्र भाँति से सजी हुई दूकानें और रंग-बिरंगे प्रकाश की क्षण-क्षण में जलने-बुझने वाली किरणें। बड़े-बड़े अक्षरों के अत्यन्त आकर्षक आकाशीय विज्ञापन रात्रि के निस्तब्ध वातावरण में बहुत सुन्दर जान पड़ते थे। जिस समय हम इस अनुपम शोभा को अपलक नयनों से निहार रहे थे, उसी समय ऐसा जान पड़ा मानो कोई कान में कह रहा है---"हे नवागत ! तुम्हारे लिए ही यह सारी सजावट है। देखो, देख लो जी भर। फिर केवल स्वप्न रह जायगा।" अगर कभी सुयोग की सम्भावना हो तो "अवसि देखिए देखन जोगू।" इस पूरी सड़क को मोटर से उतर कर पैदल देखने में ही पूर्ण आनन्द आ सकता है।

आँखों में चकाचौंध पैदा करने वाले इस प्रस्फुटित प्रकाश-पुञ्ज से निकल कर एल्ब नदी के निशि-निस्तब्ध प्रशान्त वातावरण

1. Glass-Window-dressing

में मन्द-मन्द 'ड्राइव' का आनन्द लेना चाहिए। अन्धकार में यत्र-यत्र डोलती हुई डोंगियों तथा अग्नि-नौकाओं से चञ्चल चन्द्र-प्रकाश में चमकते हुए जल की लहरावलियों से नेत्रों के दर्शन-गुण की सार्थकता का प्रतिपादन कीजिए। कुछ दूर चलकर बन्दरगाह के घाट का दृश्य देख पड़ता है। अन्धकार-पूर्ण निशा में श्याम जल पर जो थोड़ा-थोड़ा प्रकाश इधर-उधर नौकाओं, अग्निबोट और जहाज़ों से बाहर निकलता देख पड़ता है वह ऐसा जान पड़ता है जैसे नदी की नीली साड़ी में मोती टके हों। पेट्रोलियम हार्बर[1] के निकट से जाते हुए गैस कम्पनियों की जगमगाती हुई चिमनियों[2] की जल पर पड़ती हुई छाया बड़ी ही सुहावनी मालूम होती है। इसके पीछे रात के अँधेरे में छिपा हुआ एक मछुओं का गाँव है, जो महान् कवि गोर्च[3] की जन्म-भूमि होने के कारण प्रसिद्ध है। दाएँ-बाएँ प्राचीन सुन्दर उद्यानों के बीच से होते हुए हम एल्ब राज-मार्ग[4] की ढालू ऊँचाई पर चढ़ते हैं और इस सरिता के तट का अपूर्व आनन्द लेते हुए नदी-तट के एक ऐसे सुहावने स्थान पर ठहरते हैं, जहाँ से इस शान्त वातावरण के अँधियारे पटल पर अंकित इस प्राकृतिक चित्रमय-जगत को, जो तरह-तरह के रंगीन प्रकाश

1. Petroleum Harbour 2. Gasoline Plants
3. Gorch 4. Elbe Road

की स्वच्छ किरणों द्वारा चित्रित किया गया है, अवलोकन करने का दिव्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा मालूम होता है मानो रात्रि के निस्तब्ध जड़-जगत में किसी ने प्रकाश की किरणों द्वारा जीवन की चेतनता डाल दी हो। दूर पर अँधेरे में हॉकस[1] की नीली पर्वत श्रेणियों का संयोग तो सोने में सुगन्ध का काम करता है। आगे चल कर डच लोगों की प्राचीन बस्ती मिलती है, जहाँ से सारे नगर को वनस्पति, शाक तथा फल जाते हैं। वास्तव में यह सब दृश्य छाया की भाँति मस्तिष्क में इस प्रकार से चित्रित हो जाते हैं कि दर्शक उन्हें एक बार देखकर भुला सकने में असमर्थ हो जाता है।

अल्टोना से कुछ आगे चलकर हम एकाएक अँधेरे से निकल कर एक ऐसी जगमगाती रोशनी में जा पड़ते हैं कि नेत्रों में धुन्ध सा छा जाता है। गाइड आपको यहाँ की सुन्दर बाह्य दर्शन योग्य वस्तुओं तथा स्थानों को दिखाता हुआ प्रेटर[2] नामक एक अनूठे विश्रान्तिगृह में ले जायगा। यहाँ कुछ जलपान करके इस नगर की सब से प्राचीन सेन्ट पाउली[3] की ट्रिचर[4] नामक नृत्य-शाला में कुछ समय प्रमोद में व्यतीत कीजिए। रिज़र्व किये हुए बाक्सों में बैठ कर नृत्य, गायन तथा अभिनय देखिए।

1. Hoaks 2. Prater 3. St. Pauli
4. Tritcher

कुछ समय यहाँ बिताकर हम फिर बस द्वारा (जो यात्रा के लिए काफ़ी आरामदेह होती है) रवाना हुए। यहीं पड़ोस में अँधेरी गलियों में छिपे मल्लाहों के घर और नीग्रो तथा एशियाई और विदेशी लोगों की बस्ती है। गाइड आपको बतलायेगा कि यह लोग एकान्त प्रेमी हैं, अतः उन्हें छेड़कर, उनकी शान्ति भङ्ग करना उचित नहीं।

यहाँ से आगे हम ग्रोप फ्रेहाइट[1] पहुँचते हैं। यहाँ पर भी बहुत अधिक प्रकाश मिलेगा और उससे चीनी और जापानी ढँग के विज्ञापनों से भूषित तथा प्रकाश-मण्डित महलों की महराबोंवाली इमारतों को दाहिने और बाईं ओर देखते हुए, धीरे-धीरे आगे चलिए। यहाँ के चीनी और जापानी चिह्नों को देखकर आप सहज में ही जान जायँगे कि यह चीनी बस्ती[2] है। आगे कुछ दूर चलकर हम एक ऐसे स्थान में पहुँचते हैं जहाँ चतुर विज्ञापकों और दक्ष कारीगरों ने एक ऐसे स्थान की सृष्टि की है जो यूरोप भर में मशहूर है। यही आधुनिक सेण्टपाली* है। इस स्थान का नाम अल्कज़ार[3] है, जिसका नाम स्पेन के गृह-युद्ध में आपने काफ़ी सुना

1. Grope Freiheit 2. Chinese Settlement
3. Alkazar

* यह सुप्रसिद्ध सेण्ट पाल (St. Paul) नामक मल्लाह के नाम पर प्रसिद्ध है।

होगा। यहाँ सफ़ेद तथा रंगीन प्रकाश में मधुर गायन की स्वर-लहरियों में चित्त विभोर हो जाता है। अनेक प्रकार की शिल्प-कला के उच्च कोटि के नमूने दिखाई पड़ते हैं। चारों ओर सुन्दरियाँ अपना यौवन बिखेरे घूमती दीख पड़ेंगी। यह स्थान बहुत ही सुन्दर और सजा हुआ है, परन्तु इसकी सजावट दूसरे ढंग की है।

हॉम्बर्ग को यदि अपनी इस आमोद-प्रमोद के अलौकिक संयोग पर गर्व हो तो उचित है। जब आधी रात बीते दृश्यों को देखते देखते तबीयत छक जाय तो एक-दो बजे रात के समय मोटर बस पर अपने निवास स्थान अथवा स्टेशन वापिस आकर विश्राम करना चाहिए।

बियर शराब जर्मनी की देशी पेय[1] है। यहाँ की बियर पार्टी[2] का आनन्द मशहूर है। यदि इसका भी लुत्फ़ उठाना हो तो एक दिन और ठहरना चाहिए। इस पार्टी के साथ तभी आनन्द आ सकता है जब अपनी मित्र मण्डली के साथ केवल आमोद-प्रमोद की कामना से घूमा जाय। इन पियक्कड़ लोगों में बहुधा परस्पर बियर पीने की प्रतियोगिता होती है और लोग एक एक घूँट में एक एक गिलास तथा एक एक दर्जन बोतलें एक साथ खाली कर देते हैं। पी-पी कर मस्तानेपन में वे बियर की प्रशंसा में गीत गाते, नाचते और खेलते हैं।

1. National drink 2. Beer Party

हॉम्बर्ग की एक बियर पार्टी ।

यहाँ का चिड़ियाखाना खुले स्थान में बना हुआ है। इसका संग्रह बहुत सुन्दर तथा विचित्र है और दिन में देखने योग्य स्थान है। एल्ब नदी के दोनों किनारों को मिलाने के लिए यहाँ पर नदी के नीचे-नीचे जो सुरङ्ग बनाई गई है, वह यहाँ की शिल्प-कला-विज्ञ इञ्जिनीयरिंग के निर्माण-कौशल का एक अद्भुत नमूना है। इसे भी अवश्य देखना चाहिए।

हमने हॉम्बर्ग में वे वीरान मुहल्ले भी देखे जो कम्यूनिस्ट लोगों के मुहल्लों के नाम से प्रसिद्ध हैं। परन्तु अब वे बिल्कुल वीरान से दीख पड़ते हैं। केवल मुहल्ला उन लोगों के नाम से है। नाज़ीवाद के उदय होते ही कम्यूनिस्ट या तो मार डाले गये या भाग गये या नाज़ी पार्टी में मिल गये।

नगर के दो तिहाई से भी अधिक भाग में स्वस्तिक 卐 की पताकाएँ फहरा रही थीं। इस पवित्र आर्य चिह्न को देखकर जर्मनवासियों के इस हिन्दु-करण पर सन्तोष होता है, पर इस चिह्न के अन्तर्गत इसका झण्डा उठानेवाले नाज़ियों ने जो अत्याचार किये हैं उनका ध्यान करने से रोंगटे खड़े हो जाते हैं। किन्तु इस विषय पर विचार करने का यह स्थान नहीं है। बहुधा व्यक्तियों के कपड़ों पर भी यह चिह्न अंकित पाया जाता है। यह स्वस्तिक जर्मन नाज़ी पार्टी[1] का मुख्य चिह्न है और प्रत्येक नाज़ी के कपड़े पर तथा

1. Nazi Party

इस दल से महानुभूति रखनेवाले व्यक्तियों के मकानों पर भी पाया जाता है। स्वस्तिक आर्यों का सबसे प्राचीन चिह्न है। आर्यों ने मध्य एशिया से इधर उधर फैलने के पूर्व ही यह चिह्न धारण कर लिया था। नाज़ियों द्वारा इस चिह्न के धारण करने का आशय यह है कि ये अपने को आर्य जाति के ही शुद्ध वंशज होने का दावा करते हैं। नाज़ी दल का संस्थापक हिटलर जर्मन जाति को अक्षत रूप से आर्य परम्परा का अनुमोदक तथा अपने देश के प्राचीन सौष्ठव को अक्षुण्ण बनाये रखना चाहता है। यह भी हो सकता है कि इस आर्य शब्द की आड़ में अपने शत्रुओं को नष्ट करने के लिए उसने यही सीधा उपाय सोचा हो। इसने जर्मनी में सभी विदेशी जातियों का स्वतंत्र-प्रवेश तथा सम्पर्क बन्द कर रखा है। उसका कहना है कि यह विजातियों के अत्यन्त सम्पर्क का ही परिणाम है कि जर्मन लोग इतने गिर गये हैं और नसों में बहते हुए आर्य-रक्त के ही कारण जर्मन जाति इतनी विपत्ति सहने पर भी जीवित है। अस्तु, इस आर्य-संस्कृति के चिन्ह को इसी कारण नाज़ी लोग बड़े सम्मान से देखते हैं।

लिवरपूल और लन्दन की तरह हॉम्बर्ग से भी आयात और निर्यात होता है। आयात की वस्तुओं में प्रधानतया क़हवा, ऊन, ग़ल्ला या ऐसा कच्चा माल जो पक्का माल बनाने के लिए

ज़रूरी है, कपास और गोश्त इत्यादि हैं। यहाँ की बनी हुई तमाम चीज़ें, टेक्सटाइल[1], मशीनें, रंग[2] वग़ैरः निर्यात किये जाते हैं।

दो दिन में बहुत सुविधा के साथ इस नगर को पूरी तरह देखा जा सकता है। यहाँ की जनसंख्या लगभग ग्यारह लाख और सिक्का जर्मन मार्क है, जो मूल्य में क़रीब एक रुपये के बराबर होता है। जर्मनी की राजनैतिक तथा व्यापारिक परिस्थिति और यहाँ के लोगों के रहन-सहन और रीति-रिवाज़ का वर्णन जर्मन राजधानी बर्लिन के विवरण के साथ करना उचित होगा।

तीसरे दिन संध्या के समय, सात बजे हम डेन्मार्क की राज-धानी कोपेनहेगेन[3] के लिए रवाना हो गये।

---

1. Textile 2. Colour 3. Copenhagen

सोलहवाँ परिच्छेद

कोपेनहेगेन (डेन्मार्क)

हॉम्बर्ग से ७ बजे शाम को छूटने वाली ट्रेन से हम डेन्मार्क[1] के लिए रवाना हो गये। रात को ही बाल्टिक सागर पार करना होगा, यह सोचते सोचते मेरी आँखें लग गईं और मैं सो गया। अनुमानतः ११ बजे रात को मेरी आँख एकाएक खुल गई। मुझे ऐसा मालूम हुआ मानो गाड़ी बहुत धीरे धीरे जा रही है। मैंने समझा शायद यहीं उतरना होगा, परन्तु खिड़की से बाहर देखा तो आश्चर्य में डूब गया। हमारी ट्रेन समुद्र के ऊपर जा रही थी। समूची लदी-लदाई ट्रेन जहाज़ के ऊपर चढ़ा दी गई और हम लोग सोते ही रहे। कुछ देर तक तो मैं आश्चर्य में इतने डूब रहा कि यह विश्वास ही न हुआ कि मैं सो रहा हूँ या जाग रहा हूँ। सचमुच

---

1. Denmark

देख रहे हैं या स्वप्न में हैं। यात्रियों के लिए कैसी सुन्दर व्यवस्था है। हॉम्बर्ग के सोये पहाड़, नदी, नाले, जंगल तो दूर रहे समूचा समुद्र पार करके सवेरे कोपेनहेगेन में ही जाकर जगे। रास्ते में उतरने-चढ़ने की खटखट से बचाने का कैसा सुन्दर उपाय है?

हम लोग फिर सो गये और सोते ही सोते सुबह सात बजे डेन्मार्क की राजधानी कोपेनहेगेन पहुँच गये।

स्टेशन पर उतरते ही हम लोगों को प्रेस के संवाददाताओं के एक पूरे जत्थे ने इस तरह घेर लिया कि हमें मजबूरन आध घण्टे ठहर कर उनके प्रश्नों का उत्तर देना पड़ा। केवल यही नहीं, इसी बीच में हमारी फ़ोटो भी उतार ली गई और जब हम होटल पहुँचे तो यह देख कर चकित रह गये कि वहाँ के प्रातः दैनिक पत्रों में हमारे चित्र और विवरण छप गये हैं। हमने भी एक पत्र खरीदा और होटल में जाकर दो तीन घण्टे आराम किया।

डेन्मार्क का स्वतंत्र राज्य कुछ द्वीपों के समूह से बना है। ज़ीलैण्ड[1], फ़्यूनेन[2] और लालैण्ड[3] बड़े द्वीप हैं। शेष इन्हीं को घेरे हुए चारों तरफ़ छोटे छोटे द्वीप हैं। यहाँ की पार्लियामेण्ट का नाम रिग्सडैग[4] है और इसके मेम्बरों को वेतन मिलता है। प्रत्येक वर्ष

1. Zealand 2. Funen
3. Laaland 4. Rigsdag

अक्टूबर माह के पहले सोमवार को इसकी पार्लियामेण्ट की बैठक अवश्य होती है। राज्य-व्यवस्था के लिए यह राज्य १८ प्रान्तों में विभाजित है।

डेन्मार्क एक खेतिहर देश है। इसके निर्यात की वस्तुएँ, जिनका मूल्य वर्ष में अनुमानतः ३५,०००,००० पौण्ड कूता जाता है, प्रधानतः मक्खन, पनीर, सुअर का गोश्त, घोड़े और जानवर हैं। इन चीज़ों का और इस देश के माल का सबसे बड़ा ग्राहक इङ्गलैण्ड है। सिर्फ़ मक्खन ही, जो हर साल ग्रेट ब्रिटेन जाता है, १०,०००,००० पौण्ड की लागत का बैठता है और सुअर की चर्बी ६,०००,००० पौण्ड की लागत की उसी देश को भेजी जाती है। इसका लगभग आधा माल ग्रेट ब्रिटेन ख़रीद लेता है, शेष दूसरे देशों को भेजा जाता है। डेन्मार्क में कारख़ाने वग़ैरह बहुत कम हैं। इसी कारण अपनी ज़रूरियातों की पूर्ति के लिए इसको धातु की बनी मशीनें, टेक्सटाइल का सामान यानी कपड़े वग़ैरह सब बाहर से मँगाना पड़ते हैं।

डेनिश फ़ौज एक प्रकार की "जातीय सेना[1]" है, जिसमें हर डेनिश को २१ से ३७ वर्ष की उम्र में अनिवार्य रूप से फ़ौज में काम करना पड़ता है। इस प्रकार समूची जाति ही एक लड़नेवाली 'क्षत्रिय जाति' कही जा सकती है। इस समय काम पर जानेवाले

1. National Militia

फ़ौजियों की संख्या लगभग २०,००० है। प्रति वर्ष यहाँ ८००० रँगरूट सिखाये जाते हैं। इतना छोटा राज्य और फ़ौज की ऐसी सुन्दर व्यवस्था देखकर आश्चर्य होता है।

इसका क्षेत्रफल १६,५६८ वर्ग मील तथा जनसंख्या ३४,३४,५५५ मनुष्यों की है। इस देश के उपनिवेश ग्रीनलैण्ड[1], आइसलैण्ड[2] और शीप आइलैण्ड्स[3] के बिखरे हुए थोड़े से द्वीप हैं। ग्रीनलैण्ड ऑस्ट्रेलिया[4] के बाद संसार का सबसे बड़ा द्वीप है। यह अनुमानतः १६०० मील लम्बा और अधिक से अधिक ७०० मील चौड़ा है। इसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल ८,२६,००० वर्गमील है, जिसमें से इस देश के भीतर का ७,३२,७५० वर्ग मील बरफ़ के समूह से निरन्तर ढका रहता है। यहाँ के रहनेवालों का रहन-सहन हिम-युग[5] के लोगों के ढंग का है। इसका राजकाज कोपेनहेगेन का एक कमीशन[6] करता है, और यहाँ का व्यापार[7] भी इसी के हाथ में है। यहाँ की जन संख्या १६,६३० है और यहाँ के रहनेवाले एस्किमो[8] कहलाते हैं। आइसलैण्ड का क्षेत्रफल ३९,७०९ वर्ग मील तथा जनसंख्या १०८,६४४ है। यह ग्रीनलैण्ड से २०० मील दक्षिण पूर्व की ओर है। शीप आइलैण्ड्स अर्थात्

1. Greenland
2. Iceland
3. Sheep Islands
4. Australia
5. Ice Age
6. Commission
7. State Monopoly
8. Eskimo

भेड़ों के द्वीप उत्तरीय अटलाण्टिक महासागर में २२ द्वीपों का एक समूह है। इनका दूसरा नाम फ़ेरोज़[1] भी है। इन द्वीपों की पहाड़ी चोटियों से भरी, ऊबड़-खाबड़ और गहरी जल धाराओं[2] से बटी भूमि का क्षेत्रफल ५४० वर्गमील तथा जनसंख्या २४,२०० है।

कोपेनहेगेन

डेन्मार्क की राजधानी कोपेनहेगेन की जनसंख्या ७७१,१६८ है, जिसमें कुल ६,२७,०६६ नगर निवासी हैं। इसका बन्दरगाह बड़ा शानदार है और इसकी रक्षा का प्रबन्ध हार्बर के सामने स्थित एक द्वीप, जिसका नाम अमेगर[3] है, से होता है।

अनुमानतः ११ बजे हम लोग नगर देखने निकले। यह नगर भी बहुत सुन्दर और चित्ताकर्षक जान पड़ा। इस नगर के बाहरी भाग में समुद्रतट के किनारे मोटर की सैर बड़ी ही मनोरञ्जक है; वास्तव में इस नगर में आकर यह सैर न की तो कुछ न किया। राजप्रासाद[4], पार्लियामेण्ट भवन[5] और गिर्जाघर आदि यहाँ की इमारतें बहुत ही सुन्दर और दर्शनीय हैं। किंग्स स्क्वायर[6] में यहाँ का ऑपेरा हाउस[7] नगर के बीचोबीच बहुत सुन्दर बना है। एक

1. Faroes
2. Fiords
3. Amager
4. Royal Palace
5. Parliament House
6. Kings Square
7. Opera House

बड़ा विश्वविद्यालय भी है। व्यापारिक दृष्टि से विशेष महत्व की यहाँ की शराब बनाने की फ़ैक्टरी है। यह यूरोप की सब से अधिक विख्यात और बड़ी शराब की भट्ठी है और यहाँ की सब से पुरानी फ़ैक्टरियों में से एक है।

बाइसिकिल गाड़ी यहाँ की राष्ट्रीय सवारी है। यह गाड़ी यहाँ पर इतनी संख्या में पाई जाती है कि शायद संसार में अन्य किसी भाग में इतनी साइकिलें दीख पड़नी असम्भव हैं। केवल कोपेनहेगेन नगर में ही तीन लाख से अधिक साइकिलें हैं।

इस स्थान के रात्रि-जीवन के विषय में यहाँ का आनन्द निकेत[1] जिसका नाम टिवोली[2] है, संसार भर में प्रसिद्ध है। संसार के सात महान् आश्चर्यों के बाद इसे आठवाँ आश्चर्य कह सकते हैं। यह यहाँ के आमोद-प्रमोद तथा क्रीड़ा करने का मनोरंजक और रमणीक स्थान है। इसे यहाँ की मनरञ्जन-शाला कहें तो अनुपयुक्त न होगा। इस स्थान के आमोद-प्रमोद के तरीक़े इतने बड़े पैमाने पर हैं जितने और कहीं यूरोप भर में दीखने में नहीं आते। अवश्यमेव डेन्मार्क अपने इस आनन्द-विहार के स्थान पर स्वतंत्रतापूर्वक अभिमान कर सकता है।

---

1. Pleasure Resort 2. Tivoli

हमें यह देखकर सचमुच आश्चर्य होता है कि इतने थोड़े-थोड़े फ़ासले पर भी, रंग रूप में कितना भेद हो जाता है। बाल्टिक सागर[1] के उस पार मनुष्यों का रंग रूप जैसा है, उससे बिलकुल भिन्न यहाँ के निवासियों का है। डेनिश[2] लोग यदि बदसूरत नहीं तो बहुत सुन्दर भी नहीं कहे जा सकते, परन्तु ये व्यवहार-कुशल हैं और प्रकृति से ही विनम्र स्वभाव के हैं।

जब इङ्गलैण्ड और फ्रान्स ऐसे भारत से निकट सम्पर्क रखनेवाले देश भारतीयों से बहुत ही अपरिचित हैं तो डेन्मार्क ऐसे पृथक् रहनेवाले देश का हमारे प्रति अज्ञान आश्चर्यजनक नहीं है। यहाँ बहुत ही कम भारतीय पहुँच पाते हैं। कोई खास ज़रूरत न होने के कारण भारतीय यात्री इधर नहीं आते। अतएव हमारे विषय में इनको इङ्गलैण्ड के अखबारों से ही थोड़ा बहुत हाल मालूम होता है। इङ्गलैण्ड के अखबार भी इधर कम आते हैं। पर आश्चर्य की बात यह थी कि डेनिश लोग भारत और गान्धी के विषय में बहुत कुछ जानना चाहते हैं; पत्र-प्रतिनिधियों की हमसे भेंट का समाचार जिस पत्र में छपा, उसकी काफ़ी प्रतियाँ बिकीं। हमारे प्रति डेनिश-व्यवहार भी बहुत शिष्ट था।

---

1. Baltic Sea   2. Danish

यहाँ के सिक्के का नाम क्रोन[1] है, जो क़रीब दस आने के बराबर के मूल्य का होता है। कोपेनहेगेन देखने के लिए एक दिन पर्य्याप्त है।

---

1. Krone

सत्रहवाँ परिच्छेद

स्टॉकहोम (स्वेडेन)

दूसरे दिन प्रातः साढ़े सात बजे हम लोग पुनः ट्रेन पर बैठे और स्वेडेन की राजधानी स्टॉकहोम के लिए रवाना हो गये। एक बार फिर हमारी ट्रेन जहाज़ के ऊपर लाद कर समुद्र पार करा दी गई। दिन भर स्वेडिश प्रान्तों के जल-स्थल मार्गों में एक छोटे छोटे द्वीपों की श्रेणी के तट के किनारे-किनारे भ्रमण करती तथा मनोहर दृश्यों को दिखलाती हुई हमारी ट्रेन ६-३० बजे रात को स्टॉकहोम पहुँची।

यहाँ की सबसे पहली विशेषता, जो ट्रेन पर से ही दिखलाई पड़ती थी, वह रेल मार्ग की योजना है। इसका एक अजीब निराला ढंग था। ऐसा तो कहीं भी देखने में नहीं आया। रेलवे लाइन बिलकुल सड़क से सटी हुई है, न कोई घेरा है, न चबूतरा! स्टेशन का तो कहीं पता भी नहीं चलता! लोग सीधे सड़क से रेल पर चढ़ आते हैं और निश्चित स्थानों पर रेल के ठहरते ही सड़क

पर उतर जाते हैं मानों वे ट्रैमगाड़ी से आ-जा रहे हों। टिकट या तो शहर में ही टिकटघर में मिल जाते हैं या रेल के डिब्बे के अन्दर ही मिलते हैं। न टिकिट चेकर, न स्टेशन मास्टर, न झंडी वाला, न लाइनमैन, यानी कोई रोक-टोक न थी। फिर भी अपने कर्त्तव्य की भावना इतनी जाग्रत है कि कोई भी बेइमानी की नीयत से बिना टिकट लिये सफ़र करता दिखाई न पड़ा।

जिस समय हम होटल पहुँचे, रात को साढ़े दस बज चुका था। दिन भर की यात्रा की थकावट के कारण हम आज केवल यूरोप और स्वदेश के लिए 'एअरमेल' की चिट्ठियाँ लिखकर सो रहे।

किसी ज़माने में स्केंडिनेविया प्रायद्वीप[1] का साम्राज्य, जिसमें आधुनिक*नार्वे और स्वेडन के दोनों राज्य शामिल थे, यूरोप का एक शक्तिशाली साम्राज्य था।

1. Scandinavian Peninsula

*नार्वे (Norway) का क्षेत्रफल १,२५,०८८ वर्ग मील तथा जनसंख्या २,८०६,५६४ है। राज्य-व्यवस्था यहाँ के राजा और उसका मन्त्रिमण्डल (Cabinet) के हाथ में है। पार्लियामेण्ट में १५० मेम्बर हैं, जो तीन साल के लिए चुने जाते हैं। सन् १६०५ में यह स्वेडन से अलग हो गया और उसी समय किंग एडवर्ड सप्तम (King Edward VII) यहाँ का राजा चुना गया था।

गुस्टेवस अडालफ़स के समय में, यह यूरोप का सर्व-प्रधान राज्य हो गया था। फ्रांस की शक्ति को क्षीण करने अथवा "पवित्र" रोमन साम्राज्य की बाढ़ को रोकने में भी इस राज्य का काफ़ी हाथ था। किन्तु, मध्यम युग में केवल दो-तीन शक्तिशाली सम्राट् उत्पन्न करने के बाद, यह राज्य द्वितीय श्रेणी की शक्ति बन गया था। अस्तु सन् १६०५ ई० में दोनों देश शान्तिपूर्वक पृथक् हो गये, और दोनों दो स्वतंत्र राष्ट्र बन गये। स्वेडन का राजा आजकल गस्टफ़ पञ्चम[1] है। सन् १८१० ई० में मार्शल बर्नेडोट[2] स्वेडन का शक्तिशाली राजा चुना गया था। इसके विषय में प्रसिद्ध है कि उसके प्रतिभापूर्ण राज्य में बड़ी सुव्यवस्था थी, बहुत कुछ सुधार के कार्य हुए थे। राजकोष बढ़ाया गया था; आर्थिक सुधार किये गये थे और शिक्षा का प्रचार हुआ था। वही यहाँ का पहला महान् सम्राट् था। इसी का प्रपौत्र गस्टफ़ आजकल स्वेडेन का शासक है। यह देश ५६ ज़िलों में विभाजित है। नागरिक व्यवस्था वैसी ही है जैसी ग्रेट ब्रिटेन की म्यूनिसिपैल्टियों की है।

स्वेडेन में भी प्रधान व्यवसाय खेती है। यहाँ के खेतों की संख्या तीन लाख से ऊपर है। किन्तु ये खेत भारत की तरह छोटे छोटे खत्ते नहीं हैं। खदानों का भी यहाँ काफ़ी काम होता है,

1. King Gustaf V   2. Marshale Bernadotte

जिसमें तीस लाख लोग लगे हैं। आजकल खदानों के ही धन से देश सम्पन्न तथा धनी समझा जाता है। यहाँ बहुत बढ़िया लोहा निकलता है और साल में अनुमानतः दस लाख टन निकाला जाता होगा। देश में ३३ लाख मछुए रहते हैं जो मछली पकड़ने के व्यापार से अपना पेट चलाते हैं।

स्वेडेन का आधा भाग जंगल से छिपा है तथा उससे चीड़ आदि के लट्ठे लाकर नगरों में तख्ते बनाये जाते हैं। इस व्यापार से वहाँ के साठ हज़ार लोगों की रोटियाँ चलती हैं, और लोग इस व्यापार से लाभ उठाकर धनी हो गये हैं। काग़ज़ बनाने का व्यापार भी स्वेडेन के जंगलों पर ही निर्भर करता है। लकड़ी द्वारा निकाला हुआ पल्प, जिससे नक़ली सिल्क बनता है, स्वेडेन से विदेशों में जाता है और इसी से नक़ली सिल्क का माल तैयार होता है। स्वेडिश निर्धन भी काफ़ी हैं। यहाँ के रहनेवाले तीन लाख भिखमंगों के खाने कपड़े का इन्तज़ाम यहाँ की लोकल सेल्फ़ गवर्नमेण्ट ,जो कम्यून[1] कहलाती है, करती है। प्रत्येक कम्यून के मत्थे ग़रीब लोगों का एक क़स्बा है। वर्ष में इस प्रकार आजकल लगभग २,५०,००० ग़रीबों का पालन होता है।

जनसंख्या पिछली गणना के अनुसार ६१,४१,५७ है जो

1. Commune

देश के विस्तार के अनुसार (१,७३,१४६ वर्ग मील) ३५.५ मनुष्य प्रति वर्ग मील के हिसाब से पड़ती है। राज्य का सबसे अधिक घना बसा हुआ शहर स्टॉकहोम है, जिसकी जनसंख्या ५,०२,२०७ है। इसके बाद दूसरा नम्बर गोटेबर्ग[1] का है जिसकी जनसंख्या २,४३,६६० है। स्वेडन के निवासियों में से लगभग एक तिहाई लोग नगरों में रहते हैं, शेष देहातों में। विदेशियों की संख्या जो प्रायः डेन्मार्क, फिनलैण्ड अथवा नार्वे के मूल निवासी हैं किन्तु, यहाँ आकर बस गये हैं—३५,००० होगी।

यह देश असंख्य छोटे छोटे द्वीप-समूहों से घिरा है। अकेला स्टॉकहोम ४२ द्वीपों को मिला कर एक नगर के रूप में बसाया गया है। इसके द्वीप एक दूसरों से पुलों द्वारा ऐसे जोड़ दिये गये हैं, मानो एक माला में पिरोये मोती हों। इन पुलों के कारण अब इन द्वीपों के वास्तविक रूप का अस्तित्व ही मिट-सा गया है। यहाँ पर आरम्भ से ही, द्वीपों के प्राकृतिक सौन्दर्य को ज्यों का त्यों अक्षत बनाये रखने के प्रयत्न का यह फल हुआ है कि इतना बड़ा प्राचीन नगर होते हुए भी, ऐसा जान पड़ता है, मानो प्रकृति ने अभी इस नगर को साँचे से ढाल कर बाहर निकाला हो। यहाँ तक कि नीचे की भूमि जैसी ऊँची नीची जिस प्रकार की थी, वैसी ही

1. Goteborg

आज भी मौजूद है। उसे बराबर कर के सतह से मिलाने तक की अनुमति नहीं दी गई।

नगर की प्राकृतिक शोभा, उसकी पर्वतमाला, झीलों की निर्मल जल-राशि, रमणीक वन और उपवन, सुन्दर उद्यान इत्यादि का वर्णन करना कठिन है। इन मनोहारी दृश्यों को बिना देखे उनका आनन्द नहीं प्राप्त किया जा सकता।

द्वीपों में हरे हरे लहलहाते हुए छोटे छोटे जङ्गल इतने सुहावने मालूम होते हैं कि ऊँचे पर खड़े होकर देखने से ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी ने अलग-अलग सब्ज़ी की डालियाँ सजाकर रक्खी हों। वास्तव में प्राकृतिक दृश्यों के दर्शन का जितना आनन्द मुझे इस देश में मिला वह कहीं भी अभी तक नसीब नहीं हुआ था। कहीं पर्वत, कहीं पानी, कहीं जङ्गल! प्रकृति! तेरी कल्पना और कारीगरी की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। मैंने कभी कल्पना भी न की थी कि ऐसे देश के भी दर्शन होंगे जिनका एक-एक कोना स्वर्गीय-आनन्द का आभास दिलाता है। यहाँ सरकारी निरीक्षण में प्राकृतिक सौन्दर्य की रक्षा होती है, और यही कारण है कि सम्पूर्ण नगर में घूम आइये, कहीं धुआँ अथवा गन्दगी का नाम भी नहीं मिलेगा। यूरोप के लिए यह आश्चर्य-जनक बात है।

केवल इतना ही नहीं। प्राकृतिक दृश्यों के सौन्दर्य के साथ यहाँ के अत्यन्त रूपवान निवासियों का सामञ्जस्य और भी दर्शनीय है। प्रकृति ने देश को सुन्दरता प्रदान की तो वहाँ के निवासियों को भी मनोहर रूप दिया। मैंने बदसूरत और भद्दे रूप वाले लोगों को आँखें फाड़ फाड़ कर खोजने की कोशिश की, पर इस गन्धर्वपुरी में गन्धर्वों और अप्सराओं को छोड़ कर बदसूरत एक को भी नहीं पा सका। सुन्दरता के इस वर्णन के साथ मैं यह भी लिख दूँ कि विश्व तथा इतिहास-प्रसिद्ध सुन्दर आरमीनियन जाति यहाँ से २४ घण्टे की दूरी वाले यात्रा के मार्ग पर, अर्थात् उत्तरी ध्रुव में रहती है। स्वेडन में उसी सुन्दरता की भूमिका समझिए। फिर भी, मैंने, संसार में स्वेडिश स्त्री-पुरुष के समान आकर्षक सौन्दर्य रखने वाली जाति कहीं नहीं देखी।

यहाँ प्रसिद्ध खेल स्केटिंग* का अधिक चलन है। स्केटिंग खेलने के लिए नगर के बाहर नहीं जाना पड़ता। साल के आठ महीने जाड़ा रहता है, तथा उत्तरीय ध्रुव के निकट होने के कारण यहाँ पर स्केटिंग के लिए नगरों में ही यथेष्ट बरफ़ जम जाती है, जिस पर फिसलते हुए नर-नारियों तथा छोटे-छोटे बच्चों का आमोद-

* Skating (इस खेल में पटरी लगे जूते पहन कर फिसलते हैं).

प्रमोद बड़ा ही भला मालूम होता है। दूर से देखने पर यह लोग दोनों हाथ सीध में उठाये हुए, ऊँचे-नीचे फिसल कर जाते हुए ऐसे जान पड़ते हैं, मानो असंख्य चिड़ियाँ सरोवर के जल-तल पर उड़ रही हों।

इस नगर का टाउनहाल एक बड़ा ही विशाल तथा सुन्दर भवन है। वेस्टमिनिस्टर एबे[1] (जहाँ राज परिवार के लोग दफ़नाये जाते हैं) यहाँ का एक बहुत प्राचीन गिर्जाघर है तथा एक सुन्दर और दर्शनीय इमारत है। इस गिर्जे की कौन्सिल द्वारा प्रदान की गयी डिग्री या उपाधि बड़े महत्व तथा सम्मान की समझी जाती है और केवल संसार के महापुरुष ही उससे भूषित होते हैं। ऐसे भाग्यवान का नाम स्वेडेन में सदैव के लिए अमर हो जाता है।

संसार-प्रसिद्ध नोबेल पुरस्कार[2] भी स्वेडेन द्वारा ही प्रदान किया जाता है। हमारे देश के डा० रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा सर जगदीश चन्द्र वसु को यह पुरस्कार मिल चुका है। नोबेल इसी देश का रहनेवाला एक धन-कुबेर था। इस पुरस्कार-सम्बन्धी कार्य के लिए एक बहुत बड़ा दफ़्तर यहीं पर है। यह दफ़्तर कई इमारतों में फैला है, और इसमें बहुत से कर्मचारी काम करते रहते हैं। इन

1. Westminster Abbey 2. Nobel Prize

प्राणियों का काम संसार की विद्या या शान्ति के क्षेत्र में काम करने वाले अनमोल मोती चुनना रहता है। दूसरा दर्शनीय स्थान यहाँ का पुराने महल का बाग़ है, जो वार्सेलीज़[1] के ढँग पर बनाया गया है। इस महल में यूरोप की सबसे प्राचीन नाट्य-शाला[2] है, जो लगभग २५० वर्ष पुराना समझा जाता है। परन्तु आज भी उसी प्रकार यह प्राचीन नाट्य-शाला तथा इसका सामान वैसी ही सुरक्षित अवस्था में है, जैसा पिछले ज़माने में रहा होगा। 'नाट्यसाहित्य' के विद्यार्थियों के लिए यह स्थान ऐतिहासिक महत्व का है। वर्ष में विशेष दर्शकों के लिए कभी किसी कम्पनी को अब भी उसमें 'स्पेशल शो' दिखाने की आज्ञा मिल जाती है।

यहाँ से उतरीय ध्रुव[3] जो अर्ध-निशा के सूर्य[4] के नाम से प्रख्यात है, केवल २२ घण्टे का मार्ग है। सीधे टापू तक रेल चली जाती है। हमने भी उत्तर ध्रुव देखने का विचार किया, तो मालूम हुआ कि यदि केवल एक महीना पहले आते तो वहाँ जाने के लिए ऋतु अनुकूल होती, परन्तु अब वहाँ जाना असम्भव था, इसलिए लाचार मन मारकर रह जाना पड़ा। यहाँ मई तथा जून में दो महीने लगातार चौबीस घण्टे का दिन होता है। दो महीने तक शाम और दो महीने तक सुबह के ऐसा बराबर बना रहता है।

1. Varsaillies
2. Theatre
3. North Pole
4. Mid-Night-Sun

इन महीनों में आनेवाले यात्री को उत्तर ध्रुव की अवश्य सैर करनी चाहिए।

स्वेडिश लोग देखने में जितने सुन्दर हैं उतने ही बोल-चाल में बड़े मीठे, व्यवहार में सुशील तथा सज्जन होते हैं। सभी दृष्टियों से यह नगर इन्द्रपुरी के समान छवि का आगार कहा जा सकता है। स्टॉकहोम का रहन-सहन काफ़ी ऊँचे ढंग का है। यहाँ की मँहगी का कारण शायद देश की अगाध खनिज अथवा कृषि-जन्य-सम्पत्ति और कम फ़िज़ूलखर्ची हो सकती है। अमेरिका जैसा इतना ठाठ-बाट और दिखावा नहीं है, फिर भी, अमीरी फूटी पड़ती है।

यहाँ के एक राज (इमारत बनानेवाला कारीगर) की वार्षिक आय अनुमानतः १००० पौण्ड होती है। मकान बनवाना भी इसी कारण इतना मँहगा है कि बहुधा लखपती लोग भी अपना निजी रहने का मकान नहीं बनवा सकते हैं और किराये के मकानों में जिनका नाम अपार्टमेण्ट हाउस[1] होता है, रहते हैं। इनमें धनिक समुदाय के लोग साझे में कोठों पर रहते हैं क्योंकि पूरा मकान ले सकना उनकी सामर्थ्य से बाहर है। इनका किराया लगभग १५० पौण्ड प्रति वर्ष देना पड़ता है।

सम्पूर्ण स्वेडेन दर्शन-योग्य सुन्दर प्रदेश है। यहाँ

1. Apartment House

के सिक्के का नाम क्रोन[1] है, और मूल्य लगभग एक शिलिंग है। स्टॉकहोम घूमने और देखने के लिए एक दिन पर्याप्त है। अन्त में एक बात और लिख दूँ। मुझे यह देखकर काफ़ी सन्तोष हुआ कि स्वेडिश जनता के हृदय में भारतीयों के प्रति सम्मान तथा आदर दोनों के भाव विद्यमान हैं। किन्तु, हमारे प्रति जानकारी काफ़ी नहीं है, इसलिए जिज्ञासा भी काफ़ी है और उसका होना हमारे लिए हितकर है।

रात को हम स्टॉकहोम पहुँचे थे। दूसरे दिन, काफ़ी घूमने के बाद, शाम को साढ़े सात बजे जहाज़ द्वारा फ़िनलैण्ड को रवाना होना था। पर इस सुन्दर स्थान को छोड़ते समय चित्त को बड़ा क्लेश हो रहा था। दिन भर का देखा दृश्य आँखों के सामने इस समय भी चल-चित्र की भाँति झिलमिली झलक दिखा रहा था। इस प्रदेश से कुछ घण्टों के संयोग ने मन में कुछ ऐसा मोह पैदा कर दिया था कि विदा होते समय आँखों में आँसू आ गये। इस अनुपम देश को प्रणाम करते हुए मन ने कहा—"हे रमणीयता के आगर! जीवन में केवल एक बार साक्षात् करके तुम से सदा के लिए विलग होता हूँ, अब जीवन में फिर देखने को न मिलोगे! हे दिव्यधाम की अलौकिक मनोहारिणी अलका! तुम्हें सदैव के

1. Krone

लिए हृदय पर अङ्कित करके तुमसे सदा के लिए विदा होता हूँ। कभी-कभी स्वप्नों में छटा दिखा जाया करना। तुम सचमुच वन्दनीय हो, मैं तुम्हारी वन्दना करता हूँ।" मेरा चित्त गद्गद् हो आया। रोमाञ्चित शरीर और अश्रु-पूरित लोचनों से मैंने आगे न पड़ते हुए पैरों को बरबस जहाज़ की सीढ़ी के तख्ते पर रखा। जी चाहता था कि जीवन का शेषकाल सब कुछ भूल कर यहीं व्यतीत करूँ।

सीटी देकर धीरे-धीरे जहाज़ चल पड़ा। संध्या का सुहावना समय था। घाटियों, पहाड़ियों, द्वीपों के बीच में घूमता हुआ जहाज़ चला जा रहा था। इधर-उधर चारों दिशाओं में हरियाली ही हरियाली दीख पड़ती थी। वास्तव में यह सम्पूर्ण प्रदेश और इसके निकटस्थ चारों ओर की भूमि प्राकृतिक दृश्यों का परमधाम है। जिन दृश्यों को कवि ने कल्पना में भी न देखा होगा वे सब प्रत्यक्ष देखने का सौभाग्य इन आँखों को प्राप्त हुआ—यह सोच कर मैं मन ही मन ईश्वर को धन्य धन्य कहने लगा।

अठारहवाँ परिच्छेद

फिनलैण्ड

हम सुबह ग्यारह बजे फिनलैण्ड के बन्दरगाह अल्बो[1] पहुँचे। यहाँ सब से बड़ी और पहली कठिनाई यह थी कि एक भी अँगरेज़ी जानने वाला व्यक्ति न मिला। कस्टम की झंझट से छुट्टी पाकर हम टैक्सी तलाश करने लगे। बड़ी परेशानी के बाद टूटी-फूटी अँगरेज़ी जानने वाला टैक्सी ड्राइवर मिला। हमने सामान स्टेशन पर लाकर रखा और शहर घूमने चले।

फिनलैण्ड बोथनियाँ की आखात के पूरब और फिनलैण्ड की आखात के उत्तर में स्थित है। इसी देश के पूर्व में विश्व विख्यात रूस देश है, जिसके अधीन १६०६ ई० से पिछले महासमर काल तक यह था। उसकी इस पराधीनता के युग में रूस के ज़ार ने फिनिश लोगों को रूसी बनाने का बहुत प्रयत्न

---

1. Albo

किया। देश में ज़ार का एक वायसराय रहता था जिसको ड्यूक ऑव् फ़िनलैंड[1] कहते थे। किन्तु, स्वतंत्रता-प्रेमी फ़िनिश जनता ने अपने व्यक्तित्व की रक्षा तथा स्वाधीनता की चेष्टा में पर्य्याप्त तपस्या की। ज़ार-शासन के अन्तिम दिनों में, अर्थात् १९१७ ई० की छठवीं दिसम्बर को यहाँ की पार्लियामेंट ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। तभी से यह स्वतंत्र राष्ट्र माना जाता है। सन् १९१९ ई० में यह प्रजातंत्र घोषित हो गया, और तब से पार्लियामेंट का एक प्रेसीडेण्ट चुना जाने लगा। यही प्रेसीडेण्ट आजकल भी यहाँ राज्य करता है।

देश ठंढा है। यहाँ जाड़ा काफ़ी दिनों तक रहता है। गरमी थोड़ी, वह भी बहुत साधारण पड़ती है। केवल चार महीने गुलाबी ठंढक रहती है। झीलों की बहुतायत के कारण यह देश "हज़ार झीलों वाला देश" के नाम से विख्यात है। इन झीलों से नहरें काट-काट कर आपस में ऐसी मिला दी गई हैं जिनसे व्यापारिक आवागमन में बड़ी सुविधा हो गई है। यह नहरें एक झील को दूसरी झील से नदी की तरह मिलाती हुई सीधे फ़िनलैंड के आखात तक चली गई हैं। इनके मुहानों पर छोटे छोटे झरने बन गये हैं जिससे यहाँ के लकड़ी चीरने वाली मिलों को चलाने

1. Duke of Finland

के लिए विद्युत शक्ति पैदा की जाती है। जङ्गलों से काट-काट कर चीड़ के लट्ठे नदियों तथा नहरों में बहा दिये जाते हैं और सीधे मिलों तक चले आते हैं, यहाँ उनको चीर कर तख्ते बनाये जाते हैं और व्यापार के लिए बाहर भेजे जाते हैं। लगभग १५,००० चीड़ के लट्ठे इन नहरों में हर साल बहा कर लाये जाते हैं। इन नदियों को लम्बी झीलें, या झीलें मिलाने वाली नहरें भी कह सकते हैं। इसी प्रकार स्थल भूमि को टापू भी कह सकते हैं, जिनकी संख्या अनुमानतः तीस हज़ार होगी।

इस देश की प्रधान सम्पत्ति यहाँ के घने जङ्गल हैं। चीड़, बतूल आदि वृक्षों से घना छाया हुआ जङ्गल देश के आधे भाग को ढँके होगा। शेष भाग या तो ऊसर भूमि है या पथरीला बंजर या झीलों का दलदल। कृषि के योग्य उपयोगी भूमि इस सम्पूर्ण देश की दशांश भी शायद न हो। यहाँ के खेत हिन्दुस्तान की तरह छोटे-छोटे होते हैं, जिनकी मुख्य फ़सल जौ, जई, राई, आलू आदि है। सन भी थोड़ा होता है। हरी भरी और तर भूमि होने के कारण यहाँ पर नाना प्रकार के वनस्पति भी होते हैं। जहाँ जहाँ जङ्गल काट कर जला दिये गये हैं, वहाँ और यत्र-तत्र कुछ चराई योग्य घास पैदा होती है। देश भर में लगभग दस लाख जानवर हैं जिनका मक्खन और पनीर यहाँ के डेरियों में बन कर सील-पैक

होकर विदेश जाते हैं। इसका व्यापार महायुद्ध के बाद से नार्वे और स्वेडेन से होता है, पहले रूस और जर्मनी से होता था।

यहाँ पर कुछ लोहे की खदानें भी हैं। इनसे धातु गलाने व ढालने का बहुत बड़ा काम होता है। इस व्यापार के करने वाली यहाँ पर अनुमानतः तीन सौ कम्पनियाँ हैं, जिनसे लगभग २५,००० लोगों की रोज़ी चलती है। विशेष कर कपड़ा मिलों का काम होता है जिससे अनुमानतः १७,००० मनुष्यों का निर्वाह होता है।

आल्बो अथवा जिसका नाम तुर्क भी है, एक छोटा सा बन्दरगाह होने के कारण एक घना आबाद नगर है। यहाँ पर दर्शनीय केवल एक प्राचीन गढ़ है। यह पुरानी राजधानी का राजकीय स्थान और इस देश पर स्वेडेन के शासन तथा आधिपत्य की प्राचीन स्मृति है। इसमें आजकल एक मुर्दा अजायबघर है। इसके अतिरिक्त यहाँ विशेष महत्वपूर्ण कोई वस्तु नहीं है।

हेलसिंगफ़ोर्स

यहाँ से दो बजे की गाड़ी से चलकर साढ़े पाँच बजे हम लोग फ़िनलैण्ड की राजधानी हेलसिंगफ़ोर्स[1] पहुँचे। सामान स्टेशन पर ही छोड़ कर हम नगर देखने चले गये। इस नगर का दूसरा नाम हेलसिङ्की

1. Helsingfors

भी है। नगर छोटा होते हुए भी बहुत सुन्दर बना है। चौड़ी सड़क, सुन्दर पार्क और बगीचों से यह बिलकुल आधुनिक और किसी भी सभ्य देश के नगर से तुलना-योग्य है। इसके चारों ओर मज़बूत गढ़-कोट बना है। यहाँ का गिर्जा घर, सिनेट हाउस, यूनिवर्सिटी आदि दर्शनीय हैं। इनकी बनावट प्राचीन ढंग की है और बहुत सुन्दर नहीं कही जा सकती है। थोड़ी सी इमारतें नये ढंग की भी हैं, जिनमें सब सामान देशी है और सजावट आकर्षक है। यहाँ पर एक चित्रशाला है। रात्रि के विनोद के लिए यहाँ का स्वेडिश थियेटर मुख्य स्थान है।

नगर में एक बहुत सुन्दर बाग़ है, जिसमें नक़ली दरख़्त और पौधे हैं। पार्लियामेण्ट की इमारत अभी हाल ही में तीन चार वर्ष हुए बनी है। इमारत नये ढंग की और अच्छी है। शिक्षा की दृष्टि से यहाँ के कुछ वैज्ञानिक संघ बहुत प्रसिद्ध हैं।

राज्य-व्यवस्था

सन् १९१९ ई० की १७वीं जून को फिनलैण्ड के प्रजातंत्र राज्य की स्थापना हुई। इसके पहले, जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं, रूस का ज़ार जो फ़िनलैण्ड का ग्रैंड ड्यूक कहलाता था, यहाँ का स्वामी था। राज्य-कार्य के लिए वह एक वायसराय नियुक्त कर देता था।

आज-कल यहाँ डाइट[1] नाम की एक ही कौंसिल है, जिसके द्वारा राज्य-व्यवस्था होती है। जनता द्वारा तीन सौ प्रेसीडेन्शियल वोटर[2] चुने जाते हैं जो अपने में से प्रेसीडेण्ट चुनते हैं। यह प्रेसीडेण्ट ही राजनीतिक भाषा में "स्टेट" या राज्य हो जाता है जो क़ानून बनाने से लेकर पर-राष्ट्र-नीति तक, सभी विषयों पर अन्तिम निर्णय करता है। इसके नीचे एक कौन्सिल आव् स्टेट होती है, जिसमें दस मंत्री होते हैं। यह लोग नियम तथा राज्य व्यवस्थानुसार राज्य-संचालन के उत्तरदायी हैं।

यहाँ की राजनैतिक पार्टियों में सोशल डेमोक्रैटिक-दल सब से अधिक शक्तिशाली है। यह वास्तव में साम्यवादी तथा मज़दूर-दल है। यह दल शान्तिप्रिय तथा युद्ध-विरोधी है। दूसरी पार्टी ऐग्रेरियन अथवा कृषक पार्टी है। इसके अतिरिक्त स्वेडिश पीपुल्स पार्टी, नेशनल पार्टी आदि दूसरी पार्टियाँ भी हैं।

पन्द्रह वर्ष पहले जिस देश ने स्वतंत्रता का नाम भी न सुना हो तथा जिसे निरन्तर ग़ुलामी भोगते ही बीता हो, वह देश आर्थिक दृष्टि से कितना उन्नत हो सकता है—इसकी कल्पना करना कठिन नहीं है। यहाँ की राज्य भाषाएँ फ़िन[3] तथा स्वेडिश हैं। रूस के शासन के पहले फ़िनलैण्ड स्वेडेन के आधीन था। अभी

1. Diet 2. Presidential Voters 3. Fin

तक इनका प्रभाव कुछ अंशों में राज्य-व्यवस्था तथा सभ्यता पर बना हुआ है। कई देशों की पराधीनता के कारण यहाँ भिन्न भाषा बोलने वाले पर्याप्त लोग रहते हैं। इन लोगों का आचार-व्यवहार पूर्वीय देशों से मिलता-जुलता है तथा रहन-सहन का ढंग अधिकतर बहुत उन्नत नहीं है। वेश-भूषा तथा आचार-व्यवहार यूरोप के अन्य देशों के समान सभ्य नहीं कहा जा सकता है। किन्तु, इसका यह अर्थ नहीं है कि फ़िनिश गन्दे रहते हैं। देश की ग़रीबी का अन्दाज़ इसी बात से लग सकता है कि इसके चालू सिक्के मार्क[1] का मूल्य लगभग एक आना है। मैंने यूरोप में इतना पिछड़ा देश और कोई नहीं देखा।

फ़िनलैण्ड का क्षेत्रफल १३२,५८९ वर्ग मील तथा जनसंख्या ३,६५८,००० के क़रीब है। देश की राजधानी हेलसिङ्की की जनसंख्या सन् १९३१ की मर्दुमशुमारी के अनुसार २,४१,११५ थी।

यहाँ से रात को ग्यारह बजे की गाड़ी से हम रूस के लिए रवाना हुए। इस देश को देखने के लिए चित्त कितना लालायित था तथा मन में कैसी भावनाएँ उत्पन्न हो रही थीं, यह व्यक्त करना कठिन है।

---

1. Mark

उन्नीसवाँ परिच्छेद

सोवियट रूस (१)

जिस समय मैंने रूस की यात्रा की थी, वह संसार में एक क्रान्तिकारी अथवा उपद्रवी देश के रूप में बदनाम था। किन्तु उसके राजनैतिक सिद्धान्तों से सहमत न होते हुए भी, मैं यह कहूँगा कि आज, अन्तर्राष्ट्रीय जगत में उसने जो पद प्राप्त कर लिया है, उसके लिए केवल वह गौरवमय ही नहीं है, सराहनीय भी है।

अँगरेज़ी का रशिया[1] शब्द रूसिया का अपभ्रंश है। रूसिया शब्द रूस या रोस[2] से बना है। रूस उन लोगों का नाम है जो जर्मन की नीपर[3] नदी पर नवीं शताब्दी में मध्य एशिया से आकर पहले पहल बसे थे। वहाँ से यह लोग पड़ोस के देशों में फैल गये और इनमें से अधिकांश आधुनिक रूस[4] में आकर बस गये। रूस-निवासी

---

1. Russia
2. Rus or Ros
3. Dnieper
4. Modern Russia

मॉस्को का स्टेशन

आर्य-जाति के वंशज हैं। जर्मन लोग भी इसी जाति के अंश हैं, और आर्यों के स्वस्तिका चिह्न (卐) की अभ्यर्थना करते हैं।

रूस की पिछली तीन शताब्दियों का इतिहास रोमानोव्[1] वंश के राजघराने के प्रकाण्ड वैभव से सम्बन्धित है। इस वंश का स्थापक माइकेल[2] था जिसको सन् १६१३ ई० में रूस का प्रथम ज़ार चुना गया था। रोमानोव् वंश का सर्व-श्रेष्ठ तथा महान् शक्तिशाली सम्राट् जिसको "महान्" की उपाधि दी जाती है, पीटर प्रथम था। इसने सन् १६८९ ई० से सन् १७२५ ई० तक राज्य किया। इसके राज्य-काल में रूस ने बहुत उन्नति की और इसी समय से यह देश संसार का एक स्वतंत्र साम्राज्यवादी[3] शक्तिमान् सत्ता वाला देश गिना जाने लगा। पीटर ने विदेशों से व्यापारिक तथा राजनैतिक सम्बन्ध स्थापित कर के पारस्परिक घनिष्ठता से देश को शक्तिमान् तथा सम्मृद्ध बनाने में अतिशय योग्यता प्रदर्शित की। इसी हेतु उसने रूस की प्राचीन राजधानी सेण्ट पीटर्सबर्ग जिसको रूसी क्रान्ति के पहले पेट्रोग्रेड कहते थे और अब लेनिनग्रेड कहते हैं, देश के पश्चिमीय समुद्र-तट पर बसाई। इसे उसने व्यापारिक आवागमन की सुविधा तथा पश्चिमीय यूरोप की निकटता के कारण चुना था।

1. Romanovs 2. Michael
3. Imperialist

ज़ार घराने का राज्य-नियंत्रण निरङ्कुश स्वेच्छाचारिता की प्रधानता के कारण केवल थोड़ी सी भलाइयों के अतिरिक्त सभी प्रकार की त्रुटियों और बुराइयों के लिए बदनाम-सा है। अन्तिम ज़ार, निकोलस द्वितीय जो रोमानोव घराने का आठवाँ उत्तराधिकारी था, सन् १८९४ ई० में सिंहासन पर बैठा। इसके पिता अलैग्ज़ैण्डर तृतीय का राज्य-काल विप्लवात्मक उपद्रवों से भरा है, जिनके कारण उसे एक बार गटकीना[1] में क़ैद तक होना पड़ा था। जिस समय निकोलस गद्दी पर बैठा, उस समय देश की दशा बड़ी खराब थी। ऐसे समय देश के भीतर एक आग का जलना और उसमें क्रान्तिकारी आन्दोलन का पनपना स्वाभाविक है। शायद निकोलस को इसका पता मिल गया था इसलिए वह गद्दी पर बैठने में हिचकता था। इसका स्वभाव विशेष अनुदार न था। उसे अपने देश की राज्य-प्रणाली की निरङ्कुश स्वेच्छाचारिता से घृणा भी थी और इसी कारण वह अपने पिता के राज्य-सिंहासन से विमुख होकर एक साधारण व्यक्ति के भाँति जीवन व्यतीत करना अधिक श्रेष्ठ समझता था। परन्तु कर्त्तव्य से प्रेरित होकर उसे खिन्न मन से वही सब करना पड़ा, जिसके कारण

1. Gatchina.

उसको सिंहासनच्युत ही नहीं वरन् उसको और उसके वंश को प्राणों से भी हाथ धोना पड़ा ।

गद्दी पर बैठते ही, निकोलस के संदिग्ध मस्तिष्क को राज्य के दूषित वातावरण ने बदल दिया । प्रजा के बढ़ते हुए असन्तोष को दबा कर, या कुचल कर राजा को अपने या अपने उत्तराधिकारी के लिए राज्य सुरक्षित करने की भावना ने उसे विकल कर दिया । इस लिए उसे बहुत से ऐसे काम करने पड़े, जिसे वह शायद दिल से नहीं चाहता था । वह इतना दुर्बल-हृदय था कि मामूली टोना-टोटका में भी बहुत विश्वास करने लगा था । यह दुर्गुण उसके पूर्वजों में भी था । उनके रहने के स्थान से पता चलता है कि मामूली जादू और टोना-टोटका में वे कितना विश्वास करते थे ।

अस्तु, अपने राज्य की शक्ति को बलवान बनाने के लिये इसने जर्मनी के राजघराने की राजकुमारी एलिक्स[1] से विवाह किया, जिससे चार लड़कियाँ और अलेक्सिस[2] नाम का एक लड़का पैदा हुआ । यह लड़का जन्म से ही रोगी था, अतएव उसके माता-पिता उसके जीवन के लिए बहुत चिन्तित रहा करते थे और जादू-टोना में भी उनका ज़्यादा विश्वास इसी कारण बढ़ा । शायद इसीलिए उनके यहाँ रासपुटिन का इतना प्रभाव बढ़ा जो कि वास्तव

1. Alix of Hesse. 2. Alexis.

में ज़ार को इतना बदनाम और उसका सर्वनाश कराने का कारण हुआ। ज़ारीना का पैतृक स्थान जर्मनी में होने के कारण ही विगत महायुद्ध के अवसर पर रूस के राज दरबार[1] में जर्मनी का अधिक प्रभाव था।

१७ जनवरी सन् १८७५ ई० में, जिस समय निकोलस के विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में बधाइयाँ दी जा रही थीं, देश के कुछ प्रतिनिधियों ने नये सम्राट् के सम्मुख यह प्रस्ताव* रखा कि "लोगों की शिकायतें सुननी चाहिए और राज्य के नियमों का आदर और पालन केवल प्रजा को ही नहीं वरन् शासकवर्ग के लोगों को भी करना चाहिए।" उसके उत्तर में ग़लत सलाह में पड़कर ज़ार ने अपनी राज्य-प्रणाली का आशय इस प्रकार प्रकट किया था:- "मुझे सूचित किया गया है कि अभी हाल में ज़िला कमेटियों की ओर से अपने प्रतिनिधियों द्वारा राज्य की आन्तरिक व्यवस्था में हस्तक्षेप करने के निरर्थक स्वप्नों से प्रेरित कुछ लोगों ने आवाज़ें उठाई हैं। सब को यह जान लेना चाहिए कि मैंने भी

---

1. Russian Court.

*The voice of the people should be heard and that the law should henceforth be respected and obeyed not only by the nation but also by the ruling authorities.

अपने पिता की भाँति उसी प्रकार निरंकुश स्वेच्छाचारिता के सिद्धान्त पर चलने का निश्चय किया है।"*

दूसरे ही दिन अशान्ति के लक्षण उग्र हो उठे, और सबेरे के समाचार-पत्रों में "निरर्थक स्वप्नों"[1] पर लिबरल-दल के लोगों ने तीखी टीका-टिप्पणियाँ निकालीं। इस प्रकार भविष्य में होने वाली क्रान्ति के ताण्डव का सूत्रपात हुआ।

इसी समय लेनिन ने, जो विदेश में था, बोल्शेविक दल का निर्माण किया। बोल्शेविक शब्द बोल्शेविकी[2] से, जिसका अर्थ सामूहिकतावादी[3] है, बना है। सन् १६०३ ई० में लन्दन की सभा में लेनिन के प्रतिनिधित्व में इस दल की स्थापना हुई थी।

अशान्ति की आयोजनायें उत्तरोत्तर बढ़ रही थीं। इसी समय रूस सुदूर पूर्व के झगड़ों में फँस गया। सन् १६०४ ई० की पाँचवीं फ़रवरी को रूस ने जापान के हाथों बड़ी बुरी हार खाई। इस हार से

1. Senseless dreams 2. Bolsheviki
3. Majoritarians

*I am aware that in certain zemestvo meetings voices have been lately raised by persons carried away by senseless dreams of the participation of zemestvo representatives in internal Government. Let all know that I intend to defend the principle of autocracy as unswervingly as did my father.

क्रान्तिकारियों के दल ने नया जोश पकड़ा। लोगों की भावना सरकार के विरुद्ध होने लगी। वे युद्ध का घोर विरोध करने लगे और क्रान्ति का आरम्भ हो गया।

सन् १६०५ ई० की नवीं जनवरी को रविवार के दिन हज़ारों मज़दूरों का समूह धार्मिक गाने गाते हुए ज़ार के जाड़े वाले महल की ओर "अपने ज़ार" से मिलकर बात करने के लिए चला। परन्तु ज़ार अनुपस्थित था। रूस की आर्थिक परिस्थिति इस समय बड़े सङ्कट में थी, रुपया मँहगा हो रहा था, ग़ल्ला सोने के भाव चढ़ रहा था। भूख से पीड़ित प्रजा त्राहि-त्राहि कर रही थी। परन्तु अधिकांश अपढ़ लोगों में यह भावना अब भी विद्यमान थी कि ज़ार को प्रजा के संकटों का ज्ञान नहीं है वरना हमारी ज़रूर ख़बर लेता। यही समझ कर यह सब लोग अपने लड़के-बच्चों को साथ लेकर ज़ार के जाड़े वाले महल के सामने वाले बड़े मैदान में अपनी दयनीय दशा दिखाने के लिए इकट्ठा हुए; किन्तु बजाय ज़ार के दर्शनों के उन्हें फ़ौजी सिपाहियों की गोलियों की बौछार का सामना करना पड़ा। गोलियाँ भी इस तरह चलाई गईं कि लोगों को भागना तक मुश्किल हो गया। अनुमान है कि हज़ार से ऊपर आदमी, औरतें और बच्चे गोली के शिकार हुए।

प्रजा में असंतोष बढ़ ही रहा था। इस गोलीकाण्ड की ख़बर

फैलते ही सारे देश में आग लग गई। देश में राजनैतिक सुधारवादी तथा क्रान्तिकारी आन्दोलनों के दो विरोधी दल प्रकाश्य रूप से विप्लव करने लगे। ज़ार की दशा डावाँडोल थी। उसने एक विज्ञप्ति निकाली जिसके द्वारा "सबसे योग्य व्यक्तियों" को राज्य-नियमों में परिवर्त्तन के विषय में सलाह देने के लिए बुलाने का वचन दिया। एक बार प्रस्ताव के उत्तर में गोलियों की बौछार खा कर, प्रजा ने फिर अपनी माँगें पेश कीं, परन्तु ज़ार की ओर से यही उत्तर मिला कि "ज़ार अपने निश्चय पर अटल है"।

छठवीं अगस्त को ज़ार ने ड्यूमा[1] नामक एक राज-सभा स्थापित की। परन्तु यह केवल एक परामर्श देने वाली सभा थी जिसके सदस्य इस प्रकार थे।

४३ प्रतिशत् किसान
३४ ,, ताल्लुक़दार
और २३ ,, उच्चवर्ग के लोग

यह ड्यूमा कई बार टूटी और फिर स्थापित हुई। जब तक ज़ारशाही रही तब तक इसके चुनाव के नियम ही ऐसे रक्खे गये थे जिसमें सुधारकों की संख्या प्रबल न होने पावे। इसी कारण ड्यूमा से बाहर विरोधियों कि संख्या बढ़ गई। पहले से असंतोष था ही।

1. Duma of the Empire

इस ड्यूमा की स्थापना से सार्वजनिक असंतोष की आग में घी पड़ गया। इस समय सभाओं, मज़दूरों तथा विद्यार्थियों की हड़तालों, देहाती आन्दोलनों और बम-काण्डों की गणना नहीं की जा सकती थी। परिणामस्वरूप १० अक्टूबर को सम्पूर्ण रूस देश में एक सार्वजनिक हड़ताल हुई। रेलवे, डाक, तार, फ़ैक्टरियों, दूकानों व्यापारिक दफ्तरों और यहाँ तक कि प्राइमरी स्कूलों के बच्चों तक ने हड़ताल कर दिया। देहातों में भी आन्दोलन का वेग प्रबल हो उठा। यह दशा देख कर ज़ार को स्वेच्छानुसार ड्यूमा से निपटने के लिए छोड़ कर उसके मंत्री और ड्यूमा के स्थापक विट[1] महोदय ने अपना इस्तीफ़ा दे दिया।

ज़ार कुछ राज्य-भक्त कट्टर दल के लोगों को ड्यूमा में चुन कर, पहले की तरह निरंकुश रूप से शासन करता रहा। विरोधी दल के बढ़ जाने पर ज़ार को ड्यूमा में चुनाव के नियमों का परिवर्तन कर कालान्तर में दूसरी, तीसरी, तथा चौथी ड्यूमा स्थापित करनी पड़ी। परन्तु ज़ार की शक्ति दिन पर दिन क्षीण हो रही थी और ड्यूमा में उत्तरोत्तर विरोधियों की संख्या बढ़ती ही जाती थी।

सन् १९१४ ई० में महासमर के छिड़ने पर पार्लियामेण्ट ने युद्ध में शरीक होने का निश्चय किया। इसी समय लेनिन के नेतृत्व

1. Witte

में बोल्शेविक लोगों ने युद्ध का विरोध किया। जिन लोगों ने प्रकाश्य रूप से विरोध किया था, उनको देश-निकाला या साइबेरिया-प्रवास दे दिया गया और रूस में फौज पर भेजे जाने के लिए आदमी और रसद इकट्ठी की जाने लगी। देश इस समय युद्ध के लिए तय्यार न था। फ़ैक्टरियाँ बहुत थोड़ी थीं। ग़ल्ला महँगा था। फौजी माल ढोने के लिए रेलों की कमी थी। इस कारण यथेष्ट मात्रा में रसद मिलना कठिन हो रहा था। इन्हीं सब कारणों से रूस को जर्मनी के हाथों बुरी हार खानी पड़ी। इसका परिणाम यह हुआ कि राज्य-शृङ्खला और अधिक कमज़ोर हो गई। रूस में देशव्यापी आन्दोलन ने और ज़ोर पकड़ा। जगह जगह पर बलवे और सामूहिक आक्रमण होने लगे। अन्त में ज़ार ने ड्यूमा से हाथ खींच लिया, और सदस्यों को (११ मार्च १९१७) सभा भंग करने का आदेश दे दिया।

परन्तु ज़ारशाही का अन्त आ पहुँचा था। राज्य-सभा के लोगों ने सभा को विसर्जन करना स्वीकार नहीं किया और स्वयं मिल कर इस स्वेच्छाचारी अनाचार को समूल नष्ट करने के लिए एक विप्लव की आयोजना करने लगे। इन्होंने मजदूरों की सभा सोवियट से मिल कर एक अस्थाई सरकार का निर्माण किया। १५ मार्च को ज़ार ने इस राज्य-प्रणाली को स्वीकार कर के

राज्य-पद से इस्तीफ़ा दे दिया और राजमुकुट अपने भाई ग्रैंड ड्यूक माइकेल को देना चाहा, परन्तु उसने ऐसी दशा में राज्य-सिंहासन लेने से इन्कार कर दिया। परिणाम यह हुआ कि ज़ार निकोलस बाल-बच्चों सहित क़ैद कर लिया गया।

सोवियट दल ने (जो लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक लोगों का दल था) इस अस्थाई सरकार के प्रवर्तकों से परस्पर विरोध होने के कारण एक महान देश-व्यापी क्रान्ति[1] को जन्म दिया। जर्मनी ने भी इन क्रान्तिकारियों की सहायता की, और यह पारस्परिक तुमुल-संघर्ष सन् १९२० ई० तक भयंकर रक्तपात तथा नर-हत्या-काण्ड करता हुआ जारी रहा।

अस्थाई सरकार ने स्थापित होते ही प्रेस के प्रतिबन्ध[2] हटा दिये, तमाम राजनैतिक तथा धार्मिक क़ैदी छोड़ दिये गये, मज़दूरों को दल बनाने और हड़ताल करने के अधिकार दिये और जल तथा थल सेना के नियमों में सुधार किये। रूस के बहुत से सिविल और मिलिटरी नौकरशाही के लोग इस सरकार का पल्ला पकड़े हुए थे क्योंकि स्वयं ज़ार ने इसे स्थापित किया था। अमरीका और उसके देखादेखी मित्र-राष्ट्रों ने भी इस सरकार को क़ानूनी स्वीकार कर लिया था। ड्यूमा के विरोधी-दल वालों की इच्छा ज़ार को

---

1. Civil War 2. Censorship of the Press

सिंहासनच्युत करने की केवल इसलिए थी कि लोगों के विरोध करने पर भी युद्ध में ज़ार सम्मिलित हुआ और ऊपर से बुरी तरह हार खाई और देश को तबाह कर डाला।

मगर इस समय जर्मनी की सहायता से संसार-विख्यात लेनिन रूस में पदार्पण कर चुका था। लेनिन विचारों का सोशलिस्ट था और कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों का पक्का समर्थक था। वह इस समय मज़दूरों के दलों का संगठन कर रहा था और सोवियट-दल का बड़ी चतुरता से नेतृत्व कर रहा था। मज़दूरों के एकत्रित होने के केन्द्र फ़ैक्टरियाँ थीं, इन सब केन्द्रों को ज़ञ्जीर की तरह एकता के सूत्र में पिरो कर वह मज़दूर-सरकार स्थापित करना चाहता था।

जून सन् १९१७ ई० में "सोवियट" लोगों ने पेट्रोग्रेड में सम्पूर्ण रूस के सोवियट की पहली सरकार[1] की आयोजना की। इसमें भिन्न भिन्न अभिमतों वाले १००० प्रतिनिधि शरीक हुए थे। सभा में राष्ट्रवाद तथा नौकरशाही के विरुद्ध गरमागरम स्पीचें दी गई, और अन्त में सोवियटों द्वारा शासन करने की एक केन्द्रीय समिति[2] की स्थापना की गई।

सिद्धान्तों में विरोध होने के कारण सोवियट में और अस्थाई

1. 1st All Russian Congress of Soviets
2. All Russian Central Executive Committee of the Soviets

सरकार में विरोध होना स्वाभाविक ही था। एक का नेता लेनिन था, दूसरे का केरेन्सकी[1]। इन दोनों मनस्वी वीरों के नेतृत्व में सञ्चालित रूस में एक भयङ्कर घरेलू झगड़ा[2], जो महायुद्ध से भी अधिक नाशकारी और भयङ्कर था, उठ खड़ा हुआ। लेनिन ने ६ नवम्बर को अस्थाई सरकार के विरोध में घोषणा करके विप्लव की घोषणा कर दी। दो दिन की भयङ्कर मार-काट के बाद लेनिन ने सफलता तो पाई, परन्तु सन् १९२० ई० तक उसे बराबर विरोधियों का सामना करना पड़ा, और भीषण रक्तपात तथा हत्या-काण्ड जारी रहा। इन विरोधी दलों को जर्मनी तथा मित्र-राष्ट्रों के देश भड़काते तथा आर्थिक और अस्त्र-शस्त्रों की सहायता देते रहे, जिससे कभी-कभी तो ऐसा जान पड़ता था कि सोवियट लोग दब जायेंगे, परन्तु लेनिन को इस समय एक बड़ी ही विचक्षण बुद्धि वाला सेना-नायक मिल गया, जिसको लेनिन अपना दाहिना हाथ कहा करता था। इसका नाम था ट्राटस्की[3] था जिसने विरोधियों को दबाने के लिए "लाल सेना" की विचित्र आयोजना की।

जिस समय यह लाल दल विरोधियों को दबाने में लगा था और युद्ध ज़ोरों से हो रहा था, उस समय ज़ार और उसके खान्दान को यूराल[4] प्रान्त के एकेटेरनबर्ग[5] में हटा कर इस इरादे से क़ैद

1. Kerenski 2. Civil War 3. Trotsky
4. Ural 5. Ekaterinburg

कर दिया गया था कि कभी भविष्य में ट्राटस्की जब प्रोज़ेक्यूटर[1] होगा तब इन लोगों के साथ उचित न्याय करेगा। परन्तु जब श्वेत दल के लोग वहाँ तक हमला करने लगे, तो सोवियट लोगों ने निर्दय हो कर सन् १९१८ ई० की १७वीं जून को निकोलस, उसकी स्त्री और उसके बच्चों को गोली के घाट उतार दिया। इसी समय फ्रान्सीसियों से सहायता पा कर पोलैण्ड के लोग अपने राज्य की सीमा बढ़ाने के लिए उमड़ पड़े। बोल्शेविक लोगों ने उन्हें हरा कर वारसा[2] तक खदेड़ा और अन्त में सन् १९२० ई० की १२ अक्टूबर को रीगा की सन्धि द्वारा पोलैण्ड से सुलह कर ली। सन् १९२१ ई० तक देश में पूर्ण शान्ति तथा सोवियट रिपब्लिक[3] की स्थापना हो गई।

---

1. Prosecutor
2. Warsaw
3. Russian Socialist Federated Soviet Republic

बीसवाँ परिच्छेद

सोवियट रूस (२)

जिस समय रूस का अन्तिम ज़ार निकोलस सिंहासन पर बैठा, उसका राज्य-विस्तार अखिल भूमण्डल का छठवाँ (१/६) भाग अर्थात ८७,६४,००० वर्गमील था। रूस-साम्राज्य पूर्व में मध्य यूरोप से पैसिफ़िक महासागर, और उत्तर में बरफ़ीले आर्कटिक से दक्षिण में काले और कास्पियन सागरों तथा कोहकाफ़ पर्वत[1], फ़ारस[2] और चीन[3] देश तक फैला हुआ था। इस विशाल देश की जनसंख्या अनुमानतः १८,००,००,००० मनुष्यों की थी। परन्तु महासमर तथा क्रान्तिकारी समय में इस राज्य का एक तिहाई भाग स्वतंत्र हो गया और इसका क्षेत्रफल अनुमानतः ८३,३६,८६४ वर्गमील रह गया। फ़िनलैण्ड, एस्थोनिया, लैटविया, लिथूनिया, पोलैण्ड और जार्जिया प्रभृत देश स्वतंत्र राष्ट्र बन गये। आधुनिक सोवियट रूस की जन-

---

1. Caucasus Mts. 2. Persia 3. China

संख्या सन् १६३१ की मर्दुमशुमारी के हिसाब से १६,१०,०६,२०० है। सोवियट का अर्थ है सभा या पञ्चायत। पहले पहल यह कुछ इधर-उधर छिटपुट हड़ताल कराने वाली कमेटियों का नाम था। सन् १६०५ ई० में सारे रूस की हड़ताल के समय लेनिन के नेतृत्व में इस सभा का पेट्रोग्रेड में विशाल आयोजन हुआ था। वास्तव में रूस की आधुनिक सोवियट प्रणाली[1] किसी राजनैतिक या चुनाव सम्बंधी आयोजना का परिणाम नहीं है। रूस की विचित्र परिस्थिति से उत्पन्न दशा में इसका विकास हुआ है। इस प्रणाली से हम सहमत हों या नहीं, इसकी महानता एवं गम्भीरता को तो स्वीकार करना ही पड़ता है।

सोवियट प्रणाली के जन्मदाताओं का प्रधान सिद्धान्त कम्यूनिज़्म या वर्गवाद है, जिसके विचारों का आधार सन् १८४८ ई० में कार्लमार्क्स और फ्रेडेरिक एंजिल्स द्वारा प्रकाशित एक "कम्यूनिस्ट मैनीफेस्टो"[2] नामक विज्ञप्ति से हुआ है। बोल्शेविक लोगों के लिए कम्यूनिज़्म या वर्गवाद का दार्शनिक महत्व है। साथ ही वे इसको एक सामाजिक प्रणाली भी मानते हैं। वर्गवाद का उद्देश्य ही उसकी दार्शनिकता है जो मानव समुदाय के ऊँच-नीच के भेद को मिटा कर एक वर्ग रहित समाज की स्थापना करना

1. Soviet System 2. Communist Manifesto

और निजी सम्पत्ति की प्रणाली को हटा कर सार्वजनिक अधिकार में विश्वास करता है। वर्गवाद का सामाजिक पहलू यह है कि उत्पादन तथा वितरण की समान परिमाण में व्यवस्था करके एक ऐसे समाज की सृष्टि करना जो पहले तो केवल एक देशीय आयोजन हो परन्तु कालान्तर में अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन द्वारा मानव-समाज को ऐसा बना दे, जो देश, जाति, काल और रङ्गरूप की विभिन्नता को पारकर, विश्व-बन्धुत्व, समानता, एकता और सबके अधिकार के मानने वाले विश्व-साम्राज्य की स्थापना कर दे। एक ऐसा समाज बने जिसमें मनुष्य आजीवका के लिए नहीं पर उत्थान की भावना से ही सब कार्य करता रहे समाज के लिए वह ऐसे ही उत्साह से कार्य करे और समाज उसके उपलक्ष्य में अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार उसके लिये भोजन व आराम के साधन जुटावे।

वास्तव में रूसो, प्राउढन, कार्ल मार्क्स आदि के आदर्शों पर स्थापित रूस के इस नव-निर्मित समाज के जीवन में एक विचित्र नवीनता आ गई है, जिसे एक तरह का आदर्श भी कहा जा सकता है। रूस का वर्गवाद कितना पक्का है और किताबों में उसका जो रूप है, उसे रूस कहाँ तक अपना सका है, यह कहना कठिन है। अब इस वर्ग-वाद का रूप और भी बदलता जा रहा है तथा हाल की घटनायें तो इसे शुद्ध वर्गवादी साबित ही नहीं कर सकतीं। समाज में सबको बराबर समझ

कर, सबको खाने-पीने का बराबर साधन पहुँचाना और राज्य के हाथ में सम्पूर्ण सम्पत्ति और उसकी बागडोर रख देना---यह एक सिद्धान्त है जिस पर लेनिन, ट्राटस्की तथा स्टालिन के ज़माने में क्रमशः तब्दीली होती गई है। रूस में अब बैंकिंग-प्रथा, थोड़ी बहुत ज़मीन रखने की प्रथा वग़ैरह चल पड़ी है। सरकार इनका विरोध नहीं करती, उल्टे सहायता ही देती है। इसके अलावा विशेषज्ञों और विद्वानों को साधारण मज़दूर पेशा वालों से ज्यादा सुखी रखनेका प्रबन्ध किया जाता है। इससे भी सिद्ध होता है कि पहले धन-भेद था तो अब विद्या-भेद है। समानता तथा एकता के सिद्धान्त के होते हुए भी यह चीज़ आपसी भेद बनाये रखती है। इस प्रकार समाज की अविच्छिन्न एकता में सिद्धान्ततः भेद हो ही गया। दूसरे, वर्ग या समूह को ही ईश्वर मानने वाला वर्गवादी समाज गिर्जाघर वग़ैरः तोड़ने और विवाह तक की प्रथा उठा देने पर भी, अधिकांश जनता के हृदय से ईश्वर का ध्यान या पत्नी के हृदय से पति की सेवा का भाव नहीं हटा सक ।

वर्गवादी सिद्धान्त में जनता में वर्गवादी चेतना लाने के लिए उस समय तक निरङ्कुश शासन एक आवश्यक अङ्ग समझा जाता है जब तक उस तरह के समाज की पूर्ण व्यवस्था न हो जावे। इसकी सफ़ाई यह दी जाती है कि अपनी ही उन्नति के उद्देश्य से

जनसमूह अपनी बाह्य स्वतंत्रता के एक सीमित अंश को, अपने द्वारा ही स्थापित एक सामूहिक संस्था के हाथों में सौंपे हुए हैं। वे कहते हैं- "आओ, हम तुम सब लोग मिलकर एक साथ बैठें और एक साथ एक जगह रहने के लिए जिन जिन बातों का इन्तज़ाम ज़रूरी जान पड़े उनको, अपनी ही सुविधा और लाभ और स्वार्थ के लिए, निश्चित करके कुछ ऐसे नियम बना लें, जिनका पालन करना हमारा धर्म होना चाहिए। नियम-भङ्ग के दण्ड भी हमीं लोग बना लें। और फिर हम सब राज्य करें। हम सब पहले प्रजा होंगे, फिर राजा।" शायद इसी कारण यहाँ के लोगों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता[1] और नागरिक अधिकार[2] नहीं प्राप्त हैं और उसके फल-स्वरूप शासन में निरंकुशता दीख पड़ती है। इसका सबसे दूषित परिणाम जो आँखों के सामने ही देखने में आता है वह यह है कि लोगों की निजी आज़ादी समाप्त हो गई है और एक अजीब विवशता-सी उनके चेहरे से झलकती है। इसे देखकर हर एक व्यक्ति की अन्तरात्मा को दुःख होगा।

इतने बड़े देश में प्राचीनता का पूर्ण बहिष्कार किस दृढ़ता के साथ किया गया है—यहाँ के नये नियमों के देखने से विदित हो जाता है। विप्लव काल में सभी परिवर्त्तनों के साथ लेनिन,

1. Individual Liberty 2. Civic Rights

ट्राटस्की, स्टालिन आदि विद्वानों के व्याख्यानों और उपदेशों ने यहाँ के लोगों की धमनियों में एक दूसरी ही रक्त-धारा प्रवाहित कर दी है। इन लोगों का धर्म, ध्येय और आदर्श कुछ दूसरा ही हो गया है। कुछ परिवर्त्तन तो परिस्थिति के कारण हुआ है और कुछ स्वभावतः ही हो गया है। इसके अलावा बहुत सी ऐसी तब्दीलियाँ इनके सर लाद दी गयी हैं जिसे मानने के लोग आदी हो चले हैं। इसी कारण यहाँ के दीवानी, फ़ौजदारी न्यायालयों में प्राचीन नियमों में बहुत उलट-फेर कर दिया गया है। अपराधों की नई परिभाषाएँ, दण्डों के नये विधान, पारस्परिक व्यवहार के नये नियम बने हैं। यह आदर्शवाद पर निर्मित नूतन नियमावलियों में, जिनमें पग-पग पर परिस्थितियों की प्रतिकूलता के कारण ठोकरें लगती हैं, पुनः संशोधन इत्यादि के बाद बहुत कठिनाई से पालन की तथा कराई जाती हैं। यह कठिनाइयाँ समाज के नव-निर्माण में ज़रूरी कह कर जनता के आक्षेपों का उत्तर दिया जाता है।

सोवियट रूस[1] किसानों और मज़दूरों का एक समाजवादी-प्रजातन्त्र राज्य[2] है। यहाँ की प्रजा के राज्य-नियन्त्रण के सब अधिकार वहाँ की सोवियट[3] को प्राप्त हैं। देश की भूमि, जङ्गल,

1. R. S. F. S. R.
2. Socialist Republic of Workers and Peasants
3. Soviet of Workers and Peasants

खदानें, पशु, बैङ्क, फ़ैक्टरियाँ, उत्पादक सामग्रियाँ, रेलवे तथा उनके विभाजन के साधन आदि सब सोवियट रूस नामक संस्था की जायदाद है, और मानी जाती है। किसी वस्तु पर किसी एक का अधिकार नहीं है। लोग निजी लाभ के प्रोत्साहक भाव के मिट जाने के कारण काहिल और लापरवाह न हो जायँ इसलिए प्रत्येक को काम करने का कर्त्तव्य पालन करना अनिवार्य है वरना उसे खाने को नहीं दिया जायगा। राज्य-नियमों में मनोरञ्जन के लिए कुछ स्वतंत्रतायें देकर प्रजा को सन्तुष्ट रखने की चेष्टा की जाती है। इस देश की लघुसंख्यक जातियों को किसी प्रकार राजनियम तथा व्यवहार में बहुसंख्यक जाति से कम या ज़्यादा अधिकार नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार तथा सुभीते हैं। किन्तु, क्रियात्मक रूप में ये सिद्धान्त किस प्रकार काम में आते हैं, यह कहना कठिन है। जिस सोवियट को समूचा अधिकार दिया गया है वह "वर्गवाद के वास्तविक प्रतिपादन" के नाम पर कितनी निरङ्कुश हो गई है, यह जग ज़ाहिर है और निजी विचार, विवेक और बुद्धि को दौड़ाना और कोई ऐसी बात सोचना जो वर्गवाद के ज़रा भी विपरीत हो या स्टालिन की सरकार के खिलाफ़ हो,—चाहे वह वर्गवाद के सिद्धान्त के अन्तर्गत ही क्यों न हो, भयंकर गुनाह । हरेक राज्य-प्रणाली के मानने वाले या विरोधी, दोनों ही होते हैं। पर

विरोधियों के दमन में जितना खून रूस ने बहाया है, शायद ही किसी देश ने वैसा किया हो। इसका नतीजा यह हुआ है कि लोगों में एक ऐसा आन्तरिक भय समा गया है जो उनके कार्य या बात-चीत ही नहीं, आँखों से भी प्रकट होता है।

रूस का राज्य नियन्त्रण करने वाली प्रधान सभा का नाम "अखिल रूसी सोवियटों की कांग्रेस" है। इस सभा के ऊपर एक कार्यकारिणी सभा भी है। कांग्रेस में नगरों तथा प्रान्तों से सदस्य चुने जाते हैं। नगर में २५,००० वोटर मिल कर एक प्रतिनिधि भेज सकते हैं तो डिप्टी कहलाता है तथा प्रान्तों से १,२५,००० लोगों की जनसंख्या पर एक के हिसाब से प्रतिनिधि चुने जाते हैं। इस सभा में अनुमान एक हज़ार से अधिक सदस्य होने के कारण आवश्यक कार्य कुशलतापूर्वक सञ्चालन के लिए एक कार्यकारिणी सभा बना कर राज्य-शासन सञ्चालित किया जाता है। इस कार्यकारिणी में अनुमानतः चार सौ सदस्य हैं, जो मज़दूरों और किसानों की सरकार का उपयुक्त सञ्चालन करने के लिए उत्तरदायी हैं। वस्तुतः काँग्रेस तो एक नाममात्र की संस्था है, राज्य-कार्य के सञ्चालन के पूर्ण अधिकार कार्यकारिणी सभा को ही प्राप्त हैं। इस कार्यकारिणी की भी एक छोटी टुकड़ी है जो प्रबन्ध समिति कहलाती है। असल में शासन यही करती है। पहले काँग्रेस की बैठकें

बहुत होती थीं, धीरे धीरे घट कर वर्ष में एक बार होने लगी और अब दो वर्ष में एक बार होती है। अधिकतर यह सभा कार्यकारिणी सभा की कार्रवाइयों का केवल समर्थन कर सन्तुष्ट हो जाती है।

परन्तु चार सौ सदस्यों की संख्या भी सुसंगठित रूप से कार्य करने के लिए बहुत है। इसलिए यह साल में केवल एक-दो बार बैठती है। नित्यप्रति राजकाज देखने के लिए इस सभा के सदस्यों में दस पीछे एक के अनुपात से चुनी कमेटी जिसका नाम प्रेसीडियम[1] है, बनाई गई है। यह कमेटी प्रत्येक विभाग के अफ़सरों, जिनको कमिसर[2] कहते हैं, के कामों की निगरानी करती है। वास्तव में इस कमेटी के नियन्त्रण में यह कमिसरों की कौन्सिल[3] ही, जिसका रूसी नाम सोवनारकोम[4] है, सम्पूर्ण राज्यकार्य देखने के लिए नियत है। इस कमिसरियट में नीचे लिखे विभाग हैं:—

(१) छोटे और बड़े व्यापारियों का विभाग
(२) मज़दूर विभाग
(३) आर्थिक विभाग
(४) मज़दूरों और किसानों की जाँच का विभाग
(५) केन्द्रीय गणना का विभाग

1. Presidium 2. Commissar
3. Council of Commissar 4. Sovnarkom

(६) शिक्षा विभाग

(७) स्वास्थ्य विभाग

तथा (८) सामाजिक भलाई का विभाग।

नगरों का नियन्त्रण नागरिक सोवियटों[1] द्वारा होता है, जिनमें फ़ी हज़ार पीछे एक डिप्टी चुना जाता है। यहाँ के वोटर अपने अपने पेशे के मुताबिक़ अलग अलग अपने पेशे वालों के समूह के साथ वोट देते हैं। जैसे बढ़ई बढ़इयों के साथ और लुहार लुहारों के साथ। नौकरों और व्यक्तिगत अलग काम करने वालों का विशेष ढंग से चुनाव होता है। देहातों या छोटे क़स्बों में घर पर काम करने वाले, किसान, शिक्षक, वैद्य आदि मिल कर सौ में एक के हिसाब से एक डिप्टी चुनते हैं।

नगरों और ग्रामों की ये सोवियटें अपने प्रतिनिधि ज़िला कॉँग्रेस के सोवियट[2] में भेजते हैं, और ज़िला कॉँग्रेस के प्रतिनिधि प्रान्तीय कांग्रेस[3] में भेजते हैं।

प्रत्येक मनुष्य जो रूस में रहता हो, अठारह वर्ष का हो चुका हो और कुछ काम करता हो, वह चाहे देशी हो या विदेशी, वोट देने का अधिकारी है।

1. Urban Soviets
2. District Congress of Soviets
3. Regional Congress

सोवियट की राजनैतिक शृङ्खला का प्रधान आधार तथा शक्ति-स्रोत "अखिल कम्यूनिस्ट संघ"[1] है। असल में यही दल जिसके मेम्बरों की संख्या रूस की आबादी के अनुपात से मुट्ठी भर है, रूस का शासन करता है। इसलिए इस दल की मशीन शासन की मशीन से अधिक महत्वपूर्ण है। इसीलिए रूस के वर्त्तमान शासक स्टालिन इस दल में अपना एक भी विरोधी नहीं टिकने देते और या तो उसे अपना चेला बना लेते हैं या मौत के घाट उतार देते हैं। इस दल के समर्थन से कोई भी महत्वपूर्ण राजनैतिक या आयोजनात्मक समस्या सुलझा कर कार्य रूप में प्रतिपादित की जा सकती है। सन् १९३२ ई० में इस दल में हज़ारों उम्मीदवारों के अतिरिक्त २५,००,००० सदस्य थे। इस दल के अन्तर्गत तीन जूनियर कम्यूनिस्ट सोसाइटियाँ[2] हैं:—

(१) ओक्तोब्रिज[3] जिनमें ८ से १० वर्ष की उम्र का बालक और बालिका सदस्य रूप में शिक्षा पाते हैं।

(२) पायनिअर्स[4] जिनमें १० से १६ वर्ष की उम्र वाले बालक और बालिका शिक्षा पाते हैं।

---

1. Communist Party
2. Junior Communist Societies
3. Octiabrists
4. Pioneers

(३) कोमसोमाल[1], जिनमें १६ से २३ वर्ष की उम्र वाले युवक तथा युवतियाँ कम्यूनिज़्म के सिद्धान्तों में शिक्षित होकर अखिल कम्यूनिस्ट संघ में भेजने के लिए तैयार किये जाते हैं।

इस प्रकार यहाँ के समाज के सिद्धान्त बचपन ही में सिखा पढ़ा कर जब बालक-बालिका पक्के कर लिये जाते हैं, तब कम्यूनिस्ट दल के सदस्य बनाये जाते हैं। कुछ साल के बाद संख्या बढ़ जाने पर इनकी एक नई दुनिया बनाने तथा उसके द्वारा बल से या विनय से संसार से कम्यूनिज़्म के सिद्धान्त स्वीकार कराना यहाँ के स्वेच्छाचारी शासक का अन्तिम लक्ष्य है।

---

1. Komsomal

इक्कीसवाँ परिच्छेद

सोवियट रूस (३)

बोल्शेविक-विप्लव चार वर्ष तक चला। इसका परिणाम यह हुआ कि रोज़ी-रोजग़ार सब चौपट होगया। जिस समय बोल्शेविक विप्लव-कारी विजयी होकर, अपने समाजवाद के सिद्धान्तों के अनुसार सबका धन हड़प लेने के लिए खड़े हुए, उस समय महायुद्ध के मारे व्यापार तथा कृषि दोनों की ही अत्यन्त शोचनीय दशा थी। उस समय रूसी सिक्का मिट्टी के मोल गिर गया था। ग़ल्ला तो लापता होगया था। लोग पेट भरने के लिए दौड़े-दौड़े फिरते थे, मगर कुछ नहीं पाते थे। बेकार मज़दूर, जो फ़ैक्टरियाँ तोड़-फोड़ कर विद्रोही हो गये थे, इस समय अन्न के लिए त्राहि-त्राहि कर रहे थे, किसान लोग खोटे रुपये (गिरे हुए सिक्के) के बदले में ग़ल्ला नहीं बेचते थे। "माल के बदले में माल का व्यापार"[1] चल

---

1. Barter

निकला था। मज़दूरों के पास देने को कुछ नहीं था, मगर रोटी तो चाहिए ही। परिस्थिति विकट हो गई। अन्न से भूखे क्षीण शरीर यह मज़दूर नर-कङ्कालों की तरह बन्दूक और मशीनगन लेकर पेट के लिए लूटने चले।[1] किसानों का सब कुछ हर गया, अपने खाने भर को ग़ल्ला मुश्किल से बचा था।[2] शहर लुट चुके थे, लोगों के बड़े-बड़े मकानों पर भी मज़दूरों का अधिकार हो गया था, धनिकों के जवाहरात आदि ज़ब्त कर लिये गये थे और गाँवों में ग़ल्ला तक छीना जाने लगा था। इस तरह सारा देश तबाह था। ग़ल्ला छिन जाने के भय से किसानों ने अपनी आवश्यकता से अधिक ग़ल्ला उपजाना छोड़ दिया, ज़मीनें ऊसर कर डालीं, मवेशी मार डाले, नतीजा यह हुआ कि उपज घट गई और देश में एक ऐसा महान अकाल पड़ा जैसा रूस ने कभी नहीं देखा था।

ऊपर से एक और मुसीबत थी। रेलें बन्द हो गईं और एंजिन बिगड़ गये। ट्राटस्की की गणनानुसार सन् १९१९ में ६० प्रतिशत्

1. "Trade Unions and Military detachments were organised at the same time and the latter sent to the villages to make forcible seizure of requisitioned grain".
—Enc. Brit. 707a

2. "And in some cases the latter (peasants) were permitted to keep only enough to feed themselves and to sow next year's crop."
—The World since 1914—W. C. Langran p. 508

एंजिन बीमार थे। मतलब यह कि ग़ल्ला छीना भी जाय तो शहरों तक लाया कैसे जाय ? प्रलयकाल का-सा दृश्य था। राजनैतिक झगड़े से मुक्ति मिली तो अकाल ने धर दबाया। सन् १९२१ व २२ ई० के बीच अनुमानतः चार करोड़ आदमी बीमार पड़ गये और पचास लाख आदमी भूखों मर गये। नगर और गाँव के गली कूचों में 'सोवियट सरकार का नाश हो' के नारे दिन पर दिन बुलन्द होने लगे। लोग जगह-जगह विप्लव करने लगे। खुद बोल्शेविक लोग अपने स्थापित राज्य के विरुद्ध बलवाई हो गये। अन्त में सन् १९२१ ई० की मार्च में सोवियट की दसवीं कांग्रेस बैठी जिसमें लेनिन के नेतृत्व में, एक नवीन आर्थिक योजना[1] का निर्माण हुआ।

इस नई योजना के मुख्य निर्णय ये थे:—

(१) किसानों से ग़ल्ला छीनने के बजाय उन पर एक टैक्स लगा दिया गया जो पहले तो ग़ल्ले के रूप में लिया गया, परन्तु सन् १९२४ ई० से सिक्के में लिया जाने लगा। इसी प्रकार कृषि की सब वस्तुओं पर कर लगा दिया गया। ग़ल्ला बाज़ार में बिकने लगा।

(२) बाज़ार का फ़ुटकर व्यापार खुल गया और लोग नगरों में सहकारी[2] ढंग के स्टोर भी खोलने लगे।

(३) छोटी-छोटी फ़ैक्टरियाँ और दूकानें जिनमें बीस से कम

1. New Economic Policy 2. Cooperative

आदमी काम करते थे और जो तोड़ दी गई थीं अब स्वतंत्र व्यापारियों को दे दी गई।

(४) एक नई राजकीय बैंकिंग प्रथा और एक नये सम्पत्ति शास्त्र की रचना की गई और सन् १९२४ में रूसी सिक्के का भाव सोने के हिसाब[1] से नियत किया गया।

(५) खदान, रेलवे और बड़े बड़े व्यापार जिनमें अधिक धन की आवश्यकता थी, विदेशी सम्पत्ति द्वारा साझे में चलने लगे।

(६) मज़दूरों की काम के मुताबिक़ मज़दूरी बँध गई और खाने का सुप्रबन्ध हो गया।

(७) सरकार ने बड़े पैमाने के व्यापार अपने हाथ में लेकर सरकारी ट्रस्टों[2] द्वारा सञ्चालित करना शुरू किया।

(८) व्यापार के सुचारु संचालन तथा देश की आर्थिक उन्नति के लिए पञ्चवर्षीय योजना का सूत्रपात हुआ।

मृतप्राय सिक्के में जान पड़ते ही व्यापार भी चेत उठा। स्वतंत्र व्यापार खुल जाने से लाभ के लोभ से बाज़ार भी चलने लगा। इस समय लोगों को भोजनों का तो सुभीता हो गया। स्टालिन जैसे नीति कुशल व्यक्ति के नेतृत्व में पञ्चवर्षीय योजना की सृष्टि हुई।

1. Gold standard 2. State Trusts

व्यापार शुरू हो गया। महायुद्ध से पूर्व जिस देश की जन-संख्या के केवल १५ प्रतिशत् लोग फ़ैक्टरियों में काम करते हों, और तीन खेतवाली प्रथा* पर खेती करते हों, उसी देश को, उस समय जब कि दुनिया में और बड़े बड़े देश सर्वव्यापी आर्थिक तथा व्यापारिक संकटों से त्रस्त त्राहि त्राहि कर रहे हों, इतनी उन्नत दशा में सुचारु ढंग से पहले से तिगुने ज़ोर पर व्यापार करते देखकर आश्चर्य होना स्वाभाविक है। यह पञ्चवर्षीय योजना सन् १९२८ ई० में आरंभ हो कर सन् १९३२ ई० में समाप्त हो गई और उसी समय दूसरी पंचवर्षीय योजना भी शुरू कर दी गई। इस पंच-वर्षीय योजना के पूर्वीय चार वर्षों ही में तुलनात्मक दृष्टि से देखते हुए व्यापार में एक महान परिवर्तन हो गया तथा वे नवीन व्यापार, जिनका रूस कभी स्वप्न देखा करता था, सचमुच स्थापित हो गये।

लोहे व इस्पात का काम, ट्रैक्टर मशीनें[1] बनाने का काम, आटोमोबाइल, इंजिनीयरिंग, रासायनिक व्यापार, कृषि की आधुनिक मशीनें बनाने का काम, हवाई जहाज़ का निर्माण आदि

---

*इस प्रथा में एक खेत के तीन टुकड़े करते हैं, उनमें से दो जोतते हैं और तीसरे को विश्राम देने के लिए छोड़ देते हैं। इसी प्रकार कहीं कहीं दो खेत वाली प्रथा पर भी खेती होती है जिसमें एक जोतते हैं, दूसरा छोड़ देते है।

1. Tractor

व्यापारों का पहले अस्तित्व ही न था। इनकी स्थापना पंचवर्षीय योजना द्वारा सफल हो सकी। पहले बिजली का नहीं के बराबर उत्पादन और प्रयोग होता था, इस समय बिजली की शक्ति द्वारा बड़े बड़े मिल और कारखाने संचालित किये जाते हैं। तेल, पेट्रोल तथा कोयले के व्यापारों में भी रूस दूसरे देशों की तुलना में अधिक नहीं तो बराबर में उत्पादन करता है। टेक्सटाइल का व्यापार भी अब पहले से दूने ज़ोरों पर चलता है। कृषि की उपज जो सन् १६२८ ई० में केवल ४८ प्रतिशत् थी, सन् १६३२ ई० में ७० प्रतिशत् हो गई। इन सब वस्तुओं के अतिरिक्त सुदूर पूर्व में युद्ध की आशङ्का के कारण देश की महान् शक्ति का पहला उपयोग युद्ध सम्बन्धी अस्त्र-शस्त्र तथा दूसरी आवश्यकताओं के उत्पादन में करना पड़ा।

महायुद्ध के पूर्व रूस तथा अन्य देशों की व्यापार की दशा को १०० मानकर सन् १६३२ ई० में रूस के व्यापार की उन्नति की दूसरे देशों से तुलना हास्यास्पद जान पड़ती है, जब हम यह देखते हैं कि :—

(१) रूस का व्यापार ३३४ हो गया
(२) अमरीका का ,, ८४ ,,
(३) इंगलैण्ड ,, ,, ७५ ,,
(४) जर्मनी ,, ,, ६२ ,,

सन् १६२८ ई० के व्यापार की संख्या को १०० मानते हुए सन् १६३२ ई० में :—

(१) रूस का व्यापार २१६ हो गया

(२) अमरीका का व्यापार ८४ हो गया

(३) इंगलैण्ड ,, ,, ८० ,,

(४) जर्मनी ,, ,, ५५ ,,

इस व्यापारिक उन्नति की सफलता पर रूस के भाग्य-निर्माताओं को गर्व होना स्वाभाविक है।

तीन वर्षों के भीतर ही खेती भी मशीनों द्वारा लम्बे परिमाण पर होने लगी और ७० प्रतिशत् भूमि बड़े परिमाण पर खेती करने योग्य खेतों में बाँट दी गई। ट्रैक्टरों द्वारा जुताई होने लगी और पहले से उपज दूनी हो गई। किसानों तथा मज़दूरों की बेकारी बिलकुल जाती रही तथा कुलक (ज़मींन्दार-किसान), ताल्लुक़दारों और निम्न श्रेणी के किसानों में जो श्रेणी-वैभिन्य था, वह भी दूर हो कर समानता स्थापित हो गई।

बाईसवाँ परिच्छेद

सोवियट रूस (४)

बड़ी दिक़्क़तों और परेशानियों के बाद रूस देखने की इजाज़त मिली। सचमुच वह रात इतनी उत्कण्ठा और उत्सुकता से बीती थी कि सहसा यह विश्वास ही नहीं होता था कि हमको रूस घूमने के लिए आज्ञा मिल गई। हम फ़िनलैण्ड की राजधानी हैलसिङ्की से ११ बजे रात की गाड़ी से रूस के लिए रवाना हो गये।

जीवन की एक मधुर कल्पना तथा अलभ्य आकांक्षा जो न जाने कब से जी में घर किये बैठी थी—आज सहसा पूर्ण होने जा रही है। मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न था। कौतूहल के मारे चित्त में रात भर एक प्रकार की हलचल-सी मची रही।

ज्यों ज्यों हम रूस राज्य की सीमा के निकट होते जाते थे, त्यों त्यों हमारी विकलता, उत्कण्ठा और उत्साह उत्तरोत्तर बढ़ता जाता था। ट्रेन की खिड़की के बाहर उषा के शान्त वातावरण में

नदी, नद, नाले, पहाड़, वन, उपवन, खेत, मनुष्य और पशु तेज़ी से भागते चले जा रहे थे और मन में असंख्य कल्पनाओं तथा विकल्पनाओं की भीड़ नीचे-ऊपर एक के बाद दूसरी उठती चली जा रही थी। रूस की सीमा पार कर हमारी ट्रेन सवेरे ठीक ११ बजे उत्तरीय रूस की पश्चिमीय सीमा के कस्टम स्टेशन बुलसोसटोब[1] पर पहुँची।

ट्रेन के ठहरते ही, पास बैठे हुए दो अंग्रेज़ यात्रियों की आपस में कही हुई बातें "यही रूस है" सुन कर मैं चौंक उठा। मैंने देखा और मन में ज़ोर देकर उसी बात को दुहराते हुए मैंने भी कहा "यही रूस है?" इसी समय मानों कान में मुझे सुन पड़ा—"हे नवागन्तुक! हे दूर देश के वासी पथिक! आओ, देखो रूस तुम्हारा स्वागत करने को तैयार खड़ा है।" देखा, सचमुच एक भीड़ की भीड़ हमारे स्वागत के लिए पहले से ही खड़ी है। यह भीड़ रूस-राज्य की ओर से नियत विदेशियों के लिए यात्रा की एजेन्सियों[2] के प्रतिनिधियों की थी। इन लोगों ने हमारे टिकट आदि सब अपने अधिकार में करके, सब इन्तज़ाम और पूछ-जाँच करके फिर आने का वादा करते हुए रास्ता लिया। फिर पासपोर्ट जाँचने वालों से मुठभेड़ हुई। इनसे छुटकारा पाते ही कस्टम के

1. Bulsostob
2. Russian Tourist Agencies

अफ़सरों की फ़ौज हमारे रहे-सहे हवास ग़ायब करने के लिए आ धमकी। यहाँ के कस्टम वाले दूसरे देशों से कहीं अधिक सख़्ती से जाँच पड़ताल करते । अभी तक दूसरी सभी जगहों में कस्टम वालों से यह कह देने पर कि "कुछ नहीं है" अथवा थोड़ी बहुत पूछ-जाँच के बाद छुटकारा मिल जाता था। परन्तु यहाँ की कड़ाई देख कर मैं दंग रह गया, जैसे किसी चोर की तलाशी ली जा रही हो। छोटी से छोटी चीज़ भी इन लोगों की जाँच से नहीं बच सकती है, यहाँ तक कि जेबें भी ये लोग देख लेते हैं। जाँच समाप्त होने के बाद हमारे पास जितना रुपया था सबको दर्ज करवाना पड़ा। संयोग से मैं कुछ नोट, विदेशी सिक्के, और बहुमूल्य जवाहरात नोट कराना भूल गया, क्योंकि यह ध्यान भी नहीं था कि यहाँ पर इस्तेमाल की अँगूठी, घड़ी, चेन तथा बटन तक दर्ज करा देनी चाहिए थी। लौटते समय इस छोटी सी भूल के कारण मुझे कितनी परेशानी उठानी पड़ी, यह बाद में लिखूँगा।

यहाँ एक घण्टे से ऊपर इसी रेलापेल और जाँच पड़ताल में बीत गया। जी इतना परेशान हो कर शिथिल-सा हो गया कि कुछ भी विचार न रहा कि कहाँ थे, कहाँ आ गये। घण्टे भर बाद ट्रेन फिर चल दी और डेढ़ बजे दिन को रूस की प्राचीन राजधानी पेट्रोग्रैड, जिसे आजकल लेनिनग्रैड कहते हैं, पहुँची।

रूस जाते हुए, ट्रेन से जो रूसी दीख पड़े, उनको सरसरी निगाह से देखने से मालूम पड़ता था मानो यहाँ के निवासी किसी चिन्ता के भार से दबे, परेशान और थके हुए हों। एक जाग्रत देश के नागरिकों से जिस हँसते हुए चेहरे की आशा की थी वह पूर्ण न हुई। ऐसा जान पड़ता है मानो उन्हें वर्षों से मुसीबत के मारे रोज़ की यंत्रणाओं को सहते-सहते हँसने की कौन कहे, गर्दन उठा कर इधर उधर देखने की भी फ़ुरसत न मिली हो। इस नव-जगत की नूतन जीवन-शैली से पूर्णतया बिना परिचित हुए किसी कल्पना अथवा धारणा को मस्तिष्क में स्थान देने से पूर्व सचेत रहना आवश्यक है, यही सोचकर मैंने मन में प्रश्न किया, "क्या इसका कारण इस देश पर बीती हुई मुसीबतें हैं, अथवा नवीन जगत् के नव निर्माण में कार्य-भार की अधिकता?" परन्तु किसी निश्चित धारणा पर विश्वास करने में चित्त शङ्कित होता था।

रूस एक बड़ा ठंडा देश है। हमारे लिए तो प्रलय जैसा पाला पड़ रहा था। उस दिन भी सुबह सर्दी में नङ्गे पैरों बाहर घूमते कुछ बूढ़ी स्त्रियों तथा पुरुषों को देख कर मुझे रोमाञ्च हो आया और अपने देश की ग़रीबी याद आ गई। यह लोग नङ्गे पैर कन्धों पर सामान रक्खे पास के शहर की बाज़ार में ख़रीद-फ़रोख्त के लिए जा रहे थे। यद्यपि भारतीय यात्री के लिए यह कोई इतने

अचरज की बात न थी, तथापि यूरोप के दूसरे देशों की तुलना में यह अवश्य खटकने वाली बात थी। खास करके इतने ठंडे मुल्क में ऐसा जान पड़ा मानो जो बात आँखें ढूढ़ रही थीं, सहसा मिल गई। थोड़ी दूर पर कुछ बच्चे भी नङ्गे पैर खेल-कूद रहे थे। यह दृश्य देख कर एक प्रकार का अज्ञात सन्तोष-सा हुआ—हमारे भारतवर्ष ऐसा भी कोई ग़रीब देश यूरोप में भी अवश्य है। साथ ही अपनी भूखी, प्यासी, नङ्गी मातृभूमि आँखों के सामने नाच उठी।

लेकिन आशाओं के प्रतिकूल किसानों के मकानों की दशा बहुत सुधरी हुई जान पड़ती है। कोई भी मकान खराब दशा में कहलाने योग्य न दीख पड़ा। नये लकड़ी के मकान बराबर बनते हुए दीख पड़े। अधिकतर मकान लकड़ी ही के बने हुए हैं। सभी सुन्दर और नियमपूर्वक सुडौल ढंग की बनावट के हैं। खिड़कियों पर सुन्दर पर्दे पड़े हैं। घरों के आगे सायेदार बरामदों में ख़ूबसूरती से सजाये गमले रक्खे हुए हैं। प्रत्येक गाँव में, जो रास्ते में रेल से जाते देख पड़े, बिजली की रोशनी की यथेष्ट सुविधा देख पड़ती है। यही नहीं, देहातों के किसानों की हालत, शहर के पास के किसानों से बिलकुल उलटी मालूम पड़ी। मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य भी हुआ। सभी लड़के लड़कियाँ अच्छे ढंग के कपड़े पहने हुए थे, युवकों और युवतियों में कोई नङ्गे पैर नहीं दिखाई

पड़े। भारत से तुलना वाली बात ध्यान से ही उतर गई। गाँवों के निकट लम्बी लम्बी दूर तक चली गई खेतों की मुडेरों तथा उनके बीच में बनी हुई पक्की सड़कों को देख कर यह विश्वास होता जाता था कि यहाँ पर खेती आधुनिक ढंग पर बड़े पैमाने पर की जाती है। खेतों के निकट खेलते-कूदते हुए लड़के लड़कियाँ, जो सभी जगह पैदाइशी शैतान और मन हरने वाले होते हैं, इधर-उधर बड़े भले मालूम होते थे। ट्रेन के मार्ग में जितने भी लड़के देख पड़े, सभी ने ट्रेन में भरे नवागन्तुक यात्रियों के प्रति हाथ और सर हिला कर प्रसन्नता प्रकट की।

दो घण्टे के इस ट्रेन के सफ़र में रूस का पूर्व परिचय प्रथमावलोकन में पाकर चित्त का कुतूहल उत्तरोत्तर बढ़ रहा था।

लेनिनग्रेड

स्टेशन पर उतरने पर हमको एक लड़की मिली जिसने अपने को हमारा 'पथ-प्रदर्शक' बतलाया। रूसी-सरकार द्वारा सञ्चालित "टूरिस्ट बुरो" की ओर से वह भेजी गयी थी। उसी के साथ मोटर पर बैठ हम होटल आये। यह होटल यहाँ का एक खास होटल था। आने जाने के लिए एक बड़ी आरामदेह मोटर का प्रबन्ध था। यह सब सुविधायें केवल विदेशी यात्रियों के लिए ही की जाती हैं। होटल में कुछ देर विश्राम करने के बाद हम लोग एक घण्टे तक दर्शनीय स्थानों के विषय में परामर्श करते रहे।

लेनिनग्रैड रूस का दूसरा सबसे बड़ा नगर है। इस नगर का, जैसा ऊपर कहा जा चुका है, स्थापक पीटर दि ग्रेट था, और इसका सब से प्राचीन नाम पीटर्सबर्ग था। परन्तु महायुद्ध में इसका नाम बदल कर पट्रोग्रैड रक्खा गया। ग्रैड शब्द गोरोड[1] से बना है जिसका अर्थ रूसी भाषा में 'नगर' है। पश्चिमी यूरोप से व्यापारिक तथा राजनैतिक घनिष्ठता स्थापित करने के आशय से पीटर ने रूस की तत्कालीन राजधानी मास्को से हटा कर यह नगर बसाया था। इस नगर के निर्माण के लिए पीटर ने मास्को के रूसी कारीगरों और इञ्जिनीयरों के बजाय यूरोप के भिन्न देशों से दक्ष कलाकार बुलवाये थे। यह राजा, कला, नवीनता तथा परिवर्त्तन का बड़ा प्रेमी था और नव-निर्माण की ओर इसकी विशेष रुचि थी। तदनुसार रूसी निर्माण कला में इस काल से एक महान् उन्नतिशील युग का आरम्भ होता है। मास्को तथा पीटर्सबर्ग की निर्माण-कलाओं में स्पष्ट भेद देख पड़ता है तथा कला के विद्यार्थी के लिए उचित होगा कि वे यहाँ की राजसी ठाठ वाली इमारतों को देख कर मास्को की प्राचीन तथा आधुनिक निर्माण-कला की तुलना करें।

पीटर्सबर्ग की सभी प्राचीन राजकीय इमारतें गौरवपूर्ण और भव्य बनावट की हैं। वस्तुतः इस नगर को देख कर यह अनुमान

1. Gorod

होता है कि तत्कालीन रूसी सम्राटों का ठाटबाट, राजसी ढंग, ऐश्वर्य, संसार के किसी देश के किसी काल के परम ऐश्वर्यमान् सम्राटों से तुलना योग्य है। प्राचीन निर्माण-कला की दृष्टि से इस नगर को संसार में सर्वश्रेष्ठ कहा जा सकता है। सम्पूर्ण नगर का निर्माण पहले से निश्चित किये मानचित्र के अनुसार होने के कारण एक विचित्र सुन्दरता आ गई है। इस नगर के निर्माण में न जाने कितने मज़दूरों की जानें गई थीं, जिस कारण इसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह नगर हड्डियों पर बसा है। निर्माण के पूर्व यहाँ की भूमि नितान्त दलदल थी, ढेरों बाँस और बल्लियाँ जङ्गलों से लाकर यह दलदल सुखाया गया और तब यह नगर बसाया गया था।

इस नगर की पुरानी इमारतें नेवा नदी के वाम पार्श्व में बनी हैं। नगर का यह भाग बड़ा दर्शनीय है। नेवा नदी में बहुत से छोटे-छोटे द्वीप हैं। इस नदी की यहीं तीन धारायें हो जाती हैं जिनमें होकर बड़े बड़े जहाज़ दूर भीतर तक आसानी से आ सकते हैं। दाहिने ओर अफ़सरों के निवासस्थान तथा व्यापारियों और व्यवसायिओं की बस्ती है। यहाँ की प्राचीन दर्शनीय इमारतों में स्मोलनी का भवन बहुत प्रसिद्ध है। सन् १८०८ ई० में ग्वारेंघी[1] नामक प्रसिद्ध निर्माण-कला-विशेषज्ञ द्वारा यह विशाल भवन बनाया गया

1. Guarenghi

था। इस महल का निर्माण "उच्चवंशीया ललनाओं की सभा"[1] के लिए हुआ था। अक्तूबर-विद्रोह के दिनों में विद्रोहियों ने इस पर अपना अधिकार कर लिया था और उसको विद्रोही फ़ौज का केन्द्र बनाया था। लेनिन इस इमारत की तीसरी मञ्ज़िल के ६५ नम्बर के कमरे में रहते थे। यह कमरा वैसे ही अपरिवर्त्तित अवस्था में सुरक्षित रक्खा गया है। सोवियट की दूसरी काँग्रेस सन् १६१७ ई० की २५ अक्तूबर को इसी इमारत के कौंसिल हाल में हुई थी। सन् १६२७ ई० में इसके प्रवेश-द्वार पर लेनिन की एक सुन्दर मूर्त्ति स्थापित की गई थी।

इस इमारत से थोड़ी ही दूर पर यूरिट्स्की[2] नाम का एक दूसरा महल है। सन् १६०६ ई० में यह स्थान रूसी महासभा यानी ड्यूमा का सभाभवन था। सन् १६१७ ई० के फ़र्वरी के विप्लव में यह महल बहुत-सी षड्यंत्रकारी घटनाओं का केन्द्र था जिनके कारण ही ज़ार का राज्य-सिंहासन काँप कर उलट गया।

तीसरी दर्शनीय चीज़ एक ऊँची सुनहली गुम्बजदार इमारत है। यह शाहाना ढंग के बनावट की है। आजकल इसमें जल तथा स्थल सेनाओं के दफ़्तर हैं और इसमें एक समुद्र से सम्बन्ध

1. Institute for noble maidens
2. Uritsky

रखने वाली वस्तुओं का म्यूज़ियम है। इस इमारत के दो पार्श्व हैं जो नदी के किनारे तक चले गये हैं। यह बड़ी शानदार और रौनक़-अफ़रोज इमारत है।

ऐडमिरेल्टी के दफ़्तर के पास तीन बड़ी सुन्दर इमारतें हैं। ऐडमिरेल्टी तथा "अक्तूबर रेलवे स्टेशन"[1] के बीच में एक यूरोप का सब से सुन्दर चौड़ा, तीर के समान सीधा, लकड़ी के ईंटों से जड़ा राजमार्ग है। इस राह को काटती हुई बीच बीच में नहरें बड़ी मनोहर जान पड़ती हैं, जिनको पार करने के लिए बड़े खूबसूरत पुल बने हुए हैं। आगे चल कर दो-तीन सुन्दर आधुनिक ढंग की इमारतों के बाद कज़ान कैथेड्रल[2] है, जिसको एशिया के एक सर्व प्रसिद्ध कलाकार ने, जिसका जन्म एक ग़ुलाम वंश में हुआ था, निर्माण किया था। इसी इमारत के भीतर सन् १८१२ ई० में नैपोलियन पर विजय प्राप्त करने वाले वीर कुटुज़ोव की क़ब्र है।

तीसरी जुलाई स्ट्रीट[3] के सामने बड़ा भारी वाचनालय तथा पुस्तकालय रूस का सब से बड़ा प्रकाशित तथा अप्रकाशित पुस्तकों का भण्डार है। इसके सामने ही स्टेट ऐकेडेमिक थियेटर है जो लेनिनग्रैड का सब से अच्छा और प्राचीन नाट्य समाज है। यह भवन

1. October Railway Station
2. Kazan Cathedral 3. 3rd July Street

लेलिनग्रेड की निर्माण-कला की पाठशाला के अन्तिम विद्वान् रोसी की अद्भुत कीर्त्ति है और कला विषयक अपनी प्राचीनता के कारण कलाकारों द्वारा अध्ययन योग्य एक ग्रन्थ के सदृश आदर की दृष्टि से देखा जाता है। इस सड़क का नाम भी "रोसी कलाकार स्ट्रीट"[1] है। इस नाटक घर के सामने बाग़ के बीच में कैथराइन दि ग्रेट की प्रस्तर-मूर्ति है। कुछ दूर पर एक स्क्वायर में अलेग्ज़ैण्डर की एक मूर्त्ति बनी है। ज़ार एक भद्दी शकल के घोड़े पर बैठा हुआ है और नीचे एक व्यंग कविता लिखी गई है।

हम लोग मज़दूरों का सैनोटोरियम भी देखने गये, जिसकी इमारत ज़ार के काल में एक शक्कर के बड़े व्यापारी तथा रूस के धनकुबेर का महल था। इसमें आजकल वे मज़दूर जिनका काम करने योग्य हालत में होते हुए भी स्वास्थ्य बिगड़ जाता है, रक्खे जाते हैं। यहाँ रहने वाले व्यक्तियों को सैनोटोरियम के नियमों और डाक्टर के परामर्श के अनुसार चलना पड़ता है। यहाँ पर उन्हें ख़ास तरह का पौष्टिक भोजन मिलता है और नियमपूर्वक रहन-सहन तथा शाम को काम से लौटने पर वेश्याओं के गाने, नृत्य आदि मनबहलाव की विशेष सुविधा है। एक तो स्थान ही इतना सुन्दर है कि यों ही वहाँ पर रहने वालों की तबियत बहुत प्रसन्न रहती है, दूसरे इन्तज़ाम भी ख़ूब है।

1. Street of Architect Rossi

उसके बाद हम सेण्टइज़ाक गिर्जाघर देखने गये। यह गिर्जा वास्तव में रूसी साम्राज्य के पुरातन वैभव का एक जीवित चिह्न है। इसे इटली के कारीगरों ने लाखों मज़दूरों की सहायता से लगातार ४० वर्षों के अथक परिश्रम से तैयार किया था। इसके निर्माण की लागत अनुमानतः २३ अरब रूबल जो क़रीब १३८ अरब रुपये के बराबर हुआ, थी। इस इमारत में सुनहले काम तथा मीना और पच्चीकारी की असंख्य तस्वीरें बनी हुई हैं। वर्त्तमान रूस सरकार ने अब इसे धर्म विरोधिनी संस्था का केन्द्र और म्यूज़ियम बनाया है और इसमें एक धर्म विरोधी सिनेमा खोला है, जिसमें धर्म के नाम पर तथा उसकी आड़ में पादरियों द्वारा किस तरह ग़रीबों पर अत्याचार किया जाता था और उन्हें स्वार्थ के लिए धर्म के नाम पर किस तरह मूर्ख बनाया जाता था—दिखलाया जाता है।

प्रसिद्ध विण्टर पैलेस (शांति-भवन) जिसमें अब "क्रान्ति-म्यूज़ियम" बना है, एक बहुत ही सुन्दर इमारत है। यह वही स्थान है जहाँ सन् १६०५ ई० के विप्लव के समय में प्रजा अपने स्त्री-बच्चों समेत लाखों की संख्या में रोटी माँगने के लिए एकत्रित हुई थी, जिस पर उन्हें भयङ्कर गोलियों की बौछार खाकर प्राण-विसर्जन करने पड़े थे। इस नगर में जब तक यह इमारत रहेगी तब

तक ज़ार के क्रूर कार्यों की याद दिलाती रहेगी। इसी में बने क्रान्ति के अजायबघर में रूसी विप्लवों और ज़ार के ज़ुल्मों का ऐसा रोमाञ्चकारी दिग्दर्शन कराया गया है कि जो व्यक्ति एक बार इसे देख ले वह हृदय से ज़ार से घृणा करने लगे।

नगर से २०-२५ मील दूर बाहर ज़ार का समर पैलेस (ग्रीष्म-भवन) है। इसमें लगे हुए सुन्दर फ़ौव्वारे संसार में सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। विशेष कर पिरेमिड फ़ौव्वारे, सूरज फ़ौव्वारा और सीमन फ़ौव्वारा। इसका कैथराइन महल तो संसार में अतुलनीय समझा जाता है। महारानी कैथराइन दि ग्रेट का बनाया हुआ यह महल संसार-प्रसिद्ध है। सामूहिक रूप से यह एक सोने, चाँदी और संदल लकड़ी का बड़ा संग्रहालय-सा जान पड़ता है। इतने बड़े महल के क़रीब क़रीब सभी कमरे स्वर्ण-मण्डित से जान पड़ते हैं। इसके बड़े कमरे[1] के बीचोबीच खड़े होकर ताली बजाने से चारों ओर से सैकड़ों प्रतिध्वनियाँ निकलती हैं और आवाज़ लहराती हुई सी सुन पड़ती है।

यही अन्तिम ज़ार, निकोलस द्वितीय का राजभवन है, जो क्रान्ति के समय यहीं पर गिरफ़्तार किया गया था। अब आजकल यहाँ पर बालकों का क्रीड़ास्थल बनाया गया है। इन बालकों की

1. Banquet Hall

देख-रेख सरकार द्वारा होती है और उनके मनोरंजन के लिए यहाँ सभी सुविधाएँ सुलभ हैं।

नगर के बाहर बने हुए बड़े बड़े लार्ड अफ़सरों आदि के ग्रीष्म-निवास हैं जो इस समय भी उसी दशा में हैं, जैसे शानदार कभी रहे होंगे। इनमें मज़दूर लोग गरमी में मिलने वाली १५ दिन की छुट्टियों में आनन्द करने आते हैं। यहाँ के सारे ऐशोआराम के समान इन्हीं मज़दूरों के लिए इकट्ठे कर रक्खे गये हैं। सच तो यह है कि इन १५ दिनों में वहाँ के मज़दूरों को ज़िन्दगी का जो आनन्द मिलता है वह हमारे देश के बड़े बड़े लोगों के जीवन में भी नसीब नहीं। तमाम शहर के बड़े बड़े महल और मकान इन्हीं मज़दूरों के रहने योग्य क्वार्टरों में बाँट दिये गये हैं। हिसाब से प्रति मज़दूर को ३-४ कमरे मिलते हैं; सोने का, उठने-बैठने का, खाना खाने का तथा सामान रखने का कमरा। बिस्तर, पलङ्ग, कुर्सी, मेज़ तथा खाने-पीने के बर्त्तन आदि रोज़मर्रा की सभी आवश्यक सामग्रियाँ एकत्रित रहती हैं। मकानों की खिड़कियाँ खूब सजी रहती हैं। इन सब मकानों का इन्तज़ाम भिन्न फ़ैक्टरियों के प्रबन्ध में रहता है और उनमें रहने वाले मज़दूरों को फ़ैक्टरी को किराया देना पड़ता है। फ़ैक्टरियों में काम करने वाले मज़दूरों को, जिनकी तनख्वाह क़रीब २०० रुबल होती है, अपने क्वार्टर का किराया अनुमानतः १०—१५ रुबल देना पड़ता है।

ज़ार के सभी सरकारी इमारतों में म्यूज़ियम, स्कूल, पुस्तकालय अथवा सोवियट सरकार के दफ़्तर खुल गये हैं। उच्च घरानों के विश्राम-गृहों और क्रीड़ा-निकेतनों में मज़दूर लोग मेहनत से थक कर विश्राम और खेल-कूद करते हैं। जिन स्थानों पर पहले मज़दूर लोगों के लकड़ी के झोपड़े थे, अब वहाँ पर मज़दूरों के रहने के लिए बस्तियाँ बन गई हैं। लेकिन यह भी सच है कि इन मज़दूरों का अन्दरूनी रहन-सहन इमारतों की शान व शौक़त को देखते हुए बहुत ही नीचा है।

विप्लव के बाद सब परिवर्त्तन के साथ यहाँ के सामाजिक जीवन में भी महान् परिवर्त्तन हो गये हैं। प्राचीन धार्मिक पद्धति के साथ साथ यहाँ की शादी की प्रथा भी पलट गई। वर्त्तमान रूस में विवाह करने का तरीक़ा हमारे लिए बड़ा ही रोचक जान पड़ा। यहाँ पर विवाह का अर्थ एक पारस्परिक समझौता है जिसमें कोई भी स्त्री-पुरुष स्वेच्छानुसार शादी कर सकते हैं और जब तक दोनों सन्तुष्ट रहें तब तक साथ साथ रहें। दोनों को ही समान अधिकार होते हैं और दोनों ही काम करते और पैसा कमाते हैं। किसी को ज़रा भी असन्तोष होने पर शादी का समझौता तोड़ने का पूर्ण अधिकार है। विवाह और विच्छेद के लिए यहाँ दफ़्तर खुले हैं जिनमें पुरुषों और स्त्रियों के जोड़े आते हैं और विवाह की

रजिस्टरी करा कर पाँच मिनट में धर्मपत्नियों के साथ चले जाते हैं। इसी प्रकार तलाक़ के लिए भी लोग आते हैं और पाँच मिनट में सम्बन्ध-विच्छेद करके पति-पत्नि अलग अलग शादी का अधिकार लेकर चले जाते है।

बोलशेविक लोगों ने मज़दूरों और किसानों के बच्चों की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया है। सन् १९३०-३१ ई० में अनुमानतः १४,५०,००० विद्यार्थी नये खुले फ़ैक्टरी, स्कूलों, टेकनिकल इन्स्टीच्यूटों और विश्व-विद्यालयों में भर्त्ती किये गये तथा उसी वर्ष सोवियट यूनियन में रहने वाले हरेक बालक को चार वर्ष तक पाठशाला की हाज़िरी अनिवार्य कर दी गई।

नये रूसी आदर्शों यानी लेनिनवाद के सिद्धान्तों और शिक्षा का प्रचार अधिकाधिक करने के लिए बोलशेविक लोगों ने केवल पाठशालाओं पर ही निर्भर करना काफ़ी नहीं समझा। उन्होंने स्टेज, सिनेमा, कला, साहित्य, रेडिओ, गायन और दूसरे भिन्न भिन्न प्रकार के प्रचार के तरीक़ों का आश्रय लिया है जिसमें असलियत तो यह है कि प्रचार-कार्य मनोरञ्जन का एक भीतरी अंग सा बना दिया गया है और अज्ञात रूप से उन लोगों के सिद्धान्त क़दम क़दम पर प्रजा के मस्तिष्क में जड़ पकड़ते जाते हैं।

यों तो सोवियट रूस में खास तौर पर[1] मज़दूरों के लिए जो

1. European Russia

कुछ सहूलियतें की गई हैं, वह संसार के मज़दूरों और किसानों के लिए आदर्श-सी हैं, खास कर यहाँ के मज़दूरों के रहने के स्थान जिनको लेबर क्वार्टर कहते हैं। यहाँ की सरकार काफ़ी संख्या में यह लेबर क्वार्टर सभी जगह बनवा रही है। यह बड़ी बड़ी बस्तियाँ आराम व आसायश की सभी वस्तुओं से भरी हैं। बाग़, अस्पताल, नहाने, खेलने-कूदने आदि का सुन्दर प्रबन्ध है। बच्चों के रखने का स्थान जिनमें औरतें मज़दूरी पर जाने के समय अपने बच्चों को छोड़ जाती हैं, देखने योग्य है। इनमें तीन महीने के बच्चों से लगाकर पाँच साल तक के बच्चों के लिए अलग अलग स्थान बनाये गये हैं जो अलग अलग योग्य दाइयों की देखरेख में रहते हैं। हरेक में बच्चों के खाने, नहाने, खेलने और खेल में ही अक्षरज्ञान तथा शिक्षा देने के सब साधन वैज्ञानिक ढंग पर जुटाये गये हैं। यहाँ की सफ़ाई और सुव्यवस्था देख कर दर्शक को आश्चर्य होता है। इन स्थानों में रहने वाले सभी बच्चे प्रसन्न तथा हृष्ट-पुष्ट दीख पड़ते हैं।

लेनिनग्रेड में हमलोग कई फ़ैक्टरियों को भी देखने गये। इनकी सफ़ाई, सुप्रबन्ध, हवा तथा रोशनी का इन्तज़ाम बहुत अच्छा है और इनका आयोजन और संचालन महत्वपूर्ण है। मज़दूरों को आठ घण्टे काम करना पड़ता है जिसके बीच में दोपहर को एक

घण्टे के लिए भोजन की छुट्टी मिलती है। भोजन फ़ैक्टरी की ओर से फ़ैक्टरी में ही मिलता है। भोजन के लिए बड़े बड़े कमरे बने हुए हैं जिनमें बाक़ायदा मेज़ें और कुर्सियाँ सजी हुई हैं। भोजन डाक्टर द्वारा जाँचा हुआ और विशेष पुष्टिकारक होता है। आधा घण्टा भोजन में समाप्त हो जाता है तब लोग क्लब में चले जाते हैं जहाँ आध घण्टे व्याख्यानों द्वारा वे जिस फ़ैक्टरी में काम करते हैं, उसके गूढ़ विषयों पर प्रकाश डाला जाता है।

इन फ़ैक्टरियों में भर्ती होने के पहले हर आदमी को दो वर्ष के लिए उम्मीदवार रह कर काम करना पड़ता है जिसमें काम के अतिरिक्त दो घण्टे रोज़ शाम के समय उन्हें काम सीखे हुए मज़दूर शिक्षा देते हैं। प्रत्येक फैक्टरी में एक अस्पताल होता है जिसमें मज़दूरों को दवा मुफ़्त मिलती है और हरेक मज़दूर को आकस्मिक आवश्यकता का उपचार[1] देखभाल तथा मरहम पट्टी करना सिखाया जाता है। यह फैक्टरियाँ चुनाव के केन्द्र का भी काम करती हैं। इन फ़ैक्टरियों की कमेटियों द्वारा देश के प्रत्येक स्थान में चुनाव की योजना होती है। इनमें काम करने वाले मज़दूर स्वतंत्र वातावरण में रहने के कारण बड़े उत्साही, बलिष्ठ और काम में मुस्तैद दीख पड़ते हैं। वास्तव में बोलशेविक सरकार अपनी इन मज़दूरों की फ़ौज पर जितना गर्व करे, उचित है।

1. First Aid

सोवियट रूस केवल भौतिक सत्य[1] के अतिरिक्त किसी प्रकार की पोप-पन्थी या धार्मिक सिद्धान्तों पर विश्वास करने का घोर विरोधी है। ठोस काम करना और हृष्ट-पुष्ट सुन्दर जीवन बिताना ही उनका मुख्य आदर्श है। धर्म, पाप, तन्त्रमन्त्र, प्राचीन रूढ़ियों और रिवाज़ों, कृत्रिम प्रेम, श्रद्धा और भक्ति, पुरातन शास्त्र या पुराण आदि के पचड़ों को वे कपोल-कल्पित आडम्बर के अतिरिक्त कुछ नहीं समझते। इन विषयों को उन्होंने मार मार कर देश से बाहर निकाल दिया है। उनके धर्म-कर्म का जो आदर्श रक्खा गया है वह है मनुष्य मात्र को भाई तथा एक ही परिवार का सदस्य समझ कर उसकी सेवा करना, समाज के लिए वही सब काम करना जो उपयोगी हो और अपने हिस्से का काम ईमानदारी से पूरा करना। यहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य तो ज़्यादातर मनुष्यता के नाते अपने कर्तव्य-पथ पर दृढ़ भाव से अग्रसर होने को ही कर्त्तव्य और कर्त्तव्य के लिए हँसते हँसते प्राणों तक को बलि चढ़ा देना धर्म समझते हैं। वे अपने सिद्धान्तों के कट्टर हैं और उनमें यह विश्वास ठूस-ठूस कर भरा जा रहा है कि हम जो चाहें सो कर सकते हैं, और जो चाहेंगे वही होगा अन्यथा हो नहीं सकता। अतएव वे प्रत्येक कार्य में अपना उत्तरदायित्व अनुभव करते हैं और जो काम

1. Materialistic realism

हाथ में लेते हैं पूरा कर के ही छोड़ते हैं। वे सचमुच जीवन का मूल सिद्धान्त जान गये हैं। सांसारिक जीवन के सुख-दुख और माया मोह को वे कृत्रिम और क्षणभङ्गुर समझ कर विरक्त के समान कर्त्तव्य-पथ पर दृढ़ रहना ही प्रधान सिद्धान्त समझते हैं। मरने पर कर्त्तव्य-भार से मुक्ति मिलेगी, शायद यही सोच कर वे मरने से भी नहीं डरते।

रूस की वर्त्तमान समाज-रचना तथा धर्म के प्रति वैर के विषय में काफ़ी नुक्ताचीनी की गयी है। बहुत सी आलोचनायें सही भी हैं। पर इस पुस्तक में किसी सिद्धान्त का प्रतिपादन मेरा उद्देश्य नहीं है, इसलिए मैं वहाँ की स्थिति मात्र ही बतला देता हूँ। अपनी राय नहीं देना चाहता।

अस्तु, लेनिनग्रेड का नगर भव्य भवनों, चौड़ी एसफाल्ट की सड़कों तथा म्यूज़ियमों आदि से सुशोभित एक दर्शन-योग्य तीर्थ-सा जान पड़ता है। परन्तु, बस्ती और चहल-पहल की दृष्टि से यह नगर एक वीरान प्राचीन नगर जैसा ही है। पेरिस या लन्दन आदि की तरह न वह चमक-दमक, न खिड़कियों पर रेशम और ज़री की सजावट, न दूकानों की रौनक़, न बिजली की रोशनी में खूबसूरत इश्तहारबाज़ी के करिश्मे, न मोटरों की भड़-भड़, न शोरगुल। ऐशोइशरत का तो कहीं पता भी

नहीं मिलता। मतलब यह कि सारे शहर में बाहरी तड़क-भड़क नाम को भी नहीं देख पड़ती। हाँ, यहाँ के बहुत से दरिद्र वेशधारी लोग फुटपाथों पर भीड़ की भीड़ चलते-फिरते ऐसे जान पड़ते हैं, मानो किसी गाँव के देहाती लोग शहर देखने आये हैं। यह तो किसी प्रकार विश्वास ही नहीं होता कि पुराने चिथड़े लपेटे ये आदमी इन आलीशान महलों में रहते होंगे।

यहाँ विवाह शादी में भी बैण्ड वग़ैरह बाजे नहीं बजाये जाते, न जलसे होते हैं और न जगह जगह वेश्याओं का नृत्य। बैण्ड तो केवल किसी के मृत्यु हो जाने पर अर्थी के साथ ही बजता निकलता है। सचमुच अगर किसी पेरिस निवासी को रूस-निर्वासन का दण्ड दिया जाय तो यहाँ की सूखी निर्जीव हवा में उसका दम ही घुट जाय।

परन्तु इससे यह न समझना चाहिए कि यहाँ के लोगों का जीवन शुष्क है। सायंकाल के समय रूसियों के आमोद-प्रमोद के स्थानों में लोगों को सभी आनन्द की सामग्रियाँ सुलभ हैं।

लेनिनग्रैड की जनसंख्या १३,४७,९०० है। इनमें ८३ प्रतिशत् रूसी लोगों की बस्ती है और शेष यहूदी, फ़िन, पोल, इस्टोनिअन, लिथ्यूनियन तथा लैट जाति की बस्ती है। यहाँ से रात को हम ट्रेन द्वारा रूस की वर्त्तमान राजधानी मास्को के लिए रवाना

हुए। रास्ते में कड़ी सर्दी के मारे हम ठिठुर से गये क्योंकि ट्रेन के शयनागार में बद-इन्तज़ामी की वजह से कम्बल वग़ैरह कुछ नहीं मिला।

मास्को

मास्को वर्त्तमान रूस की राजधानी और एक बड़ा सुन्दर नगर है। मास्का नदी के किनारे सात पहाड़ियों पर बसा हुआ यह प्राचीन नगर अब लेनिनग्रैड से अधिक रमणीक प्रतीत होता है। यह नगर लेनिनग्रैड के दक्षिण-पश्चिम दिशा से ४०० मील के अन्तर पर स्थित है। यहाँ की इमारतें प्राचीन ढंग की होने के साथ ही साथ बहुत साफ़ और सुन्दर बनावट की हैं। राजमार्ग भी बहुत चौड़े और स्वच्छ हैं।

लेनिनग्रैड से विपरीत यहाँ की दुकानों को सुन्दर और सजी बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। खिड़कियों की सजावट भी आकर्षक ढंग की है। बिजली की रोशनी के विज्ञापन और साइनबोर्ड आदि भी यथेष्ठ संख्या में यहाँ दिखलाई पड़ते हैं। इधर उधर दौड़ती हुई कुछ मोटरें भी दीख पड़ती हैं। नगर का नव-निर्माण हो रहा है और विस्तार बराबर बढ़ रहा है। जो इमारतें चार पाँच मञ्ज़िलों से छोटी हैं वे सभी गिरा कर या उन्हीं पर और मञ्ज़िल बना कर सम्पूर्ण नगर को संसार के दूसरे सुन्दर नगरों के मुक़ाबिले

पर पहुँचाने का ज़ोरों पर प्रबन्ध किया जा रहा है। क़रीब क़रीब पुराने बने हुए मज़दूरों की सभी बस्तियाँ गिरा दी गई हैं और नई बसाई जा रही हैं। मज़दूरों के इन नये सेटिलमेण्टों में अस्पताल, बच्चों के लिए धाय-गृह, जिनमें मातायें काम पर जाने के समय अपने बच्चे छोड़ जाती हैं तथा विश्रामगृह और क्रीड़ा-निकेतन आदि सब लेनिनग्रैड की तरह बनाये गये हैं। मास्को की बस्ती लेनिनग्रैड का अपेक्षा अधिक स्वच्छ है और मज़दूर नियमपूर्वक कपड़े वग़ैरह भी पहने हुए दीख पड़ते हैं।

नगर का सबसे प्रसिद्ध स्थान यहाँ का एक भीमकाय क़िले के ढंग पर बना हुआ क्रेमलिन नामक राज्य-प्रसाद है। यह पिछले समय में ज़ार राजाओं का निवास-स्थान था। इस राज्य-प्रसाद का निर्माण बारहवीं शताब्दी में किया गया था। तब से कई सदियों तक यह प्राचीन गढ़ रूस के राजनैतिक जीवन का केन्द्र रहा है और रूसी राज्य का पर्य्यायवाची हो गया है। इसकी चारों दिवारों के भीतर ज़ार का राज-भवन, विशाल गिर्जाघर, उच्च घराने के अमीरों के महलों की तरह कोठे हैं। इसके गिर्जे बहुमूल्य सजावट के हैं तथा प्राचीन राजाओं के राजतिलक करने का स्थान बहुत ही सुन्दर है। यह तिलक-घर अब एक अजायब घर में परिणत कर दिया गया है, जिसमें ज़ार के ज़माने के क़ीमती सामान, राजाओं

और रानियों द्वारा प्रयोग की हुई वस्तुयें, जवाहरात, जड़े कामदार कपड़े, क़ीमती रत्नजटित मसनदें, पलंग, मोती-जवाहरात जड़ी घोड़ों की ज़ीनें और वह खास ख़ास तोहफ़े जो दूसरे बादशाहों द्वारा ज़ार को भेजे गये थे, हिफ़ाज़त से रक्खे हुए हैं। विप्लवकाल में इतना लूट-खसोट और तहस-नहस हो जाने पर भी बहुमूल्य संग्रह होसका है, जो बहुत कम जगहों में देखने को मिलेगा।

रूस की समूची राजनैतिक शक्ति का संचालन इसी क्रेमलिन के क़िले से होता है। गवर्नमेण्ट के प्रायः सभी बड़े बड़े डिपार्टमेण्ट इसी में हैं। सोवियट गुप्त संगठन का केन्द्र भी यही है। रूस भर में कोई जगह ऐसी नहीं है, जहाँ साधारण से साधारण व्यक्ति के जाने के लिए भी रुकावट हो, परन्तु यहाँ आने के लिए सप्ताह में केवल एक दिन कुछ घण्टों के लिए ही, वह भी बड़ी कोशिश और पचड़े के बाद म्यूज़ियम देखने की इजाज़त मिलती है। यहाँ दो चीज़ें बड़ी मज़े की रक्खी हुई हैं। एक तो बहुत बड़ा घण्टा जो इतना विशाल बनाया गया था कि किसी तरह उठाया ही नहीं जा सका और इसीलिए वह आज तक एक मरतबा भी नहीं बजाया जा सका और दूसरी एक बहुत बड़ी तोप जो इतनी भारी है कि वह कहीं ले ही नहीं जा सकी और इसीलिए आज तक इससे एक भी फ़ायर न हो सका। प्राचीन काल के तोपों और गोलों आदि का भी यहाँ पर

एक बड़ा संग्रह है। यह पर स्टेलिन एक महल में रहता है और गवर्नमेंट के कुछ बड़े बड़े कर्मचारी और स्टेलिन के विश्वसनीय[1] साथी भी यहीं रहते हैं। स्टेलिन को अभी तक अपनी जान का इतना खतरा है कि वह कभी भी इस दुर्ग के बाहर नहीं जाता। इस क्रेमलिन नामक दुर्ग के बाईं ओर ही मास्को का एक बड़ा ऐतिहासिक स्थान है, जिसका नाम रेडस्कायर[2] है। यहाँ पहले राजनैतिक सभा वग़ैरह हुआ करती थी और अब लेनिन-दिवस मनाने के अवसर पर सारी फ़ौज का प्रदर्शन तथा एक बहुत बड़ा मेला लगता है।

क्रेमिलिन की ऊँची दीवार के नीचे इसी रेड-स्कायर के बाईं ओर उन "पाँच सौ भाइयों की क़ब्रें" हैं, जो सन् १९१७ ई० के विप्लव में काम आये थे। इन्हीं क़ब्रों के सामने रूस के भाग्य-विधाता, सम्पत्तिविहीन ग़रीबों के राज्य के जन्मदाता और संसार के अमूल्य नर-रत्न लेनिन की क़ब्र है। रूस में हाल की बनी हुई अगर सब से अमूल्य और पूजनीय कोई वस्तु है, तो यह क़ब्र है। यह समाधि काले संगमर्मर के पत्थरों की बनी है, जिस पर भीतर बहुत ही क़ीमती चमकीले पत्थरों की जड़ाई और बहुमूल्य पालिश हुई है। यहीं पर शीशे के बने एक कटघरे में एक चबूतरे पर

1. Diplomats 2. Red Square

मसाले से सुखाई हुई लेनिन की लाश खुली हुई रक्खी है। यह क़ब्र रोज़ शाम को दो घण्टे के लिए खुलती है। इस समय यहाँ पर इतनी भीड़ होती है कि कोई भी व्यक्ति एक मिनट के लिए बीच में ठहर नहीं सकता। एक रास्ते से लोग दो-दो की जोड़ी में आते हैं, और दूसरे रास्ते से निकलते जाते हैं। लेनिन की मृत्यु के बाद से आज तक एक भी ऐसा दिन नहीं हुआ जब १० मिनट के लिए भी शाम को, जब तक दर्शन बन्द न हो जाय, यह समाधि मनुष्यों से खाली रही हो—बल्कि कुछ न कुछ लोग न देख सकने के कारण बग़ैर दर्शन किये ही वापस हो जाते हैं।

यहाँ की नई बनी इमारतों में गवर्नमेण्ट हाउस सबसे सुन्दर और दर्शनीय है। इसमें राज-कर्मचारियों के निवास-स्थान, लेनिन इन्स्टीट्यूट, सेण्ट्रल पोस्ट तथा टेलीग्राफ़ आफ़िस, सोवियटों का महल, ब्राडकास्टिङ्ग स्टेशन और एक बहुत बड़ा बिजली का पावर-हाउस है। यह सभी इमारतें अधिकतर बिल्कुल आधुनिक ढंग की बनी हैं।

इनके अतिरिक्त बहुत से गिर्जाघर, राजप्रसाद तथा अमीरों के घर अब प्रजा की सभाओं और समितियों के दफ़्तर या म्यूज़ियम हो गये हैं। यहाँ के कुल म्यूज़ियमों की संख्या १७० है जिनमें से अधिक संख्या में सरकारी प्रचार-कार्य के निमित्त हैं।

इस नगर में एक प्रधान चित्रशाला है। गायन और नाट्य-कला की दृष्टि से यहाँ मास्को आर्ट थियेटर तथा ग्राण्ड आपेरा-हाउस विशेष महत्व रखते हैं। रूस का प्राचीन नृत्य "बाल डान्स" है, जिसमें किसी प्रसंग का कथानक पूर्णतया मूक अभिनय द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। पूरे अभिनय में केवल बाजे और ऐक्टिङ्ग के सिवा एक शब्द भी नहीं सुनाई देता। इस मूक अभिनय कला में पूर्वीय कला का आभास मिलता है, अतः यह दर्शनीय है।

रूस का हवाई जहाज़ों का केन्द्रीय स्थान यहीं पर है। दूसरे दिन हम लोग कचहरी[1] देखने गये। यह भी एक विचित्र दर्शनीय स्थान है। न्यायाधीश, जो कि स्वयं एक मज़दूर है, देखने में बहुत सीधासादा जान पड़ता है। इस न्यायालय में न्यायाधीश को दस वर्ष तक का कारावास दण्ड देने का अधिकार था। सबसे अचरज की बात तो यह थी कि कचहरी में यहाँ की तरह न तो वकील, न मुख्तार, और न द्वारपाल, कोई भी नहीं देख पड़ते। वादी-प्रतिवादी सौगंध भी नहीं खाते। न्यायाधीश स्वयं बहस करता है और तीन सहकारियों की सहायता से मुक़द्दमे करता है। रूस के नियमानुसार सिवाय सुप्रीम-कोर्ट के सभी कचहरियों के न्यायाधीश क्रमानुसार हर साल

1. People's Court

फ़ैक्टरियों से चुन के भेजे जाते हैं, जो अधिकांशतः काम करने वाले होशियार मज़दूर ही में से होते हैं।

यहाँ के पुलिस वालों की बड़ी मुसीबत है। रोज़ दो-चार केस हो ही जाते हैं जिनमें जनता द्वारा ये बेचारे बेहिसाब पीटे जाते हैं। इसका कारण यह है कि न तो इनके हाथ में दूसरी जगहों की तरह अधिकार ही हैं और न जनता पर इतना रोब ही। अतएव लोगों पर यहाँ की पुलिस का इतना प्रभाव ही नहीं है। सभ्य लोगों का उपवन जिसका नाम 'पार्क आव् कल्चर' है यहाँ का संध्या के समय घूमने योग्य स्थान है। यह एक बहुत ही रमणीक उद्यान है और यहाँ पर नाना प्रकार के खेल-कूद तथा विहार करने वाली मनोरंजक वस्तुओं का विचित्र समारोह देख पड़ता है। बालकों के खेलने का अलग इन्तज़ाम है। इस पार्क की तमाम सड़कों पर तरतीब से थोड़ी-थोड़ी दूर पर रेडिओ लगाये गये हैं, जिनमें बराबर मनोरंजक गायन-वादन आदि हुआ करते हैं। यहाँ पर भिन्न-भिन्न प्रकार की घासों से एक लेनिन और दूसरा स्टेलिन का सीने तक का बड़ा सुन्दर चित्र बनाया गया है जो देखने योग्य है।

यहीं पर नक्षत्रों की गति-विधि परखने की एक नक्षत्रशाला भी है जिसमें आकाश का गतिमान नक्षत्रलोक देख कर ऐसा जान पड़ता है मानो ब्रह्माण्ड से घिरे छोटे से दूसरे ही संसार में

आ गये हैं। कृत्रिम सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों का यह अनुपम प्रदर्शन वस्तुतः वैज्ञानिक जगत का एक अद्भुत चमत्कार है। यहाँ एक बहुत बड़े गोलाकार कमरे की छत में समस्त खगोल चित्रित हैं। ज्योतिष-शास्त्रियों के लिए यह एक अध्ययन-योग्य स्थान है। सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए यह नक्षत्र-शाला प्रतिदिन सुबह शाम दो बार खुलती है। इलेक्ट्रिक द्वारा ग्रहों व नक्षत्रों का रोमाञ्चकारी प्रदर्शन कराया जाता है।

इस नगर का किसान म्यूज़ियम इस देश वालों के लिए एक विशेष रोचकता का स्थान है। इसमें कृषि द्वारा उत्पन्न होने वाली वस्तुओं के अच्छे से अच्छे नमूने और उनकी पैदावार की विधि तथा किस खेत ने किस विधि से तरक्की की, यह सब फ़ोटो-चित्रों द्वारा समझा कर प्रदर्शित किया गया है। दूसरे वह तमाम मशीनें और औज़ार जिनसे कम परिश्रम में अधिक से अधिक सामान पैदा किया जा सकता है तथा उनके प्रयोग की विधि बतलाई गई है। तीसरे उन सब बीमारियों के जो बनस्पतियों, वृक्षों, पशुओं तथा मनुष्यों को देहातों में ग्रस्त करती हैं, कारण, बचने का उपाय तथा निदान आदि का परिचय दिया गया है। यहाँ पर दिन में पाँच व्याख्यानों द्वारा रोज़ जानने योग्य बातें देहातों से आने वालों को समझाई जाती हैं। कृषि के ज्ञान का विस्तार बढ़ाने

के लिए इस म्यूज़ियम के अतिरिक्त और भी उपायों से प्रचार-कार्य किया जाता है। सिनेमा, विज्ञप्तियाँ, रेडियो आदि के द्वारा भी वैज्ञानिक कृषि पर निरन्तर यथेष्ट प्रकाश डाला जाता है।

मास्को नगर सन् १४८० ई० से १७०३ ई० तक रूस की राजधानी था। पुनः सन् १९१८ ई० से आज तक यह फिर रूस की राजधानी है। इसकी जन-संख्या ३५,४६,००० है।

आज रूस के अतिरिक्त संसार के सभी उन्नत प्रदेशों में कृषि की समस्या बड़ी विकट हो रही है, परन्तु रूस में अन्न आदि की उपज बढ़ती ही जाती है। इसका प्रधान कारण यहाँ की सामूहिक कृषि-प्रथा है जो बरसों के कलह और परिश्रम के बाद अब क़रीब ७० प्रतिशत देश के खेतों में कार्य रूप में परिणत की जा रही है। इस प्रथा से हर एक गाँव की ज़मीन को एक समूह में बना कर बड़ी बड़ी ट्रेक्टर मशीनें चला कर मीलों लम्बे खेतों की पैदावार पहले से चौगुनी कर दी गई है। इस प्रथा द्वारा एक खेत में, जिसका वर्ग क्षेत्र ६० हेक्टर अथवा अनुमानतः १५० एकड़ हो, वर्ष में लगभग दस लाख रूबल मूल्य की पैदावार सरलता से होती है। यहाँ के रूबल की क़ीमत बहुत ऊँची बढ़ा कर रक्खी गई थी। यह पहले ६—७ रुपये के बराबर थी किन्तु अब वैदेशिक सिक्कों में १) के बराबर भी नहीं है।

यहाँ के गाँवों की जन-संख्या की औसत लगभग ५०० मनुष्य

प्रति गाँव है। प्रत्येक मनुष्य को सप्ताह में तीन दिन काम पर जाना अनिवार्य होता है। हानि-लाभ का बँटवारा प्रति वर्ष के अन्त में होता है। कृषि का सब कम-काज एक कमेटी द्वारा देखा जाता है, जिसका चुनाव प्रतिवर्ष होता है। किस चीज़ की खेती कब करना है, यह कमेटी खुद ही तय करती है। सरकार को इसमें कोई दखल नहीं है। यह कमेटी प्रत्येक किसान को ४ रूबल रोज़ के हिसाब से वार्षिक लाभ के बँटवारे के अतिरिक्त मज़दूरी भी देती है। यदि कोई किसान तीन दिन से अधिक काम करना चाहे तो कर सकता है, और वर्ष के अन्त में जो बढ़ती हो वह जितने दिन जिसने काम किया है उस हिसाब से सब लोगों में बाँट दी जाती है। यहाँ के प्रत्येक किसान के पास अपना निज का मकान है, जिसका वह खुद मालिक होता है। मकान के पास हर किसान को सौ, डेढ़-सौ गज़ ज़मीन मिली है, जिसमें वह अपने लिए निज की खेती कर सकता है। इसकी पैदावार उसकी अपनी समझी जाती है।

सरकारी खेतों में जो कुछ पैदा होता है, उसका पाँचवाँ हिस्सा सरकार को कर-स्वरूप देना पड़ता है। बाक़ी माल पर किसानों की कमेटी का अधिकार है। उनको उसमें से ५० प्रतिशत् सरकार के हाथ बेचना लाज़िमी है, बाक़ी वह चाहे सरकार के हाथ या किसी बाहर वाले व्यापारी के हाथ बेंच सकते हैं।

कृषि द्वारा वार्षिक आमदनी पर गवर्नमेण्ट तीन प्रतिशत् और लेती है जिसके बदले में खेती के लिए जिन बड़ी मशीनों और भारी औज़ारों की ज़रूरत पड़ती है, सब सरकार देती है और प्रयोग के लिए नाम-मात्र को थोड़ी-सी फ़ीस लेती है।

सालाना आमदनी का बँटवारा करने के पेश्तर हर एक आदमी के हिस्से में से तीन प्रतिशत् उसके बुढ़ापे की पेन्शन, बीमारी में दवा आदि और बच्चों के लाभार्थ काट कर बैंक में जमा कर दिया जाता है।

इन फ़ार्मों का कार्य इतने नियमित ढंग पर चल रहा है कि इस समय तक लगभग ७० प्रतिशत् खेत "सामूहिक खेती की प्रथा" में बाँधे जा चुके हैं। जो किसान इस प्रथा के अन्तर्गत आ गये हैं, वे भी प्रोलिटेरियट श्रेणी में समझे जाते हैं। जो लोग अभी तक किसी कारणवश इस प्रणाली में नहीं आ सके हैं उनपर राजकीय प्रतिबन्ध है। उन्हें वोट देने का, बुढ़ापे की पेन्शन आदि का कोई अधिकार नहीं है।

रूस की लगभग १६,००,००,००० से ऊपर जन-संख्या है जिसके बीस प्रतिशत् के लगभग मज़दूर हैं, बाकी ८० प्रतिशत् किसान हैं, जिनका एक मात्र व्यवसाय खेती है। रूसियों की जाति

एक दुबली पतली तथा छोटे क़द के मनुष्यों की है। गवर्नमेंट के आँकड़ों के अनुसार यहाँ के १० प्रतिशत् बुड्ढों को छोड़कर सभी नास्तिक हो चुके हैं। वृद्ध समुदाय के "निकम्मे" लोगों को छोड़कर शेष ६० प्रतिशत् लोगों में ३० प्रतिशत् युवक, ३० प्रतिशत् युवतियाँ तथा ३० प्रतिशत् बच्चे हैं। इनमें ६० प्रतिशत् लोग, अर्थात् युवक-युवतियाँ बराबर काम में लगे रहते हैं। शेष ४० प्रतिशत् लोग काम के अयोग्य हैं। बालकों और बालिकाओं को ८ वर्ष की उम्र से लेकर १८ वर्ष तक अनिवार्य शिक्षा ग्रहण करनी पड़ती है जिसके ख़र्च की ज़िम्मेददारी माँ बाप पर नियमित रूप से लागू है। क़ानून के अनुसार शादी के लिए लड़कों की १८ वर्ष और लड़कियों की १६ वर्ष की उम्र की क़ैद है। परन्तु अधिकतर युवकों की २५ वर्ष और युवतियों की २० वर्ष में शादी होती है।

रूस में पिछली पंच-वर्षीय आयोजना के विषय में लोगों की यह धारणा है कि आयोजना तो पूर्णतया सफल रही, किन्तु शीघ्रता के कारण इसकी लागत आवश्यकता से अधिक देनी पड़ी, वरना इतना ही सुधार बहुत कम लागत में हो सकता था। पहली आयोजना द्वारा रूस की खनिज, कृषि तथा उत्पादक वस्तु अर्थात् कच्चे माल को बढ़ाकर आर्थिक उन्नति करने की चेष्टा की गई थी, परन्तु दूसरी पंचवर्षीय आयोजना द्वारा माल की तैयारी बढ़ाने

तथा जनसाधारण का रहन-सहन ऊँचा करने का प्रयास किया जा रहा है।

आजकल रूसकी बोलशेविक प्रथा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपनी आमदनी की बचत जमा कर सकता है और उससे अपने खर्च के लिए कोई भी सामान या रहने के लिए जगह वगैरह खरीद सकता है, परन्तु लेन-देन या व्यापार नहीं कर सकता। सच पूछिए तो लोग कम खर्च और अधिक बचाने के लिए उत्साहित किये जाते हैं। क़ानून के मुताबिक़ कोई भी व्यक्ति किसी को अपने काम के लिए नौकर नहीं रख सकता। प्रत्येक मनुष्य को अपना कार्य अपने ही हाथों करना होता है। वहाँ छुट्टियों का कोई दिन नियत नहीं है, बल्कि हर पाँच दिन के बाद एक दिन की छुट्टी होती है। कार्य करने का समय ८ घण्टे हैं। आजकल जब कि संसार में सर्वत्र इतनी बेकारी बढ़ी हुई है वहाँ काम करने के लिए मज़दूर ही नहीं मिलते।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि रूस की विशेषताओं को देखते हुए यह देश संसार के सभी देश के यात्रियों के लिए एक आश्चर्यमय नव-जगत है। यहाँ के लोग सदियों से दृढ़ संसार भर में फैली हुई शृङ्खला को छिन्न-भिन्न करके मानव समाज के ढाँचे को

परिवर्त्तित करके नये मार्ग पर चलाने का जो प्रयत्न कर रहे हैं, वह अध्ययन के योग्य है।

दूसरी विशेषता यहाँ का व्यापार है, जो राज्य द्वारा सञ्चालित नये ढंग पर, नये उत्साह के साथ उन्नति की ओर वेग से अग्रसर हो रहा है। फ़ैक्टरियों का व्यापार सर्वव्यापी हो रहा है। बड़े पैमाने पर खेती तथा उत्पादन से क्रय-विक्रय कितना लाभदायक हो सकता है, यह रूस ने प्रत्यक्ष करके दिखा दिया। बिजली का प्रयोग[1] अधिक अंश में करने के कारण लकड़ी, तेल व कोयले की बचत से लाभ होने के अतिरिक्त व्यापार में सुविधा हो गई है। फ़ैक्टरियों के माल को लोगों में वितरित करने के लिए गवर्नमेंट की ओर से हर चीज़ों के डीपो सभी शहरों में खोले गये हैं; जीवन की ज़रूरी सभी सामग्रियाँ यहीं से मिल सकती हैं क्योंकि किसी व्यक्ति को अपनी दूकान रखना या व्यापार करना क़ानूनन मना है।

रूस में सब कुछ सुधार होते हुए भी बहुत से राजनैतिक तथा सामाजिक दोष हैं, जिन पर विचार करने का यहाँ अवसर नहीं है। पूँजीवाद की प्रथा में कुछ विशेष गुण हैं, जिनके कारण इसकी आयोजना संसार में इतनी सफल तथा पारस्परिक व्यवहार

---

1. Electrification

तथा व्यापार में इतनी सरलतापूर्वक सञ्चालित होती आ रही है। इसी प्रथा ने संसार की वर्तमान सभ्यता को जन्म दिया और इसी के बल पर मानव समाज अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहारों में इतना अग्रसर हो सका है।

पूँजीवाद द्वारा मनुष्य में कार्य करने की प्रेरणा जाग्रत होती है, जिससे वह उत्तरोत्तर अधिक धन द्वारा पुरस्कृत होने के कारण अधिक मात्रा में तथा अधिक ऊँचे दर्जे का कार्य करने को प्रोत्साहित होता है। इसी प्रकार लाभ के लोभ से व्यापार भी उत्तरोत्तर उन्नतिशील होता है और नई नई चीज़ों का अन्वेषण होता है जिससे संसार आज इतना प्रगतिशील हुआ है। कार्य करने की प्रेरणा तथा लाभ के लोभ के अभाव से मनुष्य में एक प्रकार की निश्चिन्तता आ जाती है, जिसे अकर्मण्यता के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा जा सकता। बोल्शेविक लोगों का कम्यूनिस्ट सिद्धान्त समाजवाद का सर्वोपरि आदर्श है, परन्तु इस दृष्टि से इसके सिद्धान्त में वह त्रुटि प्रतीत होती है, जिसके कारण इसकी व्यापकता सांसारिक होना तो दूर रहा, एक देशीय पूर्ण सफलता भी सन्दिग्ध जान पड़ती है। रूस के राज्य-सञ्चालकों के सामने भी यह समस्या दिन प्रति दिन जटिल होती जा रही है। अभी जब कि लोगों को पेट भर अन्न, पहनने को अच्छा वस्त्र तथा

दूसरी आवश्यक वस्तुओं की बहुत अंश में कमी-ही है, और काम लेने में इतनी ज़्यादा सख्ती है कि लोगों को गवर्नमेण्ट की काम कराने की ज़बर्दस्ती खल-ही रही है, परन्तु जिस समय सब वस्तुयें सुलभ हो जाँयगी तब लोगों का इस प्रकार ज़बर्दस्ती काम कराने के विरुद्ध क्या भाव रहेगा, यह कौन कह सकता है ? लोगों की उत्पादन-शक्ति पहले के बजाय बढ़ने के अभी तक घटी हुई है। अब तो वहाँ किसी अंश में व्यक्तिगत जायदाद रखने तथा बैंक में रुपया जमा करने की सुविधा भी दे दी गई है और जो बहुत-सी सुविधायें नहीं थीं, वे भी प्राप्त होती जा रही हैं। इसलिए रूस में ही, साम्यवाद के समूचा आदर्श को क्रियात्मकरूप नहीं दिया जा सका। यही नहीं बल्कि नये सिरे से छोटे कामों में पूँजीवाद की ओर पदार्पण शुरू हो गया है।

इसके अतिरिक्त मनुष्य-मात्र में कुछ पद-प्रतिष्ठा की भावना[1] भी होती है। अधिक धन अधिक सम्मान देता है। परन्तु धन के अभाव में मनुष्य और मनुष्य में कोई अन्तर नहीं रह जाता। प्रयत्न करने पर भी गौरव के इच्छुक व्यक्ति को समाजवाद में वह विशिष्टता नहीं मिल सकती जो सम्पत्तिवाद देता है। विशिष्टता की भावना चाहे कैसी भी हेय हो, मनुष्य-मात्र में होती ही है। क्या

1. Instinct of prestige and status

सम्पत्तिवाद के नाश के साथ-ही-साथ यह भावना भी समूल नष्ट हो सकती है ? अगर हो सकती है तो वैसे ही जैसे कोई मनुष्य अपनी कामातुरता से व्याकुल होकर पुंसत्व नाशक विष खाकर व्यभिचार रूपी बुराई से पिण्ड छुड़ाता है। मनुष्य-मात्र में कुछ बुराइयाँ ऐसी हैं जिनका अभाव जीवन को शून्य और नीरस कर देता है। पद-मर्यादा की विशिष्टता इतनी बुरी नहीं है जिसके कारण हम धन की जड़ पर ही कुल्हाड़ा उठावें। वास्तव में धन मानव समाज की धमनियों में रक्त सञ्चालन का काम देता है। इससे समाज को बल और पौरुष मिलता है। अगर धन के बिना किसी समाज की सृष्टि हो सकती है, तो निश्चय वह समाज, इस दृष्टि से नपुंसक कहा जा सकता है।

रूस के भाग्यनिर्माता अपने सिद्धान्त में वर्णित समाज की इस मनोवैज्ञानिक कमी से परिचित हैं और किसी उपाय को खोज निकालना चाहते हैं। इसी कारण वे जनता में सामाजिक उत्तर-दायित्व का ज़ोरों से प्रचार कर रहे हैं। सिनेमा, रेडियो, मिलों, या फ़ैक्टरियों में चित्रपटों, विज्ञप्तियों तथा व्याख्यानों द्वारा वे प्रत्येक मनुष्य के मन में इस उत्तरदायित्व को कूट-कूट कर भर देना चाहते हैं। पाठशालाओं में बालकों को ऐसी ही पाठ्य-पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं, जिनसे उन्हें समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व

का पूर्ण बोध हो जाय। परन्तु क्या प्रकृति भी परिवर्त्तनशील है? क्या समाज के लिए मनुष्य अपना आन्तरिक काया-पलट कर सकता है? यही सब सन्दिग्ध बातें हैं। सृष्टि के नियमों में परिवर्त्तन तथा उल्टी गङ्गा बहाने के जैसी यह बातें यदि सम्भव हो भी जायँ, तो क्या मानव समाज आजकल से अधिक सुखी और सन्तुष्ट होगा? यह और भी जटिल प्रश्न है।

यदि यही मान लिया जाय, जैसा स्वयं कम्यूनिस्ट लोग कहते हैं कि कम्यूनिज़्म समाज-शास्त्र का अन्तिम सिद्धान्त नहीं है बल्कि यह तो केवल सम्पत्ति की प्रथा को नष्ट करने के लिए पैदा हुआ है, तो भविष्य में कौन जाने इस प्रथा के स्थान में और कौन-सा वाद या प्रथा प्रचलित होगी और वह भी सर्वग्राह्य होगी या नहीं, इसमें भी सन्देह है। कम्यूनिस्ट लोग अपने सिद्धान्तों का सर्वव्यापी प्रचार कर रहे हैं। बच्चे बच्चे को इन विषयों का अर्थ सरल करके समझाया जाता है, परन्तु वे बालक जो बालिग़ होने तक (१८ वर्ष तक) अपने पिता माता—जो कि अब भी पूँजीवाद की प्रथा में दिल से रंगे हैं—के साथ रहकर। उनके आचरण से जो सीखते हैं, वे क्या केवल कुछ व्याख्यानों, पाठ्य-पुस्तकों तथा शिक्षाप्रद चित्रपटों द्वारा भुलाये जा सकते हैं? सम्पत्ति और मानव जीवन का जन्मजात सम्बन्ध है, इसमें विच्छेद डालना

इतना सरल नहीं है, जितना कतिपय समाज-शास्त्र के कुछ कल्पित सिद्धान्तों के प्रचारकों ने समझ रक्खा है।

मनुष्य की इच्छायें अनन्त हैं, उनकी तुष्टि के हेतु नित्य नवीन साधनों, आविष्कारों और अन्वेषणों की आवश्यकता होती है। परन्तु पूर्णतया कम्यूनिज़्म का सफल संस्थापन हो जाने पर इच्छाओं को सङ्कुचित, उच्चाभिलाषाओं को पङ्गु तथा जन्मजात मानवीय विभिन्नताओं को नष्ट हो जाना पड़ेगा, क्योंकि राज्य द्वारा सञ्चालित व्यापार में केवल वे ही वस्तुयें उत्पन्न की जायँगी जिनकी सार्वजनिक उपयोगिता होगी। इस प्रकार नये अन्वेषणों और आविष्कारों का नितान्त अभाव हो जायगा। व्यापार के सामूहिक सञ्चालन के कारण व्यापारियों की चढ़ा-ऊपरी नष्ट हो जायगी, जिससे कम परिश्रम में अधिक उपार्जन करने का उद्योग ही लुप्त हो जायगा। ऐसी दशा में समाज उन्नति करने के विपरीत पतन की ओर अग्रसर होने लगेगा और गहरी खाई में गिरकर आज तक की उपार्जित कला और संस्कृत को नष्ट कर देगा, परन्तु कोई आश्चर्य नहीं है कि कम्यूनिज़्म इन परिणामों के पूर्व ही सचेत होकर अपने सिद्धान्तों में उपयुक्त परिवर्त्तन करके सम्पत्तिवाद का ही पोषण करने लगे। इसके आसार अभी भी किसी परिमाण में दृष्टिगोचर होने लगे हैं।

अभी आर्थिक दृष्टि से रूस की सार्वजनिक व्यवस्था अधिक सन्तोषप्रद नहीं है। यद्यपि रहन-सहन का परिमाण कुछ अधिक नहीं बढ़ा है, तथापि रुपयों के हिसाब से वे लोग अपने को ऊँचे रहन-सहन वाला प्रमाणित करते हैं। भारतीय मुद्रा के हिसाब से प्रत्येक रूसी मज़दूर की आय अनुमानतः रु० ६००) मासिक के होती है। परन्तु ध्यान रहे कि यह केवल सिक्के का खेल-मात्र है, वास्तव में उनका रहन-सहन बहुत ही गिरा हुआ है, क्योंकि यहाँ पर वस्तुओं का मूल्य दूसरे देशों की तुलना में दसगुने से भी अधिक है। मनुष्य की खाने-पीने की तथा अन्य आवश्यकताओं की सभी चीज़ें भी बहुत मँहगी हैं फलतः बहुतों को पेट भर खाने को भी नहीं मिलता। परन्तु इन उपयोगी वस्तुओं की इतनी कमी होते हुए भी इतनी ज़्यादा इमारतें बनते देखकर यह शंका होती है कि व्यर्थ शक्ति के इस दुरुपयोग से क्या लाभ है? क्या यही शक्ति पहले इन आवश्यक द्रव्यों के उपार्जन तथा उत्पादन में लगाना अधिक श्रेयस्कर नहीं होगा? इस प्रकार के राजसी ठाठदार भवन तो प्राचीन राजा-महाराजाओं की एक निरर्थक महत्वाकांक्षा थे, जिसकी उपादेयता, देश की वास्तविक परिस्थिति को देखते हुए समय के अनुसार कुछ भी नहीं प्रतीत होती। मगर इनसे देश की आर्थिक दशा को क्या लाभ पहुँचा यह कहना

कठिन है। शायद दूसरे राष्ट्रों को रूस की शक्ति प्रदर्शित करने के लिए ऐसा हो, परन्तु मैं अनेक तर्क-वितर्क द्वारा भी किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सका।

दूसरी शंका मुझे यह हुई कि सार्वजनिक समानता की डींग हाँकने वाले रूस के मज़दूरों की मज़दूरी भी बराबर नहीं है। लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए भिन्न भिन्न पेशों की मज़दूरी की दर भी भिन्न है। यह तो बिल्कुल सम्पत्तिवादी देशों की ही तरह हुआ। इसी प्रकार व्यक्तिगत जायदाद-प्रथा भी देश में वर्त्तमान है। यद्यपि तर्क द्वारा यह शंकाएँ निर्मूल की जा सकती हैं, परन्तु इससे सम्पत्ति और व्यक्तिगत जायदाद की प्रथाओं का महत्व तो मानना ही पड़ेगा। इस प्रथा का सबसे घातक नतीजा, जो लोगों के मस्तिष्क या दिल पर असर करता मालूम होता है, वह है लोगों में आज़ादी का अभाव। प्रत्येक व्यक्ति किसी अज्ञात चिन्ता से भयभीत मालूम पड़ता है। कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति से स्टेट[1] के ख़िलाफ़, या काम की सख्ती, या कार्य में मिलने वाली तकलीफ़ के ख़िलाफ़ आपस में बात करने तक से भयभीत होता है। विदेशियों से बात करने की साधारण लोगों को इजाज़त नहीं है। अपनी यूनियन[2] या किसी तरह का संगठन करने की स्वतंत्रता नहीं है। सिवा

1. State 2. Union

कम्यूनिस्ट पार्टी के किसी भी और पार्टी को जीवित रहने या पैदा होने की इजाज़त नहीं है।

अगर कोई व्यक्ति कोई नियम तोड़े तो उसे नौकरी से बरख़ास्त कर दिया जाता है। फिर वह देश में कहीं खाने का साधन नहीं जुटा सकता। कितना सख्त और अमानुषिक नियम है जिसे सोच कर हृदय काँप उठता है और शायद इसी डर से लोग हमेशा भयभीत नज़र आते हैं। गवर्न्मेण्ट का मुख्य उद्देश्य उत्पादन बढ़ाना है जिसकी वजह से बहुत सी जगहों पर, खास तौर पर दूर की फ़ैक्टरियों में काम के नियम, या घण्टे बहुत सख्त और खाने-पीने का साधन कष्टप्रद है। फिर भी डर के मारे लोगों को काम करना ही पड़ता है वरना ज़िन्दगी भर भूखों मरने के सिवा कोई भी रास्ता बाक़ी नहीं रहता। तमाम देश एक जेल का समूह-सा मालूम होता है जहाँ शरीर को कुछ आराम होते हुए भी आत्मा बिलकुल परतंत्र और मस्तिष्क विवेकहीन होने के लिए विवश कर दिया गया है। मेरी समझ में मनुष्य की मनुष्यता के विकास के लिए यह चीज़ बहुत ही हानिकर है। ऐसी ढंग की आज़ादी से भूखे रह कर भी आत्मा या मस्तिष्क की आज़ादी और कार्य की स्वतंत्रता मुझे हितकर और ग्रहणीय मालूम होती है।

यद्यपि मेरी इच्छा थी कि अभी कम से कम एक सप्ताह यहाँ

और ठहरूँ, परन्तु अधिक समय के लिए सरकारी आज्ञा न होने के कारण मन की मन ही में रह गई। समयाभाव के कारण देश की बहुत सी अन्य ज़रूरी चीज़ें भी देखने को रह गईं। खिन्न मन हमें संध्या के समय मास्को से ट्रेन द्वारा रवाना होना पड़ा। मार्ग में रेलवे सिस्टम की अव्यवस्था के कारण एक रात सर्दी में बुरी तरह ठिठुरना पड़ा था। इस रात को मैं कभी नहीं भूल सकता, क्योंकि यात्रियों के विषय में ऐसी असावधानी की, कम से कम रूस में, मैंने कभी आशा न की थी। यहाँ पर मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि मैंने रूसी वर्गवाद के विरुद्ध जो कुछ लिखा है वह केवल अनुभव-जन्य है। मैं स्वयं साम्यवाद के अनेक सुन्दर सिद्धान्तों का बहुत बड़ा भक्त हूँ।

दूसरे दिन हम लोगों ने रूस की सरहद पार की। फिर उसी प्रकार हमारा सारा सामान जाँचा, देखा-भाला गया। स्टेशन पर फिर वही कस्टम की जाँच-पड़ताल भुगतनी पड़ी। पहले हमें यह नहीं मालूम था कि प्रत्येक क़ीमती चीज़ रजिस्टर में दर्ज करा देनी चाहिए थी, नहीं तो हमें वापस वे चीज़ें ले जाने को नहीं मिलेंगी। यद्यपि हमने सब कुछ नोट करा दिया था, परन्तु फिर भी कुछ रुपया और अँगूठी नहीं दर्ज कराई थी। बैंक से कुछ रुपया भी अधिक खर्च के कारण निकलवाना पड़ा था, जो खर्च नहीं हो सका था। फलतः बड़ी मुश्किलों से सब चीज़ों को वापस ले

जाने की अनुमति मिली। परन्तु जो फालतू रुपया था वह सब हमको उसी स्टेशन पर वहीं खर्च करने को बाध्य किया गया। खैर, यही कौन कम दया हुई वरना सभी कुछ ज़ब्त ही था।

तेइसवाँ परिच्छेद

पोलैण्ड

अनुमानतः दो बजे हमने पोलैण्ड की सीमा पार की। यह देश उन प्रान्तों के समूह से बना है जो सन् १८१५ ई० से महायुद्ध काल तक प्रशिया, आस्ट्रिया तथा रूस के आधिपत्य में थे। सन् १९१६ ई० में यह प्रान्त स्वतंत्र हो गये। सन् १९१९ ई० में वर्साई की सन्धि द्वारा इस देश की सीमा निश्चित की गई। सन् १९२९ ई० की २९ मार्च को रीगा की सन्धि द्वारा पोलैण्ड का नया राज्य-विधान बनाया गया जिसके अनुसार यह देश एक स्वतंत्र गणतंत्र घोषित होगया। तब से यह देश अपनी प्रजा द्वारा चुने हुए प्रेसीडेण्ट के सञ्चालन में एक स्वतंत्र राष्ट्र है।

महासमर के दिनों में तीन वर्ष तक यह देश जर्मन राज्य के आधिपत्य में रहा। इसकी स्वतंत्रता के बहुत दिनों बाद भी इसकी सरहद अनिश्चित रही। सीमान्त के प्रान्तों में ऐसे मतभेदों के

अवसर पर सार्वजनिक वोट द्वारा निर्णय किया जाता था। पोलिश लोगों ने जातीय विज्ञान[1] तथा ऐतिहासिक प्रमाणों द्वारा पुष्ट करते हुए अपने राज्य का विस्तार क़रीब क़रीब बर्लिन से मास्को तक तथा फ़िनलैण्ड की खाड़ी से लेकर बाल्टिक सागर तक प्रमाणित किया है। किन्तु, इतने विस्तार वाले पोलैण्ड की रचना असम्भव थी। लार्ड कर्ज़न तो पोलैण्ड का वह भाग जो रूसी यूक्रेन कहलाता है, रूस को दे देने के पक्ष में थे। पर पोलैण्ड को रूस का उतना टुकड़ा मिल जाना भी ग़नीमत थी जितना मिल गया था। स्वतंत्र पोलैण्ड की स्थापना के दस-ग्यारह वर्ष बाद मैं वहाँ पहुँचा था। जिस जाति ने पूरी एक शताब्दि तक ग़ुलामी की हो, और केवल दस-ग्यारह वर्ष हुए स्वतंत्रता प्राप्त की हो, उसका ग्राम्य जीवन यदि भारतवर्ष से मिलता जुलता हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। भारतवर्ष की ही तरह यह देश भी छोटे छोटे खेतों वाला खेतिहर देश है।

यूरोप के बीचोबीच में पोलैण्ड स्थित है। इसके उत्तर में लिथूनिया, पूर्व में श्वेत-रूस और यूक्रेन, दक्षिण में रूमानिया और ज़ेकोस्लोवाकिया और पश्चिम में जर्मनी के प्रान्त हैं। इन पंक्तियों के छपने के समय न तो पोलैण्ड रह गया और न उसकी पहले

1. Ethnographical Science

बतलाई गई सीमा। अस्तु, सम्पूर्ण देश का क्षेत्रफल १,३६,८६८ वर्ग मील तथा जनसंख्या ३,१६,२७,७७३ है। यह देश यूरोप के सब से घने देशों में से एक है। इस के दक्षिणीय तथा दक्षिण-पश्चिमीय प्रान्त में उस घनी जनसंख्या की एक पट्टी है जो पूरे मध्य यूरोप में फैली हुई है। पोलैण्ड से चल कर यह पट्टी बोहेमिया और सैक्सोनी होते हुए बेल्जियम तक चली जाती है और राइन नदी के मुहाने तक फैली हुई है। इतनी घनी आबादी होते हुए भी देश की तीन-चौथाई जन-संख्या देहातों में और केवल एक-चौथाई नगरों और क़स्बों में रहती है। नगरों में अधिकतर यहूदियों की बस्ती है। पोलैण्ड यूरोप में यहूदियों की सबसे घनी बस्तियों में से एक है। यहाँ पर यहूदियों के अतिरिक्त स्लाव, पोलिश तथा ज़ेक लोगों की भी बस्ती है।

यद्यपि यहाँ पर फ़ैक्टरियों के व्यापार के भी बड़े केन्द्र हैं, परन्तु मुख्यतः इस देश की आय खेती से होती है। मुख्य फ़सलें राई, ओट, जव, गेहूँ तथा हाप, जो शराब बनाने के काम आता है, पैदा होती हैं। आलू और शक्कर की बीट भी बहुतायत से पैदा होती है। आलू से शराब तथा शक्कर की बीट की जड़ से शक्कर बनाई जाती है। केवल शक्कर की बीट की ही फ़सल के आधार पर वारसा, क्राक और लबलिन नगरों में सौ से ऊपर शक्कर के

मिल चलते हैं। वारसा इस देश की राजधानी के अतिरिक्त एक बहुत बड़ा व्यापारी नगर तथा रेलवे का केन्द्र भी है। जूते तथा फ़ीते आदि का काम भी यहाँ के बहुत लोगों की जीविका का सहारा है।

महासमर के विपत्ति-काल में पोलैण्ड की आर्थिक दशा पर बहुत बड़ा धक्का पहुँचा। सारी कृषि तथा व्यापार-शृङ्खला नष्ट-भ्रष्ट हो गई। अनुमान लगाया जाता है कि महासमर में ५ लाख लकड़ी की इमारतें तथा १२,४८,००० कृषि-सम्बन्धी इमारतें नष्ट हो गईं जिनमें से अब ७५ से ८५ प्रतिशत् तक इमारतें पुनर्निर्मित हैं। पर यह न भूलना चाहिए कि पोलैण्ड का युद्ध सब के बाद यानी सन् १६२१ ई० तक चलता रहा था, जिस वर्ष मार्च के महीने में रीगा की सन्धि हुई थी। अब कृषि की दशा बहुत कुछ सुधर गई है और उन्नति कर रही है। महासमर के अतिरिक्त इस देश की आर्थिक दशा पर रूसी विप्लव का भी बहुत प्रभाव पड़ा है।

देश का आधा अंश छोटे-बड़े ताल्लुक़ों में बँटा हुआ है, जिनमें बड़े ताल्लुक़ों की संख्या १३,४५७ तथा छोटों की ३२,६८,५०० है। इस प्रकार कृषि की प्रधान भूमि इन कृषक ताल्लुक़ेदारों तथा ज़मींदारों की सम्पत्ति है।

पशुओं में गाय, बैल, घोड़े, सुअर तथा भेड़ पाले जाते हैं।

दूध, मक्खन, पनीर तथा ऊन का व्यापार यहाँ के दूध देने वाले तथा रोयेंदार जानवरों पर निर्भर है। महासमर का संघारकारी परिणाम किसी दिशा में भी इतना अधिक नहीं पाया जाता है, जितना पशुओं में। सन् १९२५ ई० में जब यहाँ कृषि सम्बन्धी सुधार हुए थे, इस ओर विशेष ध्यान दिया गया था, जिससे अब पशुओं की संख्या पहले से अधिक है। माँस और पशुओं का निर्यात भी उन्नति कर रहा है।

इस देश के जङ्गलों में भी बड़ा धन है। प्राकृतिक दृष्टि से पोलैण्ड का अधिकांश जङ्गलों से भरा है। जहाँ के जङ्गल काटकर जला दिये जाते हैं, वहाँ पर चराई अथवा खेती का उद्यम होता है। अब जङ्गल का बहुत अंश कटकर थोड़ा रह गया है। पठार और पहाड़ी प्रदेशों में जङ्गलों के दृश्य बड़े सुहावने जान पड़ते हैं। कहीं कहीं पर गुम्बजाकार टीलों पर जङ्गल चढ़ते चले गये हैं। यही कट जाने पर ऊँचे चराई के टीले हो जाते हैं।

पोलैण्ड के व्यापार की बुनियादी नींव यहाँ की कोयले की खदानों के कारण मज़बूत है। साइलेशिया मोराबियन नामक कोयले के क्षेत्रस्थल का अधिकांश भाग पोलैण्ड की सीमा के भीतर पड़ता है। सन् १९२७ ई० में अनुमानतः ३,८०,७२,००० मेट्रिक टन लोहा व कोयला इसी खान से निकला था। आधुनिक यन्त्रों की

सहायता तथा मज़दूरों की कार्य-पटुता में उन्नति होने के कारण और दूसरी नई खदानों के खुलने के कारण उत्पत्ति उत्तरोत्तर बढ़ रही है। पोलैण्ड के दक्षिण पश्चिमीय प्रान्त में कोयले की खदानें हैं जिनसे कोयला यथेष्ट परिमाण में निकलता है। दक्षिण-पूर्वीय प्रान्त में तेल के सोते भी हैं जिनसे प्रतिवर्ष अनुमानतः ८ लाख टन तेल निकलता है।

इस देश के व्यापार की उन्नति में यहाँ की रेलवे, सड़क तथा आवागमन सम्बन्धी असुविधायें बड़ी बाधक हैं तथा इन्हीं सुविधाओं की कमी के कारण व्यापार की यथेष्ट उन्नति नहीं हो सकी। सन् १९२६-२७ ई० से यहाँ की सरकार ने इस ओर विशेष ध्यान दिया है तथा नई लाइनें खुल रही हैं। इस देश की सामाजिक व्यवस्था दूसरे पश्चिमीय देशों से भिन्न है। सम्पूर्ण देश की जन-संख्या का तीस प्रतिशत् अंश बेकारी के कारण कृषि पर निर्भर करता है। यह देश भारतवर्ष से इतना मिलता जुलता है कि इसको "यूरोप का भारत" कहा जाता है। लोगों का रहन-सहन बहुत नीचे दर्जे का है, और काम न मिलने पर लोग हिन्दुस्तानियों की तरह खेती का ही सहारा लेते हैं। यहाँ पर चार डालर मासिक वेतन पर नौकर आसानी से मिल सकते हैं। भारतवर्ष की तरह यहाँ पर चालीस-पचास डालर

मासिक वेतन पाने वाला व्यक्ति एक दो नौकर रख सकता है। पोलैण्ड की व्यापारिक दशा दूसरे देशों की तुलना में गिरी हुई होने के कारण बाज़ार में विदेशी माल के मुक़ाबले में देशी माल पर पड़ता नहीं बैठता, इस कारण इस देश की लक्ष्मी का ह्रास हो रहा है।

यहाँ पर रहने योग्य मकानों की समस्या भी महासमर के बाद से विशेष महत्व रखती है। आधे से अधिक कृषकों के लिए रहने की कोई न कोई आयोजना हो गई है, शेष अब भी बिना घर-बार के रहते हैं। सन् १९२१ ई० तक तो सैकड़ों लोग धरती में गढ़े खोदकर रहते थे। नगरों में राज्य-नियम है कि कोई गृहस्थ एक दो कमरों से अधिक में नहीं रह सकता है। इन नियमों में परिवर्त्तन हुआ होगा, पर मैं यूरोप की सन् १९३८ की अपनी यात्रा में पोलैण्ड न जा सका।

कार्ल मार्क्स के ढङ्ग का समाजवाद यहाँ के राजनैतिक तथा सामाजिक दोनों ही क्षेत्रों में प्रमुत्व रखता है। ट्रेड-यूनियन यहाँ यथेष्ट शक्तिशाली हैं तथा अशान्ति, हड़ताल आदि अस्त्रों द्वारा मज़दूर-दलों के स्वार्थों की रक्षा करता है। सार्वजनिक छुट्टियाँ, आठ घण्टे प्रति दिन काम करने की प्रथा चलाने की चेष्टा, बेकारों को रोज़ी दिलाने का काम आदि इन्हीं ट्रेड यूनियनों द्वारा होता है।

राज्य में बीमारी, दुर्घटना, और बुढ़ापा के शिकार मज़दूरों के बारे में क़ानून इन्हीं ट्रेड यूनियनों के आन्दोलन द्वारा बने हैं।

शिक्षा की ओर इस देश में अब अधिक उन्नति हो रही है और ७वीं तथा १४वीं वर्ष की उम्र के बीच में प्रत्येक सन्तान की शिक्षा अनिवार्य है। सन् १९२५ ई० में इस देश में २७,४१४ प्रारम्भिक पाठशालाएँ थीं जिनमें ६६,१७६ अध्यापक ३२,३७,३४० बालकों को शिक्षा देते थे। माध्यमिक स्कूलों[1] की संख्या ७७८ थी तथा इनमें २,१९,९७८ बालक, जो अधिक संख्या में किसानों की सन्तान थे, पढ़ते थे। वारसा में एक विश्वविद्यालय है जिसमें पढ़ाई की फ़ीस बिल्कुल नहीं ली जाती है।

यहाँ के फ़ौजी नियमों के अनुसार इस देश का प्रत्येक व्यक्ति जब २१ वर्ष का हो जाता है तो वह चाहे जिस जाति, सम्प्रदाय तथा धर्म का हो, फ़ौजी शिक्षा के लिए भेज दिया जाता है। इन लोगों को २४-२५ महीने बराबर फ़ौज के साथ काम करना पड़ता है। इसके बाद जिनको फ़ौज में पूर्णतः भर्ती होना होता है, वे १४ हफ़्ते की ट्रेनिङ्ग पाकर रिज़र्व-फ़ोर्स[2] में चले जाते हैं। जो लोग फ़ौज में नहीं रहना चाहते उनको एक फ़ौजी-कर देना पड़ता है। सन् १९२८ ई० में यहाँ के फ़ौजियों की संख्या २,६३,४०५ थी, जिनमें १७,९०५

1. Secondary Schools 2. Reserve Force

अफ़सर थे। यहाँ की स्टेट पुलिस फ़ोर्स की संख्या अनुमानतः २६,००० और कस्टम गार्डों की संख्या ६,००० थी। फ़ौजी शिक्षा के लिए यहाँ पर एक बड़ा फ़ौजी कालेज है। पोलैण्ड के पास कोई अच्छी जलसेना नहीं है।

वायु-सेना का प्रबन्ध युद्ध मन्त्रिमण्डल के अन्तर्गत, राज्य के वायु-सेना विभाग के सेक्रेटरी द्वारा सञ्चालित होता है। यहाँ पर एक कैडेट स्कूल है, जिसमें सिखाकर अफ़सरों की भरती होती है। वायु-सेना के सैनिकों की संख्या ७,६१६ थी।

वारसा

रात के नौ बजे हम लोग पोलैण्ड की राजधानी वारसा पहुँचे। रूस के सम्पूर्ण क्षेत्र में बड़ी कड़ी सर्दी पड़ती है, उस रात को भी सर्दी अधिक थी, इस कारण हमें विवश होकर उस रात को कहीं जाने का इरादा छोड़ना पड़ा।

यह नगर विस्च्यूला नदी पर बसा है। प्राचीन नगर चारों दिशाओं में फाटक लगी चहारदिवारी से घिरा हुआ है। यह नगरकोट नवीं शताब्दी में निर्माण किया गया था और इतना प्राचीन होने पर भी बहुत मज़बूत है। यह दुर्ग विस्च्यूला नदी के बायें पार्श्व में है। दाहिने तट पर नये नगर की बस्ती है।

इस नगर को सबसे पहले सन् १५५० ई० में इस देश की राजधानी होने का गौरव प्राप्त हुआ था। इसी वर्ष पोलैण्ड और लिथुनिया के राज्य एक में मिल गये थे। उसी वर्ष पोलैण्ड के राजा ने जिसकी उपाधि वासा[1] थी, इस नगर को राज-परिवार के निवास योग्य समझ कर राजधानी बनाया था। सन् १५७२ ई० के बाद कई वर्षों तक नगर के पश्चिमीय भाग में वोला[2] नामक स्थान में राजा का राज्यतिलक तथा सिंहासनारोहण संस्कार हुआ करता था। सन् १६५५ ई० में स्वेडेन के राजा चार्ल्स गस्टैवस ने इस पर अपना क़ब्ज़ा जमा लिया तथा एक वर्ष तक इसे अपने अधिकार में रक्खा। पोल लोगों ने सन् १६५५ ई० में फिर इसको अपना लिया। तत्पश्चात् पोल राजाओं ने इस नगर को सुन्दर बनाने का प्रयत्न किया, परन्तु सन् १७०२ ई० में स्वेडेन के राजा से युद्ध में इस नगर का बहुत ह्रास हुआ और यह नगर पुनः पराधीन हो गया। परन्तु दूसरे ही साल सन्धि हो जाने के कारण यह पुनः स्वतन्त्र घोषित कर दिया गया। सन् १७६३ ई० में पोलैण्ड के राजा आगस्टस तृतीय की, जिसने नगर की उन्नति की ओर यथेष्ट ध्यान दिया था, मृत्यु के साथ ही यहाँ पर रूसी षड्यंत्र बलशाली हो गया और इस नगर पर रूसियों का क़ब्ज़ा

1. Wasa. 2. Wola.

हो गया। सन् १७७३ ई० में यह नगर पुनः मुक्त हो गया, परन्तु अभी इस के अच्छे दिन नहीं आये थे। इसीलिए एक बार फिर सन् १७६४ ई० में रूस के पञ्जे में पड़ गया और दूसरे वर्ष पोलैण्ड के बँटवारे में यह नगर प्रशिया को दे दिया गया। सन् १८०६ ई० में जगत-विख्यात नेपोलियन ने इस नगर पर अधिकार कर लिया और दूसरे वर्ष टिल्सिट की सन्धि के बाद वारसा का स्वतंत्र प्रान्त बना दिया गया। अन्तिम बार रूसियों ने पुनः सन् १८१३ ई० में इस पर क़ब्ज़ा कर लिया। अनुमानतः पचास वर्षों तक इस नगर में रक्तपात तथा नर-हत्या-काण्ड होता रहा और यह फ़ौज के प्रबन्ध में रहा। परन्तु आधिपत्य यहाँ पर रूसियों का ही बना रहा।

सन् १८६२ ई० से पोलैण्ड की जनता में असली आज़ादी की लहर फैली। फाँसी, जन्म क़ैद, साइबेरिया के ठंडे देश को अपराधियों का देश निकाला आदि न जाने कितने ही रोमाञ्चकारी दृश्यों का यह रंगमंच बना रहा। सभायें, हाईस्कूल, गिर्जाघर, धर्म-सेविकाश्रम[1] आदि सब निर्वासित तथा शून्य हो गये। नगर नष्ट और वीरान हो गया। सैकड़ों रूसी अफ़सर नियत हो गये। राज्य का नये ढंग से शासन हुआ। मातृभाषा रूसी

1. Nunneries.

भाषा नियत की गई तथा स्कूलों में अनिवार्य विषय रक्खी गई। यहाँ तक कि पोलैण्ड का नाम ही सरकारी लिखा पढ़ी से उठा दिया गया। सन् १९०५-६ ई० में पुनः इस नगर में घोर विप्लव व रक्तपात हुआ। सन् १९१४ ई० के महायुद्ध में यह नगर रूस को फ़ौज भेजने का एक प्रधान केन्द्र था। सन् १९१५ ई० में इस देश पर जर्मनों का आधिपत्य हो जाने के कारण तीन वर्ष तक उनके अधिकार में रहा। सन् १९१८ ई० में पोल लोग स्वतंत्र हो गये और इस नगर को एकबार फिर स्वतंत्र पोलैण्ड देश की राजधानी बनने का सुयोग प्राप्त हुआ।

दृश्य दर्शन

रात भर विश्राम करने के बाद सुबह हम नगर के दर्शनीय स्थानों को देखने निकले। वारसा की सड़कों के दोनों ओर सुशोभित अट्टालिकाओं, सुन्दर महलों तथा राजसी भवनों की मनोहर गोट सी लगी हुई साड़ी की तरह यह सड़कें बड़ी ही आकर्षक जान पड़ती थीं। इनमें से अधिकांश छोटे बड़े गिर्जों की इमारतें थीं। म्युनिसिपैलिटी की बनवाई हुई इमारतों के अतिरिक्त यहाँ लोगों की निजी इमारतें भी बड़ी सुन्दर बनी हैं। इस नगर के विश्वविद्यालय की इमारत भी बड़ी सुन्दर है। इस शिक्षा-केन्द्र की

स्थापना सन् १८१६ ई० में हुई थी। यह विश्वविद्यालय सोलह वर्ष बाद सन् १८३२ ई० में एक बार बन्द होकर पुनः रूसी राज्य में सन् १८६६ ई० में खुला। इस विश्वविद्यालय में अमूल्य पुस्तकालय है, जिसमें पाँच लाख से ऊपर पुस्तकें हैं। इसमें बहुमूल्य प्राकृतिक इतिहास-सम्बन्धी सामग्री का एक सुन्दर संग्रह है। वनस्पति-शास्त्र के अध्ययनार्थ एक सुन्दर बाग़ और एक ज्योतिष-शास्त्र विषयक "मान मन्दिर" भी है।

वस्तुतः इस नगर की प्राचीनता पर आधुनिकता की क़लई चढ़ाने का बहुत कुछ श्रेय रूसियों को ही दिया जा सकता है। परन्तु नगर निवासियों के निजी महलों तथा राजसी ठाट के भवनों को देखकर यहाँ के धनाढ्य श्रीमानों की शान व शौक़त की रुचि भी प्रशंसनीय कही जानी चाहिए।

यहाँ का मेडिकल स्कूल संसार के वैज्ञानिक क्षेत्र में बड़ा महत्व रखता है। यहाँ हस्तकला की पाठशाला, कृषि तथा वन सम्बन्धी अध्ययन-केन्द्र-दोनों उन्नति तथा ऊँचे दर्जे की समितियाँ हैं। यहीं पहले विज्ञान, इतिहास, समाज तथा कृषि सम्बन्धी विषयों पर आविष्कार तथा अन्वेषण के लिए सुव्यवस्थित संघ थे, जो विश्वविख्यात थे। लड़ाई-दंगों के दिनों में यह सब टूट गये।

परन्तु अब फिर इनके स्थापित करने की आयोजना हो रही है। इस नगर में पहले एक संगीतशाला भी थी, जो अपनी कला की निपुणता के लिए सारे यूरोप में प्रसिद्ध थी।

पोलिश थियेटर भवन तथा बैलेट भी अच्छी इमारतें हैं। इसमें लखनऊ में हज़रतगंज के सिनेमा हाउस की तरह एक ही छत के नीचे दो अभिनयगृह हैं। लैजिङ्की[1] नामक उपवन में स्थित वारसा का थियेटर-भवन वस्तुतः इस नगर की गर्व-योग्य वस्तु है। इस भवन की नींव सन् १७६७-८८ ई० में विस्च्यूला की प्राचीन तरेटी में तत्कालीन राजा द्वारा स्थापित की गई थी। सुन्दर सायादार हरी-भरी कटी हुई क्यारियाँ, अप्राकृतिक जलश्रोत, एक छोटा-सा शानदार राजमहल जिसकी छतों की चित्रकारी तत्कालीन एक प्रसिद्ध कलाकार की निर्माणकला के अद्‌भुत कौशल की परिचायक हैं। इस थियेटर-भवन में एक राजा की मूर्त्ति बड़ी ही सुन्दर है। यह वह राजा है जिसने १६८३ ई० में वियना को तुर्कों के शिकञ्जे से छुड़ाया था। इस नाटक-घर में एक अप्राकृतिक बनावटी टापू के खंडहर में खुले आसमान के नीचे नाटक खेला जाता है।

इसके अतिरिक्त इस नगर में दो सुन्दर सार्वजनिक बाग़ हैं।

---

1. Lazienki.

इनके शाहबलूत के पेड़ तथा क्यारियाँ मशहूर हैं। इनमें से एक का नाम सेक्सन गार्डन है, जो १६ एकड़ क्षेत्रफल में है। इसमें एक ग्रीष्म-नाट्यशाला और कुछ बहुत सुन्दर और प्राचीन वृक्ष भी हैं। आजकल यह स्थान वारसा नगर के श्रेष्ठ श्रेणी के महाजनों की बस्ती है। दूसरा बाग़ क्रैसिङ्की है जो यहूदियों का शान्ति निकेतन है।

इस नगर को दो भागों में विभाजित करनेवाली विस्च्यूला नदी को पार करने के लिए दो बहुत बड़े पुल हैं। सम्पूर्ण वारसा नगर के केन्द्रीय आकर्षण का लक्ष्य यहाँ का प्राचीन राजमहल ज़ैमेक क्रोल्योस्की[1] है, जो सिगिसमण्ड स्कायर[2] के निकट है। इसको मेज़ोविया के ड्यूक ने बनवाया था और सिगिसमण्ड तृतीय ने—जिसका मेमोरियल सामने ही बना है, इसको और बढ़वाया तथा सुन्दर बनाकर तैयार किया था। उस काल के दो निर्माणकला विशेषज्ञ जान सोबिस्की स्टैनिस्ला तथा पोनियाटोउस्की इसे बनाने में नियत हुए थे। जब इस नगर पर रूसियों का अधिकार हुआ था तो इस राजमहल के बहुत सी सुन्दर-सुन्दर चित्रकला की बहुमूल्य वस्तुयें रूसी सेण्ट पीटर्सबर्ग तथा मास्को उठा ले गये। परन्तु अब अधिकांश वस्तुयें वापस आ गई हैं तथा अभी तक

1. Zamek Krolewski. 2. Sigismond Squire.

आती जा रही हैं। यहाँ पर चारों दिशाओं को जानेवाले प्रधान मार्गों का एक चौराहा है। इनमें जो मार्ग दक्षिण की दिशा में जाता है, वह इस नगर का सर्व-श्रेष्ठ राजमार्ग है। यह मार्ग सुन्दर सुशोभित अट्टालिकाओं के पार्श्व स्थलों में होते हुए लैज़िङ्की गार्डन पहुँचता है। इस सड़क के किनारे किनारे दर्शनीय इमारतें हैं।

सेण्ट ऍने का गिर्जा, कृषि तथा व्यापारिक म्यूज़ियम, जिसमें मानव तथा जाति-शास्त्र के ऐतिहासिक अनुशीलन और अन्वेषण प्राप्त वस्तुओं का संग्रह है, दर्शनीय है। प्रेसीडेण्ट के राजमहल में उस समय अखिल विश्व ऐतिहासिक सभा हो रही थी। इस इमारत की बनावट यद्यपि प्राचीन ढंग की है तथापि सजावट और ठाटबाट से बहुत सुन्दर जान पड़ती है।

सिगिसमण्ड स्कायर से उत्तर की ओर पुराना नगर है, जहाँ पर अधिकतर यहूदियों की बस्ती है। नगर का यह भाग अधिकतर पुराने मकान तथा सरकारी गलियों की बहुतायत होने के कारण और बस्ती बहुत घनी होने के कारण सचमुच पुरानेपन का नमूना ही जान पड़ता है। यहाँ के मकानों और गली-कूचों की बनावट पुरातन जर्मनी के ढंग की है। यहूदियों की आकृति देखते ही उनकी हृदय-हीन प्रकृति का परिचय मिल जाता है। इन लोगों का

रहन-सहन बहुत नीचे दर्जे का है और यह सफ़ाई-पसन्द भी नहीं जान पड़ते।

वारसा नगर के प्रधान अंश में, जहाँ अधिकतर सुशिक्षित तथा श्रेष्ठ सम्पत्तिवानों की बस्ती है, लोगों का रहन-सहन काफ़ी अच्छा है। पोलिश लोगों में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक सुन्दर हैं।

इस नगर की जनसंख्या (सन् १६३१ ई० की मर्दुमशुमारी के अनुसार) ११,७८,२११ थी।

चौबीसवाँ परिच्छेद

जर्मनी (१)

बर्लिन

वारसा से ठीक साढ़े नौ बजे सुबह हम जर्मनी की विख्यात राजधानी बर्लिन के लिए रवाना हुए और ३८७ मील की यात्रा

कैसर के बर्लिन के प्रसिद्ध महल के सामने गार्ड बदले जा रहे हैं

समाप्त कर उसी दिन साढ़े चार बजे शाम को बर्लिन पहुँच गये। होटल में सामान वग़ैरः रखकर हम हिन्दुस्तान हाउस गये जहाँ लन्दन के बाद आज देशी भोजन खाने का फिर सौभाग्य प्राप्त हुआ।

बर्लिन यूरोप के सबसे बड़े नगरों में एक है और संसार में चौथा सबसे बड़ा नगर है। महासमर के बाद से यह नगर जर्मन रिपब्लिक की राजधानी है। नगर के प्रधान भाग का क्षेत्रफल २९ वर्ग मील है और बड़े भाग का क्षेत्रफल ३४० वर्गमील। यह स्प्री नदी के दोनों तटों पर बसा है। यह नदी नगर तक सुगमता से जहाज़ों को आने जाने के लिए गहरी कर दी गई है। सन् १९३१ में बर्लिन की जनसंख्या ४०,२४,२८६ थी।

सम्पूर्ण बर्लिन नगर का निर्माण बड़ी कुशलता से किया गया है। नगर के बीचोबीच एक बड़ा और सुन्दर पार्क है, जो स्वास्थ्य की दृष्टि से आसपास की बस्ती के लिए बहुत लाभकारी है। यहाँ पर व्यापारियों की बस्ती नगर के एक भाग में, सरकारी इमारतें दूसरे भाग में, धनाढ्य लोगों के निवास-स्थान तीसरे और मज़दूरों की बस्ती और फ़ैक्टरियाँ चौथे भाग में हैं। राजधानी का राज्य-सम्बन्धी तथा सामाजिक-जीवन का केन्द्र अण्टर-डेन-लिण्डन नामक राजमार्ग के दोनों ओर है। यह सड़क पुराने राजमहल

से चलती है। वास्तव में यह राजमार्ग यूरोप भर में सबसे सुन्दर और चौड़े मार्गों में से एक है। इसकी लम्बाई लगभग एक मील है। इसके दोनों पार्श्वों में निम्बू के वृक्ष बड़े ही सुहावने मालूम पड़ते हैं। बीच में पार्क के ढंग का फ़ुटपाथ है जो विश्राम करने के

बर्लिन कैसल

काम आता है। यहाँ पर बर्लिन के जीवन का वास्तविक दिग्दर्शन किया जा सकता है। इस सड़क के दक्षिण की ओर, जहाँ पर कुछ सड़कें बराबर समानान्तर चली गई हैं, राजधानी के हाकिमों के निवास स्थान हैं।

सन् १८८१ ई० से सन् १९१८ ई० तक यह नगर प्रशिया

की राजधानी था। इसके बाद इसे वर्तमान जर्मनी की राजधानी बनाया गया। इस प्रकार बर्लिन प्राचीन काल से राजकीय नगर होने के सौभाग्य के कारण बहुत सी सुन्दर सरकारी इमारतों द्वारा भूषित एक अत्यन्त ठाटदार व खूबसूरत नगर बन गया। इस नगर
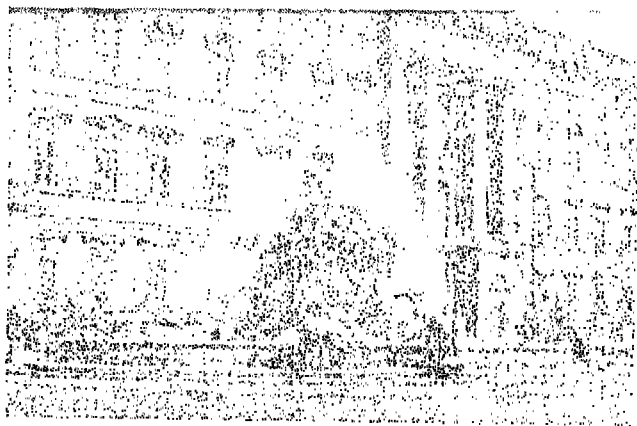
बर्लिन-कैसल का दूसरा दृश्य

ने कला, सौन्दर्य और लक्ष्मी तीनों दिशाओं में केवल उपर्युक्त कारण से यथेष्ट उन्नति की है। यहाँ की सबसे प्रथम दर्शनीय इमारत पार्लियामेण्ट भवन[1] है, जिसमें इम्पीरियल पार्लियामेण्ट[2] तथा

1. Reichstags-ge-bande 2. Reichstag.

फ़ेडरल कौंसिल[1] की बैठकें होती हैं। इसकी प्रधान विशेषता यहाँ का पुस्तकालय है, जिसमें बहुमूल्य पुस्तकों का सुन्दर संकलन है। प्रशियन पार्लियामेण्ट भवन[2] भी एक दर्शनीय एवं राजकीय महत्व की इमारत है।

जर्मनी का "हॉल"

बर्लिन की राजकाज सम्बन्धी इमारतों के आगे कलापूर्ण तथा धार्मिक इमारतों का महत्व गिर गया है। विण्टर-पैलेस जिसमें आजकल म्यूज़ियम है, यहाँ की बहुत सुन्दर इमारत है। यह पूर्णतया आधुनिक सजावट से भूषित एक बहुत विशाल भवन

1. Bundesrat. 2. Landtag.

है। कैसर फ्रेडरिक म्यूज़ियम स्प्री नदी की दो धाराओं के बीच में बना होने के कारण बड़ा रमणीक प्रतीत होता है। यह इमारत सन् १९०४ ई० में बनी थी। इसकी बनावट इटालियन ढंग की है। यहाँ एक सुन्दर चित्रशाला भी है, जिसमें ईसाइयों के धार्मिक युग

बर्लिन का पुराना म्यूज़ियम

की ऐतिहासिक महत्व वाली वस्तुओं तथा प्राचीन सिक्कों का उपयोगी संकलन है।

पुराना राज्यमहल एक दीर्घ चौकोर इमारत है, जिसमें चार कचहरियाँ है। सन् १९२१ ई० में बर्त्तनों, फ़र्नीचर तथा

चाँदी की चीज़ों की नुमाइश इसी में खोली गई थी। हमने वह मीनार भी देखी जहाँ से सन् १६१४ ई० में लड़ाई की घोषणा की
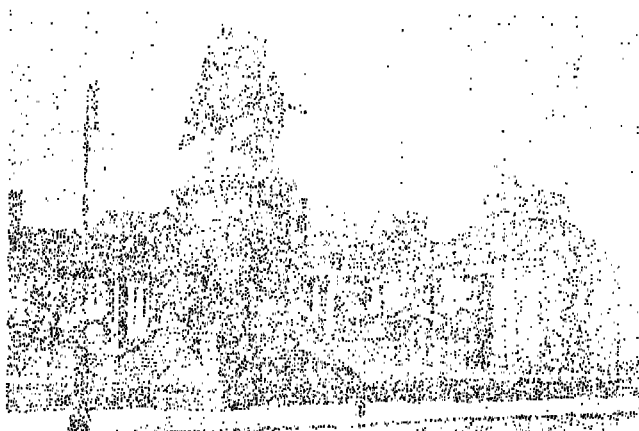
जर्मन-सम्राट् विलियम प्रथम की प्रस्तर प्रतिमा

गई थी। तमाम राजकाज सम्बन्धी भवनों के अतिरिक्त यूनिवर्सिटी, कैथेड्रल, ऑपेरा आदि सभी देखने योग्य जगहें हैं।

रात्रि-जीवन की दृष्टि से बर्लिन भी काफ़ी उन्नत स्थान है। यहाँ का फ़ादरलैण्ड-कैबरे[1] वास्तव में संसार की एक अद्वितीय चीज़ है। इसके सञ्चालकों ने केवल रुपया ही नहीं बल्कि मस्तिष्क

1. Fatherland Cabre.

भी खर्च किया है। केफ़ यूरोपा मेट्रोपोलिया[1] भी समय समय पर भिन्न भिन्न नृत्य, गायन, अभिनय, बॉक्सिङ्ग और दूसरे कौशल

बर्लिन का एक गिर्जाघर,

आदि के दिग्दर्शन के लिए विख्यात है। सन् १९३८ में जब मैं वहाँ गया था तो मैंने नगर में बहुत से सुधार और नये निर्माण का काम देखा।

पाट्सडैम

बर्लिन से पाट्सडैम जाते समय रास्ते में एक झील मिलती

1. Cafe Europa Metropolia.

है। इस मीलों लम्बी झील के चारों ओर धनी लोगों के ग्रीष्म-भवन बने हुए हैं। जहाज़ द्वारा इस झील से होकर पाट्स-डैम जाने में झील का पूरा दृश्य बड़ा मनोहर जान पड़ता है। यह यात्रा वास्तव में बड़ी मनोरञ्जक है, और इसका आनन्द अवश्य लेना चाहिए।
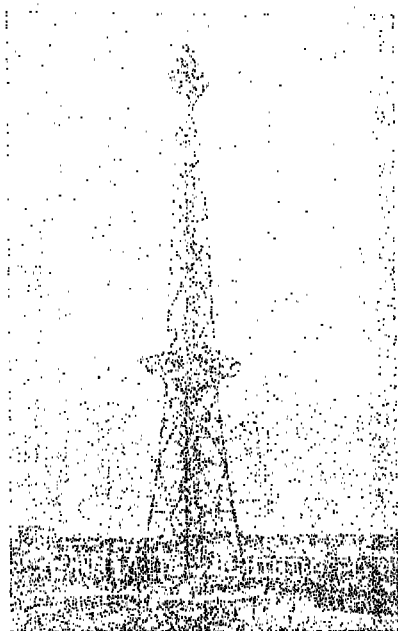
बर्लिन का एक स्तम्भ

पाट्सडैम प्रशिया का एक मुख्य नगर है और बर्लिन से १६ मील दक्षिण की दिशा में है। हावेल नदी के बीच में स्थित एक छोटे से द्वीप पर बसा होने के कारण बहुत खूबसूरत मालूम

होता है। अपनी स्थिति की ही विशेषता के कारण यह सदा से प्रशियन राजाओं का ग्रीष्म-निकेतन रहा है। आजकल यह वर्त्तमान
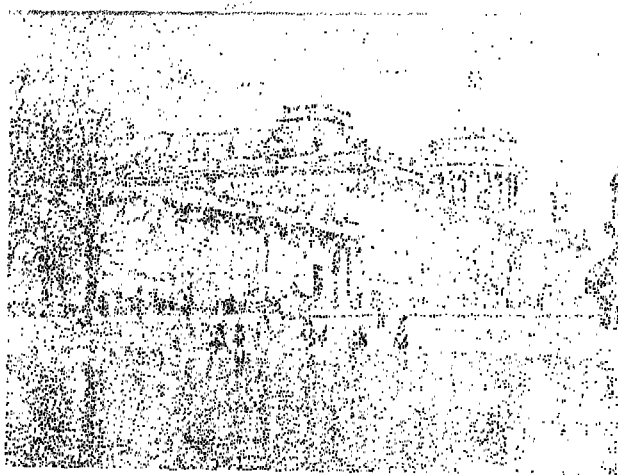
हावेल नदी पर सम्राट् का ग्रीष्म-निकेतन
और सेण्ट निकोलस का गिर्जाघर

जर्मन साम्राज्य की सेना का केन्द्र है। इस नगर की विशेष प्रसिद्धि यहाँ के राज-महलों के कारण हुई जो निस्सन्देह बड़े सुन्दर और दर्शनीय हैं। इन महलों में सन् १६१८ ई० तक प्रसिद्ध होहेनज़ोलर्न राजवंश के लोग रहते थे।

क़स्बे की बस्ती के बाहर एक बड़े पार्क में सैन्स सौसी[1] का महल है, जिसको विश्वविख्यात फ्रेडरिक-दि-ग्रेट ने बनवाया था, तथा
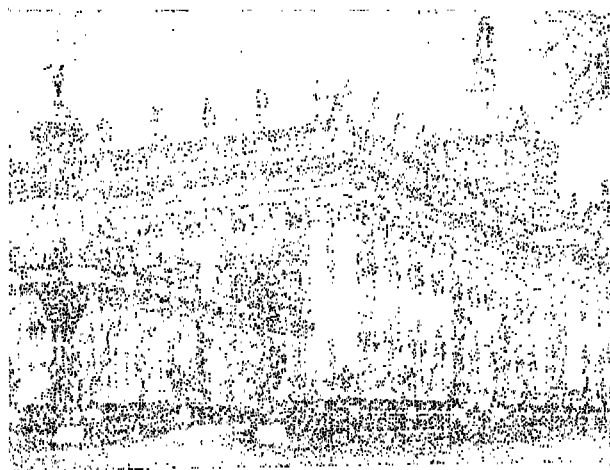
पाट्सडैम के नवीन राजमहल का एक दृश्य

उसी ने यहाँ फ्राँसीसी ढंग का पार्क भी बनवाया था। इस बहादुर की बहादुरी की याद दिलाने वाली वह कुर्सी जिस पर उसने अपने सिद्धान्त के अनुकूल हँसते-हँसते बैठे हुए (क्योंकि उसका कहना था कि मैं लेटकर नहीं मरूँगा) मृत्यु का आलिङ्गन किया था, इसी

1. Sans Souce.

महल में रक्खी है। इस मनस्वी वीर का कथन है कि मनुष्य की अन्तकाल की यातनाएँ उसकी मानसिक कमज़ोरी का परिणाम

नवीन राजमहल के निकट "कारपोरेशन" भवन

हैं। यदि मनुष्य दृढ़ चित्त हो तो वह मृत्यु-यंत्रणा से इतना भयभीत न होगा। वह सदा हँसते रहना पसन्द करता था और कहता था कि मनुष्य को अन्तकाल तक मुस्कुराता ही रहना चाहिए। सचमुच उसने जैसा कहा वैसा कर के दिखा दिया।

इस महल के मुख्य प्रवेश का कमरा जिसकी दीवारों पर,

संसार के भिन्न-भिन्न देशों से मँगवाये बहुमूल्य पत्थरों, नगीनों और क़ीमती शीशों की अनुपम जड़ाई की गई है, वास्तव में एक विचित्र
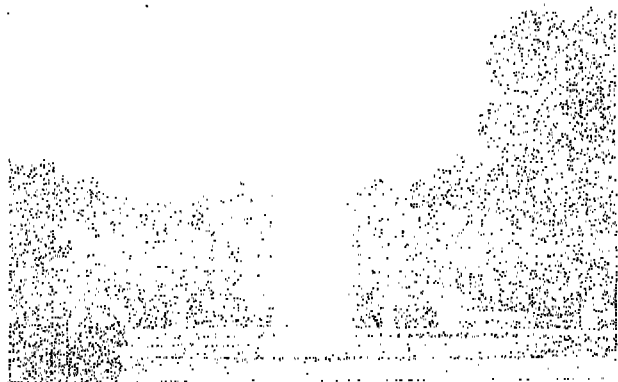
सैन्स सौसी का राजमहल तथा फ़व्वारा

कारीगरी की चीज़ है। इसके दीवारों की जङ्गलनुमा कारीगरी देखकर आश्चर्य होता है। यह कमरा २०० वर्षों तक ऊँचे दर्जे के निर्माणकला-विशेषज्ञों के परामर्शानुसार बनता रहा और सन् १८७८ ई० में बनकर तैयार हुआ था, किन्तु बहुल अंशों में यह अभी तक अपूर्ण है। फ्रेडरिक-दि-ग्रेट ने यह महल रूस की महारानी कैथराइन

द्वितीय के महल के मुक़ाबले में यह प्रमाणित करने के लिए बनवाया था कि जर्मनी का शिल्प-वैभव और वहाँ के ख़ज़ाने का
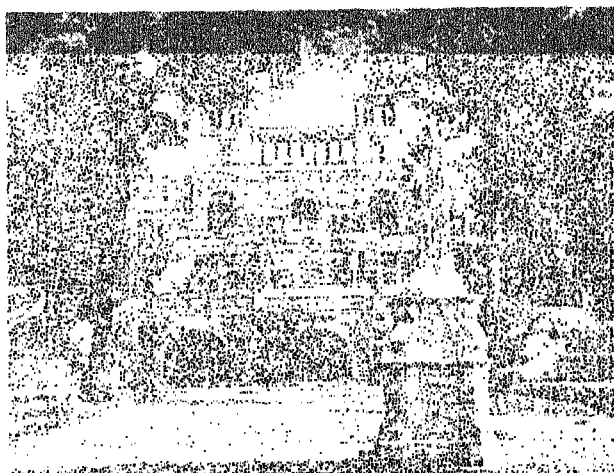
फ्रेडरिक-दि-ग्रेट का क़ब्रिस्तान

धन रूस की निर्माणकला और धन से किसी अंश में कम नहीं है। वास्तव में संसार में ये दोनों महल ही एक दूसरे से तुलना योग्य हैं, दूसरे नहीं। जिसे सन्देह हो वह इस महल को जिसकी कीर्त्ति दूर-दूर के देशों तक व्याप्त है, जाकर देखने का कष्ट करे। इस महल में सभी झाड़ फ़ानूस सोने चाँदी से मढ़े हुए हैं और

बहुत मूल्यवान हैं। इसके देखने से यह प्रत्यक्ष प्रतीत होता है कि रूसी सम्राटों के ऐश्वर्य तथा वैभव के बाद अगर कोई प्रतिभावान

सैन्स सौसी में अन्तिम सम्राज्ञी की क़ब्र

हुआ तो वह जर्मन-सम्राट् ही थे। बहुमूल्य पत्थरों का अपूर्व सङ्कलन देखते हुए यदि हम इसे पत्थरों का अजायबघर कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। सचमुच यह अपनी टक्कर का लामिसाल है और इसकी कारीगरी देखकर बनाने वाले का हाथ चूम लेने का जी चाहता है।

गैरिसन चर्च, जहाँ नेपोलियन आकर बिना कुछ छुए हुए भक्ति से सर झुकाकर चला गया था, यहीं पर है। क़ैसर की मल्का की क़ब्र भी यहीं है।

लीपज़िग

इन्हीं दिनों लीपज़िग में नुमाइश हो रही थी। यह नगर सैक्सोनी प्रान्त में, बर्लिन से १०४ मील उत्तर पश्चिम में है।

गैरिसन चर्च

लीपज़िग के बाद हमने तमाम यूरोपियन नुमायशों और मेले देखे, परन्तु मुझे यह कहने में किञ्चित संकोच

नहीं है कि व्यापार, नवीनता और मौलिकता की दृष्टि से ऐसी सुन्दर नुमायश कहीं देखने में नहीं आई। शहर के निकट ही एक बहुत बड़े मैदान में बने हुए बड़े-बड़े दालाननुमा हाल में तथा नगर की क़रीब-क़रीब सभी बड़ी इमारतों में दूकानें ही दूकानें नज़र आती हैं। मेले का 'टेकिनकल एग्ज़िबिशन' का कमरा तो बस संसार की नवीनता का अनूठा संग्रह ही समझिए। यहाँ देखने पर ऐसा मालूम होता है कि कोई दूकानदार जब तक कुछ विशेषता से पूर्ण मौलिकता का दावा नहीं करता तब तक वह यहाँ दूकान लगाने का साहस ही नहीं कर सकता। तिस पर भी यहाँ लाखों की संख्या में दूर दूर देशों से दूकानें आती हैं। 'स्टोर' के ढंग का व्यापार करने के लिए एक अनोखा अवसर मिलता है। जर्मनी का विशेष व्यापारिक नगर होने के कारण यह नगर नुमायशी बाज़ार के अतिरिक्त भी काफ़ी बड़ा और सुन्दर है।

यहाँ के अवलोकनीय स्थानों में सेण्ट-निकोलस, सेण्ट-थामस, सेण्ट-जॉन और सेण्ट-पीटर नामक गिर्जाघर विशेष महत्व के हैं। दूसरी दर्शनीय इमारत यहाँ का नगर-भवन है, जो बड़े गिर्जाघर के सामने बनी है। पुराना टाउनहाल जिसमें अब म्यूज़ियम है, देखने योग्य है। कचहरी की इमारत भी बड़ी शानदार है। और भी

बहुत से म्यूज़ियम और स्टॉक-एक्सचेञ्ज आदि नगर की शोभा बढ़ाने वाली इमारतें हैं। यहाँ का स्मारक बहुत सुन्दर है।

लीपज़िग नगर एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। यहाँ पर वीर शिरोमणि नैपोलियन के नायकत्व में फ्राँसीसी फ़ौज ने रूसी, प्रशियन तथा आस्ट्रियन फ़ौज से सन् १८१३ ई० की १६, १७ व १८वीं अक्टूबर को लगातार तीन दिन घोर युद्ध किया था, जिसमें दोनों पक्षों की गहरी हानि हुई थी। यह नगर अपने नुमायशी मेलों के अतिरिक्त पुस्तक तथा साहित्य-प्रकाशन का भी महत्वपूर्ण केन्द्र था।

यहाँ पर रोयें, काँच, रसायनिक, मशीनरी, काग़ज़, गायन सम्बन्धी और वैज्ञानिक यंत्रों का बहुत बड़ा व्यापार होता है। यह हवाई जहाज़ों का प्रधान अड्डा भी है। इसकी जनसंख्या ६,८४,७२८ थी।

म्यूनिच

समय बचाने की दृष्टि से हम यहाँ से हवाई जहाज़ द्वारा म्यूनिच गये। रास्ते में जहाज़ पर से मनोहर दृश्यों की छटा चित्त को मोहित कर रही थी। मार्ग में न्यूरिमबर्ग, जो बैवेरिया प्रान्त का एक प्रसिद्ध नगर है, जहाज़ पर से ही देख पड़ा। इस समय जर्मन नाज़ियों की पहली रैली हो रही थी, जो हवाई जहाज़ पर से देखने

में बहुत भली जान पड़ती थी। यहाँ नाज़ियों की सबसे बड़ी कांफ्रेन्स भी हो रही थी, जिसमें शरीक होने के लिए लगभग ७-८ लाख लोग आये थे। इनमें से लाखों व्यक्ति हज़ारों मील पैदल मार्च करते हुए आ रहे थे। जहाज़ पर से ये लोग एक अनोखे चित्रपट की चलती-फिरती तस्वीरों की तरह सुन्दर जान पड़ते थे। हमारा हवाई-जहाज़ यहाँ पर नीचे झुककर चलने लगा था। यहाँ की इमारतें
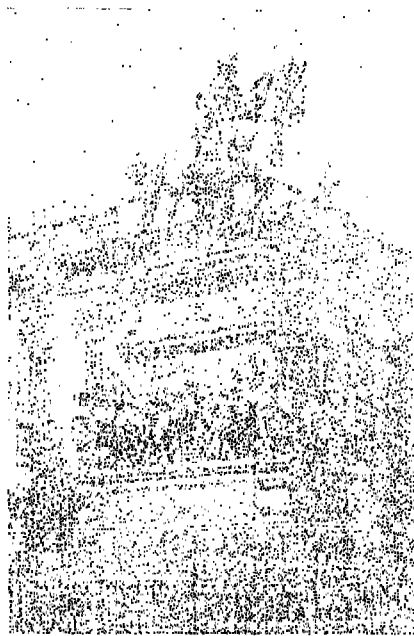
बर्लिन में फ्रेडरिक दि ग्रेट की प्रस्तर मूर्त्ति

और गिर्जे सभी बहुत विशाल और सुन्दर बनावट के जान पड़ते थे। इस नगर में एक ब्रॉडकास्टिङ्ग स्टेशन भी है। म्यूनिच की जनसंख्या ३,६३,२०२ थी।

शाम को साढ़े पाँच बजे हम म्यूनिच पहुँचे। रात को जर्मन थियेटर देखने गये।

दूसरे दिन हम विश्वविख्यात जर्मन म्यूज़ियम देखने गये। यह म्यूज़ियम बैवेरिया प्रान्त के राजमहल में बना है। अपने ढंग का यह निराला ही म्यूज़ियम है। पूरे अजायबघर की दर्शनीय वस्तुओं को ठीक से देखने के लिए कम से कम एक हफ़्ता चाहिए, परन्तु साधारण रूप से सब कुछ देखने के लिए भी कम से कम दो दिन आवश्यक हैं। इसमें अनुशीलन योग्य वस्तुओं की भिन्न भिन्न गैलरियाँ हैं, जिनमें विज्ञान सम्बन्धी अद्भुत प्रयोगों को दिखलाया जाता है। संसार की तमाम खोज और वैज्ञानिक अन्वेषण प्रारम्भिक प्रयोगों द्वारा दिखाकर विज्ञान-शिक्षा की अनोखी आयोजना है। म्यूज़ियम को ज्ञान तथा विज्ञान का एक तीर्थ स्थान ही समझिए। इञ्जिनीयरीङ्ग तथा विज्ञान के विद्यार्थियों को जो ज्ञान वर्षों तक कालेजों में पढ़ने से भी नहीं प्राप्त हो सकता, वह केवल इस म्यूज़ियम के देखने से ही हो जाता है।

इस नगर में दूसरे और भी म्यूज़ियम और गैलरियाँ हैं, जिनको समय की सुविधा होने पर देखा जा सकता है। यहाँ अक्टूबर के महीने में एक बड़ा भारी मेला लगता है। इस मेले की इमारत,

और उसी जगह पर बना बैवेरिया का स्मारक देखने योग्य है। यहाँ एक विश्वविद्यालय, एक टेकनिकल कालेज और एक सङ्गीत-विद्यालय भी है।

इस नगर का 'म्यूनिच' नाम विदेशी है। जर्मनी में इसे मुन्शियन[1] कहते हैं। /यह सन् १५४० ई० में बैवेरिया की डची की राजधानी बनाया गया था। इसकी वास्तविक उन्नति १६वीं शताब्दी में हुई, जब यह सम्पूर्ण बैवेरिया राज्य की राजधानी घोषित किया गया। यहाँ पर शराब बनाने, छपाई, फ़र्नीचर, मशीनरी तथा मोटर बनाने का व्यापार उन्नत दशा में है। यहाँ भी ब्राडकास्टिङ्ग स्टेशन है। जनसंख्या ६,८५,०३६ थी।

ड्रेस्डन

म्यूनिच से रात को नौ बजे रवाना होकर हम सुबह सात बजे ड्रेस्डन पहुँचे। यह नगर सेक्सोनी प्रान्त की राजधानी है। एल्बे नदी के दोनों ओर बसा हुआ बड़ा रमणीक नगर है और कला तथा शिक्षा सम्बन्धी विषयों का केन्द्र होने के कारण बहुत विख्यात है। यह नगर अपने सौन्दर्य के कारण जर्मनी का स्विटज़रलैण्ड कहा जाता है। यों तो सफ़ाई जर्मनी के सभी नगरों की विशेषता है,

1. Muncheon.

परन्तु इस नगर का तो कहना ही क्या है। सचमुच सुन्दर धवल इमारतों वाला यह नगर स्वच्छता के कारण एक धोया-पुछा खिलौना-सा जान पड़ा।

ड्रेस्डन दो भागों में विभाजित है, एक पुराना, दूसरा नया। दोनों ही अपने ढंग के निराले हैं। नया नगर ऊँचे सुन्दर महलों

डसेलडोर्फ़ का एक पुल

से सुशोभित नयेपन को भी मात करता है। पुराना नगर पर्वतीय प्रदेश होने के कारण प्राकृतिक स्थान है। इस प्राकृतिक भाग में

मोटर की सैर बड़ी ही मनोहर मालूम पड़ती है। यहाँ राजा के शिकार के लिए मुर्ज़हर्ट[1] नामक एक रमणीक जंगल है। इसमें एक राजमहल भी बना हुआ है। इस इमारत को एक अचम्भा और भूलभुलैयाँ कहा जा सकता है। इस छोटी सी इमारतकी सभी चीज़ें विचित्रता से भरी हैं। कहाँ आलमारी है, कहाँ दर्वाज़ा है, कहाँ कुर्सी है, कहाँ ग़ुसलखाना है, कहाँ पाइप है—कुछ भी पता नहीं
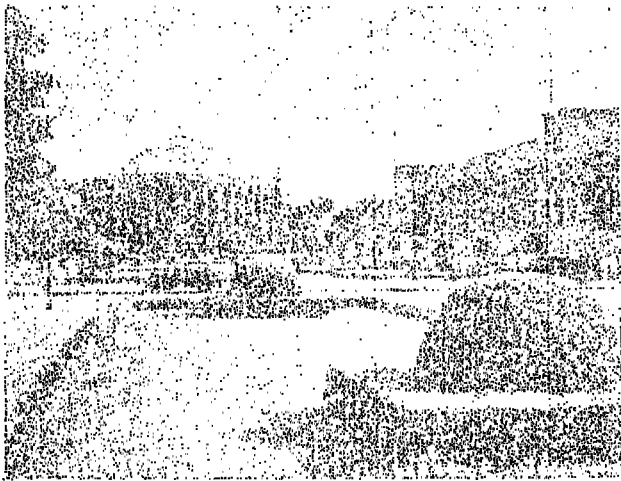
एसेलडोर्फ़ का एक दूसरा दृश्य

1. Murzhurt Forest

चलता है। इस सफ़ाई से सब चीज़ें बनाई गई हैं कि चालाक से चालाक मनुष्य भी धोखा खा जाय।

सैक्सोनी के राजा के बड़े महल में एक बहुत अच्छा अजायब-घर है। इस म्यूज़ियम में मणि, माणिक, हीरा तथा जवाहरात का एक अपूर्व सङ्कलन है। यह बहुमूल्य संग्रह लन्दन के बाद, महत्व की दृष्टि से, यूरोप में दूसरा है।

इस नगर की दर्शनीय इमारतों में जापानी महल बहुत सुन्दर

डसेलडोर्फ़ का एक और दृश्य

बना है। सार्वजनिक पुस्तकालय तथा जोहेनियम के भवनों और जापानी महल में चीनी की बनी चीज़ों का बहुत अच्छा सङ्कलन है।

यह नगर ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यहाँ नेपोलियन और आस्ट्रिया तथा रूस के बीच सन् १८१३ ई० की २६-२७वीं अगस्त को भयंकर युद्ध हुआ था, जिसमें नेपोलियन विजयी हुआ था। व्यापारिक दृष्टि से इस नगर की विशेष उन्नति १६वीं शताब्दी में हुई थी। यहाँ पर पियानो, साइकिलें, सिलाई
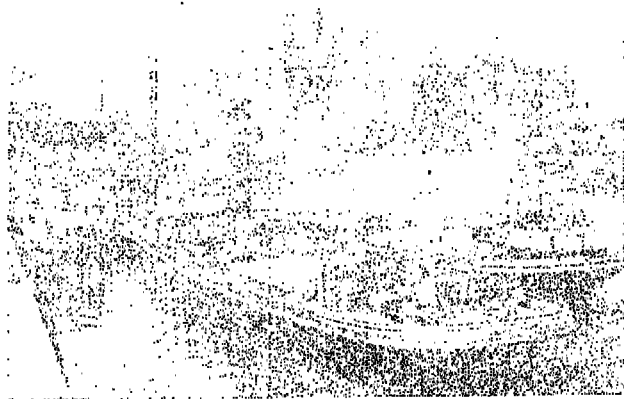
डसेलडोर्फ़ का तट

की मशीनें, बर्त्तन तथा रसायनिक वस्तुओं का व्यापार होता है। इसकी जनसंख्या ६,२५,०१६ थी।

औद्योगिक दृष्टि से डसेलडोर्फ़ बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इसके दर्शनीय स्थान बहुत ही सुन्दर तथा रोचक हैं। यह नगर बहुत तेज़ी से उन्नति करता जा रहा है।

पचीसवाँ परिच्छेद

जर्मनी (२)

जर्मनी के तीन तरफ़ स्थल और एक तरफ़ १२०० मील तक बाल्टिक सागर है। एक कोना उत्तर सागर से भी मिलता है और इसी कोने पर इसका सबसे बड़ा बन्दरगाह हैम्बर्ग है।

जर्मनी १७ प्रान्तों का संघ है। इनमें प्रशिया का विस्तार यानी १,१३,८८३ वर्गमील, सम्पूर्ण देश का क्षेत्रफल जो १,८१,७३३ वर्गमील है, के आधे से अधिक है। जर्मनी का दूसरा बड़ा प्रान्त बैवेरिया का है, जो २९,३३४ वर्गमील है। सन् १९३० ई० की जनगणना के अनुसार जर्मनी की आबादी ६,३१,८०,००० मनुष्यों की थी।

जर्मनी में ग़ल्ले की पैदावार काफ़ी होती है। मुख्य उपज गेहूँ, जौ और राई हैं। पशुओं में घोड़े, गाय, बैल, भेड़ और

सुअर आदि बहुतायत से पाले जाते हैं। जिन प्रान्तों में जलवायु काफ़ी गर्म है, वहाँ अङ्गूर की पैदावार होती है। यहाँ शक्कर के लिए आलू और बीट की भी खेती होती है। इस देश के एक चौथाई भाग में घने जङ्गल हैं, जिनसे बहुमूल्य वन-पदार्थ मिलते हैं। खनिज पदार्थों से भी यह देश बहुत सम्मृद्ध है, जिनमें से कोयला, लोहा, पोटाश और ताँबा विशेष महत्व के हैं। समुद्र-तट पर मछलियाँ भी पाई जाती हैं, और मछली का व्यापार भी खूब होता है। कोयले की खानों के पास यानी वेस्टफ़ेलिया और साईलेशिया में बड़े-बड़े कारखाने हैं। सैक्सोनी भी एक बड़ा व्यापारिक केन्द्र है, जहाँ विशेषकर टेक्सटाइल का काम होता है। लोअर राइनलैण्ड, रूर की घाटी और बर्लिन के चारों ओर भी टेक्सटाइल का काम काफ़ी मात्रा में होता है। जर्मनी का रेलवे सिस्टम सरकार के द्वारा ही सञ्चालित होता है। नहरों द्वारा भी काफ़ी व्यापार होता है।

यहाँ का सिक्का मार्क है जिसका मूल्य लड़ाई के अवसर पर बहुत गिर गया था, यहाँ तक कि कोई इसे काग़ज़ के भाव भी नहीं पूछता था। सन् १९२४ ई० में सिक्के के भाव का पुनः सोने के भाव से सम्बन्ध जोड़ा गया। इसका सन् १९३२ ई० में मूल्य एक शिलिङ्ग से कुछ ही कम था। यहाँ का प्रधान बैङ्क सरकारी है,

जिसका नाम रिख्स बैंक है। यह नोट छापता है और देश में सिक्के की प्रणाली निर्धारित-नियंत्रित करता है।

१६वीं शताब्दी के पूर्व, 'राज्य' की आधुनिक परिभाषा के अनुसार जर्मनी का अस्तित्व ही नहीं था। सैकड़ों छोटी-छोटी बस्तियाँ पवित्र रोमन साम्राज्य से सम्बन्धित थीं। इनमें कुल मिलाकर, तीन सौ राजा अलग-अलग राज्य करते थे। सन् १८०६ ई० में नैपोलियन ने इन सब राज्यों को फ़ान्स के क़ब्ज़े में कर लिया और फ़ान्सीसियों के ही प्रभाव में उत्तरीय जर्मन सङ्गठन की स्थापना हुई जिसमें कुल ३५ स्टेट शामिल हुए और प्रशिया इन सब का मुखिया चुना गया। आस्ट्रिया और प्रशिया में प्राचीन वैमनस्य चला आ रहा था, जिस वैर का अन्त एक भयङ्कर युद्ध के बाद सन् १८६६ ई० में, सेडोवा में प्रशिया की विजय के बाद हुआ। सन् १८७०-७१ ई० में प्रशिया और फ़ान्स में युद्ध छिड़ गया जिसके फल-स्वरूप समूचे जर्मनी का सङ्गठन फिर से हुआ और प्रशिया का राजा सम्पूर्ण जर्मनी का महाराजा घोषित कर दिया गया। इसके पश्चात् देश के व्यापार ने उन्नति की, कुछ उपनिवेश राज्य में मिलाये गये और जर्मनी, आस्ट्रिया और इटली में परस्पर मैत्री स्थापित हुई। यह त्रिदेशीय मैत्री महायुद्धकाल तक दृढ़ बनी रही, परन्तु युद्ध के थोड़े ही दिनों पहले टूट गई। महायुद्ध में जर्मनी की बड़ी भारी हानि हुई और

अन्त में उसे सन्धि के लिए विवश होना पड़ा, जिसमें उसके कई प्रदेश और सभी उपनिवेश छिन गये तथा एक बहुत बड़ा ऋण-भार उसके माथे लाद दिया गया। जर्मनी के राज्य से कुल क़रीब क़रीब २७,००० वर्गमील भूमि तथा ७०,००,००७ जनसंख्या निकल गयी।

महायुद्ध के बाद जर्मनी से राज्य-सत्ता का लोप और असली संगठित प्रजातन्त्र का उदय हुआ। उस समय देश की दशा बड़ी ही दरिद्र तथा कठिनाइयों से भरी थी। युद्ध के परिणाम-स्वरूप आर्थिक दुर्दशा, भोजन सामग्री की कमी, सिक्के पर अविश्वास, महँगी आदि हज़ारों विपत्तियाँ पराजित जर्मनी का गला कस रहीं थीं। जगह-जगह उपद्रव हो रहे थे और सोशलिस्ट पार्टी ज़ोर पकड़ रही थी। इसलिए नये स्थापित प्रजातन्त्र की परिस्थिति बड़ी शोचनीय थी। यह अशान्ति सन् १९२३ ई० तक जारी रही, जब केन्द्रीय दल ने स्ट्रेस्मैन के नायकत्व में एक मन्त्रिमण्डल की स्थापना की। इन लोगों ने देश की दशा में काफ़ी उन्नति की। सिक्के का भाव सोने के परिमाण पर स्थापित किया, नई करेन्सी और नये बैंक आफ़ इशू[1] का निर्माण किया, व्यापार के पुनर्निर्माण की

1. Bank of Issue.

योजना की और राजकीय आय-व्यय का सुधार किया। बजट बराबर करने के लिए कड़े नियम बनाये गये, नये टैक्स लगाये गये और तनख्वाहों में कमी की गई तथा सैकड़ों लोग नौकरी से अलग कर दिये गये।

देश की दशा में बहुत कुछ सुधार सन् १९२४ ई० के डैविस प्लान की योजना स्वीकार करने से हुआ। इसी समय व्यापारिक पुनर्निर्माण के लिए जर्मनी ने ८०,००,००,००० स्वर्ण मार्क्स का एक विदेशी ऋण लिया। इस प्रकार देश की दशा बहुत कुछ सुधर चली। नये मन्त्रिमण्डल ने लोकार्नो के सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर किया तथा राष्ट्र-संघ में प्रवेश किया।

स्ट्रेसमैन की नीति द्वारा देश का बहुत कुछ सुधार हुआ था, इसलिए उसके बाद उसके उत्तराधिकारियों ने भी उसी नीति का पालन किया, विशेषकर डाक्टर ब्रूनिङ्ग जो सन् १९३० ई० से १९३२ तक जर्मन चान्सलर थे। महायुद्ध का प्रभाव अभी नष्ट हो ही पाया था, इसी समय सांसारिक अर्थ संकट ने उग्र रूप धारण किया। जर्मनी इस आर्थिक संकट का उद्गम स्थान था। सन् १९३२ ई० में फिर बड़ी गड़बड़ी उठी। इस वर्ष के चुनाव में नाज़ी लोगों के वोट सब से अधिक पड़े। इन लोगों का शक्तिमान नेता एडोल्फ़ हिटलर था, जो सन् १९३३ ई० में चान्सलर चुन लिया गया। इसने एक

मंत्रिमण्डल बना कर राष्ट्र की बागडोर अपने हाथ में ली और पूर्णतया जर्मनी का भाग्य विधाता यानी डिक्टेटर बन बैठा। इस नई आयोजना का मुख्य उद्देश्य यहूदियों, सोशलिस्टों और कम्यूनिस्टों को दबा कर शान्ति स्थापित करना था।

जब हम पहली बार जर्मनी गये थे, वहाँ उस समय नाज़ियों का बोलबाला शुरू हुआ था। देश "नाज़ीमय" हो रहा था। हर एक गली, सड़क, कोने और कूचे में स्वयंसेवक मुस्तैद नज़र आते थे। न्यूरेम्बर्ग को जाते हुए हज़ारों की संख्या में नाज़ियों के जत्थे बैण्ड बाजे के साथ देख पड़ते थे। भिन्न-भिन्न प्रान्तों के नगरों से यह जत्थे सैकड़ों मील पैदल मार्च करते न्यूरेम्बर्ग काँफ्रेन्स में शामिल होने के लिए जा रहे थे। उन दिनों छः लाख से अधिक जर्मन नाज़ियों के दल के लोग इस नगर में एकत्रित हुए थे।

आज जर्मनी के सभी भवनों तथा अट्टालिकाओं पर जहाँ क़ौमी झण्डा देख पड़ता है, वहाँ साथ ही नाज़ियों का झण्डा भी नज़र आता है। प्रत्येक व्यक्ति की पोशाक नाज़ियों के फ़ैशन के ढंग की ही देख पड़ती है। प्रत्येक व्यक्ति नाज़ियों का स्वस्ति चिह्न (卐) वाला तमग़ा लगाये हुए है। घरों के द्वार पर भी यही स्वस्ति चिह्न अनिवार्य रूप से पाया जाता है। नाज़ियों का

अभिनन्दन तो सर्वव्यापी सा हो गया है। एक साल का छोटा बच्चा भी नाज़ियों के ढंग से सलाम करना जानता है। सचमुच उस समय जर्मनी में हिटलर की सर्वतोमुखी प्रतिभा चारों ओर व्याप्त हो रही थी।

सन् १९३८ ई० में दूसरी बार जब मैं जर्मनी गया तो मुझे जहाँ यह देखकर दुःख हुआ कि इस महादेश में राजनैतिक स्वतंत्रता अथवा व्यक्तिगत स्वाधीनता का लोप हो गया है, वहीं हिटलर की अद्भुत्-प्रतिभा द्वारा जर्मनी की काया-पलट देखकर आश्चर्य भी हुआ। जनता में एक नवीन ऐश्वर्य, उत्साह, आत्मविश्वास तथा चेतना जाग्रत हो गई थी—और स्यात् हिटलर की यही सबसे बड़ी सफलता थी। आज हर फ़ैक्टरी और घूमने-फिरने के स्थानों में क्राइस्ट की फ़ोटो के साथ हिटलर की फ़ोटो टाँगी जाती है। जर्मनों का वह बादशाह तथा नेता सब कुछ है। चिट्ठियों के अन्त में भी 'हेल हिटलर' लिखा जाता है। कोई व्यक्ति एकान्त में बैठ कर भी हिटलर के ख़िलाफ़ कुछ सोच नहीं सकता। व्यक्तिगत स्वाधीनता तथा प्रजातंत्रवाद का जर्मनी से निर्वासन हो गया है। निरंकुश शासन इसी को कहते हैं।

छब्बीसवाँ परिच्छेद

जर्मनी (३)

हिटलर का जर्मनी में जो अभूतपूर्व स्वागत हुआ उसका कारण था। इसके लिए जर्मनी की समस्याओं को जानना ज़रूरी है। मैं यह पूर्ण निश्चय के साथ कह सकता हूँ कि जर्मन-जाति संसार की एक श्रेष्ठ जाति है। जर्मनों ने अपनी बहादुरी, एकता तथा साहस की परीक्षा महासमर में काफ़ी दी थी। जर्मनी के सिवाय संसार में कौन ऐसी शक्ति थी जो समूचे विश्व को युद्ध की चुनौती दे कर सफलता के साथ चार वर्ष तक लगातार भयंकर युद्ध को क़ायम रख सकती। जिन्होंने गत् महायुद्ध के इतिहास का अध्ययन किया है, वे जानते हैं कि जर्मनी इन चार वर्षों तक केवल आत्मरक्षा ही नहीं वरन् स्वयं आक्रमण करता रहा। तीन वर्षों के नाशकारी द्वन्द्व की शिथिलता के बाद भी, जिस समय अमेरिका जैसी महाबलवती नवीन शक्ति को पाकर विपक्षी और भी प्रबल हो

उठे थे, जर्मनी ने काफ़ी साहस से युद्ध किया था। यह सही है कि अन्त में जर्मनी हार गया, जो विश्व की तमाम दृढ़ शक्तियों के विरुद्ध होने के कारण पहले से निश्चित-सा था। परन्तु जर्मनी के इस हार से भी जर्मनी की प्रतिष्ठा बढ़ी, घटी नहीं। मेरी दृष्टि में यदि कोई जाति मिट कर भी इतनी श्रेष्ठता पा सके तो यह कीर्त्ति बहुत महँगी नहीं कही जा सकती।

अन्ततोगत्वा परिणाम क्या हुआ? इस समय आवश्यकता थी उस भावना की जो इस शौर्य्य तथा वीरता की भूरि-भूरि प्रशंसा करती, और उस जाति को संसार के उन्नत समाजों में प्रतिष्ठा योग्य आसन दे कर सम्मानित किया जाता, पर हुआ इसके ठीक विपरीत। फ्रान्स के लिए जर्मनी का अस्तित्व ही एक खतरे की बात थी। सन्धि में आये हुए फ्रेञ्च डेपुटेशन का नेता विख्यात कूटनीतिज्ञ जाजेफ़ क्लिमेन्शू था, जिसकी कुटिलता को मूर्त्तिमान् करने के लिए लोग उसे चीते के नाम से सम्बोधित करते थे। इसकी कूटनीति के आगे किसी एक की भी न चली और अमरीका के प्रतिनिधि उडरो विल्सन के विरोध पर भी जर्मनी के साथ न्याय न किया गया। क्लिमेंशू का मुख्य उद्देश्य था फ्रान्स को लाभ पहुँचा कर उसे दृढ़ बनाना और जर्मनी को इतना कुचलना कि वह नेस्त-नाबूद हो जाय या आगे कभी उठने लायक़ न रह सके। उसकी

इस स्वार्थपरता पर अमरीकन प्रतिनिधि उडरो विल्सन कई बार चिढ़ उठे, परन्तु अन्त में क्लिमेन्शू ने उन तमाम शर्तों को, जिनके द्वारा जर्मनी को पूर्णतया कुचल कर मिटाया जा सकता था, मनवा ही लिया।

हारे हुए जर्मनी की ८७,००० किलोमीटर क्षेत्रफल भूमि तथा ७०,००,००० जनसंख्या वाला यूरोप का एक महान अंश उसके राज्य से निकाल लिया गया। लाभ का वास्तविक भोक्ता फ्रान्स रहा। फ्रान्स उस समय दूसरे देशों की निर्बलता से लाभ उठा यूरोप की सब से बड़ी शक्ति बन बैठा। परिस्थितियों के वशीभूत पिञ्जरबद्ध जर्मन सिंह को बन्दर की तरह खेल खेलना पड़ा। इङ्गलैण्ड को छोड़ कर शेष दूसरे देशों को जो कुछ मिला, वह विशेष महत्वपूर्ण नहीं कहा जा सकता। इस बँटवारे में इटली को जितना पहले निश्चय हो चुका था उतना न मिलने के कारण असन्तोष ही रहा और इसी कारण वह फ्रान्स का बैरी भी हो गया। हारे हुए जर्मनी को तो कुछ कहने का अधिकार भी नहीं था। सन्धिपत्र जिसमें ४४० परिच्छेद थे, मित्र राष्ट्रों द्वारा बनाया गया था। जर्मनी को सिवाय हामी भरने तथा मूक अनुमोदन करने के "परन्तु" शब्द उच्चारण करने का भी अधिकार नहीं था। उसकी दशा तो उस

समय इतनी दयनीय हो रही थी कि उसका वास्तविक अस्तित्व ही भयङ्कर गर्त में पड़ा हुआ था।

जर्मनी की बाहरी समस्याओं में इस प्रकार चक्र चल ही रहे थे, उधर इस देश की आन्तरिक परिस्थिति इतनी विकट हो रही रही थी कि सर्वनाश ही शेष था। युद्ध में अमरीका के विपक्ष में शरीक होने के समय से ही जर्मनी की दशा इतनी शोचनीय हो गई कि वहाँ के लोगों को पेट भर भोजन असम्भव हो गया। चारों ओर से रसद आने का मार्ग वैरियों द्वारा रोक दिया जाने के कारण कहीं कहीं तो घास और पत्ते खाकर ही अपने प्राण-रक्षा की नौबत आ गई थी। काग़ज़ के कपड़े तो महासमर के छिड़ने के दो वर्ष बाद ही पहनना आरम्भ हो गया था। सैकड़ों बच्चे भूखी माँ के रक्तहीन स्तनों में दूध न होने के कारण कमज़ोर और बीमार हो कर मर गये। हज़ारों जानें केवल यथेष्ट भोजन न मिलने के कारण तड़प-तड़प कर इस महासमर की भेंट चढ़ गईं। देश का श्रेष्ठ चुना हुआ अंश जो भावी समाज का आधार रूप था, इस समर में नष्ट होकर लुप्त हो गया। पन्द्रह साल तक के हज़ारों बच्चों के, जिनके अभी पूरे दूध के दाँत भी नहीं गिरे थे, और जिनको आत्मरक्षा करने तक की योग्यता नहीं थी, इस भयङ्कर नर-हत्या

काण्ड वाले घोर संग्राम में लड़ने के लिए सब से आगे की क़तार में खड़े किये जाने की नौबत आ गई थी।

इस भयंकर नाशलीला के पश्चात् वार्साई की सन्धि हुई। जर्मनी इतने बड़े ऋण-भार से दब गया कि जन्म जन्मान्तर में भी उसके उठने की आशा न थी।

महासमर के बाद सन्धि का वही सुअवसर था कि जर्मन जाति के साथ न्याय किया जाता परन्तु ऐसा न हुआ। उसी का यह फल है कि आज जर्मनी में हिटलर का निरंकुश शासन है।

सत्ताईसवाँ परिच्छेद

ज़ेकोस्लोवाकिया

मेरी यात्रा का अत्यधिक रोचक भाग समाप्त हो चुका था। किन्तु, अभी यूरोप में ही बहुत कुछ घूमना बाक़ी था। अब मुझे दक्षिण यूरोप में प्रवेश करना था। ड्रेसडन से मैं ज़ेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्रेग के लिए रवाना हुआ। ट्रेन से यात्रा करने में बहुत ही अनोखे दृश्यों का आनन्द प्राप्त होता है। मैं तो हरएक यात्री को सलाह दूँगा कि वह यह यात्रा दिन में ही करे। मनोरम पहाड़ी के दक्षिण पार्श्व में, मण्डलाकार नदी के किनारे-किनारे रेलवे लाइन चली गई है और कभी-कभी ऐसा मालूम होता है कि रावलपिण्डी से श्रीनगर जा रहे हैं। कहीं-कहीं पर जम्बू से श्रीनगर का भी दृश्य नेत्रों के सामने खिंच जाता है।

इस नगर की स्वतंत्रता का प्रारम्भ विगत महायुद्ध की समाप्ति

से होता है। ८०० वर्ष तक यह हंगेरियन और ३०० वर्ष तक आस्ट्रियन साम्राज्य का अंग था। भारतीय दृष्टिकोण से यहाँ एक और मार्के की बात मालूम होती है—शासक अपनी सत्ता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए किस प्रकार सम्प्रदायवाद से लाभ उठा सकता है तथा इस दुष्ट साम्प्रदायिकता से किस प्रकार कोई नगर रक्त-रञ्जित हो सकता है! सर्व-क्रोट-ज़ेक-जर्मन आदि जातियों के इस नगर में कभी एका नहीं रहा। अधिकार तथा प्रभुत्व के लिए निरंतर संघर्ष चलता रहा। दर्शनीय स्थानों में यह दिखलाया जाता है कि अमुक स्थान पर इतने जर्मन गोली से उड़ाये गये, अमुक वृक्ष पर इतने कटे सर टाँगे गये, अमुक स्थान पर इतने पादरी मारे या जलाये गये। नगर में रोमन कैथोलिक तथा प्रोटेस्टेण्ट मतावलम्बी ईसाइयों के भी झगड़े कम नहीं होते थे और उनकी कहानी भी काफ़ी करुण और मर्मांतक है। यहाँ पर "भग्न हृदया" बूढ़ी के मकान की दीवार पर यदि १२ पुरुष टूटे हृदय के साथ लटकते नज़र आयेंगे तो रसायन द्वारा सोना बनाने की धुन में एक सम्राट द्वारा बसाई हुई कारीगरों की बस्ती 'गोल्डेन लेन' नामक कारीगरों का तीर्थ भी नज़र आयेगा।

नगर का प्राचीन भाग बिलकुल भारतीय ढाँचे का मालूम होता है। नया भाग सुन्दर, उन्नत तथा पूर्णतः पश्चिमीय ढंग का

। प्रेग ज़ेकोस्लोवाकिया की राजधानी है। जिन दिनों मैं यात्रा कर रहा था ज़ेक प्रजातंत्र बहुत उन्नति कर रहा था। साम्प्रदायिक
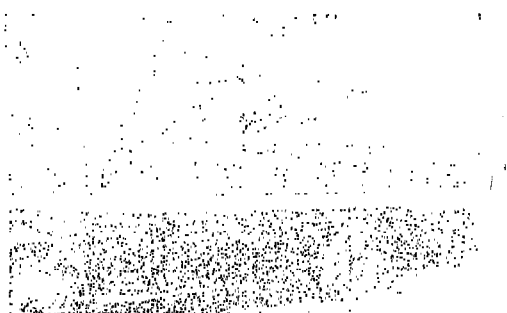
प्रेग में मुसाफ़िर गाड़ी

झगड़े भी बहुत कम हो गये थे। केवल जर्मन-सरकार द्वारा प्रोत्साहित "जर्मनवाद" ज़ोर पकड़ रहा था। देश का व्यवसाय भी काफ़ी उन्नति पर था। यहाँ का स्कोडा का कारख़ाना उद्योग-व्यवसाय का एक दुर्ग है और अनोखी चीज़ है। इसे देखने से ज्ञात होता है कि उचित औद्योगिक संघटन से कितना महान कार्य हो सकता है।

ज़ेकोस्लोवाकिया कृषि-प्रधान देश है। अब यह उद्योग-प्रधान भी हो रहा है। लोहा, फ़ौलाद, शीशा, यन्त्र इत्यादि का काम बहुत बढ़ रहा है।

प्रेग की आबादी लगभग आठ लाख पचास हज़ार थी। दर्शनीय स्थानों में प्राचीन राजभवन (अब ज़ेक प्रजातन्त्र के अध्यक्ष का वास-स्थान) तथा टाउन हॉल उल्लेखनीय हैं। प्रेग घूमने के लिए एक दिन पर्याप्त है। यहाँ से मैं ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना के लिए रवाना हो गया।

अट्ठाइसवाँ परिच्छेद

आस्ट्रिया

प्रेग से वियना के लिए लगभग एक घण्टे का ही मार्ग तय करना पड़ता है। पूज्य श्री बिट्ठलभाई की यहाँ पर मृत्यु के बाद हम भारतीय इस नगर से और भी अधिक परिचित हो गये हैं। भारत के अनेक आदरणीय नेता, जिनमें श्री सुभाषचन्द्र बोस का नाम उल्लेखनीय है, यहीं रह कर चिकित्सा द्वारा स्वास्थ्य-लाभ कर सके हैं। यहाँ के मेडिकल कालेज तथा औषधालयों और अस्पतालों में शिक्षा तथा अनुभव प्राप्त कर हज़ारों भारतीय अपने देश की सेवा कर रहे हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह नगर बहुत ही अच्छा है—यद्यपि मध्यम युग में यह बीमारियों का केन्द्र था। आस्ट्रिया के अस्पताल तथा चिकित्सक जगत्-प्रसिद्ध हैं और बड़े दूर-दूर से लोग हर प्रकार के रोगों का इलाज कराने के लिए यहाँ आते हैं। इनके

द्वारा सरकार को भी काफ़ी आमदनी है। "यात्रियों" के व्यवसाय से आस्ट्रिया तथा स्विट्ज़रलैण्ड ऐसे देश काफ़ी धन उपार्जन करते हैं।

प्राचीन रोमन साम्राज्य की राजधानी वियना बहुत ही प्रसिद्ध तथा ऐतिहासिक स्थान है। इस नगर ने जितने नरेशों का अभिषेक, उत्थान तथा पतन देखा होगा, उतना विरले ही नगरों के भाग्य में रहा होगा। सम्राटों की विलास-क्रीड़ा, लालसा, कामना तथा महत्वाकांक्षा की यह उर्वर भूमि वीरता तथा शौर्य्य की भी
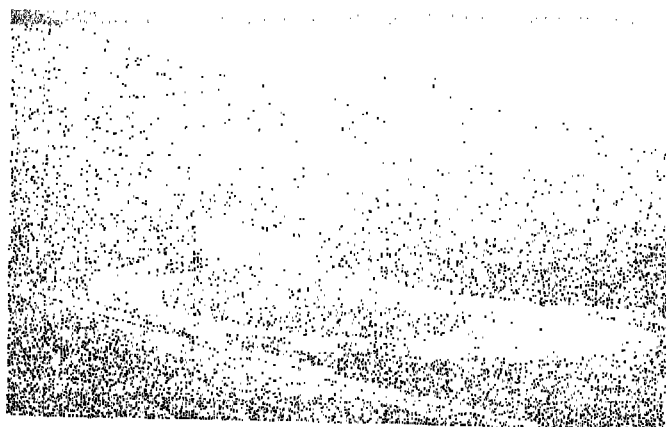
वियना—कालेनबर्ग

क्रीड़ा-भूमि है। यही वह नगर है जहाँ से सदियों तक यूरोप के भाग्य का निर्णय और निर्माण हुआ करता था।

शहर में प्रवेश करते ही ऐसा मालूम होता है मानो किसी बड़े राजभवन के फाटक पर आ खड़े हुए हैं। समूचा शहर आली-

वियना के सम्राट् का भवन
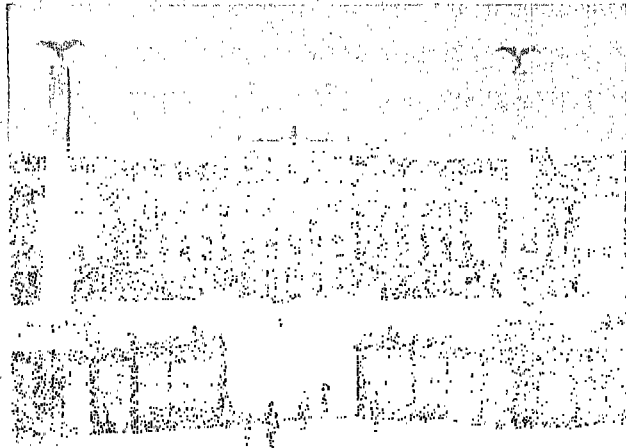
शान इमारतों तथा उच्च अट्टालिकाओं से भरा पड़ा है। चौड़ी सड़कें, सैकड़ों गिर्जाघर, संसार का सर्व-श्रेष्ठ नाट्य-भवन (ऑपेरा हाउस), अनेक प्रकार के अजायबघर, सुन्दर सरकारी इमारतें,

जगह-जगह पर साफ़-सुथरे पार्क—ऐसा मालूम होता है कि किसी कुशल चित्रकार ने अपनी कल्पना को सजीव कर दिया है।

यूरोप में लेनिनग्रैड के बाद यही शहर है जो इतना वैभव-विलासपूर्ण प्रतीत होता है। लेनिनग्रैड तथा वियना के देखने के बाद यह प्रकट हो जाता है कि साम्राज्यशाही में नगरों की सजावट के लिए कितनी शक्ति व्यय की जाती थी और जनता का शोषण कर सम्राट् अपने निवास-स्थान को किस प्रकार 'सुनहला' कर देता था। इङ्गलैण्ड और जर्मनी जाने पर तो यह अनुभव होता है कि
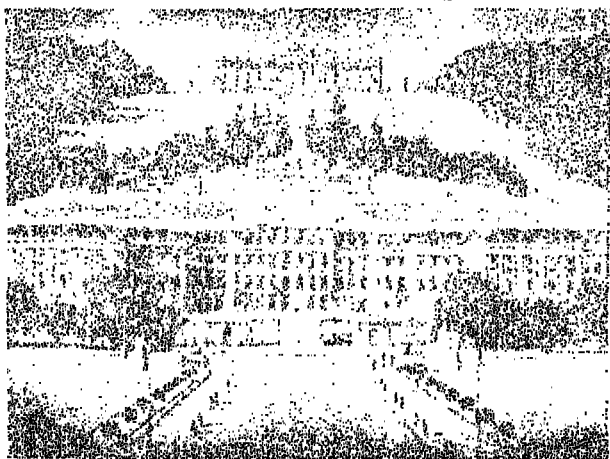
वियना के राजभवन का दूसरा दृश्य

वहाँ के शासक किस तत्परता और लगन के साथ अपने राष्ट्र के उत्थान के लिए प्रयत्नशील होते थे और हैं। स्यात्, इसी विलास-प्रियता की पराकाष्ठा के कारण रूसी और ऑस्ट्रियन साम्राज्य ज़रा से झोंके से हवा में उड़ गये। पर, जर्मनी या इङ्गलैण्ड सदैव अविचल रहे।

यहाँ के दर्शनीय स्थानों की सूची कहाँ तक गिनाई जाय। शरद्-ऋतु-भवन, पार्लियामेण्ट भवन, युद्ध-दफ़्तर, ग्रीष्म-भवन इत्यादि इमारतें दर्शनीय हैं। ग्रीष्म-भवन का उद्यान बहुत ही सुरम्य तथा मोहक है। यहीं पर राजकुमार फ़र्डिनेण्ड का भवन है जो सर्बिया में क़त्ल किया गया था। इस राजकुमार की हत्या १८ वर्ष के एक नवयुवक हंगेरियन विद्यार्थी ने की थी। "युद्ध के सामान वाले" अजायबघर में फ़र्डिनेण्ड के वे कपड़े, जिनको वह मारे जाने के समय पहने हुए था, तथा वह मोटर जिस पर वह बैठा हुआ था—बहुत ही सुरक्षित रखे हुए हैं। यह अजायबघर एक दर्शनीय स्थान है। यहाँ पर बहुत काम की चीज़ों का ज्ञान होता है। यहीं पर तुर्की तथा नेपोलियन युग के युद्धों के बहुमूल्य संस्मरण भी संकलित हैं।

वियना में कुल मिला कर २१८ ईसाई तथा १५० यहूदी गिर्जा-घर हैं। नगर का रात्रि का जीवन और आमोद-प्रियता के लिए

"ऑपेरा हाउस" संसार-प्रसिद्ध है। नृत्यकला बहुत ऊँचे दर्जे की है। नगर को देखने से ही यह पता चलता है कि किसी समय यह
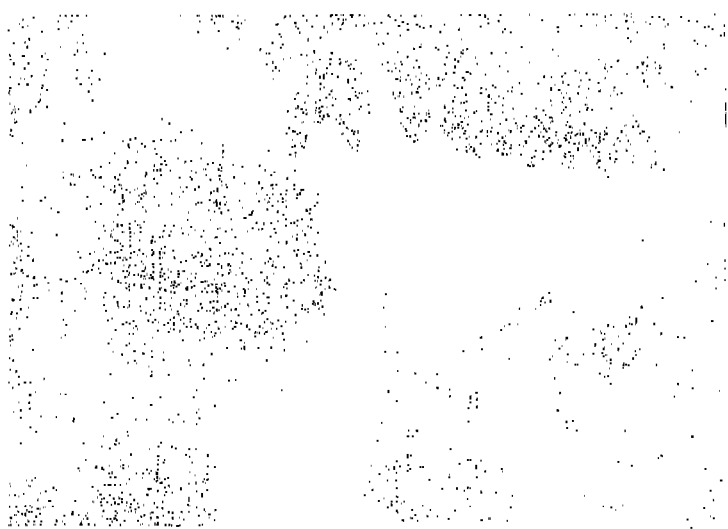
आस्ट्रिया के राजकुमार आर्कड्यूक फर्डिनेण्ड की २८ जून १९१४ को साराजेवो में हत्या हुई थी। मारे जाने के पूर्व जिस मोटर से उन्होंने यात्रा की थी, उसी पर बैठे हुए उनका जो चित्र लिया गया था, उसी की यह नकल है। इसी हत्या के बाद महासमर की आग भड़क उठी।

एक महान राज्य की राजधानी रहा होगा। विगत महायुद्ध के बाद इस आस्ट्रियन राज्य के चार टुकड़े कर दिये गये थे। वर्त्तमान आस्ट्रिया एक छोटा-सा देश है जिसकी आबादी केवल अस्सी लाख है तथा जिसकी मुख्य आय यात्रियों द्वारा ही होती है। पहले आस्ट्रियन-राज्य की जनसंख्या सात करोड़ थी।

वियना की जनसंख्या लगभग २० लाख है और यहाँ पर आस्ट्रियनों का ही बाहुल्य था। नगर २१ ज़िलों में विभाजित है और यहाँ का म्युनिसिपल शासन बहुत ऊँचे दर्जे का है। वियना की मज़दूर बस्ती तथा नया सेटेलमेण्ट---अध्ययन-योग्य स्थान है। फिर भी, नगरवासियों के चेहरे से वह वैभव तथा नागरिकों के रहन-सहन में वह "ऊँचा जीवन" नहीं दिखाई पड़ता, जिसकी आशा की जाती है। रात्रि को बिजली से जगमगाते नगर में ऐसा मालूम होता है जैसे दिन हो। फिर भी, १० बजे रात्रि के बाद नगर सुनसान हो जाता है। पूरी तरह से नगर घूमने के लिए कम से कम तीन दिन चाहिए।

उन्तीसवाँ परिच्छेद

बुडापेस्ट

वियना से हवाई जहाज़ द्वारा हम बुडापेस्ट पहुँचे। यह हंगरी की राजधानी है। सन् १६१४ के पहले यह आस्ट्रियन साम्राज्य में शामिल था। लगभग १५० वर्ष तक इस पर तुर्कों का आधिपत्य था इसी कारण अब तक नगर पर तुर्की-सभ्यता तथा तुर्की संस्कृति की छाप लगी हुई है। बुडापेस्ट बहुत साफ़-सुथरा नगर है और यहाँ पर भी बहुत मशहूर चिकित्सक तथा अस्पताल हैं। हंगरी कृषि-प्रधान देश है। अतः यहाँ पश्चिमी सभ्यता पूरा अधिकार नहीं जमा सकी है और हंगेरियनों में भारतीयों के समान सादगी नज़र आती है।

पहले हंगरी की जनसंख्या २ करोड़ १० लाख थी। सन् १६१६ की सन्धि के बाद राज्य के टुकड़े कर दिये गये और कुछ भाग

ज़ेकोस्लोवाकिया को और कुछ रुमानिया को दे दिये गये। अब आबादी केवल ८० लाख ही है। पर, राष्ट्र के इस अंग-भंग से हंगेरियन बहुत दुःखी हैं और नाके-नाके पर देश को इसकी याद दिलाने के लिए स्थायी साधन एकत्रित हैं। कहीं काला झण्डा फहरा रहा है तो कहीं हरे नक़्शे टंगे हैं जिनमें अंगच्छेद दिखाया गया है। कहीं पर हंगरी की बिलखती प्रस्तर-मूर्त्ति खड़ी है। हंगेरियन पार्लामेण्ट के अपर-हाउस (सरदारों की सभा) के भवन में तब तक रात्रि को बत्तियाँ न जलाने का निश्चय किया गया है जब तक हंगरी के साथ किया गया अन्याय न दूर हो जाय।

बुडापेस्ट दो भागों में विभाजित है। एक का नाम है बुडा

बुडापेस्ट का एलिज़ेबेथ पुल

और दूसरे का पेस्ट। बीच में से डेन्यूब नदी बहती है जिस पर सुन्दर पुल बनाकर दोनों हिस्से जोड़ दिये गये हैं।

बुडापेस्ट का राज-भवन तथा साँकलवाला पुल
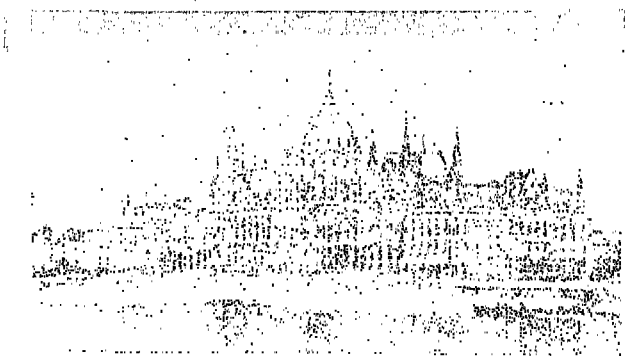
बुडापेस्ट का पार्लमेण्ट भवन

दर्शनीय स्थानों में पार्लमिएट भवन, राजमहल, प्राचीन
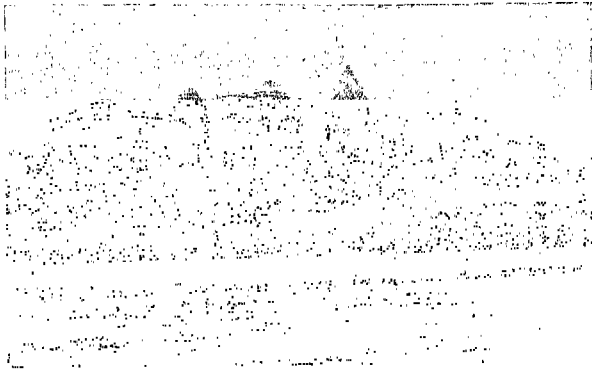
बुडापेस्ट का शाही महल

बुडापेस्ट का "फ्रीडम-पैलेस"—स्वतंत्रता का चिह्न

दुर्ग (सिटाडेल), सेण्ट मार्गरेट टापू, मिलेनियम स्कायर आदि उल्लेखनीय हैं। नगर भर में "स्नानागार" (बाथ) भरे पड़े हैं जिनमें सेण्ट गिलबर्ट बाथ संसार में निराला है। इसके खुले हुए स्नानागार में बिजली द्वारा ऐसी अच्छी लहरें पानी में पैदा होती हैं कि समुद्र में स्नान का आनन्द आता है।

रूमानिया, बल्गेरिया, यूनान आदि जाने के लिए यहीं से इटली के लिए रवाना हो जाना चाहिए। किन्तु, मेरे पास तो हवाई जहाज़ का वापसी टिकट था इसलिए मैं वियना वापस गया और वहाँ से इटली के लिए रवाना हो गया।

तीसवाँ परिच्छेद

इटली

वेनिस

दूसरे दिन मैं वेनिस पहुँचने वाला था। कवियों के वर्णन में प्रथम स्थान पाने वाले इस प्राचीन नगर को देखने के लिए मैं लालायित हो रहा था। इसी नगर के अंग-प्रत्यंग में रोमन सभ्यता, रोमन शिष्टता तथा रोमन-संस्कार भरा हुआ है। अपने जीवन का सांध्यकाल यहीं बिताने के लिए कितने ही लोग हर तरह से पैसा कमाकर यहाँ मरने के लिए चले आते हैं। हज़ारों नव-दम्पत्ति यहाँ की सुनहली रात्रि में अपनी सुहाग-रात का आनन्द लूटने के लिए आते हैं। यहाँ की नदी में प्रेमिका की कमर में हाथ डालकर नौका-विहार करना बड़ा सुखप्रद समझा जाता है। हमें तो सड़क

पर चलने की आदत थी। यहाँ के उमड़े जन-समूह को देख कर यह अनुमान भी न होता था कि जल-समूह की लहरें ही यहाँ पर सड़कों का काम करती हैं और नगर सड़कों से शून्य है।

जब मैं वेनिस पहुँचा तो वहाँ की जल की सड़कों ने मुझे अचम्भे में डाल दिया। जब तक मैं वेनिस में रहा मुझे ऐसा डर लगा रहा कि कभी सड़कों के धोखे में पानी में ज़रूर गिर जाऊँगा। हर क़दम पर, यहाँ तक कि होटल में भी, सम्हाल कर पैर रखना पड़ता था। आप एक ऐसे प्राचीन नगर की कल्पना कीजिए जिसमें बहुत सुन्दर भवनों की भरमार हो पर जहाँ की सड़कें एकाएक हटाकर

वेनिस

उनके स्थान पर नहर कर दिया गया हो; जहाँ पर दो नहरें मिलती हों, वहाँ पर पत्थर का एक छोटा-सा सुन्दर पुल बना हो। बस—वही आपका वेनिस नगर बन जायगा।

यह अद्भुत नगर छठी शताब्दी में बना था। उस समय रोम तथा रोमन साम्राज्य के अधिकांश यूरोपीय भाग पर जंगलियों का

वेनिस का एक दृश्य

क़ब्ज़ा हो गया था और उनके अत्याचार से रोमन जाति त्राहि-त्राहि कर रही थी। उस समय छोटे-छोटे हज़ारों टापुओं का समूह वाला यह नगर इटालियन स्वाधीनता का गढ़ बन गया था।

११७ टापुओं के समूह को वेनिस नगर कहते हैं। बीच के टापू में काफ़ी चौड़ा मैदान है जिस पर सब सरकारी इमारतें बनी

वेनिस की ग्रैण्ड नहर

हुई हैं। नदी की ओर एक बहुत बड़ा चबूतरा है जहाँ पर बिलकुल हरद्वार ऐसा दृश्य दिखाई देता है। यही एक ऐसी जगह है जहाँ पर आदमी चल फिर सकता है। कुल मिलाकर ३२७ पुल हैं जो एक-दूसरे टापू को जोड़ते हैं। जनसंख्या लगभग दो लाख है। उद्योग में शीशे का काम, मीने का काम, चाँदी का बारीक काम, नौका-निर्माण आदि उल्लेखनीय हैं। पर, आय का खास साधन यात्रियों का समुदाय है जो झुण्ड का झुण्ड आता है और चला जाता है।

वेनिस में आज के सदियों पहले जो प्रजातंत्रीय सरकार क़ायम हुई थी वह इस युग की गणतंत्र-शासन-प्रणाली से बहुत मिलती
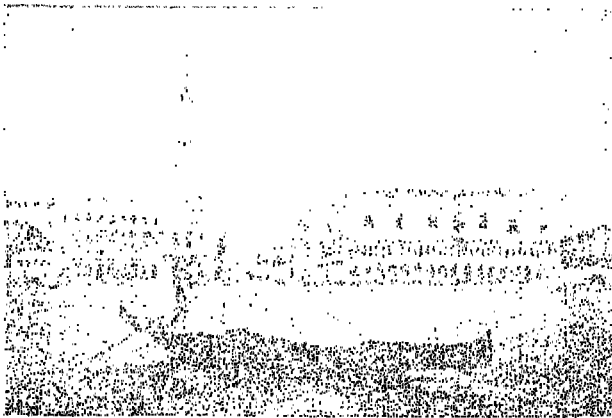
वेनिस में जल की सड़कें

जुलती है। मध्यम युग में इस नगर का वैभव चरम सीमा पर पहुँच गया था—साथ ही इसकी सैनिक-शक्ति भी संसार-प्रसिद्ध थी। यहाँ के प्राचीन पार्लमिएट-हॉल की छत पर जो सुनहली छपाई है वह संसार में निराली है और इतना बड़ा छपाई का काम संसार में और कहीं नहीं देखने को मिलेगा। ७५ फ़ीट लम्बी तथा ३५ फ़ीट चौड़ी पूरे छत में काम बना हुआ है।

कुछ दिनों तक यह नगर नैपोलियन के अधिकार में रहा। उसकी पराजय के उपरान्त आस्ट्रिया ने इसे अपना लिया। अन्त

वेनिस के 'ग्रैण्ड कनाल' पर एक महल

में, जर्मनी की सहायता से यह आस्ट्रिया के चंगुल से छूट कर इटली में शामिल हो गया। यह सत्य है कि इस नगर के निवासियों के हृदय में अपने प्राचीन प्रजातंत्र का संस्मरण क्षोभ उत्पन्न कर देता होगा।
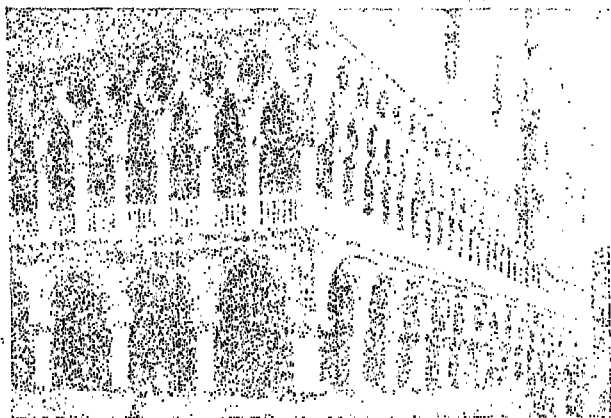
वेनिस में ड्यूक का राजभवन

फ्लोरेंस

यहाँ से लगभग तीन घण्टे का मार्ग तयकर हम फ्लोरेंस पहुँचे। यह शहर भी इटली की एक ख़ास निधि है। यह भी कई वर्षों तक इटली की राजधानी रह चुका है। यहाँ का मेडिसी चैपेल (गिर्जाघर) बहुत ही दर्शनीय स्थान है। इमारत में भिन्न-भिन्न प्रकार के तथा मनोहर पत्थर जड़े हुए हैं और समूची छत मोज़ाइक पत्थर की है। यहीं पर इतिहास-प्रसिद्ध मेडिसी परिवार के लोग दफ़न किये गये हैं और क़ीमती पत्थरों के छत्र सहित उनकी

पीतल की मूर्त्तियाँ स्थापित हैं। छत्रों में हीरा, मोती, पन्ने इत्यादि जड़े हुए हैं। आज ५०० से अधिक वर्षों से यह गिर्जा बन रहा है किन्तु, अभी आधी फ़र्श बननी बाक़ी है। यहीं एक प्राचीन बपतिस्मा भवन भी है जिसके दरवाज़े यूरोप में "स्वर्ग-द्वार" के नाम से विख्यात हैं। संसार में उसके मुक़ाबले के दरवाज़े देखने को नहीं मिलेंगे। फ़्लौरेंस का गिर्जाघर संसार में बड़े गिर्जाघरों में तीसरा स्थान रखता है और उसकी दीवारों की कारीगरी अद्भुत है। चित्र-शाला में चित्रों का बहुत सुन्दर संकलन है। फ़्लौरेंस में ही संसार-प्रसिद्ध मेडिना जोसेफ़ का चित्र देखने को मिलता है।

फ़्लौरेंस पत्थरों के काम के लिए प्रसिद्ध है। हीरे-जवाहरात की बाज़ार देखने योग्य है। अन्यथा, यह नगर उद्योग-प्रधान न होने के कारण प्राचीनता की झलक रखता है। फिर भी, आधुनिक सजावटें भी कम नहीं हैं। शाम को शहर खिलौने जैसा सजा हुआ मालूम होता है। सड़कें काफ़ी चौड़ी हैं। सफ़ाई आदर्श है।

विश्व-विख्यात तथा संसार के सात आश्चर्यों में से एक पिसा टावर यहाँ से दो घण्टे की रेलवे-यात्रा पर है। यह मीनार वास्तव में आश्चर्यजनक है। सात मंज़िल—८० फ़ीट ऊँचा। १६० फ़ीट का घेरा। सबसे ऊपर खुली मंज़िल जिस पर घण्टा टँगा है।

पुराने ज़माने में ये 'टावर' या घण्टाघर इसी उद्देश्य से बनाये

जाते थे कि शहर भर को समय बतलाने के लिए घण्टा बजाया जाय। इस टावर के बनने की शुरुआत ईसवी सन् १२०० में हुई थी और दो सौ वर्ष में बनकर पूरा तय्यार हुआ था। किन्तु, बन कर तय्यार होते ही यह दक्षिण की तरफ़ थोड़ा झुक गया। इसे सीधा करने की जितनी ही चेष्टा की गई, उतना ही टेढ़ा होता चला गया, यहाँ तक कि नींव से ही टेढ़ा हो गया। तब से अभी तक यह उसी तरह टेढ़ा खड़ा है और काफ़ी मज़बूत है। इस टावर की एक और बड़ी प्रसिद्धि है जिसे मैं टावर की अन्य विचित्रताओं से अधिक महत्व देता हूँ। इसी के द्वारा प्रसिद्ध इटालियन वैज्ञानिक गैलोली ने "पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति" को प्रथम बार सिद्ध किया था—यद्यपि इसी सिद्धान्त के प्रतिपादन से उसे काफ़िर प्रमाणित कर पोप ने उसे जेल भेज दिया था।
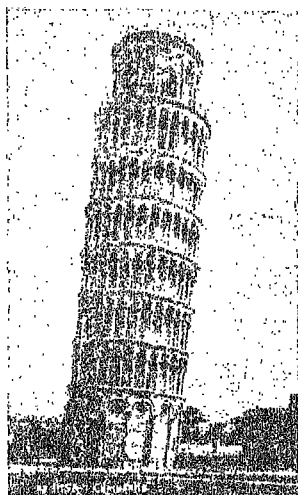
पिसा की मीनार

अस्तु, फ़्लौरेंस इतिहास-प्रसिद्ध प्राचीन नगर है। सन् १०००

से १३०८ तक इसका स्वतंत्र राज्य था तथा यह राजधानी था। यहाँ का १००० वर्ष पुराना गिर्जाघर तथा बपतिस्मा-भवन ज़रूर देखना चाहिए। इस बपतिस्मा-भवन के हॉल में उच्चारित शब्द की प्रतिध्वनि ७२ बार सुनाई पड़ती है।

यहाँ से हम रोम के लिए रवाना हुए। विश्व-विख्यात रोमन साम्राज्य के इस प्राण—नगर को देखने के लिए मैं बहुत उत्सुक था।

रोम

संसार के इतिहास के आदि-युग में, सीज़र-ऐंटोनी-नीरो-कांस्टें-

रोम में पोप के महल का एक कमरा
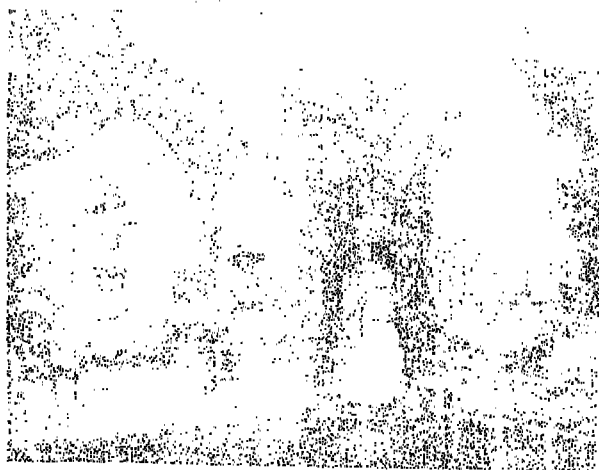
टाइन; प्लेटो, सुकरात आदि की इस क्रीड़ाभूमि का महत्व संक्षेप में समझाना भी कठिन है। रोम ने विश्व पर शासन किया, इङ्गलैण्ड तक को सैकड़ों वर्षों तक अपना ग़ुलाम रखा! इसके हज़ारों वर्ष के पुराने खंडहरों से एक प्राचीन, महत्वपूर्ण सभ्यता, दार्शनिकता, प्रजातंत्रवाद तथा साम्राज्यवाद की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है—हर एक ईंट से यह पुकार उठती है कि सभी दिन एक समान नहीं जाते! रोम ने अगर किसी देश पर शासन नहीं किया तो वह भारत था—और यदि उसने किसी देश से सब से अधिक कुछ सीखा तो भारत से—इसके चतुर्दिक प्रमाण मौजूद हैं।

इन खण्डहरों की परिक्रमा के लिए कम से कम दो दिन चाहिए। जूलियस सीज़र के भवन के खण्डहर अभी भी मौजूद हैं—उनसे यह स्पष्ट विदित होता है कि उस समय यह कितना सुन्दर तथा रमणीक स्थान रहा होगा। संगमरमर के बड़े-बड़े खंभे, जड़ाऊ की फ़र्शें, बड़े-बड़े हॉल, विशाल मन्दिर, अनोखी प्रतिमायें, थियेटर हॉल, सुन्दर फ़व्वारे, बड़े-बड़े तालाब तथा स्नानागार, सीज़र और उसके दरबारियों की ईसा से ५०० वर्ष पहले बनी हुई इमारतें, नीरो का प्रसिद्ध स्वर्ण-भवन, किसकी गणना की जाय, किसकी तुलना की जाय, कितना वर्णन किया जाय! कितना संगमरमर इन इमारतों में खर्च हुआ होगा! सच है कि प्राचीन रोम में समूचा

कुस्तुन्तुनिया नगर, इटली के सैकड़ों छोटे-बड़े भवन, इटली की सैकड़ों इमारतें तथा गिर्जाघर समा सकते हैं। यूरोप को सभ्यता, शिष्टता, दर्शन तथा ज्ञान देने वाले इस नगर की प्राचीन बस्ती कितनी बड़ी होगी ! यहाँ के संगमरमरों का समूचा समूह मिश्र देश से लाया गया था, और इन पत्थरों के भीतर कितने लाख ग़ुलामों का करुण क्रन्दन और उनका पसीना छिपा होगा---यह दुनिया क्या जाने ! उस समय न रेल थी, न भाप का इञ्जन ! सब काम ग़ुलाम ही करते थे। १५ फ़ीट चौड़े और २० फ़ीट लम्बे एक-एक पत्थर के लाने में पचासों आदमी दबकर, गिरकर, कुचकर मर जाते थे और ये प्रकट वैभव लाखों प्राणियों के बलिदान की नींव पर खड़े हुए हैं।

रोम का नगर पुरानी किन्तु, सुन्दर इमारतों से भरा पड़ा है। पुराने मन्दिर अब गिर्जाघर बन गये हैं। संसार में क़ीमती पत्थरों तथा सुन्दर प्रतिमाओं का रोम सब से बड़ा 'संग्रहालय' है। दिन-ब-दिन पुरानी तथा ऐतिहासिक इमारतें ढूँढ़ निकाली जा रही हैं। वह स्थान जहाँ खड़े होकर सीज़र ने अपना इतिहास-प्रसिद्ध व्याख्यान दिया था तथा वह स्थान जहाँ उसका शव जलाया गया था, सरकार ने ढूँढ़ निकाला है। दुनिया का सब से पुराना गिर्जाघर, जो पोप का खास स्थान है---यहीं है। यहाँ पर वह मेज़ भी सुरक्षित

रखी हुई है जिस पर महापुरुष ईसा ने अन्तिम भोजन किया था। यहीं पर वह ज़ीना रखा हुआ है (यह खास तौर पर यरुशलम से लाया गया था) जिस पर होकर ईसामसीह मृत्यु-दण्ड सुनने गये थे। यह बड़ी पवित्र चीज़ समझी जाती है और लोग इस पर सिर्फ़ घुटने के बल चढ़ सकते हैं। दूसरा महान गिर्जाघर सेण्ट पॉल है

रोम—विश्व-विख्यात सेण्ट पॉल गिर्जाघर का एक दृश्य
हर एक खम्भा एक ही संगमरमर के टुकड़े का है

जहाँ पोप को छोड़कर इटालियन सम्राट् तक नहीं जा सकते। इसी मसले को लेकर सम्राट् तथा पोप में बहुत झगड़ा भी हो चुका है और पोप की ही जीत रही। इसी जीत के बाद पोप की शक्ति का आविर्भाव हुआ। तीसरा गिर्जाघर सेण्टपीटर्स है जो संसार में

सब से बड़ा गिर्जाघर है। इसके प्राँगण में पाँच लाख आदमी एक साथ बैठ सकते हैं। इसके चैपल में प्राचीन सम्राट् सोलोमन के मन्दिर के असली खंभे लाकर लगाये गये हैं।

पोप के प्राचीन वैभव का अनुमान बोर्जिया पैलेस तथा उद्यान से लगाया जा सकता है। अब यह सरकार के क़ब्ज़े में है और इसे अजायबघर के रूप में परिणत कर दिया गया है। बहु-मूल्य पत्थरों की बनी इस इमारत में प्रतिमाओं तथा चित्रकला का अद्भुत संकलन और प्रदर्शन है। पुराने समय के अनोखे वस्त्र देखने क़ाबिल हैं। बाग़ मीलों लम्बा है। इस भवन की समता
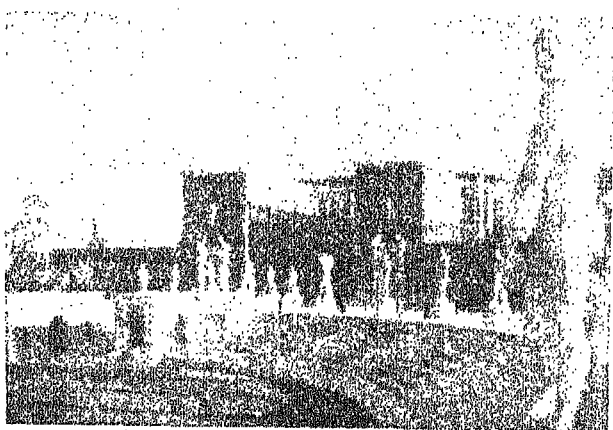
रोम में मुसोलिनी का व्याख्यान-मञ्च

संसार के सर्व-श्रेष्ठ राजमहलों से की जा सकती है। रोम का एक अंश "वैटिकन" यानी धर्म-नगर है जिस पर पोप का शासन है।

अधिकांश सरकारी दफ़्तर पुरानी इमारतों में हैं पर नई सरकारी इमारतें भी बनी हैं जो देखने क़ाबिल हैं। "महायुद्ध का संस्मरण" तथा "मुसोलिनी स्टेडियम" की सुन्दरता तथा अनोखापन देखने से ही ताल्लुक़ रखता है।

रोम का इतिहास ४ भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला युग ईसा से ४०० वर्ष पूर्व से लेकर ४०० वर्ष बाद तक था, जब वह संसार में सब से ज़्यादा शक्तिशाली साम्राज्य की राजधानी था। दूसरा युग सन् १५०० तक था, जब कि वह संसार में सब से अधिक आदरित था। तीसरा युग सन् १९०० तक था—इस समय यह श्री-हत, सम्मान-हत तथा दुर्बल हो गया था। चौथा युग आज का समय है जब कि मुसोलिनी के निरंकुश तथा अनियंत्रित शासन में इटली ने नव-जीवन, स्फूर्ति तथा महत्व प्राप्त किया है। सम्राट् के अधिकार नाम-मात्र के हैं। राज्य का कर्त्ता-धर्त्ता मुसोलिनी है।

रोम नगर के देखने से ही चारों युगों का ज्ञान या भास हो जाता है। पुराने खंडहर, महान मिथी कलामय पंक्तियाँ और प्राचीन मन्दिर प्रथम युग के द्योतक हैं। बड़े-बड़े गिर्जाघर और पुरानी सरकारी

इमारतें मध्ययुग की निशानी हैं। उसके बाद की इमारतें तृतीय युग और नये सरकारी भवन, मुसोलिनी स्टेडियम, सुन्दर चौड़ी सड़कें, स्टेशन, पार्क इत्यादि नवीन इटली के प्रतिबिम्ब हैं। लेनिनग्रैड की तरह यहाँ भी एक क्रान्तियुग का चिह्न, अजायबघर बनाया गया है। अन्तर इतना ही है कि यहाँ रूसी साम्यवाद के विरुद्ध वीभत्स प्रदर्शनी की गई है।

रोम की जनसंख्या महायुद्ध के बाद दुगुनी हो गई थी। जनता की स्वतंत्रता मुसोलिनी के चरणों में अर्पित हो चुकी है— पर देश तरक्की कर रहा है। रूस की तरह यहाँ भी हरएक व्यापार के भिन्न-भिन्न संघ हैं जिनके द्वारा सरकारी पार्लामेण्ट के प्रतिनिधियों का चुनाव होता है। कारखाना बन्द कर देना मालिक के लिए और हड़ताल कर देना मज़दूर के लिए ग़ैर-क़ानूनी और कठोर दण्ड के योग्य अपराध है। मज़दूरों को दैनिक मज़दूरी मिलती है तथा साल के अन्त में बोनस मिलता है। यह रक़म कारखाने में जमा रहती है और मज़दूर के काम से "रुख़सत" होने की अवधि पूरी होने पर उसे प्राप्त होती है। इस अवधि के पहले यदि नौकर काम से अलग होना चाहे तो मालिक को अधिकार है कि उसका बोनस ज़ब्त कर ले। नया काम शुरू करने वाले को सरकार को साबित कर देना पड़ेगा कि वह काम लाभदायक

होगा—इस प्रकार जोश में आकर धन की हानि करने वाले व्यवसाय नहीं चालू किये जा सकते। कारोबार बन्द करने के लिए भी सरकार को सन्तुष्ट करना होगा कि वह व्यवसाय अब लाभदायक नहीं रह गया।

इस योजना से इटली को काफ़ी लाभ हुआ है। जब कि यूरोप के बड़े-बड़े देशों में बेकारी और भूख की आग जल रही है, इटली में हरएक के लिए पेट भर भोजन का प्रबन्ध है।

मिलन

यहाँ से हम लोग इटली के प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र मिलानो—मिलन देखने गये। रोम छोड़ने का जी नहीं चाहता था, पर करता क्या—समय का अभाव था और अभी बहुत कुछ घूमना बाक़ी था।

मिलन भी प्राचीन नगर है पर औद्योगिक केन्द्र होने के कारण यहाँ सब इटालियन नगरों से ज़्यादा चहल-पहल रहती है। मिलन में १५००० कारखाने हैं तथा आबादी लगभग पन्द्रह लाख है। यहीं के एक गिर्जाघर में वह कीलें सुरक्षित रखी हैं जो ईसा मसीह के हाथ-पैर में ठोंकी गई थीं। ये कीलें, गिर्जे की छत में, स्वर्ण की अलमारी में बन्द हैं। साल में एक बार, पोप स्वयं वहाँ जाते हैं और गुब्बारे [illegible] कर उसके पास पहुँच कर उसे निकालते हैं और उसे लेकर नगर में एक बृहत् जुलूस बना कर घूमते हैं।

जुलूस से लौट कर यह अमूल्य वस्तु पूर्ववत् रख दी जाती है। इस गिर्जे पर पच्चीकारी बहुत सुन्दर है।

मिलन का "प्रिंसिपो सेवाय" होटल

इटली घूमने के लिए काफ़ी समय नहीं था, फिर भी जितना और जो कुछ देखा वह मनोहारी तथा ज्ञानपूर्ण था। एक बात मुझे और भी लिख देनी चाहिए। इटालियन स्वभाव अंग्रेज़ों से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है। सम्भव है मेरा भ्रम ही हो, पर मैंने

उनमें अहम्मन्यता तथा मौन और जब तक विशेष घनिष्ठता न हो जाय—तब तक सब से दूर रहने की भावना पाई।

अब मुझे यहाँ से स्विट्ज़रलैण्ड होकर, स्पेन और वहाँ से फ्रांस जाना था। दोपहर को मिलन से चल कर रात्रि में हमारी ट्रेन स्विट्ज़रलैण्ड के ज़्यूरिक[1] नगर पहुँची।

---

1. Zurich

एकतीसवाँ परिच्छेद

स्विट्ज़रलैण्ड

इस "स्वर्ग"मय देश की सुन्दरता का आभास रात्रि को ही मिलने लगा। किन्तु, उसका प्रथम तथा प्रारम्भिक दर्शन ज़्यूरिक से ब्रेनर के दर्रे जाने पर मिला। यह स्थान स्वास्थ्य के लिए बहुत प्रसिद्ध है और यहीं पर इस देश का "स्वास्थ्य-गृह" या "सेनेटोरियम" है। चारों तरफ़ सुन्दर झीलें हैं और बीच में लेटा हुआ है हरा पर्वत। इसकी चोटी पर जाने के लिए रस्सी वाली रेलवे से यात्रा करनी पड़ती है। झील में सैर करने के लिए मोटर नौकायें हैं। सैकड़ों चाय-पानी घर, भोजनालय तथा आमोद-प्रमोद के स्थान हैं। ज़्यूरिक से यहाँ आने के लिए झील के किनारे-किनारे सुन्दर दृश्यों का आनन्द लेते हुए आना होता है।

ज़्यूरिक एक छोटा सा, पर बड़ा खूबसूरत शहर है। पहाड़ की

चोटी पर संसार में इतना बड़ा अन्य कोई नगर नहीं बसा है। ऐसा मालूम होता है कि हम पहाड़ की चोटी पर विराजमान हैं। ज्यूरिक स्विट्ज़रलैण्ड का औद्योगिक केन्द्र भी है।
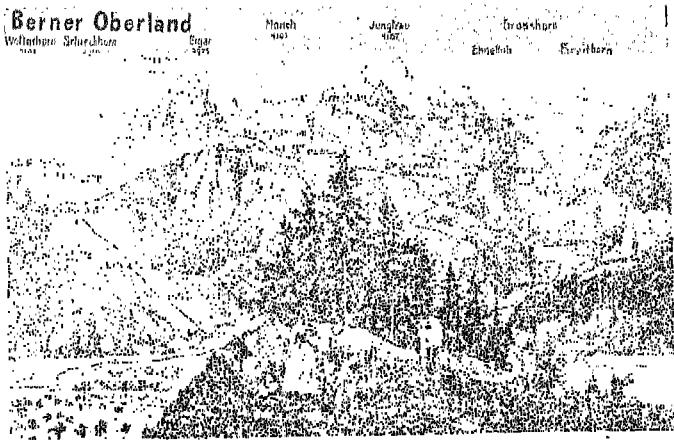
स्विट्ज़रलैण्ड के सभी मनोरम तथा दर्शनीय स्थान

यहाँ से हम लोग संसार के सब से सुन्दर स्थान—सब से रमणीक दृश्य—पृथ्वी में मूर्त्तिमान स्वर्ग—प्रकृति की अन्यतम चित्रकारी तथा प्रकृति के शृङ्गार में मानवी सहयोग से उत्पन्न विचित्र मनोहरता का संयोग देखने गये। इस स्थान का नाम है

इण्टरलेकन[1] और इसका परिचय केवल भाषा द्वारा नहीं कराया जा सकता। शायद यहीं के लिए 'गिरा अनयन नयन बिनु बानी' की व्याख्या चरितार्थ होती है।

जगफ्राउजा, स्विट्ज़रलैण्ड
समुद्र की सतह से १६,००० फ़ीट ऊँचा
संसार का सबसे सुन्दर स्थान

एक ओर बर्फ़ से ढँके चाँदी से पहाड़, दूसरी ओर सुन्दर हरे-भरे वृक्षों से आच्छादित हरियाली से भरा पर्वत, तीसरी तरफ़ छोटी-छोटी नदियों तथा उनके झरनों से जलमय पहाड़ी और चौथी

1. Interlachen.

दिशा में नीले मोती की तरह सुन्दर जल वाली झील और बीच-बीच में छोटी-छोटी पहाड़ियाँ, मैदान, फल से लदे हरे-भरे दरख्तों की रमणीक घाटी, बीच में माला की तरह पिरोई असफाल्ट की चौड़ी सड़क और उसके दोनों ओर कतारों में लगे हुए वृक्ष—समूचा दृश्य ऐसा सुहावना मालूम होता है कि स्वर्ग यहीं पर उतर आया हो।

जिस समय मैं वहाँ पहुँचा, आकाश में बादल छा गये थे और वहाँ के लोगों के अनुसार यह दुर्भाग्य की बात थी। किन्तु, मुझे तो वही स्थान दिव्य मालूम पड़ता है जिस पर मौसम का कोई असर ही न हो—और मैंने इण्टरलेकन को भी उन्हीं स्थानों में से एक पाया। इस जगह का नाम 'इण्टरलेकन' उसकी भौगोलिक परिस्थिति का द्योतक है। यहाँ पर तीन बड़ी झीलों का केन्द्र है। एक झील कितनी बड़ी है इसका अन्दाज़ इसी बात से लग सकता है कि राजधानी बर्न से रेलवे लाइन यहाँ तक एक झील के किनारे ही किनारे आई है। टनेसी झील के किनारे वाले पहाड़ के ऊपर, जिसकी शोभा शब्दावलि द्वारा नहीं वर्णन की जा सकती, एक बड़ी भारी गुफा है जो मीलों तक पहाड़ के अन्दर चली जाती है। उसी के बग़ल से शुद्ध जल का एक झरना बहता है। पुराने ज़माने में जंगली लोग इसी लम्बी गुफा में रहते थे।

इस स्थान को छोड़ने के समय ऐसा मालूम पड़ा मानो किसी भयंकर श्राप के कारण ही स्वर्ग से नर्क में ढकेले जा रहे हैं। खैर, दुनिया तो मुसाफ़िरत है ही—हम को भी आगे बढ़ना पड़ा और उसी रात की गाड़ी से हम जेनेवा के लिए रवाना हो गये।

राष्ट्र-परिषद् के इस दुर्ग को मैंने वीरान-सा या जीवन-शून्य-सा पाया। राष्ट्र-परिषद् की बैठकों के दिनों में यहाँ काफ़ी चहल-

जेनेवा में राष्ट्र-परिषद् की इमारतें
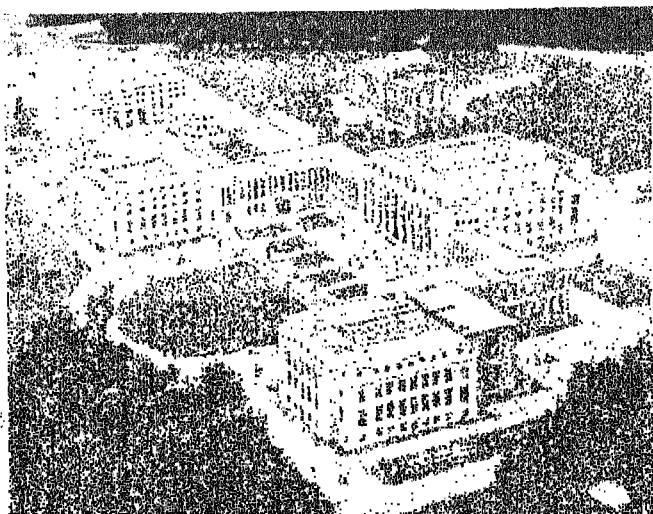
पहल रहती है—पर इस परिषद् की दिन प्रतिदिन शक्ति के क्षीण

होते जाने के कारण यह नगर और भी श्रीहत हो रहा है। जेनेवा छोटा-सा पर खूबसूरत शहर है। बीच में एक बड़ी भारी झील है
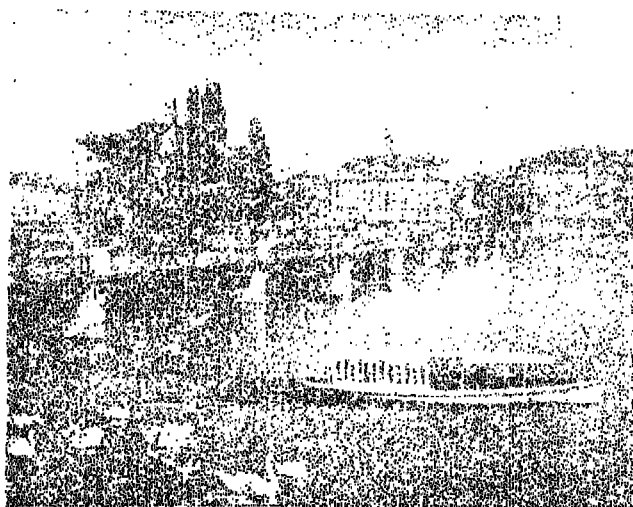
जेनेवा

जिसके दोनों तरफ़ शहर बसा हुआ है। यह प्राचीन नगर इस समय सचमुच एक अन्तर्राष्ट्रीय बस्ती मालूम होता है—दूकान, भोजनालय, कारखाने सभी पर अन्तर्राष्ट्रीय रंग चढ़ा हुआ है। यहीं पर सफ़ेद जल वाली रोन तथा नीले जल वाली आर्ना नदी का संयोग और मेल होता है और मीलों तक ये दोनों नदियाँ अपने पानी का भिन्न अस्तित्व

रखते हुए अलग-अलग पर एक ही धारा में बहती रहती हैं। यह बड़ा अनोखा दृश्य है। उस समय तो राष्ट्र-परिषद् की बैठकें सिटी वोटिंग
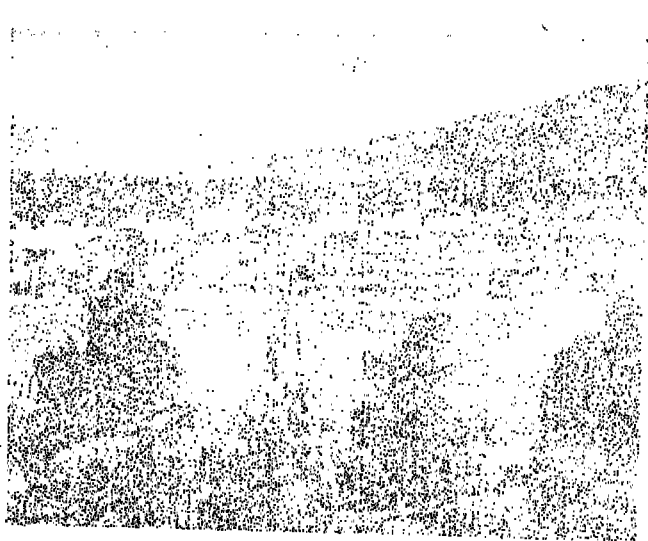
स्विट्ज़रलैण्ड—जेनेवा का एक दृश्य

हॉल में होती थीं तथा सेक्रेटेरियट एक होटल की इमारत में था। किन्तु, नया भवन साल-डेढ़ साल में बन कर तय्यार हो गया। इस नई इमारत के लिए ५ करोड़ फ्रैंक फ्रांस ने दिया था तथा पुस्तकालय के लिए दो लाख डालर संयुक्त राज्य, अमेरिका ने देने का वादा किया था। लेकिन, मुझे अपने पथ-प्रदर्शक का यह वाक्य कभी

न भूलेगा कि 'यह नये भवन राष्ट्र-परिषद् की सत्ता क़ायम रखने के लिए नहीं, पर उसे दफ़नाने के लिए बनाये जा रहे हैं'। कौन जाने, यह बात आज सत्य और प्रकट हो।
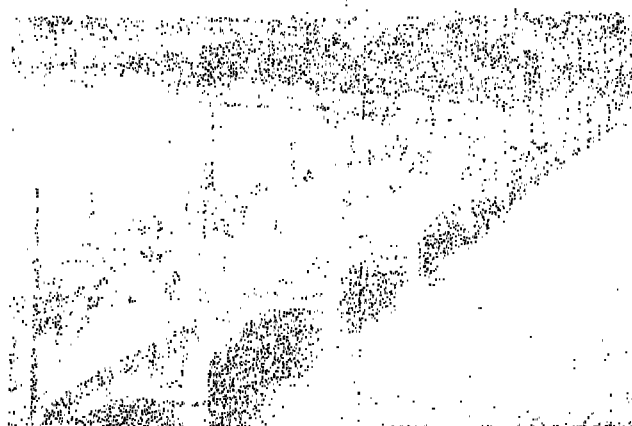
जेनेवा—माउण्ट ब्लैंक

अस्तु, स्विट्ज़रलैण्ड की कुल जनसंख्या लगभग ४५ लाख है। किन्तु, अद्भुत देश है। इसकी सब से बड़ी आय यात्रियों द्वारा होती है। समूचा देश पहाड़ी होते हुए भी चीज़ों को सुगमता से ले आने-जाने का अनोखा प्रबन्ध है। ऐसा सुन्दर आवागमन का

प्रबन्ध है कि हम यह भूल जाते हैं कि समुद्र से कितने हज़ार फ़ीट ऊँचे विचर रहे हैं। ऊँची से ऊँची चोटी पर रस्सी की रेलवे लाइन
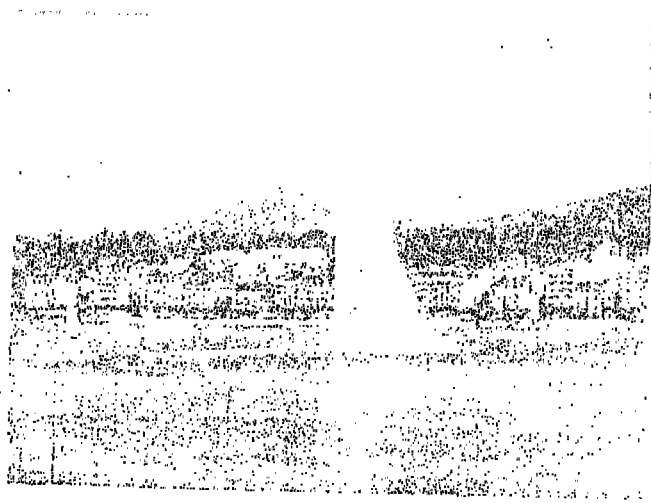
जेनेवा—माउण्ट ब्लैंक का रमणीक दृश्य

द्वारा मिनटों में पहुँचा जा सकता है। रेलवे है, मोटर है, ट्रैमवे है, नहरें हैं—हर एक भाग में ये साधन मौजूद हैं। छोटे से छोटे गाँव में बिजली की रोशनी मौजूद है। देश का हर कोना ठीक से सजाया और साफ़-सुथरा है। जिधर जाइए उधर ही टेलीफ़ोन, रेडियो, तारघर आदि आम जनता के उपयोग के लिए मौजूद हैं।

यहाँ से हम लोग 'नाइस' पहुँचे। पहले यह शहर इटली के अधीन था, किन्तु, सन् १८६० ई० की सार्वजनिक मत-गणना

मूरिन, स्विट्ज़रलैण्ड

के अनुसार यह फ्रांस में मिला लिया गया और अब फ्रांस का प्रसिद्ध बन्दरगाह तथा ग्रीष्म-निकेतन है।

बत्तीसवाँ परिच्छेद

मागटी कार्लो

'नाइस'[1] नगर के निकट ही, भूमध्य सागर पर इटली तथा फ्रांस की सीमायें मिलती हैं। अतएव सैनिक दृष्टि से भी यह नगर बहुत महत्वपूर्ण है। जेनेवा से यहाँ पहुँचने में लगभग १४ घण्टे लगते हैं और इटालियन सीमा से होते हुए आना पड़ता है। वैसे तो यह नगर विशेष रोचक नहीं है पर इसका समुद्र-तट, सुन्दर होटल तथा अनेक भवन और थियेटर इत्यादि दर्शनीय हैं। नाइस कैसिनो[2] की इमारत समुद्र के ऊपर बनाई गई है और यह अत्यन्त रोचक तथा अद्भुत इमारत है। नाइस के समुद्र-तट की यात्रा में बड़ा आनन्द मिलता है।

यहाँ से संसार में विख्यात तथा सब से बड़ा जुआखाना

---

1. Nice. 2. Nice Casino.

माण्टी कार्लो[1] केवल २० मील के फ़ासले पर है। दुनिया में यही एक जगह है जहाँ पर जूआ ही एक मात्र व्यवसाय है—और वह भी, सरकारी व्यवसाय। इसका शासन एक ड्यूक के हाथ में है यद्यपि वास्तविक 'संरक्षण' फ़्रांस का है। जनसंख्या लगभग ५००० ही है और क़रीब इतने ही बाहरी आदमी हमेशा इस शहर में जूए के लिए आया करते हैं। राज्य का क्षेत्रफल केवल ४-५ मील ही है।

किन्तु, इतना छोटा राज्य वैभव में डूबा हुआ है। इसकी सम्मृद्धि आश्चर्यजनक है। और यह सब विभूति केवल जूए की बदौलत है। जितनी सुन्दर इमारतें, भोजनालय, होटल तथा आमोद-प्रमोद के साधन इस नगर में हैं, उतने और कहीं देखने को नहीं मिलेंगे। नगर में दो जुआघर हैं। एक तो प्राचीन इमारत है जो एक भीमकाय भवन है। इसमें यूरोप के सभी बैंकों की शाखायें मौजूद हैं जो रात-दिन जूए में हारने-जीतने वालों के भुगतान का काम करती रहती हैं। इसी भवन में प्रथम श्रेणी का जल-पान गृह, उद्यान, नृत्यशाला तथा वाद्य-गृह है जिसमें एक सौ से अधिक व्यक्ति एक साथ बाजा बजाते हैं। इतनी बड़ी वाद्य-मण्डली संसार में और कहीं नहीं है।

1. Monte Carlo.

जूआ खेलने की अनेक विधियाँ हैं। ताश से, पहिये के द्वारा तथा अनेकों प्रकार से लगभग ५० मेज़ों पर जूआ होता है। हर मेज़ पर ३०-४० आदमियों के बैठने की गुञ्जाइश है, पचासों आदमी खड़े रहते हैं। हर मेज़ पर दो-दो आदमी जूआ खिलाने वाले रहते हैं। इनके हाथ तो कभी रुकते ही नहीं—यद्यपि वे मूर्त्ति-वत् तथा मन्त्रवत् सब कार्य करते हैं और यदि कुछ कहना हुआ तो बहुत धीरे-धीरे बोलते हैं। एक आदमी भुगतान करने वाला रहता । हर क्षण में ३-४ दाँव का खेल हो जाता है और यद्यपि यहाँ सदैव लाखों रुपये की हार-जीत होती रहती है फिर भी, तारीफ़ यह है कि किसी की बोली नहीं सुनाई पड़ती। चारों ओर अटल शान्ति विराजा करती है।

हर दाँव दस-बीस हज़ार रुपये से कम का नहीं होता। ज़्यादातर खिलाड़ी ज़्यादा उम्र के मर्द-औरत ही नज़र आते हैं। इनके सामने दस-पाँच हज़ार की गड्डु पड़ी रहती है। हज़ार-पाँच सौ फ्रैंक से खेलने वाले खड़े ही रहते हैं। रुपये का तो यहाँ जैसे अजीर्ण हो जाता है। शायद संसार में यही ऐसा स्थान है जहाँ रुपये की कोई क़ीमत नहीं है।

दर्शकों के लिए, इमारत में प्रवेश की फ़ीस दस फ्रैंक है। जूआ-खाना सरकारी, प्रबन्ध सरकारी तथा कमीशन भी सरकारी होता है।

इस अड्डे के अलावा, कुछ समय हुआ, सरकार ने एक ग्रीष्म-जुआ-भवन[1] बनवा दिया है। यह गर्मी के दिनों में ही खुलता है पर इसकी इमारत तथा सजावट देखकर ऐसा मालूम होता है कि यहाँ पृथ्वी में मूर्त्तिमान स्वर्ग विराज रहा है। रात्रि में इस इमारत के बाहर छोटे-छोटे पुष्पित वृक्षों से सजे हुए चबूतरे पर बैठ कर सामने समुद्र में रंगीन फ़व्वारों का आनन्द अकथनीय है। हर आध घण्टे के बाद इन फ़व्वारों के रंग तथा रूप में परिवर्त्तन होता रहता है। पूरी इमारत का रंग भी परिवर्त्तित होता प्रतीत होता है। ऐसे मनोहारी दृश्य को छोड़ कर आदमी अपने मन से वहाँ से हट नहीं सकता। इस अद्भुत् स्थान की शोभा रात्रि में ही है और इसे ज़रूर देखना चाहिए।

माण्टी कार्लो की एक और विशेषता है। संसार में कहीं भी पुलिस को इतने अधिकार नहीं प्राप्त हैं जितने कि यहाँ की पुलिस को। बिना वारण्ट के गिरफ़्तार कर लेना तथा वहीं खड़े-खड़े उसका मुक़द्दमा सुनकर उस पर फ़ैसला कर देना और सज़ा सुना देना—यह अधिकार एक साधारण पुलिसमैन को प्राप्त है। शायद एक जुआड़ी शहर में ऐसी सख्ती ज़रूरी हो। जो हो, माण्टी कार्लो घूमने लायक़ जगह है पर अपने मन को क़ाबू में रखकर। यदि जूए के अड्डे में कोई फँसा तो भगवान ही उसका रक्षक है।

---

1. Summer Casino.

तैंतीसवाँ परिच्छेद

स्पेन

मारटी कार्लो से फ्रेञ्च ग्रामों का दृश्य देखते हुए हम लोग स्पेन के लिए रवाना हुए। फ्रांस का चाहे जो भी कुछ वैभव हो पर, यहाँ के किसान मुझे तो एशिया के किसानों के समान अज्ञानी, सरल, सीधे, ग़रीब तथा स्वस्थ दीख पड़े। फ़र्क़ इतना ही है कि सभी फ्रेञ्च किसान अनिवार्य्य फ़ौजी शिक्षा पाता है तथा उसे प्रारम्भिक विद्या भी पढ़ा दी जाती है। दक्षिणी फ्रांस के किसानों की माली हालत भी अच्छी नहीं मालूम होती। मकानों की बनावट, उनके निवास-स्थान की हालत तथा खेती देखने से प्रतीत होता है कि वे बहुत ख़ुशहाल नहीं हैं पर, स्वास्थ्य और वीरता में फ्रांस का यही भाग प्राण है, वीरप्रसवा तथा धन्य है। इसी भाग के योद्धाओं के बदौलत फ्रांस ४ वर्ष तक पिछले महायुद्ध में डटा रहा

और शोणित-तर्पण करता रहा। पेरिस या उत्तरी फ्रांस की बदौलत नहीं। और, जब कभी फ्रांस पर संकट आवेगा उसका दक्षिणी भाग ही सर ऊँचा किये खड़ा रहेगा।

मार्साई[1] का प्रसिद्ध फ्रेञ्च बन्दरगाह भी हमारे रास्ते में पड़ता था, इसलिए हम यहाँ भी ५-६ घण्टे के लिए रुक गये। आमतौर पर, भारत या एशिया से इङ्गलैण्ड जाने वाले यात्री पी० एण्ड ओ० लाइन से यात्रा करते हुए, यहीं पर जहाज़ की यात्रा समाप्त करते हैं और ट्रेन द्वारा लन्दन जाते हैं। इससे समय की भी काफ़ी बचत हो जाती है।

मार्साई संसार के सबसे मशहूर और महत्वपूर्ण बन्दरगाहों में से है। इसका पुराना शहर तो बिलकुल पुराने चाल का है पर नया भाग नई रोशनी और सभ्यता का ज्वलन्त चिह्न है। काफ़ी रोचक स्थान है। रात्रि में, मोटर नौका द्वारा तट की सैर बड़ी मनोरञ्जक होती है। काफ़ी रौनक़दार शहर है—खासकर हर साल सितम्बर के महीने में जब यहाँ अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी होती है तो शहर की शोभा बहुत बढ़ जाती है। इसकी कुल जनसंख्या लगभग १० लाख होगी।

अस्तु, मार्साई से हम स्पेन के उस नगर गये जो संसार में

---

1. Marseilles.

अपनी स्वतंत्रता के प्रति प्रेम तथा लगन के लिए मशहूर है तथा जो बड़े ऐतिहासिक उथल-पुथल का केन्द्र रहा है। इस स्थान का नाम है बार्सीलोना[1]। स्पेन का यह सब से बड़ा बन्दरगाह तथा सब से सुन्दर स्थान है। यों तो समूचा स्पेन ही एक बहुत सुन्दर देश है पर बार्सीलोना की सत्ता निराली कहना अतिशयोक्ति न होगी।

स्पेन बहुत दिनों तक ओटोमन (पवित्र तुर्की) साम्राज्य का अङ्ग रह चुका है। इसलिए पूर्वीय सभ्यता की छाप इस पर अमिट रूप से अंकित है। खास कर बार्सीलोना पर तो यह छाप बहुत

कैटालोनिया—स्पेन

1. Barcelona.

गहरी है। स्पेन के रीति-रिवाज, शादी के मौक़े पर सजावट, इमारतों की बनावट तथा सजावट—सभी बहुत कुछ पूर्वीय रंग में रंगा हुआ है।

बार्सीलोना ख़ूबसूरत शहर है। प्रधान राज-पथ में दो तरफ़ से सवारियों के आने-जाने के रास्ते हैं और बीच में पैदल चलने वालों के लिए पटरी है जिसके दोनों ओर वृक्ष लगे हुए हैं। कुछ दूरी पर कुर्सियाँ, बेञ्च आदि पड़े हैं। इस ढंग की सड़क यूरोप में और कहीं नहीं है। शाम को इस पटरी पर इतनी भीड़ रहती है कि मेला-सा नज़र आता है। यहीं पर वास्तविक स्पेन तथा उसकी
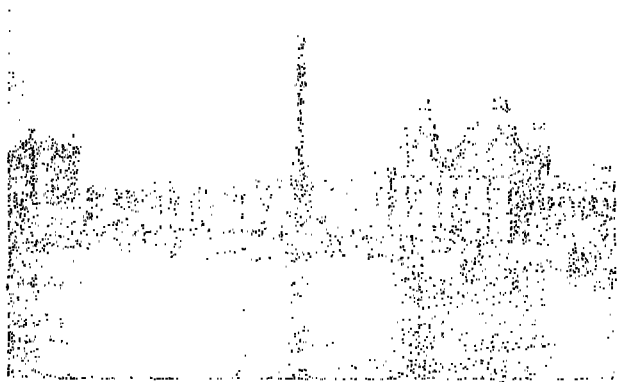
कोलम्बस का संस्मरण तथा बन्दरगाह

वेष-भूषा देखने का अवसर मिलता है। स्पेन की पुरानी राजधानी बार्सीलोना ही है। यह वही नगर है जहाँ पर स्पेन के सम्राट् फ़र्डिनेण्ड ने अमेरिका का पता लगाकर लौटने वाले प्रसिद्ध अन्वेषक तथा यात्री कोलम्बस का स्वागत किया था। उसके स्वागत के लिए जहाँ दरबार लगा था, उस स्थान का भग्नावशेष अभी तक मौजूद है।

अस्तु, बार्सीलोना में सबसे महत्व का स्थान वहाँ का मनोरञ्जक पार्क है जो शहर के उत्तर में एक ऊँची पहाड़ी पर बना है। इस स्थान को रमणीक तथा मनोहर बनाने के लिए कोई बात उठा नहीं रखी गई है। इस पार्क की हरियाली से घिरी साफ़-सुथरी चौड़ी सड़कें, आदमी को इस तरह खींच लेती हैं कि उन पर घूमना ही पड़ता है। इस पार्क तक पहुँचने के लिए शहर से रस्सी-वाली रेलवे[1] तथा समुद्रतट से तारवाली रेलवे[2] से यात्रा करनी पड़ती है। रस्सीवाली रेलवे के स्टेशन के बाहर, मोटर से उतरने पर, ट्रेन के डब्बे तक पहुँचने के लिए एक प्लैटफ़ार्म पार करना पड़ता है। पर, आपको चलने की ज़रूरत नहीं होती। यह प्लैटफ़ार्म खुद घूमता हुआ पाँच मिनट में ट्रेन के डब्बे के पास पहुँचा देता है। इस चबूतरे पर चलती-फिरती सीढ़ियाँ आपके पैर का काम देती

1. Rope Railway. 2. Wire Railway.

हैं। इसी से पता चल जावेगा कि आराम का कितना ख़्याल रखा गया है।

स्पेन में बहुत पुराने ज़माने से भैंस या साँड़ की लड़ाई का खेल बहुत रोचक तथा आकर्षक मनोरञ्जन समझा जाता है। इसमें दो भैंसे या साँड़ या एक आदमी और एक भैंसा युद्ध करते हैं। कितनों की जान चली जाती है। बुरी तरह से खून बहता है। देखते ही जी भर आता । संसार भर में इस अमानवी मनोरञ्जन के विरुद्ध आवाज़ उठाई गई पर कोई लाभ न हुआ। जिन दिनों मैं स्पेन गया, उन दिनों इसी खेल का मौसम था। अतः मैंने भी इस खेल को देखा।

असल में यह खेल स्पेन वालों ने मेक्सिको से सीखा है। वहीं से प्रसिद्ध लड़ाके अब भी आते हैं। जिस दिन खेल होने वाला होता है, उसी दिन संध्या को मेक्सिको की रानी का एक फ़र्ज़ी जुलूस निकाला जाता है। आगे-आगे बाजा बजता चलता है, उसके पीछे मेक्सिकन वेष-भूषा में स्पेन की सुन्दरियाँ होती हैं। युद्ध-क्षेत्र या अखाड़े में, जो ख़ास तौर पर इसी खेल के लिए बना है, यह जुलूस समाप्त होता है। वहाँ पर 'रानी' अपने "गिरोह" के साथ सब से ऊपर वाली सजी हुई सीढ़ियों पर जाकर बैठ जाती है। बैण्ड तथा सवारों आदि का प्रदर्शन हो चुकने के बाद, पचासों की तादाद

में लड़ाके, ज़री तथा कामदानी के कपड़ों में सजे हुए, लड़ने की इजाज़त लेने सामने आते हैं और रानी उन्हें आज्ञा देती है। इसके बाद मैदान खाली कर दिया जाता है और एक हट्टा-कट्टा जंगली बैल छोड़ दिया जाता है जो चारों ओर गुस्से से गुर्राता, उछलता, कूदता, घूमता है। चारों तरफ़ आदमियों की भीड़, ताली या सीटी बजने की आवाज़ आदि से वह और भी खीझ उठता है और अपने चारों ओर की काठ की दीवार को तोड़ने की कोशिश करता है। इसी समय एक लड़ाका एक कोने से, दूसरा दूसरे कोने से तथा तीसरा तीसरे कोने से एक ऐसा कपड़ा लेकर जो एक तरफ़ लाल तथा दूसरी तरफ़ पीला होता है अहाते के भीतर आता है। लाल रंग उसकी ओर दिखा कर तीनों उसे अपनी ओर खींचने की कोशिश करते हैं। जब वह झपटता हुआ एक तरफ़ चलता है तो लड़ाका तुरंत कपड़े का रंग पलट कर, पीला रंग उसे दिखा कर, दौड़ कर बाहर हो जाता है। इसके बाद जो लड़ाका उसे मारने के लिए चुना जाता है वह भी लाल-पीले कपड़े के साथ आता है और वह जल्दी बाहर नहीं भागता। वह कुछ देर तक बैल को खिलाता—गुस्सा उभाड़ता रहता है। इसके बाद बड़ा-बड़ा भाला लिये दो घुड़सवार मैदान में दाखिल होते हैं। घोड़े की दम यों ही खुश्क रहती है, पर, कई आदमी ठेल कर उसे बाड़े में कर देते हैं।

स्पेन का प्राचीन मनोविनोद—जंगली बैल के साथ युद्ध

अब गुस्से में चूर बैल उस घोड़े पर हमला करता है। जब वह घोड़े की ओर दौड़ता हुआ आता है तो घुड़सवार यह कोशिश करता है कि भाला भरपूर उसके पेट में चुभ जाय। अधिकांश अवस्था में, यह बैल चोट खाये हुए भी घोड़े को मय घुड़सवार के अपनी सींग पर उठा लेता है और पटक देता है। इस समय घोड़े तथा घुड़सवार दोनों की जान उस सवार की लियाक़त या भाग्य पर मुन्हसर रहती है। उसी समय, इनकी जान बचाने के लिए चारों तरफ़ से लाल कपड़े चमक उठते हैं और बैल का ध्यान अपनी ओर खींचते हैं।

इसी प्रकार की दौड़-धूप में काफ़ी थका हुआ बैल हाँफने लगता है। उस समय उसको मारने के लिए चुना गया लड़ाका छड़ीनुमा भाला लेकर अहाते में प्रवेश करता है। यही व्यक्ति पहले भी उसे खिला गया था। चार छड़ियाँ तक उसके बदन में घुसेड़ दी जाती हैं। बैल के शरीर से काफ़ी खून गिर गया रहता है और वह सुस्त पड़ जाता है। तब, वह लड़ाका लाल कपड़े में तलवार छिपाकर मैदान में दाखिल होता है। थका-माँदा शेर-बैल जब उस पर झपटता है तो कुछ देर तक उसे खिलाकर यह लड़ाका अपनी तलवार उसकी गर्दन में घुसेड़ देता है।

यही है इस अमानुषिक मनोविनोद का रूप! खेल को इतना
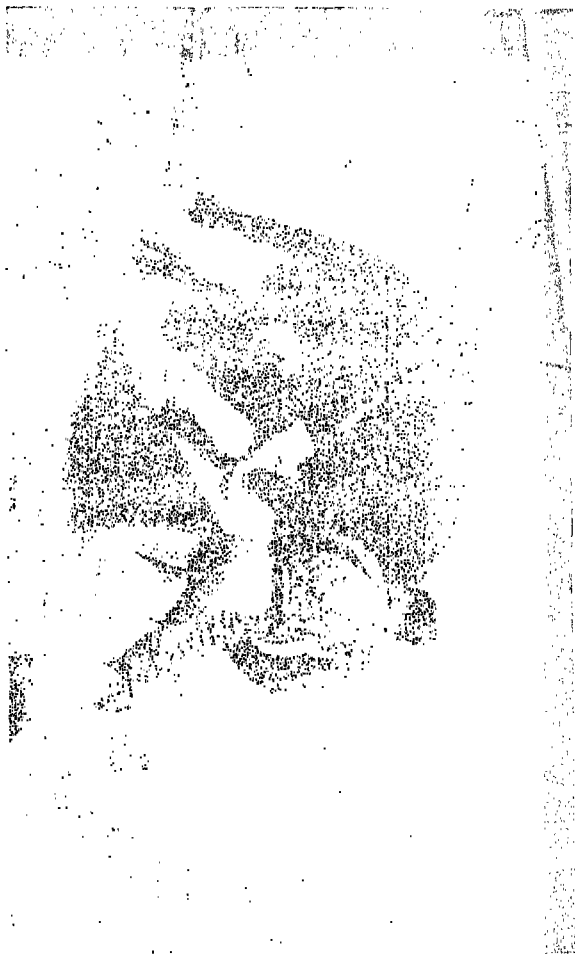
जंगली बैल से मल्ल-युद्ध का एक दृश्य

लम्बा करने में विचार यह रखा गया है कि पशु को अधिक से अधिक क्रोधित कर देना, छोटे-छोटे ज़ख्मों द्वारा उसका गुस्सा बहुत बढ़ा देना, बड़ा ज़ख्म करके उसके बदन से बहुत खून निकाल देना और फिर दौड़ा-दौड़ा कर उसे थका देना। अन्त में उसे मार डालना।

यह अहाता काफ़ी बड़ा है और टिकट की दर भी बहुत ऊँची है, फिर भी स्थान पूरी तरह से भरा रहता है।

अस्तु, बार्सीलोना स्पेन का मुख्य बन्दरगाह तथा उद्योग-प्रधान नगर है। इसकी जनसंख्या लगभग १२ लाख है। जनता साधारण हैसियत की है। पास के देहात एशिया के ग्रामों की तरह हैं जिनमें मिट्टी के कच्चे मकान बने हैं तथा खेती भी पुराने तरीक़े पर होती है।

मैड्रिड

स्पेन की राजधानी मैड्रिड है और यह एक "नये साँचे में ढला" शहर है। यह हर प्रकार से आधुनिक वातावरण तथा नवीन सभ्यता से ओत-प्रोत है। प्रधान राजपथ पर शाम को इतनी भीड़ रहती है कि रास्ता चलना दूभर हो जाता है। काफ़ी बड़ा शहर है। पर्याप्त चहल-पहल है। ऐतिहासिक दृष्टि से इस नगर में केवल दो इमारतें महत्वपूर्ण हैं—बादशाह फ़ैज़ल का महल और राजकुमार-

भवन। इनके देखने से पता चलता है कि फ़ैज़ल ने कितनी सादी तबीयत पाई थी।

मैड्रिड—राष्ट्रीय महल (नैशनल पैलेस)

मैड्रिड से दो घण्टे के फ़ासले पर स्पेन का ही नहीं, यूरोप का एक बहुत पुराना और इतिहास-प्रसिद्ध नगर है। कहते हैं कि सैनिक दृष्टि से, पुराने यूरोप में, इस नगर से बढ़कर सुरक्षित और उपयुक्त स्थान और कोई नहीं था। अब तो हवाई जहाज़ इत्यादि के ज़माने में प्राचीन संरक्षण का कोई मूल्य ही नहीं है। नगर पहाड़ी की चोटी पर, बहुत मज़बूत चहारदीवारी से घिरा हुआ, बसा है।

दो तरफ़ काफ़ी ऊँचा पहाड़ है और चौथे तरफ़, सामने की ओर, काफ़ी नीचे, एक बहुत चौड़ा मैदान है।

इस नगर का नाम "टैलिडो[1]" है और यह १७वीं शताब्दी तक स्पेन की राजधानी रह चुका है। यूरोप के इतिहास में अनेकानेक उथल-पुथल इसी नगर से हुए हैं और इतना सुरक्षित होते हुए भी यह पाँच साम्राज्य, पाँच महा जातियाँ तथा पञ्च-सम्प्रदाय की क्रीड़ा-भूमि रह चुका है और हरेक के चिह्न टैलिडो की दीवारों पर—क़िले के भीतर, नगर की चहारदीवारियों के पट पर अंकित हैं। पहले यह यूनानियों द्वारा क़ब्ज़े में किया गया, फिर रोमन अधिकार में आया, तदुपरान्त तुर्कों का आधिपत्य हुआ, उसके बाद यहूदी आये—और १५वीं शताब्दी से ईसाई-शासन का प्रारम्भ हुआ। जो-जो ताक़तें नगर पर क़ब्ज़ा करतीं वे टैलिडो की इमारतों को तोड़-मरोड़ कर अपनी सभ्यता तथा कला के अनुसार बना लेतीं। फलतः इन दीवारों पर सभी चिह्न अंकित हो गये हैं। बहुत पुरानी इमारतें हैं, फिर भी लगातार मरम्मत होती रहने के कारण, सुरक्षित हैं। यहाँ का गिर्जाघर भी बहुत पुराना और दर्शनीय है। शहर की बनावट आगरा के नारियल बाज़ार मुहल्ले से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। अब तो इसे शहर न कह कर क़स्बा कहना चाहिए

1. Talido.

क्योंकि न तो प्राचीन वैभव रहा और न प्राचीन महत्त्व ही। जन-संख्या लगभग २५,००० की है। फिर भी, शहर के भीतर चहल-पहल और आकर्षण पर्य्याप्त मात्रा में वर्त्तमान है।

अस्तु, टैलिडो से हम मैड्रिड वापस आये। यद्यपि स्पेन में अभी बहुत कुछ देखना था फिर भी, हमारे पास समय का अभाव था और फ़ांस की राजधानी, प्रसिद्ध विलास-भूमि तथा संसार में सौन्दर्य-कला-आमोद-प्रमोद के लिए प्रसिद्ध और शान-शौकत की खान पेरिस देखने के लिए हम लालायित हो रहे थे। मैड्रिड से ट्रेन द्वारा २२ घण्टे की सफ़र के बाद पेरिस पहुँचा जाता है। यूरोप में मेरी यह सब से लम्बी ट्रेन-यात्रा थी। पेरिस पहुँचने के लिए मन चञ्चल हो रहा था!

२६ सितम्बर को क़रीब ६ बजे सुबह हम पेरिस के अत्यन्त शानदार स्टेशन में दाख़िल हो गये।

चौतीसवाँ परिच्छेद

फ्रांस

पेरिस पहुँच कर हम टैक्सी द्वारा अपने होटल के लिए रवाना हुए। किन्तु, यहाँ सड़कों पर सवारियों का अनियन्त्रित रूप में भागना देखकर मैं दंग रह गया। चौराहे पर या मोड़पर दायें-बायें का कोई सवाल ही नहीं था। जिसे जिधर से जगह मिलती, घुस पड़ता था। कितनी ही बार मुझे ऐसा मालूम पड़ा कि हमारी टैक्सी दूसरी गाड़ी से टकराने ही वाली है। सभी ड्राइवर अपनी गाड़ी बुरी तरह से भगाये लिये जा रहे थे। राम-राम करते हम होटल पहुँचे और मैंने यह तय किया कि अब शहर के अन्दर विरले ही टैक्सी का उपयोग करूँगा।

होटल पहुँच कर मैं पैदल ही टॉमस कुक के दफ़्तर पहुँचा। दृश्य-दर्शन के लिए गाइड इत्यादि का प्रबन्ध करना था। पर, कुक

की फ़ीस बहुत ज़्यादा थी इसलिए हमने दूसरी कम्पनी से आधे में ही तय किया। उस दिन तो मैं दिन भर पैदल ही शहर का चक्कर लगाता रहा। दूसरे दिन, मैं पिछले महासमर की फ्रांस की रण-भूमि देखने गया। इस महायुद्ध को बीते १५ वर्ष हो चुके थे। इस अवधि में, शान्तिमय वातावरण तथा प्रकृति की महती दया से इस भयंकर रण-क्षेत्र की विभीषिका बहुत कुछ तिरोहित हो चुकी थी। पर चतुर पथ-प्रदर्शक आपको अब भी ऐसे स्थान दिखलाता है जो रोमाञ्चित तथा मम्मोहित कर देते हैं। इस भूमि का चक्कर लगाने के बाद ही उस महायुद्ध का थोड़ा अनुमान लगाया जा सकता है। वह स्थान, जहाँ पर जर्मनी ने अपने पहले ही धावे में, अधिकार जमा लिया था, पेरिस से लगभग २० मील के फ़ासले पर है। मोटर से आध घण्टे में यहाँ पहुँचा जा सकता है। युद्ध के अन्तकाल में, जब कि अमेरिका जैसा शक्तिशाली राष्ट्र लड़ाई में कूद चुका था, जर्मन सेना अपने आखरी हमले में पेरिस से ४५ मील की दूरी तक पहुँच चुकी थी। यहाँ पर एक हफ़्ते तक जर्मनी का अधिकार था। जर्मनी के सेनापति हिंडेनबर्ग ने जो इतिहास-प्रसिद्ध नाकाबन्दी की थी तथा जिसका नाम हिंडेनबर्ग लाइन रखा था, यहाँ से २०० मील के फ़ासले पर है जो बेल्जियम से स्विट्ज़रलैण्ड तक फैली हुई थी। ४ वर्ष तक लाखों आदमियों के स्वाहा हो जाने पर भी यह

लाइन तोड़ी नहीं जा सकी थी। अक्टूबर सन् १९१८ ई० में ही यह लाइन तोड़ी जा सकी। इस लाइन के अन्तर्गत फ्रांस की सैकड़ों मील ज़मीन फँसी हुई थी।

अस्तु, हमने क़रीब-क़रीब वह सभी स्थान देखे जहाँ भयंकर युद्ध हुआ था। राइनलैएड में तो गोलाबारी की निशानी भी चारों तरफ़ मौजूद है। हमने वह प्रसिद्ध गिर्जाघर देखा जहाँ पर फ्रांस की स्वाधीनता के लिए प्राण देने वाली जोन आव् आर्क की मूर्त्ति खड़ी है। यहीं पर फ्रांस के सभी नरेशों का अभिषेक होता था। लड़ाई के दिनों में जब यह पवित्र स्थान जर्मनी द्वारा तहस-नहस कर दिया गया तो फ्रांस में एकाएक स्वाधीनता के लिए तथा देश के लिए प्राण दे देने की लहर फैल गई। जो लोग लड़ाई से उदासीन हो रहे थे, उनकी नसों में भी वीरता का रक्त दौड़ने लगा था। सचमुच इसी समय से फ्रांस के भाग्य ने पलटा खाया और मित्र-सेना अपने पहले तथा आखरी हमले में जर्मनी को खदेड़ती हुई हिंडेनबर्ग लाइन तक ले गयी।

फ्रांस की मशहूर शराब शैम्पेन भी इसी शहर के आस-पास बनती है और उसके बहुत से कारखाने हैं। शैम्पेन शराब रखने के लिए, हर कारखाने में ज़मीन के नीचे, सैकड़ों फ़ीट तक लम्बी गुफ़ा बनी रहती है जहाँ पर ५ साल तक शैम्पेन शराब सुरक्षित

रखी जाती है। ये गुफ़ायें इतनी लम्बी हैं कि एक-एक में एक लाख आदमी तक एक साथ बैठ सकते हैं। शहर पर गोली चलने के समय लोगों ने इसी गुफ़ा में शरण ली थी। बाद में, इन पर जर्मनों का अधिकार हो गया था। इन्हीं गुफ़ाओं में सैकड़ों जर्मन सिपाही मरे हुए मिले थे। कारण यह था कि उन्होंने अत्यधिक शैम्पेन पी ली थी। एक गुफ़ा में जर्मन सिपाहियों ने शैम्पेन शराब भर कर, उसमें स्नान किया था।

हम वह स्थान भी देखने गये जहाँ पर पिछले युद्ध की विराम-सन्धि हुई थी। वहाँ पर वह रेलवे की पटरी तथा रेलवे का डब्बा अब भी सुरक्षित रखा है जिस पर एक तरफ़ से मित्र-राष्ट्रों के प्रतिनिधि तथा दूसरी ओर से जर्मन प्रतिनिधि आये थे। अब तो यहाँ पर एक खूबसूरत-सा बाग़ भी बना दिया गया है। इसी रेल के डब्बे में विराम-सन्धि के सम्बन्ध में छपे हुए समाचारपत्रों के सम्वादों का प्रदर्शन भी है।

वार्साई

इस महायुद्ध का कारण वार्साई की वह सन्धि बतलाई जाती है जिसने यूरोप में अनेक छोटे-छोटे राष्ट्र उत्पन्न कर दिये तथा राष्ट्र-परिषद् की रचना की। इसमें कोई सन्देह नहीं कि सन् १९१४-१८ का भीषण रक्तपात इस वार्साई की सन्धि के बाद

निरर्थक तथा बेकार हो गया। जो हो, मुझे वार्साई देखने की बड़ी अभिलाषा थी। अतः जब मैं वहाँ घूमने लगा तो मेरे सामने पिछले महायुद्ध की रोमाञ्चकारी कहानी एक तरफ़ और दूसरी तरफ़ वार्साई की सन्धि की भीषण मूर्त्ति खड़ी दीख पड़ी। मुझे ऐसा मालूम पड़ा मानो मैं स्वयं एक बड़ा अपराधी हूँ और एक बड़ा अपराध करके यहाँ खड़ा हूँ।

अस्तु, वार्साई फ्रांस के प्रसिद्ध तथा बलशाली और ऐश्वर्य-शाली सम्राट् लूई १४वें की क्रीड़ा तथा विलासभूमि रहा है। यहाँ

वार्साई—सम्राट् लूई का राजभवन

पर उसका विशाल, रमणीक, महान राजमहल ज्यों का त्यों खड़ा है तथा एक दर्शनीय और ईर्ष्यायोग्य वासस्थान है। इस राजमहल के बनने की कहानी यह है कि लूई १४वें के बाल्यकाल में उसके विरोधियों तथा क्रान्तिकारियों की संख्या पर्याप्त रूपेण भयंकर थी। अतएव, अपने बचाव के लिए, बाल-नरेश ने वार्साई के जंगल में यह आलीशान महल बनवाया था। ये राजमहल कई पंक्तियों में बने हैं और इसका सब भाग मिलकर, यूरोप में सब से बड़ा राजमहल कहा जा सकता है। कला तथा नक्काशी का काम ग़ज़ब का है। इसका बाग़ यूरोप में अपनी निराली शान रखता है। ऐसा सुन्दर दूसरा बाग़ देखने को न मिलेगा। इस उद्यान की नक़ल संसार भर में की गई है। इसके फ़व्वारे तो बस कमाल के हैं। शायद, इस उद्यान की ख्याति इन्हीं फ़व्वारों के कारण इतनी अधिक है। महल के भीतर की सजावट, चित्रकला, मनोविनोद की प्राचीन सामग्रियाँ फ्रेञ्च नरेशों की ऐय्याशी की पराकाष्ठा पहुँची हुई सामग्रियों का संकलन "अवशि देखिए देखन जोगू" है।

इसके उद्यान के फ़व्वारों में पानी केवल हर पन्द्रह दिन पर एक घण्टे के लिए चालू किया जाता है और इस घण्टे भर में ही २५,००० फ्रैंक का पानी खर्च हो जाता है। १० मील दूरी से दरिया से पानी आने का प्रबन्ध है। पहले वहाँ पर पानी निकालने के

लिए एक बड़ा भारी पहिया लगा था, अब वहीं पर एक बड़ा पावर-हाउस बना है।

अस्तु, सम्राट् लुई १४वें के इसी महल में वार्साई की विश्व-विख्यात सन्धि हुई थी। पर, इसके पहले इस ऐतिहासिक स्थान में कई सन्धियाँ हो चुकी हैं। अमेरिका के स्वाधीनता-संग्राम में अमेरिका के स्वत्वों की स्वीकृति इसी भवन में हुई थी। १९वीं शताब्दी में जर्मन-पराजय के बाद की सन्धि भी यहीं हुई और जर्मन-नरेश को "जर्मन सम्राट्"—यानी क़ैसर स्वीकार की जाने वाली सन्धि भी इसी महल में हुई थी और कौन जाने इस द्वितीय महायुद्ध के बाद इस महल का फिर उपयोग हो!

वार्साई से पेरिस जाने का मार्ग बड़ा मनोरम, सुहावना तथा सुन्दर जंगल है। इसी मार्ग में वह राजमहल पड़ता है जहाँ पर सम्राट् होने के पहले नेपोलियन अपनी प्रियतमा जोज़ेफ़ाइन के साथ रहता था। सम्राट् हो जाने के बाद भी उसका ज़्यादातर समय यहीं बीतता था। जोज़ेफ़ाइन को तलाक़ देने के समय उसने यह महल भी उसे बख़्श दिया था। महल यों तो काफ़ी सादा है। उसके भीतर का सामान ज्यों का त्यों मौजूद है। प्रेम-मूर्त्ति, रूप-गर्विता तथा अपनी सजावट में व्यस्त जोज़ेफ़ाइन की बहुत अच्छी तस्वीर देखने क़ाबिल है। यहीं पर नैपोलियन का बहुत कुछ निजी

सामान तथा मरने के समय वह जो वस्त्र पहिने हुए था तथा जिस बिस्तरे पर मरा था—वह सब लाकर रखा हुआ है। यह सब
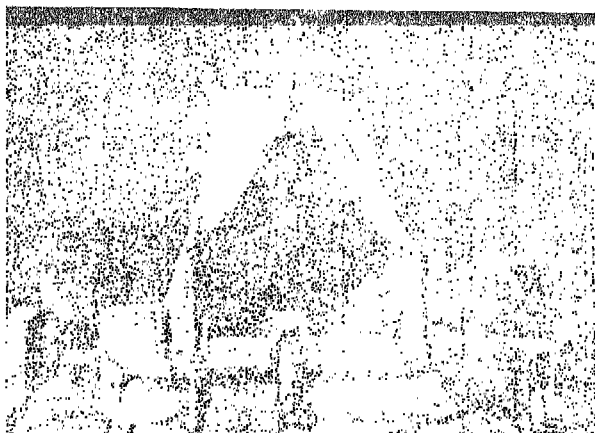
नैपोलियन की महारानी का शयनागार

देखने लायक़ चीज़ें हैं। उस महापुरुष, वीर-शिरोमणि की चीज़ों को देख कर किसे रोमाञ्च न हो आयेगा और कौन श्रद्धा से सर न झुका देगा !

फ्रांस में प्रचलित अधिकांश क़ानून नैपोलियन के बनाये हुए हैं। अधिकांश नियम इसी महल में उसके पुस्तकालय में बैठकर बनाये गये थे और उन पर उसने हस्ताक्षर किये थे। नैपोलियन

के जीवन का अभ्युदय-काल इसी महल में बीता था। हम इस महल को देख कर कृतार्थ-से हो गये।

पेरिस

अपनी फ्रांस यात्रा के तीसरे दिन मैंने पेरिस घूमना प्रारम्भ किया। पेरिस के नाम में ही बड़ा भारी आकर्षण है। विलास तथा आमोद-प्रमोद का यह प्रतीक है। इसका स्मरण आते ही दिमाग़ में ऐय्याशी छा जाती है। कला तथा बहुमूल्य भवनों की दृष्टि से इसकी गणना लेनिनग्रैड तथा वियना के बाद होगी, पर सड़क, सजावट, भोजनालय, आहार-विहार, रात्रि-जीवन, नाच, थियेटर, सिनेमा, दूकानों की चमक आदि के लिए इसका नम्बर संसार में सबसे पहले ही है और स्यात् रहेगा। फ़ैशन की, आराम-तलबी की, सोफ़ियानी चीज़ों का तो यह घर ही है—नई से नई चीज़ें यहीं मिलेंगी तथा नये से नये फ़ैशन यहीं से प्रारम्भ होंगे। पेरिस कला का आगर है—घर है। नृत्य-वाद्य, वेश-भूषा, सजावट—हरेक कला में यह अत्यन्त उन्नति करता-करता अब मानो सब सीमा तोड़ कर "अति" की ओर अग्रसर हो रहा है। "अति सर्वत्र वर्जयेत्"। अब उसकी "अति" के कारण मुझे वहाँ के जीवन में भोंडा या बेहूदापन तक अनुभव होने लगा! आरामतलबी, विलास-प्रियता तथा मनोरञ्जन के साधनों को इतना विकृत कर दिया गया है कि अब वह

न केवल अमानवी बल्कि आत्मघातक हो गई हैं। शायद पशु भी उनको देखकर शर्म से सर झुका लेगा। विख्यात् अय्याश नरेश चार्ल्स १४वें द्वारा जिस 'पेरिस' का विलासीकरण प्रारम्भ हुआ था, आज वही पेरिस मानवी-सीमा का उल्लंघन कर गया है। इसका परिणाम राष्ट्र के लिए घातक और नपुंसक बनाने वाला होगा—ऐसा मेरा विश्वास है। फ्रांस की यह राजधानी केवल विलास-भूमि ही नहीं है। यह विद्या, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान की केन्द्र भी है, पर इन सबका उज्ज्वल प्रकाश विलास की देदीप्यमान नक़ली आभा में धूमिल पड़ रहा है। फ्रांस को सावधान हो जाना चाहिए—उसके राष्ट्र के उत्थान में भयंकर बाधा पड़ रही है। मुझे तो कभी-कभी ऐसा लगा कि "सभ्यता" की चरम सीमा ने लोगों को ऐसा पशु तथा कृत्रिम और स्वार्थी बना दिया है कि अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए एक फ्रेंचमैन क्या नहीं कर सकता! थोड़े से लाभ के लिए हज़ारों का गला काट लेना या मुट्ठी भर पैसों के लिए देश-मात्र को बेच डालना—मुझे एक फ्रेंचमैन के लिए आसान बात मालूम पड़ी।

मुझे ऐसा मालूम पड़ा कि फ्रांस की किसी चीज़ को छू भर लीजिए—बस वह आपसे चिपक जायगी। विदेशी को चूस डालना वे लोग अपना धर्म समझते हैं और विदेशी पर रहम दिखलाना

जैसे कोई पाप हो। पेरिस का समूचा संगठन ऐसा है जिसमें विदेशी यात्री का पूरा साधन चूस लिया जाता है। मैं तो यह भी कहूँगा कि पेरिस में किसी पेशे वाले पर किसी प्रकार का भरोसा करना मूर्खता होगी। कोई किसी से कुछ ज़बर्दस्ती नहीं छीनता। कहीं कुछ ज़ोर-ज़ुल्म नहीं है—पर सामाजिक चक्र-व्यूह ही ऐसा है कि जो गया सो डूबा! मुझे पेरिस का सामाजिक जीवन काफ़ी पतनशील प्रतीत हुआ। पर इसका यह अर्थ नहीं कि वीर फ्रेञ्च जाति के प्रति मेरी श्रद्धा कम हो या फ़ांस के विद्या तथा पाण्डित्य के केन्द्र तथा संस्कृति और शिष्टता के उस वातावरण के प्रति जहाँ फ्रेञ्च विद्वन्मण्डली का गुट है—मेरा आदर भाव न हो।

पेरिस ने संसार को जन-सत्ता की शक्ति तथा क्रान्ति का पाठ पढ़ाया है और ज़मींदारी प्रथा को तोड़कर इसने पूँजीवाद का एक विचित्र रूप भी संसार को प्रदान किया है। एक ओर इसने धार्मिक, सामाजिक, रूढ़िगत अत्याचार से फ़ांस को मुक्ति दी, दूसरी ओर संसार में मनुष्य की समानता, एकता तथा स्वाधीनता का डंका पीट दिया। उन्नत राष्ट्रीयता का विकास पेरिस से ही होता है। ऐसे महान् देश की महानगरी का सामाजिक पतन बड़े दुःख की वस्तु है।

पेरिस बड़ा ऐतिहासिक नगर है। इसका हर एक कोना

ऐतिहासिक सामग्री से भरा पड़ा है। कहीं कोई सड़क, कोई स्मृति-चिह्न, कोई क़ब्र, कोई गिर्जा तथा कोई दीवार ऐसी नहीं जो इतिहास में स्थान न रखती हो। नैपोलियन के विजय की यादगार में बहुत से स्थान हैं। वह फाटक ज्यों का त्यों खड़ा है जिसके नीचे से होकर नैपोलियन की सेना रूस पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुई थी। फ्रांसीसी क्रान्ति के संस्मरण, फ्रेञ्च क्रान्तिकारियों के सभास्थल, वे स्थान जिधर से उनके जुलूस आदि निकले थे—सभी सुरक्षित तथा दर्शनीय हैं। जिस स्थान पर अभागा फ्रेंच सम्राट् लूई १६वाँ बलिदान किया गया था (कांकोर्ड स्क्वायर) अब सुन्दर उद्यान तथा फ़व्वारों से सुसज्जित है। जिस स्थान पर सैकड़ों दोषी तथा निर्दोष व्यक्ति फ्रेञ्च क्रान्ति में बलिदान किये गये थे—देखकर रोमाञ्च हो आता है। कांकोर्ड स्क्वायर के चारों ओर सुन्दर सरकारी इमारतें हैं। उसके ठीक सामने प्रसिद्ध शाही महल है जिसका एक भाग क्रान्तिकारियों द्वारा नष्ट कर दिये जाने के कारण बाग़ में परिवर्तित कर दिया गया है। जर्मन चर्च स्ट्रीट में शहर भर के पादरी एकत्रित करके क़त्ल कर दिये गये थे। क्रान्ति में बलिदान लोगों के लिए विशेषतः बना हुआ क़ब्रिस्तान देखने लायक़ है। पेंथियन पैलेस की कोठरियों में, क्रान्तियुग में, फ़ैसला होने तक शाही परिवार क़ैद रखा गया था

और इसी के हॉल में क्रान्तिकारी अदालत की बैठक होती थी। यहीं पर अब फ्रांस का प्रधान न्यायालय है। नात्रेदाम गिर्जाघर में नेपोलियन
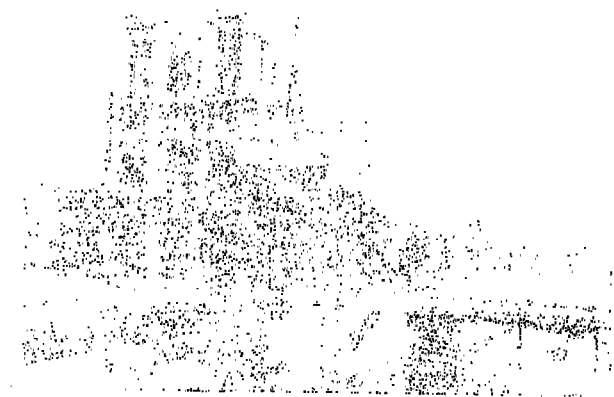
नात्रेदाम नामक गिर्जाघर

का अभिषेक हुआ था। लक्ज़ेमबर्ग बाग़, क्रान्तिकारी अजायबघर, इत्यादि देखने योग्य स्थान हैं। पेरिस की प्रसिद्ध नुमायश के समय एफ़ेल टावर बनाई गई थी। यह देखने लायक़ चीज़ है। यहाँ से बहुत दूर तथा ऊँचाई से उड़कर आता हुआ जर्मन हवाई जहाज़ तथा उसके हमले की सूचना मिल सकती है। इस टावर को इसी उद्देश्य से भी बनाया गया था।

पेरिस में बहुत कुछ देखने की सामग्री है। यहाँ पूर्वीय सभ्यता के भी चिह्न वर्त्तमान हैं। मस्जिद भी है। यूनानी बस्ती
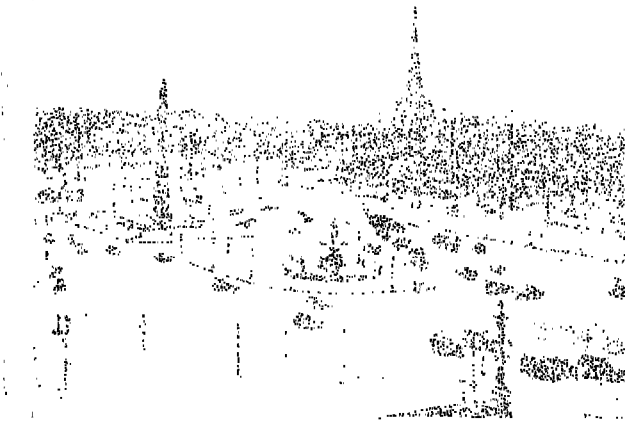
एफ़ेल टावर—पेरिस की विश्व-प्रदर्शनी का संस्मरण

है। नाचघरों की तो भरमार है। मशहूर पुस्तकालय तथा वाचनालय हैं। बड़े-बड़े अजायबघर तथा चिड़ियाखाने हैं। देखने तथा अध्ययन के लिए रात्रि-जीवन से लेकर पेरिस विश्वविद्यालय का सौम्य वातावरण तक वर्त्तमान है।

पचास लाख की आबादी वाले इस विशाल नगर को मैं दो दिन में भी ठीक तरह से न घूम पाया।
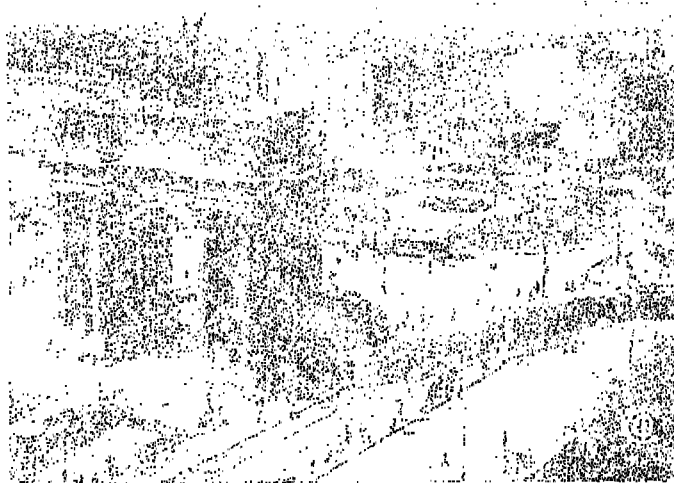
पेरिस—नेपोलियन की सेना इसी दरवाज़े से होकर रूस पर आक्रमण करने चली थी

मुझे यहाँ से इङ्गलैण्ड वापस आना था। पेरिस से लन्दन पहुँचने में क़रीब ५ घण्टे लगते हैं। मैंने फ्रांस को, यूरोप को—नमस्कार किया और पुनः इङ्गलैण्ड वापस लौट आया।

* प्रथम भाग समाप्त *